अवचेतन मन की शक्ति को पहचानकर
प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम सफलता अर्जित करें

दौलत और सफलता की राह

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी

आपके अवचेतन मन की शक्ति के बेस्टसेलिंग लेखक

आर्थर आर. पेल, पीएच.डी. द्वारा संशोधित एवं संपादित

Hindi translation of *MAXIMIZE YOUR POTENTIAL TO CREATE WEALTH AND SUCCESS*

अवचेतन मन की शक्ति को पहचानकर
प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम सफलता अर्जित करें

दौलत और सफलता की राह

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी

आपके अवचेतन मन की शक्ति के बेस्टसेलिंग लेखक

आर्थर आर. पेल, पीएच.डी. द्वारा संशोधित एवं संपादित

Hindi translation of *MAXIMIZE YOUR POTENTIAL TO CREATE WEALTH AND SUCCESS*

अवचेतन मन की शक्ति को पहचानकर
प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम सफलता अर्जित करें

दौलत
और
सफलता
की राह

अवचेतन मन की शक्ति को पहचानकर
प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम सफलता अर्जित करें

दौलत
और
सफलता
की राह

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी

आर्थर आर. पेल, पीएच.डी. द्वारा
संशोधित एवं संपादित

अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

MANJUL
मंजुल पब्लिशिंग हाउस

मंजुल पब्लिशिंग हाउस

कॉरपोरेट एवं संपादकीय कार्यालय

द्वितीय तल, उषा प्रीत कॉम्प्लेक्स, 42 मालवीय नगर, भोपाल-462003

विक्रय एवं विपणन कार्यालय

7/32 , भू तल, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

वेबसाइट: www.manjulindia.com

वितरण केन्द्र

अहमदाबाद, बेंगलुरू, भोपाल, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, मुम्बई, नई दिल्ली, पुणे

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी द्वारा लिखित मूल अंग्रेजी पुस्तक मैक्ज़िमाइज़ यॉर पोटेन्शियल टु क्रिएट वेल्थ ऐंड सक्सेस का हिन्दी अनुवाद

कॉपीराइट © डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी

सर्वाधिकार सुरक्षित

यह हिन्दी संस्करण 2016 में पहली बार प्रकाशित

ISBN 978-81-8322-709-4

अनुवाद: डॉ. सुधीर दीक्षित

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसे या इसके किसी भी हिस्से को न तो पुन: प्रकाशित किया जा सकता है और न ही किसी भी अन्य तरीक़े से, किसी भी रूप में इसका व्यावसायिक उपयोग किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

विषय-सूची

प्रस्तावना

श्रंखला की प्रस्तावना

1. दौलत की मास्टर चाबी
2. अपनी इच्छा का अहसास करें
3. अपने अवचेतन की प्रोग्रामिंग करना
4. निर्णय की अद्भुत शक्ति
5. अनुशासित कल्पना के चमत्कार
6. कोई मुफ़्त लंच नहीं है
7. “यह मेरे साथ क्यों हुआ?”
8. प्रशंसा: समृद्धि का मार्ग
9. आपके विश्वास आपको अमीर या ग़रीब क्यों बनाते हैं
10. स्वर्णिम नियम
11. आपका भविष्य: आगे देखने की कला

लेखक के बारे में

प्रस्तावना

क्या आपने कभी कल्पना की है कि काश आप दौलतमंद बन जाएँ और विलासिता का जीवन जिएँ? दौलत ज़्यादातर लोगों को दूर का ख़्वाब लगती है, लेकिन इतिहास में ऐसे स्त्री-पुरुषों के असंख्य उदाहरण हैं, अपनी कोशिशों के दम पर ग़रीबी की गहराइयों से बाहर निकले और भारी दौलत की मंज़िल पर पहुँचे।

क्या आपको लगता है कि आप तक़दीर की वजह से ग़रीबी में रहने के लिए अभिशप्त हैं? शेक्सपियर की बात को थोड़ा बदलकर कहें, तो कुछ लोग दौलतमंद पैदा होते हैं, कुछ दौलत हासिल करते हैं और कुछ पर दौलत थोप दी जाती है। कुछ लोगों का सौभाग्य था कि उनके माता-पिता दौलतमंद थे, जिन्होंने उन्हें वे तमाम चीज़ें दीं, जो पैसों से ख़रीदी जा सकती थीं — लेकिन इनमें से कई लोगों ने अपने ग़लत निर्णयों से अपने माता-पिता की दौलत गँवा दी। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिन पर दौलत थोप दी जाती है, जब उनकी लॉटरी लग जाती है या उन्हें अप्रत्याशित रूप से ढेर सारा पैसा मिल जाता है। लेकिन शायद हममें से ज़्यादातर इतने भाग्यशाली नहीं हैं। अगर हमें दौलतमंद बनना है, तो हमें अपनी ख़ुद की बुद्धि, मेहनत, सृजनात्मकता और समर्पण के ज़रिये दौलत हासिल करनी होगी। याद रखें, हममें से कोई भी भाग्य या दुर्भाग्य से ग़रीब रहने के लिए अभिशप्त नहीं है। दौलत हम सबके चारों तरफ़ है और इसे हासिल करने के लिए हमें तो बस इतना करना है कि हम दौलत तक ले जाने वाले रास्ते को खोज लें और फिर उस पर चलें।

अमीर बनने की इच्छा में कुछ भी ग़लत नहीं है। अमीरी की इच्छा दरअसल ज़्यादा समृद्ध, ज़्यादा पूर्ण और ज़्यादा प्रचुर जीवन की इच्छा है; और यह एक प्रशंसनीय इच्छा है। जो लोग ज़्यादा समृद्धि भरा जीवन जीने की इच्छा नहीं रखते हैं, वे असामान्य हैं, यानी जिन लोगों में अपनी मनचाही सारी चीज़ें ख़रीदने की इच्छा नहीं होती है, वे असामान्य हैं।

जब आप असीमित की दौलत का आनंद ले सकते हैं, तो कम से संतुष्ट क्यों रहें? इस पुस्तक

में आप पैसे से दोस्ती करना सीखेंगे और अगर आप इसमें बताए तरीक़ों पर अमल करते हैं, तो आपके पास हमेशा अतिरिक्त धन रहेगा। अमीर बनने की आपकी इच्छा ज़्यादा पूर्ण, ज़्यादा सुखी और ज़्यादा अद्भुत जीवन जीने की इच्छा है। यह पूरे संसार की ऐसी इच्छा है, जो अच्छी है — दरअसल बहुत अच्छी है। पैसे के सच्चे महत्त्व को समझना शुरू करें। यह विनिमय का प्रतीक है। यह आपको अभाव से स्वतंत्रता देता है। यह आपको सौंदर्य, विलासिता, प्रचुरता और परिष्कार देता है।

कई लोगों के पास ज़्यादा पैसा नहीं होता है, इसका एक कारण यह है कि वे मन ही मन या खुलकर इसकी निंदा करते हैं। वे पैसे को "गंदा पैसा" कहते हैं या फिर उनके मन में यह विश्वास होता है कि "पैसे का प्रेम ही सारी बुराई की जड़ है" या ऐसी ही दूसरी ग़लतफ़हमियाँ रहती हैं। उनके समृद्ध न होने का एक और कारण यह गुप्त, अवचेतन में छिपा भाव रहता है कि ग़रीबी में रहना सद्गुण है या इसमें कोई अच्छी बात है। यह भाव बचपन की परवरिश से आ सकता है, अंधविश्वास से आ सकता है या धर्मग्रंथों की ग़लत व्याख्या पर आधारित हो सकता है।

ग़रीबी में कोई सद्गुण नहीं है। किसी भी अन्य मानसिक रोग की तरह यह भी एक रोग है। अगर आप शारीरिक रूप से बीमार हैं, तो आप यह स्वीकार करेंगे कि आपके साथ कोई गड़बड़ है और आप इस बारे में तुरंत मदद लेना चाहेंगे या कुछ करना चाहेंगे। इसी तरह, अगर पैसा आपके जीवन में लगातार प्रवाहित नहीं हो रहा है, तो यह मान लें कि आपके साथ कुछ बुनियादी गड़बड़ है। आपको कर्म करना चाहिए — तुरंत।

ईश्वर नहीं चाहता कि आप किसी झुग्गी में रहें या भूखे रहें। ईश्वर तो यह चाहता है कि आप ख़ुश और समृद्ध रहें — हमेशा सफल रहें। ईश्वर हमेशा अपने सारे कामों में सफल होता है, चाहे यह तारे बनाना हो या सृष्टि।

पैसे के बारे में सारे अंधविश्वासों को तुरंत बाहर कर दें। पैसे को कभी बुरा या गंदा न मानें। अगर आप ऐसा करते हैं, तो इसके पंख लग जाएँगे और यह आपसे दूर उड़ जाएगा। याद रखें, आप जिसकी निंदा करते हैं, उसे आप खो देते हैं।

यह पूरी तरह सही है कि आपमें अमीर बनने की इच्छा होनी चाहिए; अगर आप सामान्य व्यक्ति हैं, तो आप ऐसा किए बिना रह ही नहीं सकते। यह भी पूरी तरह सही है कि आप अपनी आर्थिक और वित्तीय स्थिति को बेहतर बनाने के लिए अपने अवचेतन मन की शक्ति की प्रोग्रामिंग करें। यह अपने प्रति, ईश्वर के प्रति और मानवता के प्रति आपका कर्तव्य है; क्योंकि ख़ुद को अधिकतम बेहतर बनाने से बड़ी कोई दूसरी सेवा नहीं है, जो आप ईश्वर या मानवता की कर सकते हों।

इस वक़्त कुछ लोग हैं और दरअसल ऐसे लोग हमेशा रहेंगे, जो ग़रीबी को अपनी तक़दीर मानते हैं। लेकिन ग़ौर करें, उनकी ग़रीबी किसी पत्थर की लकीर जितनी स्थायी नहीं है, क्योंकि उनकी मदद के साधन मौजूद हैं, जो उनके विकास और समझ को बढ़ाकर उन्हें इस दुर्दशा से ऊपर उठा सकते हैं।

जीवन को जानने वाले लोग ग़रीबी के इस पहले कारण को समझते हैं। ज़्यादा गहराई से देखने पर हम यह देखते हैं कि जब तक इस तरह के समूह का आख़िरी व्यक्ति नहीं मर जाता, तब तक ग़रीबी के शिकार लोग हमारे बीच हमेशा रहेंगे, क्योंकि उनके मन और आत्मा की

गहराई में वे ख़ुद को भिखारी की तरह ही देखते रहेंगे।

ग़रीबी का दूसरा कारण अतीत की ग़लत शिक्षा थी, जिसने मानव जाति के विकास को तीव्र करने के बजाय इसे बंधन में रखा। कई धर्मों में कहा जाता है कि ग़रीबी ज़्यादातर लोगों के लिए अवश्यंभावी स्थिति है। वे सिखाते हैं, "ग़रीब लोग हमारे बीच हमेशा रहेंगे।" कुछ पंथ तो यहाँ तक भी दावा करते हैं कि कई लोगों के लिए ग़रीबी पहले से तय है और इसे जीवनशैली के रूप में स्वीकार कर लेना चाहिए।

आध्यात्मिकता के कुछ विश्लेषक सिखाते हैं कि ग़रीब होना आध्यात्मिक होना है, "किसी ऊँट का सुई के छेद से गुज़रना आसान है, लेकिन किसी अमीर व्यक्ति के लिए स्वर्ग के साम्राज्य में दाख़िल होना मुश्किल है।" ऐसे भविष्य की झूठी आशा में जीकर लोग दुख भरा जीवन जीते रहते हैं और यह विश्वास करते रहते हैं कि भविष्य में किसी दिन उन्हें उनके कष्टों के बदले में स्वर्ग या जन्नत मिलेगी (यदि वे अपनी निष्ठापूर्ण ग़रीबी से इसके हक़दार बनें)। कुछ धर्मों में, जैसे पूर्व के धर्मों में, यह बताया जाता है कि ग़रीबी में पैदा होने वाले लोग हमेशा ग़रीबी में ही जिएँगे — इस आशा के साथ कि आज्ञाकारी और दीन रहने पर उन्हें अगले जीवन में ज़्यादा ऊँची जाति और ज़्यादा समृद्ध घर में जन्म लेने का अवसर मिलेगा।

इन पुराने जुनूनों ने सदियों तक बहुसंख्यक लोगों को अपने कठोर शिकंजे में रखा था। हालाँकि यह अजीब लग सकता है, लेकिन प्रबुद्ध सदी में रहने के बावजूद कई लोग अब भी इस पुरानी ग़लतफ़हमी को अपने दिल से लगाए हुए हैं। हालाँकि उनका जीवन कंगाली व निराशा में जीर्ण-शीर्ण है, लेकिन वे ज़्यादा ऊँचे ज्ञान की प्रबल शक्ति का प्रतिरोध कर रहे हैं।

केवल झूठे धार्मिक जोश और आत्म-परीक्षण की कमी की वजह से आज भी हज़ारों ग़रीबों ने इस पुरानी परंपरा को कसकर जकड़ रखा है।

इस पुस्तक में डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी इन अवधारणाओं की दोबारा जाँच करते हैं और पाठकों के सामने यह स्पष्ट कर देते हैं कि ग़रीबी मानव जाति की स्वाभाविक या नैसर्गिक अवस्था नहीं है और निश्चित रूप से यह ईश्वर की इच्छा नहीं है। वे आपको दिखाएँगे कि सकारात्मक सोच, मनन, प्रार्थना और ईश्वर में आस्था के ज़रिये आप अपने प्रयासों में सफलता कैसे हासिल कर सकते हैं, समृद्धि और दौलत कैसे हासिल कर सकते हैं।

श्रंखला की प्रस्तावना

जागें और जिएँ! कोई भी दुखी होने के लिए अभिशप्त नहीं है। कोई भी डर और चिंता से परेशान होने, ग़रीब रहने, बीमारी का कष्ट भोगने और तिरस्कृत व हीन महसूस करने के लिए अभिशप्त नहीं है। ईश्वर ने सभी इंसानों को अपनी छवि में बनाया है और उसने हमें विपत्ति से उबरने तथा ख़ुशी, सौहार्द, स्वास्थ्य व समृद्धि हासिल करने की शक्ति दी है।

अपने जीवन को समृद्ध बनाने की शक्ति आपके भीतर है! यह कैसे करना है, इसमें कोई रहस्य जैसी बात नहीं है। यह हज़ारों सालों से सिखाया गया है, लिखा गया है और इस पर अमल भी किया गया है। यह आपको प्राचीन दार्शनिकों की पुस्तकों में मिलेगा। यह यहूदी धर्मग्रंथों में है, ईसाई धर्मग्रंथों में है, यूनानी दार्शनिकों के लेखन में है, कुरान में है, बौद्ध धर्म के सूत्रों में है, हिंदुओं की भगवद्गीता में है और कन्फ़्यूशियस व लाओ त्से के लेखन में है। और तो और, यह आधुनिक मनोवैज्ञानिकों और धर्मशास्त्रियों के लेखन में भी है।

यह डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी के दर्शन का आधार है, जो बीसवीं सदी के महान प्रेरक लेखकों और वक्ताओं में से एक हैं। वे सिर्फ़ धर्मगुरु ही नहीं थे, बल्कि धर्मग्रंथों की आधुनिक व्याख्या के क्षेत्र की एक प्रमुख हस्ती भी थे। वे लॉस एंजेलिस में चर्च ऑफ़ डिवाइन साइंस के मिनिस्टर-डायरेक्टर थे, जहाँ हर रविवार 1,400-1,500 लोग उनके प्रवचन और व्याख्यान सुनने आते थे। लाखों लोग उनका दैनिक रेडियो कार्यक्रम सुनते थे। उन्होंने 30 से अधिक पुस्तकें लिखीं। द पॉवर ऑफ़ द सबकॉन्शस माइंड उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तक थी, जो 1963 में पहली बार प्रकाशित हुई और तुरंत बेस्टसेलर बन गई। इसे सर्वश्रेष्ठ स्व-सहायता मार्गदर्शिकाओं में से एक माना गया। पूरे संसार में इसकी करोड़ों प्रतियाँ बिक चुकी हैं और आज भी बिक रही हैं।

इस पुस्तक की सफलता के बाद डॉ. मर्फ़ी ने कई देशों में हज़ारों लोगों के सामने व्याख्यान दिए। अपने व्याख्यानों में उन्होंने बताया कि वास्तविक लोगों ने उनकी अवधारणाओं के निश्चित पहलुओं पर अमल करके किस तरह अपने जीवन का कायाकल्प कर लिया है। अपने व्याख्यानों

में उन्होंने व्यावहारिक मार्गदर्शन दिया कि लोग अपने जीवन को कैसे समृद्ध बना सकते हैं।

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी नव विचार आंदोलन के प्रवर्तक थे। यह आंदोलन कई दार्शनिकों और गहन चिंतकों ने उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के प्रारंभ में शुरू किया था, जिन्होंने इस क्षेत्र का अध्ययन किया और जीवन को देखने के एक तरीक़े के बारे में व्याख्यान दिए, लिखा तथा अभ्यास किया। हम जिस तरह सोचते और जीते हैं, उसके प्रति एक अभौतिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक नीति का मिश्रण करके उन्होंने हमारी मनचाही चीज़ हासिल करने का रहस्य उजागर किया।

यह दर्शन पारंपरिक अर्थ में धर्म नहीं था। यह तो किसी ज़्यादा ऊँचे अस्तित्व, शाश्वत उपस्थिति, ईश्वर में बिना शर्त के विश्वास पर आधारित था। इसे "नव विचार" और "नई सभ्यता" जैसे कई अलग-अलग नामों से बुलाया गया।

नव विचार या नई सभ्यता के प्रवर्तकों ने जीवन के बारे में नए विचार और नए तरीक़े बताए, जिनसे ज़्यादा आदर्श परिणाम मिलते हैं। उनकी सोच इस अवधारणा पर आधारित थी कि मानव आत्मा सर्वव्यापी तत्व के आणविक मस्तिष्क से जुड़ी है, जो हमारे जीवन को आपूर्ति के सर्वव्यापी नियम से जोड़ता है और हमारे पास यह शक्ति है कि हम अपने जीवन को समृद्ध करने के लिए इसका इस्तेमाल करें। अपने लक्ष्य हासिल करने के लिए हमें इसकी दिशा में काम करना चाहिए और इस तरह हम मानव जाति के काँटों और दिल के दर्द सहन कर सकते हैं। हम ये सारी चीज़ें सिर्फ़ तभी कर सकते हैं, जब हम उस नियम को खोज लें और समझ लें, जो ईश्वर ने अतीत में पहेलियों में लिखा था।

नव विचार की अवधारणा का सार इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है:

आप जो बनना चाहते हैं वह बन सकते हैं

हम जो हासिल करते हैं और जो हासिल नहीं कर पाते हैं, वह हमारे ख़ुद के विचारों का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह न्यायपूर्ण ढंग से व्यवस्थित सृष्टि है, जहाँ संतुलन हटने का मतलब पूर्ण विनाश होगा, इसलिए हमारी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी पूरी है। हमारी कमज़ोरियाँ और शक्तियाँ, शुद्धता और अशुद्धता सिर्फ़ हमारी हैं और कभी किसी दूसरे व्यक्ति की नहीं हैं। वे किसी दूसरे के नहीं, बल्कि हमारे ही द्वारा लाई जाती हैं। वे कभी किसी दूसरे के नहीं, बल्कि सिर्फ़ हमारे द्वारा ही बदली जा सकती हैं। हमारी सारी ख़ुशी और दुख अंदर से आते हैं। जैसा हम सोचते हैं, वैसे ही हम होते हैं; जैसा हम सोचना जारी रखते हैं, वैसे ही हम बने रहते हैं। ऊपर उठने, जीतने और सफलता हासिल करने का एकमात्र तरीक़ा यह है कि हम अपने विचारों को ऊपर उठा लें। एकमात्र कारण हमारे कमज़ोर, दीन-हीन और दुखी बने रहने का एकमात्र कारण यह होगा कि हम अपने विचारों को ऊपर उठाने से इंकार कर दें।

हमारी उपलब्धियाँ — चाहे वे व्यवसाय में हों, बौद्धिक जगत में हों या आध्यात्मिक जगत में — निश्चित और निर्देशित विचार का परिणाम हैं। उन पर भी वही नियम लागू होता है और उनका तरीक़ा भी वही है; इकलौता अंतर हासिल करने वाली वस्तु में निहित है। जो लोग कम हासिल

करना चाहते हैं, उन्हें कम त्याग करना होगा; जो लोग ज़्यादा हासिल करना चाहते हैं, उन्हें ज़्यादा त्याग करना होगा; जो लोग बहुत ज़्यादा हासिल करना चाहते हैं, उन्हें बहुत ज़्यादा त्याग करना होगा।

नव विचार का अर्थ है नया जीवन: एक ऐसी जीवनशैली, जो ज़्यादा स्वस्थ और ज़्यादा सुखद है, साथ ही हर संभव तरीक़े और अभिव्यक्ति में ज़्यादा संतुष्टिदायक भी है।

"नव जीवन" युगों पुराने, सर्वव्यापी मानसिक नियमों पर आधारित है। यह हर व्यक्ति के हृदय तथा मस्तिष्क के भीतर की असीम आध्यात्मिकता के तरीक़े पर भी आधारित है।

दरअसल, नव विचार में कुछ भी नया नहीं है, क्योंकि मानव जाति उतनी ही प्राचीन है। यह हमारे लिए नया तब है, जब हम जीवन के सत्य ऐसे खोजें, जो हमें ग़रीबी, सीमा और दुख से मुक्त करते हैं। उस पल, नव विचार आंतरिक सृजनात्मक शक्ति, मस्तिष्क-सिद्धांत की बारंबार व्यापक होती जागरूकता बन जाता है। यह बनने, करने और हमारी ज़्यादा व्यक्तिगत व नैसर्गिक योग्यताओं, रुझानों व गुणों को अधिक व्यक्त करने की हमारी दैवी क्षमता की जागरूकता बन जाता है। मस्तिष्क-सिद्धांत के लिए केंद्रबिंदु यह है कि नए विचार, नज़रिये और विश्वास नई परिस्थितियाँ बनाते हैं: "हमारे विश्वासों के अनुरूप ही हमारे लिए किया जाता है।" अच्छा, बुरा, तटस्थ। नव विचार का सार हमारे मस्तिष्क का सतत नवीनीकरण है, ताकि हम उसे साबित कर सकें, जो अच्छा है, जो स्वीकारणीय है और जो ईश्वर की आदर्श इच्छा है।

साबित करना विश्वसनीय ज्ञान और अनुभव के आधार पर यक़ीन के साथ जानना है। नव विचार के सत्य व्यावहारिक हैं, प्रदर्शित करने में आसान हैं और हर एक की उपलब्धि के क्षेत्र के भीतर हैं — अगर और जब वह इसका चुनाव करे।

ज़रूरत सिर्फ़ खुले दिमाग़ और इच्छुक हृदय की है: जो पुराने सत्य को नए व भिन्न ढंग से सुनने के प्रति खुला हो, पुराने, दकियानूसी विश्वासों को बदलने व हटाने का इच्छुक हो और नए विचारों तथा अवधारणाओं को स्वीकार करने का इच्छुक हो — जीवन की ज़्यादा ऊँची दृष्टि होना या भीतर उपचारक उपस्थिति होना।

हमारे मस्तिष्क का नवीनीकरण ही नव विचार का पूरा उद्देश्य और अभ्यास है। इस निरंतर, दैनिक नवीनीकरण के बिना कोई बदलाव नहीं आ सकता। असली नव विचार नए नज़रिये को पूरी तरह स्थापित करता है, जो "अधिक समृद्ध जीवन" को प्रेरित करता है और हमें दाख़िल होने में समर्थ बनाता है।

हमारे भीतर चुनाव करने, निर्णय लेने और करने की पूर्ण स्वतंत्रता है — अनुसरण करने या कायाकल्प करने की। अनुसरण करने का मतलब है उसके अनुसार जीना, जो पहले हो चुका है या जिसे पहले रूप दिया जा चुका है, जो दिखता है और हमारी ख़ुद की इंद्रियों, विचारों, राय, विश्वासों और दूसरों के फ़रमानों के लिए स्पष्ट है। अनुसरण करने का मतलब है "वर्तमान क्षणभंगुर और अस्थिर परिस्थितियों के अनुसार" जीना और संचालित होना। "अनुसरण" का आशय है कि हमारे वर्तमान परिवेश का एक स्वरूप है और हम इसके अस्तित्व से इंकार नहीं करते हैं और हमें ऐसा करना भी नहीं चाहिए। हमारे चारों ओर अन्याय, अनुचित चीज़ें और असमानताएँ हैं। हम कई बार उनमें ख़ुद को संलग्न पा सकते हैं और हमें साहस तथा ईमानदारी से उनका सामना करना चाहिए तथा अपने पास मौजूद अखंडता व बुद्धिमानी के साथ उन्हें हल

करने की सर्वश्रेष्ठ कोशिश करनी चाहिए।

संसार आम तौर पर यह मानता और विश्वास करता है कि हमारा परिवेश हमारी वर्तमान स्थिति और परिस्थिति का परिणाम है — कि स्वाभाविक प्रतिक्रिया और प्रवृत्ति यह है कि वर्तमान को चुपचाप स्वीकार करने की अवस्था में फिसला जाए। यह सबसे बुरे क़िस्म का अनुसरण है: पराजयवाद की चेतना। सबसे बुरी बात, यह ख़ुद का ओढ़ा हुआ है। इसमें बाहरी, प्रकट अवस्था को सारी शक्ति और ध्यान दिया जा रहा है। बाहरी परिवेश, माहौल और अतीत — चयन और निर्णय द्वारा — मस्तिष्क की सृजनात्मक शक्ति और कल्पना शक्ति की कार्यशैली के अभाव की वजह से हमारे लक्ष्यों और आकांक्षाओं की ओर निर्देशित होता है। नव विचार मस्तिष्क के नवीनीकरण पर ज़ोर देता है। यह जीवन में अपनी ज़िम्मेदारी को पहचानने और स्वीकार करने पर ज़ोर देता है — उन सत्यों पर प्रतिक्रिया करने की हमारी क़ाबिलियत पर, जिसे अब हम जानते हैं।

युनिटी स्कूल ऑफ़ क्रिश्चिएनिटी के सह-संस्थापक चार्ल्स फ़िलमोर नव विचार के सबसे सक्रिय व प्रभावी शिक्षकों में से एक थे और वे व्यक्तिगत उत्तरदायित्व में दृढ़ विश्वास करते थे। अपनी पुस्तक द रिवीलिंग वर्ल्ड में उन्होंने लिखा था (सरल भाषा में और बिना किसी वाक्छल के), “हमारी चेतना हमारा वास्तविक परिवेश है। बाहरी परिवेश हमेशा हमारी चेतना के अनुरूप होता है।”

जो भी ज़िम्मेदारी को स्वीकार करने का इच्छुक और खुला है, उसने कायाकल्प शुरू कर दिया है — मस्तिष्क का नवीनीकरण, जो हमें अपने कायाकल्पकारी जीवन में सहभागी बनने में सक्षम बनाता है। “कायाकल्प” का अर्थ है: “एक परिस्थिति या अवस्था से दूसरी में बदलना।” (जो गुणवत्ता की दृष्टि से बेहतर और ज़्यादा संतुष्टिदायक है), “अभाव से प्रचुरता तक, एकाकीपन से साहचर्य तक, सीमा से पूर्णता तक, बीमारी से आदर्श स्वास्थ्य तक” — इस आंतरिक बुद्धिमत्ता और शक्ति के ज़रिये, हमारे भीतर की उपचारक उपस्थिति के ज़रिये।

यह सच है कि हम कुछ चीज़ों को नहीं बदल सकते: ग्रहों की गति, मौसम के परिवर्तन, समुद्र और ज्वार-भाटे का आकर्षण, और सूर्य का उगते और डूबते हुए दिखना। न ही हम किसी दूसरे के मन और विचार को बदल सकते हैं — लेकिन हम ख़ुद को बदल सकते हैं। आपकी मानसिक गतिविधि, कल्पना और आपकी इच्छा शक्ति को कौन रोक सकता है या कौन बाधित कर सकता है? सिर्फ़ आप ही किसी दूसरे को यह शक्ति दे सकते हैं। आप अपने मस्तिष्क का नवीनीकरण करके कायाकल्प कर सकते हैं। “यह एक नए जीवन की कुंजी है। आपका मस्तिष्क एक रिकॉर्डिंग मशीन है और आपके द्वारा स्वीकार किए गए सारे विश्वास, छाप, राय और विचार आपके ज़्यादा गहरे, अवचेतन मन पर छाप छोड़ते हैं। लेकिन आप अपने मस्तिष्क को बदल सकते हैं। आप इसी समय अपने मन को उदात्त और ईश्वरीय विचारों से भर सकते हैं। इस तरह आप ख़ुद को भीतर की असीम आत्मा के सामंजस्य में ला सकते हैं। सौंदर्य, प्रेम, शांति, बुद्धिमत्ता, सृजनात्मक विचारों का दावा करें और असीम इसी के अनुरूप प्रतिक्रिया करेगा तथा आपके मस्तिष्क, शरीर और परिस्थितियों का कायाकल्प कर देगा। आपका विचार आपकी आत्मा, आपके शरीर और भौतिक जगत के बीच का माध्यम है।

कायाकल्प तब शुरू होता है, जब हम उन गुणों पर मनन करते हैं, सोचते हैं और अपनी

मानसिकता में सोखते हैं, जिनका हम अनुभव करना चाहते हैं और जिन्हें हम व्यक्त करना चाहते हैं। सैद्धांतिक ज्ञान अच्छा और ज़रूरी है। हमें यह जानना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। बहरहाल, वास्तविक कायाकल्प पूरी तरह से अंदरूनी उपहारों को प्रेरित सक्रिय करने पर निर्भर करता है — वे अदृश्य, अमूर्त और आध्यात्मिक शक्तियाँ, जो हममें से प्रत्येक को पूरी तरह दी गई है।

यह अतीत के दुख और कष्ट के बंधनों व दावों को अंततः पूरी तरह से तोड़ और घोल देता है। इसके अलावा, यह दिल के घावों और भावनात्मक दर्द का उपचार करता है। हम सभी मानसिक शांति चाहते हैं और हमें इसकी ज़रूरत होती है — जो सबसे बड़ा उपहार है — ताकि हम इसे अपने परिवेश में ला सकें। मानसिक और भावनात्मक दृष्टि से दैवी शांति पर मनन करें। कल्पना करें कि यह हमारे दिलोदिमाग़ में भर रही है, हमारे पूरे अस्तित्व में सराबोर हो रही है। "सबसे पहले कहें, शांति इस घर में आए।"

अगर आप शांति के अभाव, असामंजस्य, दुख और मनमुटाव पर मनन करते रहें, और फिर शांति मिलने की उम्मीद करें, तो यह तो वैसा ही है, जैसे आप सेवफल का बीज बोएँ और नाशपाती के फल मिलने की उम्मीद करें। इसमें कोई समझदारी नज़र नहीं आती है; यह तर्क के सारे बोध का उल्लंघन कर देता है। लेकिन संसार का यही तरीक़ा है।

इसे हासिल करने के लिए हमें अपने मस्तिष्क को बदलने के तरीक़े खोजने चाहिए। फलस्वरूप नवीनीकरण और कायाकल्प होगा और स्वाभाविक परिणाम के रूप में होगा। यह वांछनीय और आवश्यक है कि हम अपने जीवन का कायाकल्प कर दें, संसार के तरीक़े का अनुसरण करना छोड़ दें यानी पहले हो चुकी या प्रकट घटनाओं के अनुसार चयन या फ़ैसला न करें — और भौतिक घटना के पीछे के कारण को तय करना शुरू करें — और मानव-निर्मित सिद्धांतों, रूढ़ियों और रिवाज़ों के बजाय गूढ़, असली नव विचार के आंतरिक क्षेत्र में दाख़िल हो जाएँ।

मेटाफ़िज़िकल शब्द आधुनिक, संगठित आंदोलन का पर्याय बन चुका है। इसका इस्तेमाल सबसे पहले अरस्तू ने किया था। कुछ लोग मेटाफ़िज़िक्स को उनका महानतम ग्रंथ भी कहते हैं, जो उनका 13 वाँ वॉल्यूम था। शब्दकोश की परिभाषा है: "प्राकृतिक विज्ञान से परे; विशुद्ध अस्तित्व का विज्ञान।" मेटा का अर्थ है "ऊपर या परे।" तो मेटाफ़िज़िक्स का अर्थ है "भौतिकी से ऊपर या परे" — "शारीरिक से ऊपर या परे": स्वरूप के संसार से ऊपर या परे। मेटा इसके ऊपर है, मेटा मस्तिष्क का भाव है। इन सारी चीज़ों के पीछे है मेटा — मस्तिष्क।

बाइबल के अनुसार ईश्वर का भाव अच्छा है। "जो लोग ईश्वर की आराधना करते हैं, वे आत्मा या सत्य की आराधना करते हैं।" जब हममें अच्छाई, सत्य, सौंदर्य, प्रेम और सद्भाव की भावना होती है, तो यह दरअसल हमारे भीतर का ईश्वर है, जो हमारे माध्यम से काम कर रहा है। ईश्वर, सत्य, जीवन, ऊर्जा, आत्मा — क्या इसे परिभाषित नहीं किया जा सकता? इसे परिभाषित कैसे किया जा सकता है? "इसे परिभाषित करना इसे सीमा में बाँधना है।"

यह एक सुंदर, पुराने ध्यान में व्यक्त किया गया है:

"अपने सबसे आंतरिक अस्तित्व में एक सा, पूर्ण, अविभाजित, पूरा, आदर्श; मैं अविभाज्य हूँ, कालातीत हूँ,

निराकार हूँ, उम्र से रहित हूँ — बिना चेहरे, रूप या आकृति का हूँ। मैं हूँ मौन विचारमग्न उपस्थिति, जो सभी स्त्री-पुरुषों के हृदय में आसीन हूँ।"

हमें यह विश्वास और स्वीकार करना चाहिए कि हम जिसके भी सच होने की कल्पना करते हैं और महसूस करते हैं, वह घटित हो जाएगा। हम दूसरे के लिए जो भी कामना करते हैं, वह दरअसल हम ख़ुद के लिए कर रहे हैं।

इमर्सन ने लिखा था: "हम वही हैं, जो हम दिन भर सोचते हैं।" ज़्यादा से ज़्यादा सरल भाषा में कहें, तो आत्मा, विचार, मस्तिष्क और मेटा सभी चरम सृजनात्मक उपस्थिति और शक्ति की अभिव्यक्तियाँ हैं। जैसा यह प्रकृति में है (भौतिक नियम), सारी शक्तियों का इस्तेमाल दो तरीक़ों से किया जा सकता है। मिसाल के तौर पर, पानी हमारी सफ़ाई कर सकता है या हमें डुबा सकता है; बिजली जीवन को ज़्यादा आसान बनाने वाली शक्ति दे सकती है या फिर घातक बन सकती है। बाइबल में कहा गया है: "मैं प्रकाश को बनाता हूँ और अंधकार को बनाता हूँ; मैं शांति को बनाता हूँ, और बुराई को भी; मैं ईश्वर ये सारी चीज़ें करता हूँ — मैं घायल करता हूँ, मैं उपचार करता हूँ; मैं वरदान देता हूँ, मैं शाप देता हूँ।"

कोई भी क्रोधित देवी-देवता हमें दंड नहीं दे रहा है। हम ख़ुद मन का दुरुपयोग करके ख़ुद को दंड दे रहे हैं। हमें वरदान या लाभ तभी मिलता है, जब हम इस बुनियादी सिद्धांत और उपस्थिति को समझ लेते हैं। तब हम किसी नए विचार या पूरी अवधारणा को सीख सकते हैं और स्वीकार कर सकते हैं।

तो मेटाफ़िज़िक्स मूल कारण का अध्ययन है — इसका संबंध प्रभाव या परिणाम से उतना नहीं है, जो अब प्रकट हो चुका है, जितना प्रभाव या परिणाम उत्पन्न करने वाले से है। मेटाफ़िज़िक्स आध्यात्मिक विचारों की ओर वैसे ही जाती है, जैसे वैज्ञानिक भौतिक संसार की ओर जाते हैं। वे मन या परम कारण की जाँच करते हैं, जिससे दिखने वाला संसार प्रकट होता है या निकलता है। अगर मन बदल जाता है या कारण बदल जाता है, तो परिणाम भी बदल जाता है।

मेरी राय में मेटाफ़िज़िक्स की शक्ति और सुंदरता यह है कि यह किसी ख़ास धर्म तक सीमित नहीं है; यह तो सर्वव्यापी है। कोई यहूदी, ईसाई, मुसलमान, बौद्ध होने के बावजूद मेटाफ़िज़िशियन या तत्वज्ञानी हो सकता है।

कई कवि, वैज्ञानिक और दार्शनिक किसी धर्म का दावा नहीं करते हैं; उनका विश्वास मेटाफ़िज़िकल होता है।

ईसा मसीह माहिर तत्वज्ञानी थे। वे न सिर्फ़ मन को समझते थे, बल्कि दूसरों को ऊपर उठाने, प्रेरित करने और उनका उपचार करने के लिए इसका इस्तेमाल भी करते थे।

जब महात्मा गाँधी से पूछा गया कि उनका धर्म क्या था, तो उनका जवाब था, "मैं ईसाई... यहूदी... बौद्ध... हिन्दू हूँ... मैं ये सभी हूँ।"

"नव विचार" शब्दावली लोकप्रिय और सामान्य बन चुकी है। इसमें बहुत बड़ी संख्या में चर्च, केंद्र, प्रार्थना समूह और संस्थाएँ शामिल हैं। यह तत्वज्ञानी आंदोलन बन चुकी है, जो असीम जीवन, हर व्यक्ति की आंतरिक गरिमा और मूल्य या महत्त्व के साथ मानवता का एकत्व उजागर

करती है। दरअसल, नव विचार में ज़ोर संगठन या उपयोग के बजाय इंसान पर दिया जाता है। लेकिन नव विचार में कुछ भी नया नहीं है। वास्तव में तत्वज्ञान सभी धार्मिक नीतियों में सबसे पुराना है। यह ईश्वर और अच्छाई को ज़्यादा से ज़्यादा व्यक्त करने का हमारा उद्देश्य प्रकट करता है। "मैं तुम्हें जीवन देने आया हूँ और ज़्यादा प्रचुरता से देने आया हूँ।" यह हमारी पहचान को उजागर करता है: "असीम की संतान" — कि हमसे प्रेम किया जाता है और सृजनात्मक पवित्र (पूर्ण) के आवश्यक हिस्सों के रूप में हमारा आध्यात्मिक महत्त्व है।

मेटाफ़िज़िक्स हमें अपने दैवी स्रोत की ओर लौटने में सहायता करती है और सक्षम बनाती है। यह अलगाव और विभक्ति के अहसास को ख़त्म कर देती है। यह किसी बंजर, ग़ैर-दोस्ताना मरुस्थल में हमारे भटकने का अंत कर देती है।

तत्वज्ञान हमेशा, इस समय और आगे भी, सभी के लिए उपलब्ध रहेगा — यह हमेशा धैर्य से हमारी खोज और प्रकटीकरण का इंतज़ार करता रहेगा।

तत्वज्ञान के समर्थकों ने इसका परिचय कई हज़ार लोगों से कराया है। इसका निर्माण क्रमशः हुआ है और आम तौर पर इसका उद्गम फ़िनीज़ पी. क्विम्बी से माना जाता है। न्यू थॉट मैग्ज़ीन के एक रोचक लेख में क्विम्बी ने 1837 में अपने काम के बारे में लिखा। कई वर्षों तक वशीकरण और सम्मोहन पर प्रयोग करने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि सम्मोहन नहीं, बल्कि अवचेतन मन की कंडीशनिंग की बदौलत बदलाव होता है। हालाँकि क्विम्बी की औपचारिक शिक्षा बहुत कम थी, लेकिन उनका दिमाग़ प्रतिभाशाली और खोजी था तथा वे बहुत मौलिक चिंतक थे। इसके अतिरिक्त वे बहुत उर्वर लेखक और डायरी-लेखक भी थे। उनकी खोज के विवरण प्रकाशित हो चुके हैं। वे अंततः बाइबल के अद्भुत विद्यार्थी बने। उन्होंने ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट के दो-तिहाई उपचारों को करके दिखाया। उन्होंने पाया कि बाइबल के कई अंशों के सच्चे अर्थ के बारे में इतनी दुविधा थी कि ईसा मसीह की ग़लत समझ और ग़लत व्याख्या उत्पन्न हो गई थी।

पूरी बीसवीं सदी में बहुत सारे प्रेरक शिक्षकों, लेखकों, पादरियों और व्याख्यान देने वालों ने नव विचार आंदोलन में योगदान दिया। शिकागो युनिवर्सिटी के डॉ. चार्ल्स ई ब्रैडेन ने इन लोगों को "विद्रोही आत्माएँ" कहा, क्योंकि ये स्त्री-पुरुष विद्यमान रूढ़िवाद, कर्मकांड और धार्मिक मतों के प्रति विद्रोह करने वाली सच्ची आत्माएँ थे। विसंगतियों पर विद्रोह करने से धर्म का डर उत्पन्न होता था। डॉ. ब्रैडेन यथास्थिति से संतुष्ट नहीं रहे और उन्होंने अनुकरण करने से इंकार कर दिया।

नव विचार जीवन के सत्यों का व्यक्तिगत अभ्यास है — एक क्रमशः, शामिल करने वाली प्रक्रिया है। हम आज थोड़ा सीख सकते हैं, कल थोड़ा और ज़्यादा। कभी भी हम किसी ऐसे बिंदु का अनुभव नहीं कर सकते, जहाँ खोजने के लिए कुछ बचे ही नहीं। यह असीमित, अनंत और शाश्वत है। हमारे पास वह सारा समय है, जिसकी हमें ज़रूरत है — अनंत काल। कई लोग अपने साथ अधीर हो जाते हैं और उसके साथ भी, जिसे वे असफलता मानते हैं। वैसे पीछे पलटकर देखने पर हमें पता चलता है कि वे सीखने के दौर रहे हैं और हमें वे ग़लतियाँ दोबारा करने की ज़रूरत नहीं है। प्रगति बहुत धीमी नज़र आ सकती है — "धैर्य में, अपनी आत्मा को धारण करो।"

डॉ. मर्फ़ी की पुस्तक प्रे युअर वे थ्रू इट: द रिवीलेशन में उन्होंने टिप्पणी की कि स्वर्ग "जागरूकता" है और पृथ्वी "प्रकटीकरण।" आपका नया स्वर्ग आपका नया नज़रिया है — आपकी चेतना का नया आयाम। जब हम आध्यात्मिक दृष्टि से देखते हैं, तो हमें अहसास होता है कि पूर्ण में हम सभी को सौहार्द, असीम प्रेम, बुद्धिमत्ता, पूर्ण शांति, आदर्श का वरदान मिला है। इन सत्यों के साथ जुड़ें, डर के समुद्र को शांत करें, आत्मविश्वास व विश्वास हासिल करें और ज़्यादा शक्तिशाली बन जाएँ।

इस श्रंखला की पुस्तकों में डॉ. मर्फ़ी ने इस शक्ति की गहराई में शोध करके इसे आसानी से समझने वाले तथा व्यावहारिक रूप में रखा, ताकि आप अपने जीवन में इस पर तुरंत अमल कर सकें।

यह पुस्तक और इस श्रंखला की अन्य पुस्तकों में व्याख्यानों, प्रवचनों और रेडियो उद्बोधनों का समावेश है, जिनमें डॉ. मर्फ़ी अवचेतन मन की शक्ति से आपकी क्षमता को अधिकतम करने की तकनीकें बताते हैं।

चूँकि डॉ. मर्फ़ी एक प्रोटेस्टेंट पादरी थे, इसलिए उन्होंने बाइबल के कई उदाहरण और उद्धरण दिए हैं। लेकिन इन उद्धरणों के पीछे की अवधारणाओं को किसी ख़ास धर्म से जुड़ा न मानें। वास्तव में, उनके संदेश सर्वव्यापी हैं और ज़्यादातर धर्मों तथा दर्शनों में सिखाए जाते हैं। उन्होंने अक्सर दोहराया था कि ज्ञान का सार जीवन के नियम में है, विश्वास के नियम में है। यह कैथोलिक, प्रोटेस्टेंट, मुस्लिम या हिन्दू विश्वास में नहीं है। यह तो विशुद्ध और सरल विश्वास में है। "दूसरों के साथ वैसा ही करो, जैसा आप अपने लिए चाहते हो।"

1981 में उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी डॉ. जीन मर्फ़ी ने उनकी धर्मसेवा जारी रखी। 1986 में दिए गए एक व्याख्यान में उन्होंने अपने स्वर्गीय पति का उद्धरण देते हुए उनके दर्शन को दोहराया:

"मैं पुरुषों और स्त्रियों को उनका दैवी उद्गम बताना चाहता हूँ और उनके भीतर मौजूद शक्तियों के बारे में भी। मैं यह जानकारी देना चाहता हूँ कि यह शक्ति उनके भीतर है, इसलिए वे अपने ख़ुद के सहाय हैं और अपनी मुक्ति हासिल करने में ख़ुद सक्षम हैं। यही बाइबल का संदेश है और आज हमारी नब्बे प्रतिशत दुविधा इस कारण है, क्योंकि हमने बाइबल के जीवन बदलने वाले सत्यों की ग़लत, शाब्दिक व्याख्या कर ली है।"

"मैं बहुसंख्यक लोगों, सड़क के आदमी को, उस औरत को जो कर्तव्य के बोझ से दबी जा रही है और अपने गुणों तथा योग्यताओं को दमित कर रही है; मैं हर अवस्था या चेतना के स्तर पर मौजूद दूसरे लोगों की मदद करना चाहता हूँ, ताकि वे मन के चमत्कार सीखें।"

उन्होंने अपने पति के बारे में कहा था: "वे व्यावहारिक संन्यासी थे, उनमें विद्वान की बौद्धिकता थी, सफल प्रबंधक का दिमाग़ था, कवि का हृदय था। उनका संदेश सार रूप में यह था: "आप सम्राट हैं, अपने संसार के शासक हैं, क्योंकि आप ईश्वर के साथ एक हैं।"

डॉ. मर्फ़ी का यह दृढ़ विश्वास था कि यह ईश्वर की योजना थी कि लोग स्वस्थ, दौलतमंद और प्रसन्न रहें। वे उन लोगों और धर्मशास्त्रियों के विरोध में थे, जो यह दावा करते थे कि इच्छा बुरी चीज़ है और जो लोगों से सारी इच्छा का दमन करने को कहते थे। डॉ. मर्फ़ी ने कहा कि इच्छा को ख़त्म करने का अर्थ है उदासीनता — कोई भावना नहीं, कोई कार्य नहीं। उन्होंने

सिखाया कि इच्छा ईश्वर का उपहार है। इच्छा करना बिलकुल सही है। हम कल जो थे, आज उससे ज़्यादा और बेहतर बनने की इच्छा करना स्वस्थ है। स्वास्थ्य, प्रचुरता, साहचर्य और सुरक्षा की आपकी इच्छा, ये ग़लत कैसे हो सकती हैं?

इच्छा ही सारी प्रगति का मूल है। इच्छा के बिना कोई चीज़ हासिल नहीं होती है। यह सृजनात्मक शक्ति है और इसे सृजनात्मक दिशा देनी चाहिए। मिसाल के तौर पर, अगर आप ग़रीब हैं, तो दौलत की इच्छा भीतर से उमड़ती है; अगर बीमार हैं, तो स्वास्थ्य की इच्छा; अगर एकाकी हैं, तो साहचर्य की, प्रेम की इच्छा।

हमें यह विश्वास होना चाहिए कि हम अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं। लंबे समय तक क़ायम विश्वास — चाहे यह सच्चा हो, झूठा हो या सिर्फ़ तटस्थ हो — आत्मसात हो जाता है, जब यह हमारी मानसिकता में सावधानी से समाहित होता है। जब तक कि विपरीत प्रकृति के विश्वास से यह रद्द न हो जाए, देर-सबेर यह आकार लेता है और तथ्य, आकार, परिस्थिति, स्थिति, जीवन की घटनाओं के रूप में व्यक्त या अनुभूत होता है। नकारात्मक विश्वासों को सकारात्मक में बदलने और इस तरह अपने जीवन को बेहतर बनाने की शक्ति हमारे भीतर होती है।

आप आदेश देते हैं और आपका अवचेतन मन निष्ठापूर्वक उस आदेश को मानता है। आप अपने चेतन मन में जो विचार रखते हैं, उसकी प्रकृति के अनुरूप ही आपका अवचेतन मन प्रतिक्रिया करेगा।

मनोवैज्ञानिक और मनोविश्लेषक बताते हैं कि जब विचार आपके अवचेतन मन तक पहुँचाए जाते हैं, तो मस्तिष्क की कोशिकाओं पर उनकी छाप छूट जाती है। जैसे ही आपका अवचेतन मन किसी विचार को स्वीकार करता है, यह उस पर तुरंत अमल करने में जुट जाता है। यह विचारों के साहचर्य द्वारा काम करता है और अपने उद्देश्य को साकार करने के लिए ज्ञान के हर उस अंश का इस्तेमाल करता है, जो आपने अपने जीवनकाल में एकत्रित किया है। यह आपके भीतर की असीमित शक्ति, ऊर्जा और बुद्धि का सहारा लेता है। यह अपना काम पूरा करने के लिए प्रकृति के सभी नियमों का इस्तेमाल करता है। कई बार तो यह आपकी मुश्किलों का समाधान तुरंत कर देता है, लेकिन बाक़ी समय इसमें कई दिन, सप्ताह या इससे ज़्यादा समय भी लग सकता है।

आपके चेतन मन की आदतन सोच आपके अवचेतन मन में गहरे खाँचे बना देती है। यह आपके लिए बहुत लाभदायक है, बशर्ते आपके आदतन विचार सौहार्दपूर्ण, शांत और सृजनात्मक हों।

दूसरी ओर, अगर आप डर, चिंता और सोच-विचार के अन्य विनाशकारी रूपों में संलग्न हों, तो उपचार यह है कि आप अपने अवचेतन मन के सर्वशक्तिमान होने को पहचान लें और स्वतंत्रता, ख़ुशी, आदर्श स्वास्थ्य तथा समृद्धि की घोषणा करें। आपका अवचेतन मन सृजनात्मक है और आपके दैवी स्रोत के साथ एक है, इसलिए यह उस स्वतंत्रता और ख़ुशी को उत्पन्न करने की ओर बढ़ेगा, जिसका आपने गंभीरता से आदेश दिया है।

अब पहली बार डॉ. मर्फ़ी के व्याख्यानों को छह नई पुस्तकों में संयोजित, संपादित और अद्यतन किया गया है, जो उनकी नसीहत को 21 वीं सदी में पेश करती हैं। डॉ. मर्फ़ी के मौलिक

व्याख्यानों का विस्तार करने और बढ़ाने के लिए हमने डॉ. जीन मर्फ़ी के कुछ व्याख्यानों से भी सामग्री ली है और उन लोगों के उदाहरण भी जोड़े हैं, जिनकी सफलता डॉ. मर्फ़ी के दर्शन को प्रतिबिंबित करती है।

इस श्रंखला की पुस्तकें हैं:

- मैक्ज़िमाइज़ युअर पोटेंशियल थ्रू द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड टु क्रिएट वेल्थ एंड सक्सेस।
- मैक्ज़िमाइज़ युअर पोटेंशियल थ्रू द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड टु डेवलप सेल्फ़ कॉन्फ़िडेंस एंड सेल्फ़ एस्टीम।
- मैक्ज़िमाइज़ युअर पोटेंशियल थ्रू द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड फ़ॉर हेल्थ एंड वाइटैलिटी।
- मैक्ज़िमाइज़ युअर पोटेंशियल थ्रू द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड टु ओवरकम फ़ियर एंड वरी।
- मैक्ज़िमाइज़ युअर पोटेंशियल थ्रू द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड फ़ॉर अ मोर स्पिरिचुअल लाइफ़।
- मैक्ज़िमाइज़ युअर पोटेंशियल थ्रू द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड फ़ॉर एन एनरिच्ड लाइफ़।

इन पुस्तकों को पढ़ने भर से ही आपकी ज़िंदगी बेहतर नहीं हो जाएगी। अपनी क्षमता को अधिकतम करने के लिए आपको इन सिद्धांतों का अध्ययन करना होगा, उन्हें दिल में उतारना होगा, उन्हें अपनी मानसिकता में दाख़िल करना होगा और अपने जीवन के हर पहलू में उन्हें अपनी नीति का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा।

आर्थर आर पेल, पीएचडी
संपादक
फ़रवरी 2005

1

दौलत की मास्टर चाबी

पूरा संसार और इसके सारे ख़ज़ाने, समुद्र, हवा और पृथ्वी यहाँ थे, जब आप पैदा हुए थे। अपने आस-पास की अनकही और अनखोजी अमीरी के बारे में सोचें, जो इसे अस्तित्व में लाने के लिए मौजूद प्रज्ञा का इंतज़ार कर रही है। दौलत को हवा की तरह देखें, जिसमें आप साँस लेते हैं। यह मानसिक नज़रिया अपनाएँ। इमर्सन ने इसे सार रूप में व्यक्त किया था, जब एक महिला ने उनसे दौलतमंद बनने का तरीक़ा पूछा था। वे उस महिला को समुद्र तक ले गए और बोले, "निगाह डालकर बताएँ कि आपको क्या दिखता है।" महिला ने कहा, "ओह, बहुत सारा पानी है, है ना?" उन्होंने कहा, "दौलत को भी इसी तरह देखें और यह आपके पास हमेशा रहेगी।"

यह अहसास कर लें कि दौलत किसी ज्वार की तरह हमेशा आती-जाती रहती है। एक सेल्स मैनेजर ने मुझे बताया कि उसके एक सहयोगी ने कंपनी के विस्तार का एक विचार एक मिलियन डॉलर में बेचा था। आपके पास भी भारी दौलत वाला कोई विचार हो सकता है। विचार आपके मस्तिष्क में मौजूद एक चित्र है। दौलत आपके मस्तिष्क में मौजूद एक विचार है। दौलत एक मानसिक नज़रिया है। उस सेल्स मैनेजर ने मुझे यह भी बताया कि इस वक़्त अमेरिका में जितने ज़्यादा मिलियनेअर हैं, उतने इतिहास में किसी समय नहीं रहे।

आपके पास भी भारी दौलत वाला विचार हो सकता है; हाँ, आप यह कर सकते हैं। यही नहीं, आप यहाँ अपने भीतर की चकाचौंध को मुक्त करने और विलासिता, सौंदर्य तथा जीवन की अमीरी से घिरे रहने के लिए आए हैं। यह सीख लें कि धन-दौलत, भोजन, वस्त्र — इन सभी चीज़ों के बारे में सही नज़रिया रखना ज़रूरी है। जब आप दौलत से दोस्ती कर लेते हैं, तो यह आपके पास हमेशा ज़्यादा मात्रा में रहेगी। ज़्यादा पूर्ण, ज़्यादा समृद्ध, ज़्यादा खुशहाल और

ज़्यादा अद्भुत जीवन जीने की इच्छा सामान्य और स्वाभाविक है। पैसे को ईश्वर का विचार मानें, जो संसार के देशों के आर्थिक स्वास्थ्य को क़ायम रख रहा है।

अगर आपके जीवन में पैसा खुलकर प्रसारित हो रहा है, तो आप आर्थिक दृष्टि से स्वस्थ हैं। उसी तरह जिस तरह जब आपका रक्त खुलकर प्रसारित हो रहा है, तो आप संकुलन से मुक्त हैं। इसी समय पैसे के सच्चे महत्त्व को देखना शुरू करें। इसी समय विनिमय के प्रतीक के रूप में जीवन में इसकी भूमिका को देखना शुरू करें। बस यह यही है। प्राचीन काल से अब तक इसके कई रूप बदले हैं। आपके लिए पैसे का मतलब अभाव से स्वतंत्रता होना चाहिए। इसका मतलब सौंदर्य, विलासिता, प्रचुरता, सुरक्षा का अहसास और परिष्कार होना चाहिए। आप इसके हक़दार हैं।

क्या ऐसा है कि कुछ लोगों को इस संसार की दौलत का अनुभव करने और आनंद लेने के लिए चुना गया है या यह उनके नसीब में लिख दिया गया है — और बाक़ी लोगों की तक़दीर में मुश्किलों और वंचना का कष्ट उठाना बदा है? दरअसल ऐसा क़तई नहीं है। यह हमारे अंदर की सृजनात्मक शक्ति और उपस्थिति का स्पष्ट कथन है: पल दर पल, यह हम पर प्रतिक्रिया कर रही है, हमारी रोज़मर्रा की स्थितियों और परिस्थितियों को उत्पन्न कर रही है — "हमारे मन के विचारों, हमारे हृदय के मनन" के अनुरूप प्रतिक्रिया कर रही है, निर्माण कर रही है — हमारे ज़्यादा गहरे, अवचेतन मन के अनुरूप।

जो लोग जीवन की सच्ची प्रचुरता और समृद्धि का आनंद लेते हैं, वे वही हैं, जो मन और विचार की सृजनात्मक शक्ति के बारे में जागरूक हैं। सच्ची समृद्धि "ईमानदारी का लाभ" है। वे इसके महत्त्व तथा प्रभाव को जानते हैं। जब वे अपने ज़्यादा गहरे मन पर आध्यात्मिक, मानसिक तथा भौतिक समृद्धि के विचारों की छाप लगातार छोड़ते हैं — तो उनका ज़्यादा गहरा मन स्वतः ही प्रतिक्रिया करता है और समृद्धि को उनके अनुभव में साकार करने लगता है।

यह जीवन का महान और सर्वव्यापी नियम है — जो हर व्यक्ति में सक्रिय और प्रभावी है। यह हमेशा सच रहा है — और हमेशा रहेगा। हमारे गहरे, दिली विश्वास और चुने हुए विकल्प, हमारी जागरूकता और समझ अनुभवों, घटनाओं और परिस्थितियों के रूप में प्रकट होते हैं। वे संसार में प्रकट होने वाले अनुभव बन जाते हैं — जो हमारे विचारों की प्रकृति के अनुरूप होते हैं।

यदि हम इस बारे में जागरूक बनें और विश्वास करें कि हम एक उदार, बुद्धिमान और असीमित रूप से उत्पादक सृष्टि में रहते हैं — जो किसी प्रेमपूर्ण ईश्वर या देवी-देवता ने बनाई है और जो इसे शासित करता है — तो हमारा विश्वास हमारी परिस्थितियों और गतिविधियों में प्रकट हो जाएगा।

इसी तरह, अगर मेरा प्रबल विश्वास यह है, "मैं असीम सर्वव्यापी दौलत के लायक़ नहीं हूँ, कि इसके बिना रहना मेरी तक़दीर में बदा है — दौलत दूसरों के लिए है," तो यह विश्वास हमारी परिस्थितियों और गतिविधियों में प्रतिबिंबित हो जाएगा।

बुनियादी तौर पर, यही दो विरोधी अवधारणाएँ या विश्वास ही यह तय करते हैं कि हम भौतिक समृद्धि के मान से अमीर हैं या ग़रीब। इसीलिए "अमीर लोग ज़्यादा अमीर बनते हैं और ग़रीब लोग ज़्यादा ग़रीब बनते हैं।"

अमीरी के विचार अमीरी उत्पन्न करते हैं; ग़रीबी के विचार ग़रीबी उत्पन्न करते हैं। मैं जानता हूँ कि ग़रीबी की हालत में रहते हुए समृद्धि और दौलत के बारे में सोचना काफ़ी मुश्किल होता है और इसमें काफ़ी प्रयास की आवश्यकता होती है। इसके अलावा मैं यह भी जानता हूँ कि यह काम ईमानदारी और अखंडता से किया जा सकता है। इसके लिए इस निरंतर विश्वास की ज़रूरत होती है कि यह विचार साकार होगा। जो भी इंसान इस अनुशासित विचार का अभ्यास करता है, वह देर-सबेर लेकिन हमेशा दौलत हासिल करेगा।

अहम बात है "अनुशासित सोच।" मस्तिष्क का अनुशासन तब शुरू होता है, जब हम सत्य के लिए उत्सुक होते हैं, इच्छुक होते हैं, आकांक्षी होते हैं। इसमें बस इतनी ज़रूरत है कि हम अपने दिली विश्वासों और राय, आदर्शों और इच्छाओं की जाँच करें तथा उन्हें समझें। ये भी संभावना के क्षेत्र में हैं। हमें "अपने मस्तिष्क का नवीनीकरण करना चाहिए — एक नए तरीक़े से सोचना चाहिए।"

ग़रीब होना एक रोग है। यह एक मानसिक नज़रिया है। एक युवा महिला बहुत अच्छी लेखिका थी, जिसके कई लेख प्रकाशन के लिए स्वीकार हो गए थे। उसने एक बार मुझसे कहा, "मैं पैसे के लिए नहीं लिखती हूँ।" मैंने उससे कहा, "पैसे के साथ क्या ग़लत है?" यह सच है कि आप पैसे के लिए नहीं लिखती हैं, लेकिन यह मेहनत क़ीमत की हक़दार है। आप जो लिखती हैं, वह दूसरों को प्रेरित करता है, ऊपर उठाता है और प्रोत्साहित करता है। जब आप सही नज़रिया अपना लेती हैं, तो आर्थिक भुगतान अपने आप खुलकर आपकी ओर आएगा।

वह सचमुच पैसे को नापसंद करती थी। एक बार तो उसने पैसे को गंदा पैसा तक कहा। मुझे लगता है कि यह बचपन की याद होगी, जब उसने अपनी माँ या किसी दूसरे के मुँह से सुना होगा कि पैसा बुरा है या पैसे का प्रेम ही सारी बुराई की जड़ है, और यह सब बिना सोचे-समझे। यह कहना निरा अंधविश्वास है कि पैसा बुरा या गंदा है। इस महिला का अवचेतन नक़्शा यह था कि ग़रीबी में किसी न किसी तरह का सद्गुण है। ऐसा नहीं है। यह एक बीमारी है, रोग है। मैंने उसे समझाया कि सृष्टि में कोई बुराई नहीं है — अच्छाई और बुराई लोगों के विचारों तथा प्रेरणाओं में थी। सारी बुराई जीवन की ग़लत व्याख्याओं और मन के नियमों के दुरुपयोग से आती है।

दूसरे शब्दों में, अज्ञान ही एकमात्र बुराई है; एकमात्र परिणाम कष्ट है। यूरेनियम, चाँदी, सीसे, ताँबे, लोहे, कोबाल्ट, निकल, कैल्शियम या डॉलर के नोट को बुरा घोषित करना मूर्खता होगी। यह कितना बकवास, विचित्र और मूर्खतापूर्ण है! एक या दूसरी धातु के बीच फ़र्क़ सिर्फ़ केंद्रीय नाभिक के चारों ओर घूमने वाले इलेक्ट्रॉन्स की संख्या और गति का होता है। सौ डॉलर के नोट जैसा कागज का टुकड़ा हानिरहित है। इसमें और ताँबे या सीसे में एकमात्र फ़र्क़ अणुओं और परमाणुओं का है, जिनके इलेक्ट्रॉन और प्रोटॉन धन के भौतिक प्रमाणों के लिए अलग तरीक़े से व्यवस्थित हैं।

यहाँ वह सरल तकनीक दी जा रही है, जिसका इस्तेमाल उसने अपनी दौलत को कई गुना करने के लिए किया: "मेरी लेखनी लोगों के दिलोदिमाग़ को वरदान देने, उपचार करने, प्रेरित करने, ऊपर उठाने और गरिमामय बनाने के लिए आगे बढ़ती है। मुझे अद्भुत तरीक़े से दैवी प्रतिफल मिलता है। मैं पैसे को दैवी वस्तु मानती हूँ, क्योंकि हर चीज़ एक ही आत्मा से बनी है। मैं जानती हूँ कि पदार्थ और आत्मा एक हैं। पैसा मेरे जीवन में लगातार प्रवाहित हो रहा है और

मैं बुद्धिमानी से तथा सृजनात्मक तरीक़े से इसका इस्तेमाल करती हूँ। पैसा मेरी ओर स्वतंत्रता से, ख़ुशी से और अंतहीन रूप से प्रवाहित होता है। पैसा ईश्वर के मन में मौजूद एक विचार है। यह अच्छा है, बहुत अच्छा है।"

यह एक अद्भुत प्रार्थना है। यह इस बेहूदा अंधविश्वास को ख़त्म कर देती है कि पैसा बुरा है या ग़रीबी में कोई सद्गुण है या ईश्वर हमें ग़रीबी में रखना चाहता है। यह सिर्फ़ घोर अज्ञान है। पैसे के प्रति इस युवती के बदले नज़रिये ने उसके जीवन में चमत्कार कर दिया। यह आपके जीवन में भी चमत्कार कर देगा। उसने इस अजीब, अंधविश्वास को पूरी तरह से मिटा लिया कि पैसा गंदा या बुरा था। उसे अहसास हो गया कि पैसे की मौन निंदा की वजह से ही पैसा उसके पास आने के बजाय उससे दूर भाग रहा है। उसकी आमदनी तीन महीने में ही तिगुनी हो गई, जो उसकी आर्थिक समृद्धि की सिर्फ़ शुरुआत थी।

कुछ साल पहले मैंने एक धर्मगुरु से बात की, जिसके अनुयायी काफ़ी तादाद में थे। उन्हें मन के नियमों का उत्कृष्ट ज्ञान था और वे अपना यह ज्ञान दूसरों को देने में सक्षम थे। लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। उन्हें लगता था कि उनके पास अपनी इस दशा का एक अच्छा बहाना था और वे न्यू टेस्टामेंट का यह उद्धरण बता देते थे: "क्योंकि पैसे का प्रेम ही सारी बुराई की जड़ है।" वे यह भूल गए कि उसी अध्याय में बाद में लिखा गया है कि ईश्वर लोगों को दौलत इसलिए देता है, ताकि वे दूसरों की मदद कर सकें। दूसरे शब्दों में, यह इसे पृष्ठभूमि से बाहर निकाल लेता है। लोगों को सलाह दी जाती है कि वे जीवंत ईश्वर में अपना विश्वास रखें, जिसने हमें आनंद करने के लिए इतनी सारी अच्छी चीज़ें हैं।

बाइबल की भाषा में प्रेम का मतलब है अपनी निष्ठा, वफ़ादारी और विश्वास सभी चीज़ों के स्रोत यानी ईश्वर या जीवित आत्मा या आपके भीतर के जीवन सिद्धांत को देना। इसलिए आपको अपनी निष्ठा, वफ़ादारी और विश्वास निर्मित चीज़ों को नहीं देना है, बल्कि निर्माता को देना है, सृष्टि में मौजूद हर चीज़ के शाश्वत स्रोत को देना है, अपनी साँस के स्रोत को देना है, अपने जीवन के स्रोत को, अपने सिर के बालों के स्रोत को, अपने दिल की धड़कन के स्रोत को, सूर्य और चंद्र और तारों के स्रोत को, संसार के स्रोत को और उस धरती के स्रोत को, जिस पर आप चलते हैं।

अगर आप कहते हैं, "मैं तो सिर्फ़ पैसा चाहता हूँ, और पैसे के अलावा कुछ नहीं चाहता; यह मेरा ईश्वर है," तो इसका मतलब है कि आपके लिए पैसे के अलावा कोई चीज़ मायने नहीं रखती है। ज़ाहिर है, ऐसी स्थिति में आप पैसे हासिल कर सकते हैं; लेकिन आप यहाँ संतुलित जीवन जीने के लिए आए हैं। आपको अपने जीवन के सारे चरणों में शांति, सौहार्द, सौंदर्य, मार्गदर्शन, प्रेम, ख़ुशी और पूर्णता का भी दावा करना चाहिए। आप आज के संसार में साहस, विश्वास, प्रेम, सद्भाव और ख़ुशी के बिना कैसे जी सकते हैं? पैसे के साथ कुछ भी, एक भी चीज़ ग़लत नहीं है; लेकिन यह जीवन में एकमात्र लक्ष्य नहीं है। पैसे कमाने को जीवन का मुख्य लक्ष्य बनाना ग़लत होगा, एक ग़लत निर्णय। इसमें बुरा कुछ भी नहीं है, लेकिन आप असंतुलित और एकतरफ़ा हो जाएँगे।

आपको अपने छिपे गुणों को व्यक्त करना चाहिए। आपको जीवन में अपनी सच्ची जगह खोजनी चाहिए। आपको दूसरों के विकास, ख़ुशी और सफलता में योगदान देने की ख़ुशी

अनुभव करना चाहिए। हम सब यहाँ देने के लिए आए हैं। संसार को अपने गुणों का लाभ दें। ईश्वर ने आपको हर चीज़ दी है। ईश्वर ने ख़ुद को आपको दिया है। आपको बड़ा भारी कर्ज़ चुकाना है, क्योंकि आप हर चीज़ के लिए असीमित के कर्ज़दार हैं। इसलिए आप यहाँ अपने आदर्शों, अपने स्वप्नों और अपनी आकांक्षाओं को जीवन, प्रेम और सत्य देने आए हैं। आप यहाँ नाव खेने आए हैं, पहिए में हाथ लगाने आए हैं और न सिर्फ़ अपने बच्चों की, बल्कि पूरे संसार की सफलता और ख़ुशी में योगदान देने आए हैं।

बाक़ी हर चीज़ को नज़रअंदाज़ करके सिर्फ़ पैसे का संग्रह करने से इंसान असंतुलित, एकतरफ़ा और कुंठित हो जाता है। हाँ, जब आप अपने अवचेतन के नियमों पर सही तरीक़े से अमल करते हैं, तो आपके पास वह सारा पैसा हो सकता है, जो आप चाहते हैं, साथ ही आपके पास मानसिक शांति, सौहार्द, पूर्णता और संतुष्टि भी हो सकती है। आप इससे बहुत सारी भलाई कर सकते हैं। प्रकृति की हर चीज़ की तरह ही आप इसका इस्तेमाल समझदारी से, विवेक से और सृजनात्मक तरीक़े से कर सकते हैं। आप अपने ज्ञान, अपने दर्शन का इस्तेमाल सृजनात्मक तरीक़े से कर सकते हैं; या फिर आप साम्यवाद या ऐसी ही चीज़ों से संवेदनशील मस्तिष्कों को संक्रमित कर सकते हैं।

मैंने इस पादरी को बताया कि वे बाइबल की पूरी तरह ग़लत व्याख्या कर रहे थे और काग़ज़ के टुकड़ों या धातुओं जैसे तटस्थ तत्वों को बुरा घोषित कर रहे थे, क्योंकि कोई भी चीज़ अच्छी नहीं है, केवल सोच ही इसे ऐसा बनाती है। वे अपनी पत्नी, परिवार वालों और समुदाय के लोगों के लिए पैसे से की जा सकने वाली भलाई के चित्र देखने लगे। वे साहस के साथ, नियमित रूप से और सुनियोजित तरीक़े से दावा करने लगे: "असीम आत्मा मेरे सामने सेवा करने के बेहतर तरीक़े उजागर करती है। मैं ऊपर से प्रेरित और प्रकाशित हूँ। मैं अपने सभी श्रोताओं को उस एक उपस्थिति और शक्ति में विश्वास और दैवी प्रेरणा देता हूँ। मैं पैसे को ईश्वर का विचार मानता हूँ और यह मेरे जीवन और मेरे आस-पास के सभी लोगों के जीवन में लगातार संचारित हो रहा है। मैं ईश्वर के मार्गदर्शन और ईश्वर की बुद्धिमानी तले समझदारी से, विवेक से और सृजनात्मक तरीक़े से इसका इस्तेमाल करता हूँ।"

यह प्रार्थना करने की आदत डालने के बाद इस युवा पादरी को यह विश्वास था कि यह उनके अवचेतन मन की शक्तियों को सक्रिय कर देगी। आज उनके पास एक सुंदर चर्च है, जैसी वे चाहते थे (लोगों ने इसे उनके लिए बनाया)। उनका एक रेडियो कार्यक्रम है और उनके पास वह सारा पैसा है, जिसकी ज़रूरत उन्हें अपने व्यक्तिगत, सांसारिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं के लिए है। मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि अब वे पैसे की आलोचना नहीं करते हैं। अगर आप ऐसा करते हैं, तो यह आपसे दूर उड़ जाएगा, क्योंकि आप उसी की निंदा कर रहे हैं, जिसके लिए आप प्रार्थना कर रहे हैं।

मैं आपको जो तकनीक बताने वाला हूँ, उसका अनुसरण करें। इसके बाद आपके पास जीवन में कभी दौलत की कमी नहीं रहेगी, क्योंकि यह दौलत की मास्टर चाबी है। पहला क़दम अपने मन में यह तर्क लाना है कि ईश्वर या जीवन सिद्धांत या जीवंत आत्मा सृष्टि का स्रोत है, यह अंतरिक्ष की आकाशगंगाओं और हर दिखने वाली चीज़ का स्रोत है, चाहे आप आसमान में तारे देखें, पहाड़ देखें, झील देखें, धरती में छिपे भंडार देखें, समुद्र में छिपे भंडार, सारे पशु-पक्षी

और पौधे। जीवन सिद्धांत ने आपको जन्म दिया था और ईश्वर की सारी शक्तियाँ, गुण व विशेषताएँ आपके भीतर हैं। इस सरल निष्कर्ष पर पहुँचें कि आप जो भी चीज़ देखते हैं और जिसके बारे में जागरूक हैं, वह हर चीज़ असीम या जीवन सिद्धांत के अदृश्य मस्तिष्क से बाहर निकली है। जिस भी चीज़ का आविष्कार हुआ है और जिस भी चीज़ को बनाया गया है, वह अदृश्य मानव मस्तिष्क से बाहर निकली है और मानव मन — और ईश्वर का मन एक है, क्योंकि केवल एक ही मन है। वह मन सभी लोगों के लिए साझा है। हर व्यक्ति उसका एक प्रवेश द्वार और निर्गम द्वार है।

इसी वक़्त इस स्पष्ट निर्णय पर पहुँचें कि ईश्वर आपकी ऊर्जा, स्फूर्ति, स्वास्थ्य, सृजनात्मक विचारों का स्रोत है। यह सूर्य का स्रोत है, उस हवा का स्रोत है जिसमें आप साँस लेते हैं, उस फल का जिसे आप खाते हैं, और उस पैसे का जो आपकी जेब में है। क्योंकि हर चीज़ अदृश्य से बनी और बाहर निकली है। ईश्वर के लिए आपके जीवन में दौलत बनाना उतना ही आसान है, जितना कि घास का तिनका या बर्फ़ का कण बनाना।

दूसरा क़दम: इसी समय निर्णय लें कि आप अपने अवचेतन मन में दौलत का विचार अंकित कर लेंगे। विचार दोहराव, विश्वास और आशा से अवचेतन तक पहुँचते हैं। किसी विचार या काम को बार-बार दोहराने पर यह स्वचालित बन जाता है; और आपका अवचेतन बाध्यकारी होने के कारण दौलत को व्यक्त करने के लिए बाध्य होगा। यह वैसा ही है, जैसे पैदल चलना, तैरना, पियानो बजाना, टाइपिंग करना या कार चलाना सीखना। आपको अपनी कही बात पर विश्वास होना चाहिए। यह कोई हवाई बात नहीं है; कोई कोरा कथन नहीं है। आप जो कह रहे हैं, उस पर आपको विश्वास होना चाहिए, जिस तरह ज़मीन में बीज बोते वक़्त आप यह विश्वास करते हैं कि वे अपनी ही तरह की फ़सल देंगे। बीज विचार हैं, जो आपके अवचेतन मन में बोए जाते हैं।

यह अहसास करें कि आप जो दृढ़तापूर्वक कह रहे हैं, वह ज़मीन में बोए गए सेवफल के बीज की तरह है। वे अपनी तरह की फ़सल देते हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि बीज आपके चेतन मन से आपके अवचेतन मन तक जा रहा है और संसार के पर्दे पर उत्पन्न किया जा रहा है। इन बीजों को खाद-पानी देकर आप इनके विकास की गति बढ़ा देते हैं। यह जान लें कि आप क्या कर रहे हैं और आप इसे क्यों कर रहे हैं। आप इसे अपनी चेतना की क़लम से अपने अवचेतन मन पर लिख रहे हैं, क्योंकि आप दौलत को जानते हैं। आप इसे सड़क पर चलते वक़्त देखते हैं। सड़क पर कार चलाते वक़्त क्या आप रास्ते के सारे फूल गिन सकते हैं? क्या आप समुद्र तट पर बिखरे बालू के कण गिन सकते हैं? क्या आप आसमान के तारे गिन सकते हैं? क्या आप उस सारी दौलत को गिन सकते हैं, जिस पर आप चल रहे हैं? हाँ, आपके क़दमों के नीचे। शायद तेल, सोना, चाँदी, यूरेनियम। क्या आपने समुद्र, ज़मीन या हवा की अमीरी के बारे में कभी सोचा था?

तीसरा क़दम: नीचे दिए दृढ़ कथन को सुबह-शाम लगभग पाँच मिनट तक दोहराना है: “मैं इस समय ईश्वर की दौलत का विचार अपने अवचेतन मन पर लिख रहा हूँ। ईश्वर मेरी आपूर्ति का स्रोत है। मैं जानता हूँ कि ईश्वर मेरे भीतर का जीवन सिद्धांत है और मैं जानता हूँ कि मैं जीवित हूँ। और मेरी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति समय के हर पल तथा स्थान के हर बिंदु पर की जा रही है। ईश्वर की दौलत मेरे अनुभव में स्वतंत्रता से, ख़ुशी से और निरंतर प्रवाहित होती है और मैं

धन्यवाद देता हूँ कि ईश्वर की दौलत हमेशा मेरे अनुभव में प्रवाहित होती है।"

क़दम चार: जब ग़रीब होने के विचार आपके मन में आएँ, जैसे "मैं इस यात्रा का ख़र्च नहीं उठा सकता," या "मैं बैंक का यह कर्ज़ नहीं चुका सकता," या "मैं इस बिल का भुगतान नहीं कर सकता," तो कभी, कभी भी नकारात्मक आर्थिक कथन पूरा न करें। यह अनिवार्य है। अपने मन में तुरंत सोचकर इसे उलट लें, "ईश्वर मेरी त्वरित और अनवरत आपूर्ति है और दैवी व्यवस्था के तहत बिल चुकाया जाता है।" अगर कोई नकारात्मक विचार आपके मन में एक घंटे में पचास बार आए, तो हर बार यह सोचकर और कहकर इसे उलट लें, "ईश्वर मेरी त्वरित आपूर्ति है, जो इस वक़्त मेरी ज़रूरत पूरी करता है।" कुछ समय के बाद आर्थिक आवश्यकता का विचार सारी गति खो देगा और आप अपने अवचेतन को दौलत का आदी बना देंगे। मिसाल के तौर पर, अगर आप कोई नई कार देखें, तो कभी यह न कहें, "मैं इसे नहीं ख़रीद सकता," या "मैं इसका ख़र्च नहीं उठा सकता।" आपका अवचेतन आपकी बात को सच मान लेता है और आपकी सारी भलाई को रोक देता है। इसके विपरीत ख़ुद से कहें, "यह कार बेचने के लिए है। यह एक दैवी विचार है और मैं इसे दैवी प्रेम के ज़रिये दैवी व्यवस्था में स्वीकार करता हूँ।" यह दौलत की मास्टर चाबी है। किसी भी सच्चे इंसान के लिए यह असंभव है कि वह इस तकनीक का अभ्यास करे और उसे अपने आगामी जीवन में अपनी ज़रूरत की सारी दौलत न मिले।

तो इसका अनुसरण करें। ध्यान रखें कि इस तरह आप धन-संपत्ति के नियम को सक्रिय कर रहे हैं। यह आपके लिए भी उसी तरह काम करेगा, जिस तरह किसी दूसरे के लिए। मस्तिष्क का नियम लोगों में भेदभाव नहीं करता। आपके विचार ही आपको दौलतमंद या ग़रीब बनाते हैं। यहीं और इसी समय जीवन में अमीरी को चुनें।

एक सेल्स मैनेजर ने अपने स्टाफ़ के एक सदस्य को मेरे पास परामर्श लेने भेजा। यह सेल्समैन प्रतिभाशाली कॉलेज स्नातक था। वह अपने प्रॉडक्ट्स के बारे में बहुत अच्छी तरह जानकारी रखता था। वह एक संपन्न इलाक़े में रहने के बावजूद कमीशन में हर साल सिर्फ़ 10,000 डॉलर ही कमा रहा था। सेल्स मैनेजर को लग रहा था कि उसे इससे दोगुना या तिगुना कमाना चाहिए। इस युवक से बात करने पर मैंने पाया कि उसका अपने बारे में आकलन कम था। उसने यह अवचेतन ख़ाका या आत्म-छवि बना ली थी कि वह एक साल में 10,000 डॉलर से ज़्यादा नहीं कमा सकता है। दूसरे शब्दों में, उसके अनुसार उसका मूल्य इतना ही था। उसने कहा कि वह एक ग़रीब घर में पैदा हुआ था और उसके माता-पिता ने उसे बताया था कि आगे चलकर वह भी ग़रीब ही रहेगा। उसके सौतेले पिता ने हमेशा उससे कहा था, "तुम कभी कुछ नहीं बन पाओगे। तुम बुद्धू हो, तुम मूर्ख हो।" ये विचार उसके संवेदनशील मन पर अंकित हो गए, जिसने इन्हें स्वीकार कर लिए। वह अभाव और सीमा में अपने अवचेतन विश्वास का अनुभव कर रहा था।

मैंने उसे समझाया कि जीवनदायी नक़्शों से पोषण देकर वह अपने अवचेतन मन को बदल सकता है। मैंने उसे एक सरल और आध्यात्मिक फ़ॉर्मूला बताते हुए कहा कि अगर वह इस पर अमल करेगा, तो उसका जीवन बदल जाएगा। मैंने उसे समझाया कि उसे किसी भी सूरत में अपने दृढ़ कथन में कही बात को नहीं नकारना चाहिए, क्योंकि अवचेतन मन सिर्फ़ उसे ही स्वीकार करता है, जिस पर सचमुच विश्वास किया जाता है। आपका अवचेतन मन आपके

विश्वासों को स्वीकार करता है, जिनमें आप सचमुच यक़ीन करते हैं। इसलिए ईश्वर की दौलत और ईश्वर की अमीरी में विश्वास करें, जो आपके चारों तरफ़ भरी पड़ी है।

ऑफ़िस जाने से पहले हर सुबह वह दृढ़ कथन कहता था: "मैं सफल होने के लिए पैदा हुआ हूँ। मैं जीतने के लिए पैदा हुआ हूँ। मेरे भीतर का असीमित असफल नहीं हो सकता। दैवी नियम और व्यवस्था मेरे जीवन को संचालित करती है। दैवी शांति मेरी आत्मा को भरती है। दैवी प्रेम मेरे मस्तिष्क को सराबोर करता है। असीम प्रज्ञा हर क्षेत्र में मुझे मार्गदर्शन देती है। ईश्वर की सारी दौलत मेरी ओर स्वतंत्रता से, ख़ुशी से, अनंत रूप से और अथक रूप से प्रवाहित होती है। मैं आगे बढ़ रहा हूँ और मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक तथा हर दृष्टि से विकास कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि ये सत्य मेरे अवचेतन मन में धँस रहे हैं और मैं यह जानता तथा विश्वास करता हूँ कि वे अपनी क़िस्म के फल देंगे।"

जब मैं कुछ साल बाद इस युवक से दोबारा मिला, तो मुझे पता चला कि उसका कायाकल्प हो चुका था। उसने इन विचारों को सोख लिया था, जिन पर हमने चर्चा की थी। उसने कहा, "मैं अब जीवन का आनंद ले रहा हूँ और मेरी ज़िंदगी में अद्भुत चीज़ें हुई हैं। इस साल मेरी आमदनी 75,000 डॉलर है, जो पिछले साल की तुलना में पाँच गुना ज़्यादा है।" उसने यह सरल सत्य सीख लिया था: कि वह अपने अवचेतन मन पर जो भी उकेरता है, वह उसके जीवन में प्रभावी और सक्रिय हो जाता है। शक्ति आपके भीतर है। आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

कुछ समय पहले मैं एक व्यक्ति से मिला, जो बैंक में काम करता था। वह एक साल में 40,000 डॉलर कमा रहा था, जो काफ़ी संतोषजनक था, लेकिन वह अपनी पत्नी और बच्चों की ख़ातिर ज़्यादा पैसे कमाना चाहता था। उसने यह दृढ़ कथन कहने की आदत डाली, "ईश्वर मेरी त्वरित आपूर्ति है। मुझे सभी मायनों में दैवी मार्गदर्शन मिल रहा है। असीम आत्मा एक नया द्वार खोलती है।" उसने मुझे बताया कि कुछ महीने पहले एक अवसर उसके सामने आया और अब वह कमीशन पर सामान बेचने का काम कर रहा है। उसे ख़ुद पर इतना भरोसा था कि उसने बैंक की सुरक्षित नौकरी छोड़ दी और आगे बढ़ गया। अब वह एक साल में दो लाख डॉलर कमा रहा है। वह बेहतरीन चीज़ें करने में सक्षम है और अपने परिवार के साथ एक अद्भुत जीवन का आनंद ले रहा है।

यह सब एक विचार था। यह सब उसके मन में मौजूद एक विचार था। दौलत एक विचार है। रेडियो एक विचार है। टेलीविज़न एक विचार है। कार एक विचार है। आप जो देखते हैं, वह हर चीज़ एक विचार है। मान लें, किसी विनाशकारी घटना की वजह से संसार की सारी कारें नष्ट हो जाएँ — तो कोई इंजीनियर उन्हें दोबारा बना सकता है, है ना? और कुछ ही समय में हमारे पास करोड़ों कारें हो जाएँगी।

आश्वस्ति और आर्थिक दौलत हासिल करने के लिए निम्न ध्यान का इस्तेमाल करें:

> मैं जानता हूँ कि ईश्वर में विश्वास मेरे भविष्य को तय करता है। ईश्वर में मेरे विश्वास का मतलब है सारी अच्छी चीज़ों में विश्वास। मैं अब ख़ुद को सच्चे विचारों के साथ एक करता हूँ और मैं जानता हूँ कि भविष्य मेरी आदतन सोच के चित्र के अनुरूप ही होगा। जैसा मैं अपने दिल या अवचेतन में सोचता हूँ, वैसा ही मैं बनूँगा। इस पल के बाद मेरे विचार उन्हीं चीज़ों पर केंद्रित रहेंगे, जो भी सच हैं, जो भी ईमानदार हैं, जो भी न्यायपूर्ण हैं, जो भी प्यारी और अच्छी हैं। दिन-रात मैं इन चीज़ों पर मनन करता हूँ और मैं जानता हूँ कि ये बीज, जो विचार हैं, जिन पर मैं आदतन मनन करता हूँ, मुझे समृद्ध फ़सल देंगे। मैं अपनी आत्मा का कप्तान हूँ; मैं अपनी तक़दीर का स्वामी हूँ। क्योंकि मेरा

देखिए, प्रार्थनाएँ और दृढ़ कथन कहने से ईश्वर या जीवंत आत्मा या जीवन सिद्धांत नहीं बदलता है। इससे दैवी शक्ति प्रभावित नहीं होती है। ईश्वर कल, आज और हमेशा वही है। आप ईश्वर को नहीं बदलते हैं, बल्कि आप तो मानसिक रूप से ख़ुद को उसके सामंजस्य में लाते हैं, जो हमेशा सच था। आप सद्भाव का निर्माण नहीं करते हैं; सद्भाव तो पहले से मौजूद है। आप प्रेम का निर्माण नहीं करते हैं; ईश्वर प्रेम है। ईश्वर का प्रेम आपके भीतर है। आप शांति का निर्माण नहीं करते हैं; ईश्वर शांति है और ईश्वर आपके भीतर वास करता है। लेकिन आपको दावा करना होगा कि ईश्वर की शांति आपके दिलोदिमाग़ को सराबोर करती है। आपको दावा करना होगा कि ईश्वर का सद्भाव आपके घर में है। सद्भाव आपके पर्स, आपके कारोबार और आपके जीवन के सभी क्षेत्रों में है। सारी अच्छाई हममें से प्रत्येक के लिए उपलब्ध है। हमारी प्रार्थनाओं और दृढ़ कथनों का उद्देश्य हमारे मस्तिष्क को उस बिंदु तक लाना है, जहाँ हम उन उपहारों को स्वीकार कर सकें, जो हमें अनंत काल से दिए गए थे। क्योंकि ईश्वर दाता है और उपहार है। कच्चा तेल आपके पैदा होने से पहले ज़मीन में था; यह धरती पर किसी भी इंसान के चलने से पहले मौजूद था। इसी तरह सोना, चाँदी, यूरेनियम, सीसा, ताँबा और सारी धातुएँ भी थीं, जिनका हम आज इस्तेमाल करते हैं। वे सब वहाँ थीं।

क्या इन चीज़ों को खोजने में मानव मन की थोड़ी बुद्धि लगी थी? हाँ। मान लें, आप दो लोगों को यूटा भेजते हैं, जिनमें से एक भूगर्भशास्त्री है। भूगर्भशास्त्री (या शायद धातु विशेषज्ञ) वहाँ जाता है और वह कुछ नहीं खोज पाता। लेकिन दूसरा व्यक्ति वहीं, उसी इलाक़े में जाता है और उसी ज़मीन में यूरेनियम या चाँदी का संग्रह खोज लेता है। दौलत कहाँ थी? दौलत दूसरे व्यक्ति के मन में थी, जो मार्गदर्शक सिद्धांत में यक़ीन करता था। पहले व्यक्ति को कुछ नहीं मिला, हालाँकि यह दौलत वहीं मौजूद थी।

तो एक मार्गदर्शक सिद्धांत आपका नेतृत्व करता है। इसका यही मतलब है — सोना, चाँदी, तेल, जस्ता और ये सारी चीज़ें खोजना। हमें परिस्थितियों पर काम करने की ज़रूरत नहीं है; हमें तो बस ख़ुद पर काम करने की ज़रूरत है। हम अपनी कमियों और सीमाओं का जहाँ उपचार कर सकते हैं, वह इकलौती जगह हमारा ख़ुद का मन है।

ऐसा करने पर हम पाएँगे कि संसार (आपका शरीर, आपका परिवेश और परिस्थितियाँ) आपके मन की आंतरिक अवस्था का प्रतिबिंब होगा। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो कुछ भी माँगते समय यह यक़ीन करें कि वह आपको मिल चुकी है और वह आपके पास होगी। यही सफल प्रार्थना का आधार है, चाहे इसका उद्देश्य हमारे शरीर का उपचार हो या समृद्धि हो, सफलता हो, उपलब्धि हो या भौतिक लाभ हों। एक बार जब आप अपने ज़्यादा गहरे मन को विश्वास दिला देते हैं कि आपकी मनचाही चीज़ आपके पास है, तो यह तुरंत इसे साकार करने की दिशा में चल देगा।

आप मुझसे कह सकते हैं, “मैं अपने ज़्यादा गहरे मन, अपने अवचेतन को यह विश्वास कैसे दिला सकता हूँ कि मेरे पास अमीरी या कोई दूसरी अच्छी चीज़ है, जब मेरा सहज बोध मुझे बताता है कि बिलों का ढेर बढ़ रहा है, कर्ज़दार हाथ धोकर पीछे पड़े हैं, बैंक मकान की क़िस्त और कर्ज चुकाने के लिए फ़ोन कर रहा है आदि?” आप नहीं दिला सकते। अगर आप कर्ज़ और

देनदारी के बारे में सोचते रहते हैं और इस बारे में कि आप पर कितना उधार चढ़ा है, तो आप अपने दुख को कई गुना बढ़ा लेंगे। लेकिन यहाँ आपके मन के नियमों के बारे में एक सच बताया जा रहा है: आपका ज़्यादा गहरा मन उसे तथ्य के रूप में स्वीकार करता है, जिसे आप इसके सामने पर्याप्त बार विश्वसनीय अंदाज़ में दोहराते हैं, ठीक उसी तरह जिस तरह आपने चलना सीखा था। आपके पास एक विचार-मानचित्र था, एक कार्य था, चाहे यह तैरना हो, चलना हो, टेनिस या गोल्फ़ खेलना हो और आप इसे बार-बार दोहराते थे। आप जानते थे कि आप क्या कर रहे थे और आप इसे क्यों कर रहे थे। आप चलना सीखना चाहते थे, आप नाचना सीखना चाहते थे, आप तैरना सीखना चाहते थे। इसलिए आख़िरकार आपके अवचेतन ने मानचित्र को आत्मसात कर लिया, है ना? और फिर आप स्वतः ही तैरे और स्वतः ही चलने लगे।

यही तरीक़ा दौलत और किसी दूसरी चीज़ के लिए प्रार्थना करने में काम करता है। एक बार जब आपका अवचेतन कथन को सत्य मान लेता है, तो यह दौलत को आपके पास लाने के लिए हर संभव चीज़ करने में जुट जाता है। देखिए, यही दृढ़ कथन का पूरा उद्देश्य है: आप ख़ुद को उस सच्चाई का विश्वास दिला दें, जिसे आप कह रहे हैं। फिर आपका ज़्यादा गहरा मन इन चीज़ों को साकार कर देगा।

एक महिला ने मेरे ऑफ़िस में मुझसे कहा, "ओह, मुझे किसी ने एक दृढ़ कथन दिया, जिसमें कहा गया था कि मैं इस समय अमीर और समृद्ध हूँ। मैं सफल और बहुत दौलतमंद हूँ। लेकिन इस दृढ़ कथन का परिणाम यह हुआ कि मैं अपनी कमियों और अभावों के बारे में ज़्यादा जागरूक हो गई।" ऐसा इसलिए है, क्योंकि उसने अपने चारों तरफ़ की अमीरी के बजाय ग़रीबी और अभावों पर ज़्यादा विश्वास किया था। इसलिए मैंने स्पष्ट किया: "आपको इस आदत से दूर जाना चाहिए; अपने विश्वास को बदल लें। आपका अवचेतन उसे स्वीकार करता है, जिसमें आप सचमुच यक़ीन करते हैं।" मैंने कहा, "अपने आस-पास देखें। अहसास करें कि ईश्वर ने आपको और पूरे संसार को बनाया था। यह आपके भीतर एक अदृश्य आत्मा है। हर चीज़ भीतर बनती है और फिर बाहर बनती है। इसने आपके दिल की धड़कन को शुरू किया, उस हवा को जिसमें आप साँस लेती हैं, उस पानी को जिसे आप पीती हैं और उस भोजन को जिसे आप खाती हैं। इसलिए अंदर की ओर मुड़ें और अपने विश्वास को बदल लें। यह कहें,

> मैं अपनी आपूर्ति के सर्वव्यापी स्रोत को पहचानती हूँ। ईश्वर मेरी आपूर्ति का स्रोत है। मेरी सारी आवश्यकताएँ — आध्यात्मिक, मानसिक, भौतिक — समय के हर पल और स्थान के हर बिंदु पर पूरी होती हैं। ईश्वर की दौलत मेरे जीवन में संचारित हो रही है और हमेशा अधिकता रहती है। दिन-रात मैं तरक्की कर रही हूँ, आगे बढ़ रही हूँ और आध्यात्मिक, मानसिक, भौतिक, आर्थिक, बौद्धिक रूप से और हर मायने में विकास कर रही हूँ।"

जब मन पूरी तरह तैयार होता है, तो सारी चीज़ें तैयार हो जाती हैं। जैसा मैं विश्वास करता हूँ, वैसा ही मेरे साथ किया जाता है। इससे पहले कि वे आवाज़ लगाएँ, मैं जवाब दूँगा; जब वे बोल रहे होंगे, तभी मैं सुन लूँगा। ओह, मैं आपके नियम से कितना प्रेम करता हूँ। दिन-रात मैं इस पर मनन करूँगा। नियम यह है, मैं जिस पर मनन करता हूँ, वही मैं हूँ; मैं वही हूँ, जिसके होने का मुझे विश्वास है। मेरी आस्था के अनुरूप ही मेरे साथ किया जाता है। ईश्वर ने आपको आनंद लेने के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं। ईश्वर ने आपको अमीर बनाया है; फिर आप ग़रीब क्यों हैं?"

जब उसे यह अहसास होने लगा कि आपूर्ति के असीमित महासागर का स्रोत क्या है, उसके

सिर के बालों का स्रोत क्या है, उस शक्ति का स्रोत क्या है, जो उसे कुर्सी उठाने में सक्षम बनाती है, घास का स्रोत क्या है, खेत में लगी फ़सल का स्रोत क्या है, पशुओं और पर्वतों का स्रोत क्या है, तो उसे स्रोत का अहसास होने लगा। वह ख़ुद को इसके सामंजस्य में ले आई। फिर यह उसे समझ में आ गया। उसे अहसास हुआ कि वह अपने अवचेतन मन पर दौलत, विकास और समृद्धि का विचार लिख रही थी। उसने अपने मन के झूठे विश्वास यानी ग़रीबी को बदल लिया और अपने चारों ओर फैली अंतहीन अमीरी में विश्वास करने लगी।

क्या आप जानते हैं कि उष्णकटिबंध में इतने सारे फल ज़मीन पर गिरकर सड़ जाते हैं, जो पूरी मानवता का पेट भर सकते हैं? प्रकृति उदार है, दरियादिल है और प्रचुर है। ईश्वर ने आपके आनंद के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं। उन्होंने कहा, ये चीज़ें मैंने तुम्हें दी हैं, ताकि मेरी ख़ुशी तुममें रह सके और तुम्हारी ख़ुशी पूर्ण हो। आज तक तुमने कुछ नहीं माँगा; अब माँगो कि तुम्हारी ख़ुशी पूर्ण रहे। मैं इसलिए आया हूँ, ताकि तुम्हें जीवन मिल सके और ज़्यादा प्रचुरता में मिल सके। देखिए, बाइबल में माँगने का मतलब दावा करना है। आप साहस के साथ इस पर दावा करते हैं; लेकिन आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं।

अगर आपके ऊपर कई कर्ज़ और दायित्व हों, ढेर सारे बिल चुकाने हों, तो उनकी चिंता न करें। स्रोत की ओर मुड़ें, तो असीमित और अंतहीन है। उस किसान को याद करें, जिसने कहा था: "देखिए, मैं खरपतवार की चिंता नहीं करता। अनाज उग रहा है और यह सारी खरपतवार को नष्ट कर देगा।" यह किसान आपको बड़ी अहम बात बताता है। इसी तरह जब आप अपनी भलाई पर, मार्गदर्शन पर, सही कर्म पर और आपकी आपूर्ति के सर्वव्यापी स्रोत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, चाहे यह मानसिक हो या आध्यात्मिक या आर्थिक, तो दो नहीं — केवल एक ही स्रोत है। जब आप इसकी ओर मुड़ते हैं और अंतहीन आपूर्ति के लिए धन्यवाद देते हैं, तो सारी खरपतवार नष्ट हो जाएगी। अभाव और सीमा के विचार मर जाएँगे और ईश्वर आपके कल्याण को कई गुना कर देगा।

अपने जीवन में आनंद लाएँ। दावा करके आनंद के लिए प्रार्थना करें। बाइबल में कहा गया है कि ईश्वर का आनंद मेरी शक्ति है। इसे ख़ुद के सामने दोहराएँ और कुछ समय बाद आपकी रक्तधारा और सामान्य संचार में जो होगा, उससे आप हैरान रह जाएँगे। इसका विश्लेषण न करते रहें या इसके बारे में दाँत न भींचें। बस यह जान लें कि आनंद जीवन का भाव है, जीवन की अभिव्यक्ति है। इस पर किसी घोड़े की तरह मेहनत न करें। कोई इच्छा शक्ति नहीं, कोई मांसपेशीय शक्ति नहीं; इस मानसिक और आध्यात्मिक उपचार तकनीक में किसी रक्त वाहिका की शक्ति का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। बस यह जान लें और दावा करें कि ईश्वर का आनंद इसी समय आपके अंदर प्रवाहित हो रहा है और जब आप इस तरह प्रार्थना करेंगे, तो चमत्कार होंगे। फलस्वरूप आपको स्वतंत्रता और मानसिक शांति मिल जाएगी। अगर आपके पास मानसिक शांति है, तो आपके पर्स में, आपके घर-परिवार में और लोगों के साथ संबंधों में शांति होगी, क्योंकि शांति ईश्वर के हृदय की शक्ति है।

नदी और धाराएँ मेरे ईश्वर के शहर को आनंदित करती हैं। ईश्वर का शहर आपका मन है। कुछ चीज़ें वहाँ रहती हैं। आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि वहाँ कौन सी चीज़ें रहती हैं: आपके विचार, चित्र, विश्वास और राय। सुनिश्चित करें कि वे दैवी मापदंड के अनुरूप हों।

एक महिला ने मुझसे कहा था, “मैं आर्थिक दृष्टि से बाधित थी। मैं इस मोड़ पर पहुँच गई थी, जहाँ मेरे पास अपने बच्चों को खाना खिलाने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे। मेरे पास बस आख़िरी पाँच डॉलर बचे थे। मैंने उन्हें अपने हाथ में रखा और कहा, “ईश्वर अपनी दौलत और महिमा के अनुरूप इसे कई गुना कर देगा और अब मैं असीम की दौलत से भर चुकी हूँ। मेरी सारी आवश्यकताएँ इस समय और मेरे जीवन के बचे सारे दिनों में तुरंत पूरी होती हैं।”

उसे इस बात पर पूरा यक़ीन था। ये खोखले शब्द नहीं थे। निरर्थक दोहराव ईश्वर के कानों तक नहीं पहुँच पाते हैं। नहीं, आपको पता होना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं और क्यों कर रहे हैं। आपको पता होना चाहिए कि आपका चेतन मन एक कलम है और आप अपने अवचेतन मन पर कुछ लिख रहे हैं, कुछ उकेर रहे हैं। आप अपने अवचेतन मन पर जो भी छाप छोड़ते हैं, वह संसार के पर्दे पर व्यक्त होगी। यह आकार, कार्य, अनुभव और घटनाओं के रूप में प्रकट होगी — चाहे वे अच्छी हों या बुरी। इसलिए यह सुनिश्चित करें कि आप जो बोते हैं, वह सुंदर और अच्छा हो।

उसने कहा, “मैंने तक़रीबन आधा घंटे तक दावा किया कि मेरी सारी ज़रूरतें इसी समय और मेरे जीवन के बाक़ी दिनों में पूरी हो रही हैं। इसके बाद मुझे शांति का एक भारी अहसास होने लगा। मैंने वे पाँच डॉलर खुलकर भोजन पर ख़र्च कर दिए। सुपर मार्केट के मालिक ने मुझसे कहा कि उसकी वर्तमान कैशियर काम छोड़कर चली गई है, इसलिए क्या मैं उसके यहाँ कैशियर का काम करना चाहती हूँ। मैंने इसे स्वीकार कर लिया और उसके कुछ समय बाद ही मालिक यानी मेरे बॉस से मेरी शादी हो गई और हम जीवन की सारी अमीरी का अनुभव कर रहे हैं।”

इस महिला ने स्रोत को देखा। वह नहीं जानती थी कि उसकी प्रार्थना का जवाब कैसे मिलेगा, क्योंकि आप अवचेतन की कार्यविधि कभी नहीं जान सकते। उसे अपने दिल में असीम के वरदानों पर पूरा यक़ीन था। यक़ीन करने का मतलब है इसके होने की अवस्था में जीना। इसका अर्थ सर्वव्यापी सत्यों के बारे में सजीव होना भी है। उसकी नेकी कई गुना हो गई, क्योंकि आप जिस पर ध्यान देते हैं, अवचेतन हमेशा उसे बढ़ा देता है। आपके भीतर एक उपस्थिति है, एक शक्ति है और आप इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। आप अपने भीतर ईश्वर के उपहार को सक्रिय कर सकते हैं, क्योंकि ईश्वर ही दाता और उपहार है; और हर चीज़ आपको दे दी गई है। इसलिए आप संपर्क कर सकते हैं और मार्गदर्शन, सही कार्य, सौंदर्य, प्रेम, शांति, प्रचुरता, सुरक्षा का दावा कर सकते हैं। आप ख़ुद से कह सकते हैं, “देखिए, ईश्वर के विचार मेरे भीतर प्रकट होते हैं, सद्भाव, स्वास्थ्य, शांति और आनंद को मेरी ओर लाते हैं।” यदि आप कारोबार में हैं, अगर आप किसी पेशे में हैं, अगर आप कलाकार हैं, अगर आप आविष्कारक हैं, तो बस शांति से बैठकर कहें, “ईश्वर मेरे सामने नए सृजनात्मक विचार, मौलिक, अद्भुत विचार प्रकट करता है, जो असंख्य तरीक़ों से मानवता को लाभ पहुँचाते हैं।” फिर अद्भुत विचारों को अपनी ओर आते देखें और वे आएँगे, क्योंकि जब आप पुकारते हैं, तो वह जवाब देता है। याद रखें कि बाइबल में क्या कहा गया है: “मुझे आवाज़ दो और मैं तुम्हें जवाब दूँगा। मैं मुश्किल में तुम्हारे साथ रहूँगा। मैं तुम्हें ऊपर बिठाऊँगा, क्योंकि तुम मेरा नाम जानते हो।”

नाम का अर्थ है प्रकृति। असीम प्रज्ञा की प्रकृति प्रतिक्रिया करना है। पुकारें और प्रतिक्रिया

मिलेगी। लगातार दृढ़ कथन कहें, महसूस करें और यक़ीन करें कि ईश्वर आपकी भलाई को कई गुना करता है और आप आध्यात्मिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से दिन के हर पल समृद्ध होने लगेंगे। जब आप अपने अवचेतन मन में इन सत्यों की छाप छोड़ते हैं, तो होने वाले चमत्कारों को देखें। ये शब्द पढ़ते समय इन सत्यों को अपने अवचेतन में धँस जाने दें। वे ऐसा करेंगे और वे ऐसा कर रहे हैं। आप उन्हें उकेर रहे हैं। आप यह जितनी ज़्यादा बार करते हैं, आप अपने ज़्यादा गहरे मन में उतनी ही जल्दी बीज बो देंगे। फिर आप आर्थिक दृष्टि से और हर मायने में एक भव्य भविष्य का आनंद लेंगे।

अपने विचारों पर निगाह रखें। आर्थिक अभाव और सीमा की कभी बात न करें। ग़रीब होने या कमी होने के बारे में कभी बात न करें। मुश्किल समय, आर्थिक समस्याओं और ऐसे ही मसलों के बारे में अपने पड़ोसियों या रिश्तेदारों से बात करना मूर्खतापूर्ण है। अपने वरदान गिनें। समृद्ध विचार सोचना शुरू करें। दैवी दौलत के बारे में बात करें, जो हर जगह मौजूद है। यह अहसास करें कि दौलत की भावना से ही दौलत उत्पन्न होती है। जब आप इस बारे में बात करते हैं कि आपके पास पर्याप्त नहीं है और आपके पास बहुत कम है और आपको किस तरह जोड़-तोड़ करनी पड़ती है और सबसे सस्ता भोजन खाना पड़ता है, तो ये विचार विनाशकारी होते हैं; और आप ही हैं, जो ख़ुद को ग़रीबी में रख रहे हैं। पैसे का खुलकर इस्तेमाल करें। इसे आनंद के साथ ख़र्च करें और यह अहसास करें कि ईश्वर की दौलत प्रचुरता की बाढ़ में आपकी ओर प्रवाहित होती है।

स्रोत की ओर देखें। जब आप अपने भीतर मौजूद दैवी उपस्थिति की ओर मुड़ते हैं, तो प्रतिक्रिया मिलेगी। यह लिखा गया है: ईश्वर आपकी परवाह करता है। आपको ऐसे पड़ोसी, अजनबी और सहयोगी मिलेंगे, जिनसे आपका भला होगा और भौतिक वस्तुओं की आपूर्ति भी होगी। अपने सभी कामों में दैवी मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करने की आदत डालें और यक़ीन करें कि ईश्वर या परम प्रज्ञा अपनी अथाह दौलत से आपकी सारी आवश्यकताओं की आपूर्ति कर रही है। साहस के साथ इसका दावा करें। साहस के साथ महिमा के सिंहासन के पास आएँ।

महिमा के रहस्य को जब हटा दिया जाता है, तो यह बस गणितीय होती है; यह आपकी आदतन सोच और चित्र का व्यवस्थित प्रतिबिंब होती है। दूसरे शब्दों में, एक परम प्रज्ञा है, जो आपकी चेतन सोच और मानसिक चित्रों पर प्रतिक्रिया करती है। इसलिए सभी कार्यों में दैवी मार्गदर्शन की प्रार्थना करें। जब आप इस मानसिक नज़रिये को एक आदत बना लेते हैं, तो आप पाएँगे कि दौलत का अदृश्य नियम आपके लिए अमीरी उत्पन्न कर सकता है और करेगा।

कुछ समय पहले एक डॉक्टर ने मुझे बताया कि उसकी सतत प्रार्थना यह रहती है: "मैं सर्वश्रेष्ठ की सुखद आशा में जीती हूँ और मुझे हमेशा सर्वश्रेष्ठ ही मिलता है। मेरी बाइबल की प्रिय पंक्ति यह है, जिससे मैं अपने दिमाग़ को सराबोर कर लेती हूँ: 'वह सारा जीवन और साँस, और सारी चीज़ें देता है।'" उसने यह जान लिया है कि वह अपने आनंद, स्वास्थ्य, सफलता, ख़ुशी या मानसिक शांति के लिए लोगों पर निर्भर नहीं है। वह तरक्की, उपलब्धि, दौलत, सफलता और ख़ुशी के लिए अपने भीतर की जीवंत सर्वशक्तिमान आत्मा की ओर देखती है। तरक्की, सफलता, उपलब्धि, प्रकाश और प्रेरणा पर मनन करें। फिर सर्वशक्तिमान का भाव आपकी ख़ातिर काम करने लगेगा और आपको मजबूर कर देगा कि आप जिस पर मनन करते

हैं, उसे पूरी तरह अभिव्यक्त करें। अभी अपनी पकड़ ढीली कर दें और असीमित की अथाह दौलत को यह अनुमति दें कि यह आपके लिए नए द्वार खोल दे और आपके जीवन में चमत्कार कर दे।

प्रार्थना चिकित्सा में संघर्ष, तनाव या दबाव से बचें। चीज़ों को विवश न करें। आप अपनी सीमित शक्ति का उपयोग करके सर्वशक्तिमान की शक्ति को कैसे बढ़ा सकते हैं? क्या आप किसी बीज को उगा सकते हैं? आप ऐसा नहीं कर सकते। लेकिन अगर आप इसे बस ज़मीन में बो दें, तो यह उग आएगा। फल बीज में है। सेवफल सेवफल के बीज में है। साँचे का नमूना वहाँ है, लेकिन आपको इसे मिट्टी में दबाना होगा, जहाँ यह मरता है, नष्ट होता है और अपनी ऊर्जा अपने एक भिन्न स्वरूप को दे देता है।

जब आध्यात्मिक मानसिकता वाला व्यक्ति किसी शाहबलूत के फल को देखता है, तो वह एक जंगल देखता है। हाँ, आपका अवचेतन भी इसी तरह काम करता है। यह आपकी भलाई को कई गुना बढ़ा देता है। इसलिए दबाव से बचें, क्योंकि यह नज़रिया आपके विश्वास को बताता है। अगर आप चिंतित, डरे हुए और तनावग्रस्त हैं, तो इससे आपकी भलाई रुक जाती है। इससे आपके जीवन में अवरोध, विलंब, बाधाएँ आती हैं। डर क्या करता है? जिसका मुझे भारी डर था, वही विपत्ति मुझ पर आ गई है। इसे उलट दें। जिससे मैं भारी प्रेम करता हूँ, वही मेरे अनुभव में आता है। प्रेम एक भावनात्मक बंधन है। आपके अवचेतन में किसी भी समस्या को सुलझाने लायक़ सारी बुद्धि और शक्ति है।

आपका चेतन मन बाहरी परिस्थितियों को देखने का आदी होता है और इसमें संघर्ष व विरोध करने की प्रवृत्ति होती है। लेकिन याद रखें, यह शांत मन होता है, जो चीज़ें कराता है। अपने शरीर को समय-समय पर शांत करें। इससे स्थिर और तनावरहित होने को कहें। इसे आपका आदेश मानना ही होगा। आपका शरीर उधर ही चलता है, जिधर इसे चलाया जाता है; आपका शरीर उसी तरह काम करता है, जिस तरह इस पर काम किया जाता है। आपके शरीर की कोई अपनी चेतन बुद्धि, कोई इच्छा और कोई इच्छाशक्ति नहीं होती। यह तब चलता है, जब इसे चलाया जाता है। आप अपने शरीर पर ईश्वर की एक तान छेड़ सकते हैं। जब आपका चेतन मन शांत और ग्रहणशील होता है, तो आपके अवचेतन की बुद्धिमत्ता उठकर सतही मस्तिष्क तक आ जाती है और आपको अपना समाधान मिल जाता है।

ब्यूटी पार्लर चलाने वाली एक महिला ने मुझे अपनी सफलता का रहस्य बताते हुए कहा कि वह हर सुबह अपना पार्लर खोलने से पहले शांति की अवस्था में पहुँचती है और यह कथन कहती है:

“ईश्वर की शांति मेरी आत्मा को भरती है। ईश्वर का प्रेम मेरे पूरे अस्तित्व को सराबोर कर देता है। ईश्वर मुझे मार्गदर्शन देता है, समृद्ध करता है और प्रेरित करता है। मैं ऊपर से प्रकाशित हूँ। उसका उपचारक प्रेम मेरे ज़रिये मेरे सारे ग्राहकों तक प्रवाहित होता है। दैवी प्रेम मेरे द्वार से अंदर प्रवेश करता है। दैवी प्रेम मेरे द्वार से बाहर निकलता है। मेरे पार्लर में आने वाले सभी लोग धन्य, स्वस्थ और प्रेरित होते हैं। असीम उपचारक उपस्थिति हर जगह विराजमान है। इस दिन को ईश्वर ने बनाया है और मैं आनंदित हूँ तथा उन असंख्य नियामतों के लिए शुक्रगुज़ार हूँ, जो मेरे ग्राहकों और मेरे पास आती हैं।”

उसने यह प्रार्थना एक कार्ड पर लिख ली है और वह इन सत्यों को हर सुबह दोहराती है। रात को वह अपने सभी ग्राहकों को धन्यवाद देती है और दावा करती है कि वे मार्गदर्शन-प्राप्त हैं, समृद्ध हैं, आनंदित हैं और सद्भावपूर्ण हैं और ईश्वर अपने प्रेम के साथ हर व्यक्ति में प्रवाहित है तथा उसके जीवन के सभी ख़ाली पात्र भर रहा है। उसने मुझे बताया कि यह प्रार्थना करने के तीन महीने के भीतर ही उसके पास इतने ज़्यादा ग्राहक आने लगे कि उन्हें सँभालना मुश्किल हो गया और उसे तीन सहायक रखने पड़े। उसने असरदार प्रार्थना की दौलत खोज ली और वह अपने सपनों से भी ज़्यादा समृद्ध हो रही है।

एक सेल्स मैनेजर ने मुझे बताया कि उसे नौकरी से इसलिए निकाल दिया गया था, क्योंकि वह काम के समय बहुत शराब पीता था और ऑफ़िस की सेक्रेटरी से उसका चक्कर चल रहा था। वह अपनी पत्नी, आमदनी और भविष्य को लेकर बहुत दुखी, निराश और चिंतित था।

बाद में उसकी पत्नी से बात करने पर मुझे पता चला कि वह आदतन तंग करने वाली थी और उसने अपने पति को दबाने व नियंत्रित करने की असफल कोशिश की थी। वह बेहद ईर्ष्यालु थी और बहुत अंकुश में रखती थी। वह हर शाम उसके आने पर घड़ी देखती थी और अगर वह निश्चित समय तक घर नहीं लौटता था, तो बवाल मचा देती थी। वह सेल्स मैनेजर भी भावनात्मक और आध्यात्मिक दृष्टि से अपरिपक्व था, इसलिए उसने मामले को बिलकुल भी सृजनात्मक तरीक़े से नहीं सँभाला। अपनी पत्नी के तंग करने पर वह बुरी तरह चिढ़ता था और घर लौटने की पाबंदी पर उसके तानों से उकता गया था, इसलिए उसने शराब पीकर और दूसरी महिला के साथ चक्कर चलाकर हिसाब बराबर किया। उसने मुझसे कहा, "मैं तो बस उसके साथ हिसाब बराबर करना चाहता था।"

वे दोनों ही इस बात पर सहमत हुए कि विवाह को सफल बनाने के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती है। समृद्ध होने के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती है। अगर कोई पति और पत्नी समृद्धि और सफलता पर सहमत (सहमति का अर्थ है सद्भाव) होंगे, तो वे समृद्ध होंगे। उनके पास वह सारा पैसा होगा, जिसकी उन्हें ज़रूरत है, ताकि वे वह कर सकें, जो वे करना चाहते हैं और तब कर सकें, जब वे उसे करना चाहते हैं। और जब आपके पास वह सारा पैसा है, जिसकी आपको ज़रूरत है, ताकि आप वह कर सकें, जो आप करना चाहते हैं और तब कर सकें, जब आप उसे करना चाहते हैं, तो आप रॉकेफ़ेलर जितने ही अमीर हैं। दोनों ही सुबह-शाम प्रार्थना की प्रक्रिया शुरू करने के लिए सहमत हुए, क्योंकि उन्हें अहसास हो गया कि जब वे एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं, तो उनके बीच किसी तरह की कटुता, शत्रुता या द्वेष नहीं रह सकता, क्योंकि दैवी प्रेम अपने से भिन्न हर चीज़ को बाहर निकाल देता है। यह सचमुच ऐसा कर देता है।

उसने सुबह-शाम इस तरह प्रार्थना की: "मेरे पति ईश्वर के बंदे हैं। ईश्वर उन्हें सही मार्गदर्शन दे रहा है। वे जिसे खोज रहे हैं, वह उन्हें खोज रहा है। दैवी प्रेम उनकी आत्मा को भरता है। दैवी शांति उनके दिलोदिमाग़ को भरती है। वे सभी मायनों में समृद्ध हैं — आध्यात्मिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक हर दृष्टि से। वे दिन-रात आगे बढ़ रहे हैं, तरक्की और विकास कर रहे हैं — आध्यात्मिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक, सभी मायनों में — क्योंकि जीवन विकास का ही नाम है। हमारे बीच सद्भाव, शांति, प्रेम और समझ है। हमारे जीवन में दैवी सही क्रिया और दैवी शांति सक्रिय है।"

उसने अपनी पत्नी के लिए सुबह-शाम इस तरह प्रार्थना की: “मेरी पत्नी ईश्वर की संतान है। वह असीमित की पुत्री है, अमरता की बेटी है। दैवी प्रेम उसकी आत्मा को भरता है और यह लिखा गया है: वह उसकी परवाह करता है। दैवी प्रेम, शांति, सद्भाव और आनंद सारे समय उससे प्रवाहित होता है। वह सभी मायनों में दैवी मार्गदर्शन प्राप्त कर रही है और समृद्ध हो रही है। समृद्ध होना सभी मायनों में विकास करना है। हमारे बीच सद्भाव, शांति, प्रेम और समझ है। मैं उसके भीतर के देवत्व को सलाम करता हूँ और वह मेरे भीतर के देवत्व को सलाम करती है।”

जब वे दोनों स्थिति के बारे में तनावरहित और शांत हो गए, तो उन्हें अहसास हुआ कि इससे सिर्फ़ अच्छा परिणाम ही मिल सकता है। जल्दी ही उसके पास कंपनी के प्रेसिडेंट का फ़ोन आया, जिन्होंने उसकी पत्नी के साथ सुलह पर उसे बधाई दी। साथ ही उन्होंने उसकी पुरानी उपलब्धियों और संगठन की सफलता में योगदान के लिए उसकी प्रशंसा की। दरअसल, उस सेल्स मैनेजर की पत्नी उसकी पीठ पीछे कंपनी के प्रेसिडेंट से मिली थी और उसने उन्हें पूरी कहानी बता दी थी — वे अब कितनी ख़ुशी-ख़ुशी रह रहे थे और किस तरह वह दूसरी महिला उसकी ज़िंदगी से ओझल हो गई थी। महिला ने बताया कि अब वे दोनों मिलकर प्रार्थना कर रहे हैं। प्रेसिडेंट प्रभावित हुए और उस महिला तथा उसके पति को बहुत जल्दी ही वैज्ञानिक प्रार्थना की दौलत मिल गई — क्योंकि असीमित की दौलत आपके भीतर है।

आप यह जान सकते हैं कि आप अपनी प्रार्थना में कब सफल हो गए हैं। इसका पैमाना यह है कि आप कैसा महसूस करते हैं। अगर आप चिंतित या तनावपूर्ण हैं, अगर आप इस बात पर हैरान हो रहे हैं कि कैसे, कब और कहाँ या किस स्रोत से आपको जवाब मिलेगा, तो आप दखलंदाज़ी कर रहे हैं। इससे यह पता चलता है कि आपको दरअसल अपने अवचेतन की बुद्धिमत्ता पर सच्चा भरोसा नहीं है। दिन भर या बीच-बीच में भी ख़ुद को न कोसें। जब आप अपनी इच्छा के बारे में सोचें, तो बस हल्का स्पर्श महत्त्वपूर्ण है। ख़ुद को याद दिलाएँ कि असीम प्रज्ञा दैवी योजना में इसकी इतनी अच्छी तरह परवाह कर रही है, जो आप अपने चेतन मन के तनाव से नहीं कर सकते।

मिसाल के तौर पर, अगर आप कहते हैं, “मुझे अगले महीने की पंद्रह तारीख़ तक 5,000 डॉलर चाहिए,” या “न्यायाधीश को महीने की पहली तारीख़ तक मेरा निर्णय सुना देना चाहिए,” वरना मेरा घर, मेरी मॉर्टगेज आदि चली जाएगी, तो यह डर, चिंता और तनाव है। इससे क्या होगा? इससे आपके जीवन में बाधाएँ, विलंब, अवरोध और मुश्किलें आएँगी। हमेशा स्रोत तक जाएँ। याद रखें, शांति और विश्वास में ही आपकी शक्ति है। अगर आप चिंतित, तनावग्रस्त और परेशान हों, तो इससे दौलत या मानसिक शांति या स्वास्थ्य या कोई चीज़ नहीं मिलेगी। स्रोत तक लौटें। अपने मन में पूर्ण शांति के स्थान तक जाएँ और ख़ुद से कहें — या इन सत्यों को दोहराएँ:

“यह मेरे साथ उसी अनुसार किया जाता है, जैसा मैं विश्वास करता हूँ। अगर मेरा मन तैयार है, तो सारी चीज़ें तैयार हैं,” जिसका मतलब है कि आशीर्वाद, मार्गदर्शन, दौलत, जवाब, समाधान, बाहर निकलने के रास्ते को पाने के लिए मुझे तो बस अपने मन को तैयार करना है। “मेरे विश्वास के अनुरूप ही यह मेरे साथ किया जाता है। अपने रास्ते जाओ; तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें पूर्ण स्वस्थ कर दिया है; शांति में जाओ, तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें पूर्ण कर दिया है। सारी चीज़ें तैयार हैं, बशर्ते मन तैयार हो। ईश्वर का प्रकाश मुझ पर चमकता है। अंतहीन ईश्वर की शांति मेरी

आत्मा को भरती है। शांति और विश्वास में मेरी शक्ति होगी।"

ईश्वर ने आनंद के लिए मुझे सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं। ईश्वर साथ हो, तो सब कुछ संभव है। इन सरल सत्यों को दोहराएँ। कहें,

"मालिक मेरा चरवाहा है। मुझे अभाव नहीं होगा। वह मुझे हरे चरागाहों में लिटाता है। वह मुझे शांत जल के क़रीब ले जाता है। वह मेरी आत्मा को स्वस्थ करता है। जब मैं उसका आह्वान करता हूँ, तो वह मुझे जवाब देता है। वह मुश्किल में मेरे साथ रहेगा। उसने मुझे ऊँचा उठा दिया है, क्योंकि वह मेरा नाम जानता है। ईश्वर मेरी त्वरित और अंतहीन आपूर्ति है; वह मुश्किल समय में हमेशा मौजूद मदद है।"

इन सत्यों को दोहराएँ। 23 वाँ या 91 वाँ या कोई दूसरा भजन पढ़ें और इन भजनों को शांति तथा प्रेम से दोहराएँ। आप अपने मन में आराम और शांति के बिंदु तक पहुँच जाएँगे। तब आपको अहसास हो जाता है कि ईश्वर कभी देर नहीं करता है और ईश्वर आपकी त्वरित तथा अंतहीन आपूर्ति है, वह आपको मार्गदर्शन दे रहा है, दिशा दिखा रहा है, आपके सामने हर वह चीज़ उजागर कर रहा है जो भी आपको जानने की ज़रूरत है, वह आपके लिए द्वार खोल रहा है, वह आपके सामने समाधान उजागर कर रहा है; और ईश्वर की अमीरी आपके जीवन में संचारित हो रही है तथा हमेशा प्रचुरता रहती है। जब आप इस मानसिक नज़रिये से काम करते हैं, तो द्वार खुल जाएगा, भोर प्रकट हो जाएगी और छायाएँ दूर भाग जाएँगी। चिंता, डर, तनाव और परेशानी से आपको जवाब नहीं मिलेगा। इससे तो सिर्फ़ अधिक अभाव, अधिक मुश्किलें ही आकर्षित होंगी। तो इसे उलट दें। स्रोत तक जाएँ। जिन सत्यों को आप जानते हैं, उन्हें दोहराएँ। ईश्वर के सत्यों पर मनन करें, जैसे: ईश्वर पूर्ण शांति है, पूर्ण सद्भाव है, असीम बुद्धिमत्ता है, असीम प्रज्ञा है, हमेशा जीवंत है, सर्वबुद्धिमान है, सर्वज्ञाता है, नवीनीकरण करने वाला है, वह सब कुछ जानता और देखता है और सभी वरदानों का स्रोत है।

इससे आपका मन शांत हो जाएगा और आपको शांति मिलेगी। और जब मन शांत होता है, तो इसे जवाब मिल जाता है। क्योंकि शांति और विश्वास में आपकी शक्ति है। ईश्वर सारे जवाब जानता है। इसलिए पकड़ ढीली करना और तनावरहित होना सीखें। बाहरी चीज़ों या परिस्थितियों को शक्ति न दें। अपने भीतर के असीमित, उपस्थिति और शक्ति को ही पूरी निष्ठा और शक्ति दें।

तैराकी के प्रशिक्षक आपको बताते हैं कि आप पानी पर तैर सकते हैं और यह आपको सहारा देगा, बशर्ते आप स्थिर रहें, शांत रहें। लेकिन अगर आप घबरा जाते हैं, तनाव में आ जाते हैं, डर जाते हैं, तो आप डूब जाएँगे। जब आप दौलत, समृद्धि, सफलता या आध्यात्मिक उपचार या कोई चीज़ खोज रहे हैं, तो महसूस करें कि आप समुद्र या स्विमिंग पूल की तरह पवित्र दैवी उपस्थिति में डूबे हैं और यह अहसास करें कि जीवन, प्रेम, सत्य और सौंदर्य की स्वर्णिम नदी आपके ज़रिये इसी समय प्रवाहित हो रही है, आपके समूचे अस्तित्व को सद्भाव, प्रेम, शांति और प्रचुरता के साँचे में ढाल रही है। ख़ुद को जीवन के महासागर में तैरते हुए महसूस करें। एकत्व का यह अहसास आपको दोबारा पूर्ण कर देगा।

नीचे दिया मनन आपके जीवन में कई अद्भुत चीज़ें लाएगा। कहें:

"ये सत्य मेरे अवचेतन मन में डूब रहे हैं। मैं उनका चित्र देखता हूँ कि वे मेरे चेतन मन से

अवचेतन मन में उन बीजों की तरह जा रहे हैं, जिन्हें मैं मिट्टी में बोता हूँ। मैं जानता हूँ कि मैं अपनी ख़ुद की तक़दीर बनाता हूँ। मेरी आस्था असीमित अस्तित्व में है, जिसने सारी चीज़ें बनाई हैं और ईश्वर में मेरी आस्था ही मेरी दौलत है। इसका मतलब है सभी अच्छी चीज़ों में पूरा विश्वास। मैं सर्वश्रेष्ठ की सुखद अपेक्षा में जीता हूँ और मुझे सर्वश्रेष्ठ ही मिलता है। मैं उस फ़सल को जानता हूँ, जो मैं भविष्य में काटूँगा, क्योंकि मेरे सारे विचार ईश्वर के विचार हैं। अच्छाई के मेरे विचारों के साथ ईश्वर की शक्ति है। मेरे विचार अच्छाई, सत्य, सौंदर्य और प्रचुरता के बीज हैं। अब मैं अपने मन के बाग में प्रेम, शांति, आनंद, सफलता, प्रचुरता, सुरक्षा और सद्भाव के विचार रखता हूँ। यह ईश्वर का बाग है। ईश्वर की महिमा और सौंदर्य मेरे जीवन में व्यक्त होगा और मैं जानता हूँ कि मेरा बाग भरपूर फ़सल देगा। इस पल के बाद से मैं जीवन, प्रेम और सत्य को व्यक्त करता हूँ। मैं सभी तरीक़ों से बेहद सुखी और समृद्ध हूँ और ईश्वर मेरी नेकी को कई गुना बढ़ा देता है।"

समृद्ध होने का अर्थ है सफल होना, फलना-फूलना और अच्छी स्थिति में होना। दूसरे शब्दों में, जब आप समृद्ध हो रहे हैं, तो आप विस्तार कर रहे हैं, आध्यात्मिक, मानसिक, वित्तीय, सामाजिक और बौद्धिक रूप से विकास कर रहे हैं। कभी भी किसी दूसरे व्यक्ति की दौलत, तरक्की, हीरों या रत्नों के प्रति ईर्ष्या न रखें, क्योंकि ईर्ष्या आपको ग़रीब बना देगी। यह ग़रीबी और सीमा को आपकी ओर आकर्षित कर देगी।

उनकी सफलता और दौलत पर आनंदित हों और उनके लिए ज़्यादा दौलत की इच्छा करें, क्योंकि आप दूसरे के लिए जो इच्छा करते हैं, वह आप अपने लिए कर रहे हैं। क्योंकि आप ही एकमात्र विचारक हैं। आप दूसरे के बारे में जो सोचते हैं, उसे आप अपने ख़ुद के मन और शरीर और अनुभव और अपने पर्स में भी बना रहे हैं। इसीलिए आप करोड़ों लोगों की सफलता और दौलत पर आनंदित होते हैं। सचमुच समृद्ध होने के लिए यह आवश्यक है कि आप एक नहर बन जाएँ, जिसके ज़रिये जीवन के सिद्धांत खुलकर, सद्भाव से, आनंद से और प्रेम से बहें।

मैं सुझाव देता हूँ कि आप काम करने और सोचने का एक निश्चित तरीक़ा तय कर लें और हर दिन नियमित व सुनियोजित तरीक़े से इसका अभ्यास करें।

एक युवक ने मुझसे परामर्श लिया। उसे कई सालों से निर्धनता ग्रंथि थी। उसे उसकी प्रार्थना का कोई जवाब या फल नहीं मिला था। उसने समृद्धि के लिए प्रार्थना तो की थी, लेकिन ग़रीबी का डर उसके दिमाग़ पर लगातार हावी रहा। स्वाभाविक रूप से, समृद्धि के बजाय अभाव और सीमा ही उसकी ओर आकर्षित हुईं। अवचेतन मन दो विचारों में से ज़्यादा प्रबल को स्वीकार करता है। ग़रीबी में विश्वास करना छोड़कर अपने मन को बदलें और अपने चारों ओर फैली ईश्वर की असीम दौलत में विश्वास शुरू करें।

मुझसे बात करने के बाद उसे अहसास होने लगा कि दौलत का विचार चित्र दौलत उत्पन्न करता है कि हर विचार सृजनात्मक होता है, जब तक कि ज़्यादा प्रबल विपरीत विचार द्वारा इसे दबा न दिया जाए। इसके अलावा, उसे अहसास हुआ कि ग़रीबी के बारे में उसका विचार और विश्वास उसके चारों ओर की असीमित अमीरी में विश्वास से कहीं बढ़कर था। फलस्वरूप उसने अपने विचार बदल लिए और उन्हें स्थायी बना लिया। मैंने उसके लिए समृद्धि प्रार्थना लिखी, जो इस तरह है। इससे आपको भी लाभ होगा।

“मैं जानता हूँ कि केवल एक ही स्रोत, जीवन सिद्धांत, जीवंत आत्मा है, जिससे सारी चीज़ें प्रवाहित होती हैं। इसने सृष्टि और इसके भीतर की सारी चीज़ों को बनाया था। मैं दैवी उपस्थिति का केंद्र बिंदु हूँ। मेरा मन खुला और ग्रहणशील है। मैं असीमित के सद्भाव, सौंदर्य, मार्गदर्शन, दौलत और अमीरी का खुलकर प्रवाहित होने वाला माध्यम हूँ। मैं जानता हूँ कि दौलत, सेहत और सफलता भीतर से मुक्त होती हैं और बाहर प्रकट होती हैं। मैं अब भीतर और बाहर की असीमित अमीरी के सामंजस्य में हूँ। मैं जानता हूँ कि ये विचार मेरे अवचेतन मन में धँस रहे हैं और संसार के पर्दे पर प्रतिबिंबित होंगे। मैं हर एक के लिए जीवन की सारी नियामतों की कामना करता हूँ। मैं आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक सभी प्रकार की दैवी दौलत के प्रति खुला और ग्रहणशील हूँ; और वे प्रचुरता की बाढ़ के रूप में मेरी ओर प्रवाहित होती हैं।”

इस युवक ने अपने विचार ग़रीबी के बजाय ईश्वर की अमीरी पर केंद्रित किए। उसने यह ख़ास संकल्प लिया कि वह जो कह रहा है, उसे कभी नहीं नकारेगा। कई लोग दौलत के लिए प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन एक घंटे बाद ही इसे नकार देते हैं। वे कहते हैं, “मैं इसका ख़र्च नहीं उठा सकता। मैं अपना महीना पूरा नहीं कर सकता।” वे अपनी प्रार्थना का मखौल उड़ा रहे हैं। वे उस व्यक्ति की तरह हैं, जो न्यू यॉर्क में टैक्सी से हवाई अड्डे जा रहा है और बीच रास्ते में वह टैक्सी ड्राइवर से कहता है, “ओह, मुझे वापस घर ले चलो। मैं अपना पासपोर्ट भूल आया।” तो वह वापस लौट जाता है। फिर वह रास्ते में एक बार फिर कहता है, “ओह, बेहतर है कि मैं अपने क्लब चला जाऊँ। मैं अपना पर्स भूल आया।” तो टैक्सी ड्राइवर उसे उसके क्लब ले जाता है। और वहाँ पहुँचने पर वह कहता है, “ओह, मैं कुछ पत्र अपनी दादी के यहाँ भूल आया।” तो वह दादी के घर जाता है। वह आधा घंटे में टैक्सी ड्राइवर को आधा दर्जन दिशाएँ बता देता है। आख़िरकार, टैक्सी ड्राइवर उसे पुलिस स्टेशन ले जाता है, क्योंकि उसे अहसास हो जाता है कि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है।

देखिए, करोड़ों लोग इसी तरह प्रार्थना करते हैं। नव विचार आंदोलन में भी। वे आधा या एक घंटे में अपने अवचेतन मन को आधा दर्जन दिशाएँ बता देते हैं। अवचेतन इतना दुविधाग्रस्त और हैरान हो जाता है कि उसे सूझ नहीं पड़ता कि क्या करना है, इसलिए यह कुछ भी नहीं करता है। इसका परिणाम होता है विशुद्ध कुंठा। कुंठा का मतलब है धोखा देना, कुछ नहीं के लिए काम करना। देखिए, आप ज़मीन में बीज बोने के बाद उसे खोदकर नहीं देखते हैं। आपने जो दृढ़ कथन कहा है, उसका विरोध करना छोड़ दें। लोग समृद्धि के लिए भी इसी तरह ग़लत प्रार्थना करते हैं। वे अपने दृढ़ कथनों को लगातार नकार रहे हैं। वे अपनी प्रार्थना का मखौल उड़ा रहे हैं।

इस युवक ने अपने विचार ग़रीबी के बजाय ईश्वर की अमीरी पर केंद्रित किए और यह कहना छोड़ दिया, “मैं इसका ख़र्च नहीं उठा सकता...” या “मैं वह पियानो या वह कार नहीं ख़रीद सकता।” “नहीं कर सकता” जुमले का इस्तेमाल कभी न करें। “नहीं कर सकता” पूरे संसार का इकलौता शैतान है। आपका अवचेतन आपकी बात को सच मान लेता है और आपकी सारी भलाई को रोक देता है। अब एक महीने में ही उसके पूरे जीवन का कायाकल्प हो गया। उसने ऊपर दिए गए सत्यों को दृढ़तापूर्वक कहा। उसने यह काम सुबह-शाम लगभग दस मिनट किया। उसने इन्हें धीरे-धीरे, अपने दिमाग़ में अंकित किया और वह जानता था कि वह दरअसल इन

सत्यों को अपने अवचेतन मन पर लिख रहा है, जिससे अवचेतन सक्रिय हो जाएगा और इसके छिपे हुए ख़ज़ाने खोल देगा; क्योंकि सोने की खान, हीरे की खान आपके अवचेतन में ही है। यह स्वर्ग की सारी दौलत का स्रोत है।

हालाँकि यह आदमी दस साल से सेल्समैन था और भविष्य की उसकी आशाएँ थोड़ी धूमिल थीं, लेकिन अचानक उसे सेल्स मैनेजर बना दिया गया, जहाँ उसे अन्य लाभों के अलावा 50,000 डॉलर प्रति वर्ष मिलने लगे। अवचेतन के पास ऐसे-ऐसे तरीक़े हैं, जिनके बारे में आप कुछ नहीं जानते। यह संभव ही नहीं है कि आप अपने अवचेतन में दौलत के विचार बो दें और इसके बाद भी ग़रीब रहें। यह संभव ही नहीं है कि आप अपने अवचेतन में सफलता का विचार बोएँ और सफल न हों; असीमित असफल नहीं हो सकता। आप जीतने के लिए पैदा हुए थे। आपकी प्रार्थना यह रहनी चाहिए: "दिन-रात मैं तरक्की कर रहा हूँ, आगे बढ़ रहा हूँ और विकास कर रहा हूँ। ईश्वर ने मेरे आनंद के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं।"

सार

जब पैसा आपके जीवन में खुलकर संचारित हो रहा हो, तो इसका मतलब है कि आप आर्थिक दृष्टि से स्वस्थ हैं, उसी तरह जिस तरह जब आपका रक्त खुलकर संचारित होता है, तो आप संकुलन से मुक्त होते हैं।

बाक़ी हर चीज़ को छोड़कर सिर्फ़ पैसा इकट्ठा करने से इंसान असंतुलित, एकतरफ़ा और कुंठित बन जाता है। हाँ, जब आप अपने अवचेतन के नियमों पर सही तरीक़े से अमल करते हैं, तो आपके पास मनचाहा पैसा भी आ सकता है और मानसिक शांति, सद्भाव, पूर्णता और संतुष्टि भी आ सकती है।

ईश्वर आपकी ऊर्जा, स्फूर्ति, स्वास्थ्य, सृजनात्मक विचारों की आपूर्ति का स्रोत है, सूर्य का स्रोत है, उस हवा का स्रोत है जिसमें आप साँस लेते हैं, उस सेवफल का स्रोत है जो आप खाते हैं और उस पैसे का भी स्रोत है, जो आपकी जेब में है।

हर दिन कहें: "मैं सफल होने के लिए पैदा हुआ हूँ। मैं जीतने के लिए पैदा हुआ हूँ। मेरे भीतर का असीमित असफल नहीं हो सकता। दैवी नियम और योजना मेरे जीवन को शासित करती है। दैवी शांति मेरी आत्मा को भरती है। दैवी प्रेम मेरे मन को सराबोर करता है। असीम प्रज्ञा सारे मायनों में मेरा मार्गदर्शन करती है। ईश्वर की अमीरी खुलकर, ख़ुशी से, अंतहीन रूप से और अथक रूप से मेरी ओर प्रवाहित होती है। मैं मानसिक, आध्यात्मिक, आर्थिक और बाक़ी सभी तरीक़ों से तरक्की कर रहा हूँ, आगे बढ़ रहा हूँ और विकास कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि ये सत्य मेरे अवचेतन मन में धँस रहे हैं और मैं जानता तथा यक़ीन करता हूँ कि वे अपनी तरह की ही फ़सल देंगे।"

लगातार दृढ़ कथन कहें, महसूस करें और यक़ीन करें कि ईश्वर आपकी भलाई को कई गुना कर रहा है। इसके बाद आप आध्यात्मिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से दिन के हर पल समृद्ध होंगे। क्योंकि ईश्वर की महिमा का कोई अंत नहीं है। जब आप अपने

अवचेतन मन में इन सत्यों की छाप छोड़ते हैं, तो अपने जीवन में होने वाले चमत्कारों को देखें।

यह प्रार्थना हर दिन करें:

"मैं जानता हूँ कि केवल एक ही स्रोत, जीवन सिद्धांत, जीवंत आत्मा है, जिससे सारी चीज़ें प्रवाहित होती हैं। इसने संसार और इसमें शामिल सारी चीज़ों को बनाया था। मैं दैवी उपस्थिति का केंद्र बिंदु हूँ। मेरा मन खुला और ग्रहणशील है। मैं असीमित के सद्भाव, सौंदर्य, मार्गदर्शन, दौलत और अमीरी का खुलकर बहने वाला माध्यम हूँ। मैं जानता हूँ कि दौलत, सेहत और सफलता भीतर से मुक्त होती हैं और बाहर प्रकट होती हैं। मैं अब भीतर और बाहर असीमित दौलत के सामंजस्य में हूँ, और मैं जानता हूँ कि ये विचार मेरे अवचेतन मन में धँस रहे हैं और संसार के पर्दे पर प्रतिबिंबित होंगे। मैं हर व्यक्ति के लिए जीवन के सारे वरदानों की कामना करता हूँ। मैं आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक दैवी अमीरी के प्रति खुला और ग्रहणशील हूँ; और यह अब प्रचुरता की बाढ़ में मेरी ओर प्रवाहित होती है।"

2

अपनी इच्छा का अहसास करें

इच्छा ईश्वर का उपहार है। ब्राउनिंग ने कहा था: "ईश्वर तुम हो जो देते हो; मैं हूँ जो पाता हूँ।" इच्छा आपको आगे की तरफ़ धक्का देती है। यह कर्म की प्रेरणा देती है। यह सारी प्रगति का कारण होती है। सेहत, ख़ुशी, सच्ची जगह, प्रचुरता और सुरक्षा की आपकी इच्छा — ये सब आपके भीतर असीमित के संदेशवाहक हैं, जो आपसे कह रहे हैं, "ज़्यादा ऊपर आ जाओ। मुझे तुम्हारी ज़रूरत है।"

इच्छा सारी प्रगति का कारण होती है। यह आपके भीतर के जीवन सिद्धांत का प्रगतिशील धक्का है। इच्छा की वजह से ही हम उछलकर आने वाली बस के मार्ग से दूर पहुँच जाते हैं। हम ऐसा इसलिए करते हैं, क्योंकि हमारे भीतर अपने जीवन की रक्षा करने की बुनियादी इच्छा होती है। किसान ख़ुद के और अपने परिवार के लिए भोजन हासिल करने की इच्छा की वजह से बीज बोते हैं। हम हवाई जहाज और स्पेसशिप इसलिए बनाते हैं, क्योंकि हमारे मन में समय और आकाश को जीतने तथा संसार का अन्वेषण करने की इच्छा होती है।

इच्छा असीमित का प्रगतिशील धक्का है, जो हमें कोई ऐसी चीज़ बताता है, जिसे स्वीकार करने पर हमारा जीवन ज़्यादा पूर्ण और आनंददायक हो जाएगा। इच्छा से जितने ज़्यादा लाभ की अपेक्षा होती है, हमारी इच्छा उतनी ही ज़्यादा प्रबल होती है। जहाँ कोई लाभ, फ़ायदा या तरक्की नज़र नहीं आती है, वहाँ कोई इच्छा नहीं होती है; फलस्वरूप कोई कर्म भी नहीं होता है।

बनने, करने और पाने की हमारी इच्छाओं को पूरा करने की हमारी असफलता अगर लंबे समय तक चले, तो यह कुंठा और अप्रसन्नता में व्यक्त होती है। आप ख़ुशी, शांति, समृद्धि और जीवन की सारी नियामतों का चुनाव करने के लिए यहाँ पर हैं। आपकी इच्छा आपको यह कहने

में सक्षम बनाती है, "यह अच्छा है; इसलिए मैं इसका चुनाव करता हूँ। बहरहाल, यह नकारात्मक है, इसलिए मैं इसे अस्वीकार करता हूँ।" सारे चुनाव में यह अनुभूति निहित है कि किसी चीज़ को अस्वीकार किया जाता है और किसी दूसरी चीज़ को वरीयता देकर स्वीकार किया जाता है।

विचार की कुछ पद्धतियों में इच्छा को ख़त्म करने और उसका दमन करने को कहा जाता है, लेकिन इसके परिणाम विनाशकारी होते हैं। अगर लोग इसमें सफल हो जाएँ, तो उनके लिए अच्छाई और बुराई में कोई फ़र्क़ नहीं रह जाएगा, क्योंकि किसी चीज़ में उनमें इच्छा जगाने की शक्ति नहीं होगी। उनमें सारी भावना और कर्म की सारी प्रेरणा मुर्दा हो जाएगी। आपकी इच्छा का मतलब है कि आप एक चीज़ के ऊपर किसी दूसरी चीज़ को चुनते हैं। जहाँ इच्छा का गला दबा दिया जाता है, वहाँ चुनाव की ऐसी कोई क्षमता मौजूद नहीं हो सकती।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कई मानसिक और आध्यात्मिक पाठ्यपुस्तकों के लेखक थॉमस ट्रोवर्ड ने भारत में कई साल बिताए। उन्होंने बताया कि कई भारतीय भक्त अच्छी-बुरी सभी तरह की इच्छाओं का दमन करते रहते हैं, लेकिन आगे चलकर वे दुर्बल मानव रूप बन जाते हैं। वे जीवित इंसान के बजाय निराशाजनक खंडहर बन जाते हैं। उन्होंने कहा कि इच्छा ख़त्म करने का मतलब था उदासीनता, कोई भावना नहीं और कोई कार्य नहीं। इच्छा ही सारी भावना और सारे कर्म का कारण है। यह सृष्टि को चलाने वाला सिद्धांत है। इच्छा सृजनात्मक शक्ति है। इसे समझदारी से प्रवाहित और निर्देशित करना चाहिए। इच्छा और इसकी पूर्णता आपके ही मार्ग में साकार होती है।

सच कहें तो कोई इच्छा बुरी नहीं होती है। लेकिन आप अपने भीतर उठने वाली इच्छा की ग़लत व्याख्या कर सकते हैं या उसे ग़लत दिशा दे सकते हैं। मिसाल के तौर पर, अगर आप ग़रीब हैं, तो आप दौलत की इच्छा करते हैं; अगर आप बीमार हैं, तो आप स्वास्थ्य की इच्छा करते हैं। सेहत आपकी तारणहार होगी। अगर आप जेल में हैं, तो आज़ादी आपकी उद्धार करने वाली होगी। अगर आप रेगिस्तान में प्यास से मर रहे हैं, तो पानी आपको जीवनदान देगा। आपकी इच्छा की पूर्णता आपकी तारणहार है। आप प्रेम, साहचर्य या शायद सच्चे स्थान की इच्छा कर सकते हैं। जो व्यक्ति दौलत की इच्छा करता है, वह अज्ञान में किसी बैंकर की हत्या करके या किसी दुकान को लूटकर उस इच्छा या आकांक्षा को पूरा कर सकता है। यह इच्छा की ग़लत दिशा है, इसलिए वह व्यक्ति जेल जा सकता है और उस पर हत्या का मुकदमा चल सकता है।

संभवतः इच्छा का दमन केवल तभी अच्छा होता है, जब उसकी पूर्ति की क़ीमत हमें अपनी अखंडता से चुकानी पड़े या इससे दूसरों को वंचित करना पड़े। एक आसान उदाहरण: भौतिक दौलत की इच्छा तब अच्छी है, जब इसे ईमानदारी से हासिल किया जाए, यह हमारी अच्छी सहायता करे और हमारे बच्चों को शिक्षा तथा हमारे परिवार को अच्छी जीवनशैली प्रदान करे; लेकिन अगर यह दौलत संग्रह हमारे लिए इतना महत्त्वपूर्ण बन जाए कि हम किसी दूसरी चीज़ के लिए समय ही न निकालें, अपने परिवार की उपेक्षा कर दें, दूसरों को नुक़सान पहुँचाएँ और यह हमारे अस्तित्व का केंद्र बिंदु बन जाए। यहाँ इच्छा को दोष नहीं दिया जाना चाहिए; यह तो प्रचुरता के अर्थ को भ्रष्ट करना है।

जब हम यह स्वीकार करते हैं कि हमारे भीतर एक असीम प्रज्ञा है, जिसने सृष्टि और इसकी सारी चीज़ों को बनाया है और जो हमारी सारी इच्छाओं को पूरा कर सकती है, तो हम विरोध और कुंठा के अहसास से उबर जाते हैं। भोजन की हमारी इच्छा वैध और सामान्य है, लेकिन ब्रेड के पैकेट की ख़ातिर किसी की जान लेने से हिंसा, विरोध, अपराधबोध और आत्म-विनाश उत्पन्न होता है।

हमारे भीतर एक शक्ति है, जो हमें ऊपर उठाएगी, हमें ख़ुशी, स्वास्थ्य, मानसिक शांति के ज़्यादा ऊँचे मार्ग पर ले जाएगी और किसी दूसरे व्यक्ति को उसके वरदानों से महरूम किए बिना हमारे सबसे प्रिय सपनों को पूरा करेगी।

स्त्री-पुरुष शायद सबसे ज़्यादा जो चाह रहे हैं, वह है वृद्धि। यह उनके भीतर मौजूद ईश्वर की इच्छा है, जो उनके जीवन के सभी पहलुओं में पूर्ण अभिव्यक्ति चाह रही है।

जब किसान ज़मीन में बीज बोता है और उसे प्रेम से खाद-पानी देता है, तो ईश्वर उसकी फ़सल को सौ गुना या हज़ार गुना बढ़ा देता है। इसी तरह आप विचार, भावना और कल्पना के ज़रिये अपने मन में जो भी बोते हैं, वह प्रकट रूप में बढ़ जाता है।

"वृद्धि" का अर्थ है आपकी भलाई का बहुगुणित होना, आपके शुरुआती विचार या योजना का साकार होना। अगर कोई कर्म शुरू ही न किया जाए, तो स्पष्ट रूप से कोई वृद्धि नहीं हो सकती। आप इसे अकेले नहीं कर सकते; यह ईश्वर है जो वृद्धि करता है।

हम विचार बोते हैं, अपनी प्रार्थनाओं और ईश्वर में विश्वास से उन्हें पोषण देते हैं और परिणाम होता है हमारी फ़सल की वृद्धि — हमारा पुरस्कार।

बीज बोने, पानी देने और फ़सल (वृद्धि) काटने की उपमा में हम सृष्टि के सबसे बुनियादी, अपरिवर्तनीय, विश्वसनीय सिद्धांतों में से एक का इस्तेमाल कर रहे हैं: कृषि के नियम, जो समय के इम्तहान में हमेशा खरे साबित हुए हैं। हमारा विश्व एक बियाबान या रेगिस्तान है, जिसे किसी सुंदर उपवन, हरे-भरे अंगूर के बाग, गेहूँ के पोषक खेत में बदला जा सकता है — उपजाऊ ज़मीन को जोतकर, सुंदर पौधे लगाकर, खरपतवार और झाड़-झंखाड़ को हटाकर।

बीज ईश्वर का चमत्कार है। इसे किसी जुती हुई जगह पर डाल दें, तो यह ग़ायब हो जाता है। इसे पर्याप्त पानी देने पर इसका मूल स्वरूप नष्ट हो जाता है और फिर यह मिट्टी के अंधकार में अंकुरित होता है और प्रकट होकर 100 या 1,000 गुना फ़सल देता है। अगर हम खुदाई करके इसकी जाँच करें, तो हम इसे नहीं पहचान पाएँगे, क्योंकि इसका स्वरूप बहुत ज़्यादा बदल गया है।

मन के कार्य करने की एक निश्चित, सटीक, उजागर करने वाली प्रक्रिया होती है। यह वृद्धि के हमारे विचारों और इच्छाओं का इतिहास तथा तक़दीर है।

चेतन, तार्किक मन में अगर किसी विचार को नियमित रूप से, आदतन रखा जाए और विपरीत प्रकृति के विचार से इसका विरोध न किया जाए — तो यह ज़्यादा गहरे (अवचेतन) मन की उपजाऊ भूमि में बो दिया जाता है।

ज़्यादा गहरे मन में यह "मरता" है, अंकुरित होता है और विकसित होता है। यह बढ़ता है, कई गुना होता है और हमारे अनुभवों के रूप में सामने आ जाता है। यह एक आदर्श उपमा है।

वृद्धि की मात्रा इस अनुरूप होती है कि इसे मन में कितनी ज़्यादा बार रखा गया और भावना तथा कल्पना कितनी गहन थी।

यह फ़ॉर्मूला प्राचीन दार्शनिकों के लेखन, बाइबल और अन्य धर्मों के ग्रंथों में मिलता है। यदि यह प्रक्रिया इतनी सरल है, तो फिर लोग क्यों पूछते हैं, "मैं इतने बुरे झमेले में क्यों हूँ?"

यह एक तार्किक प्रश्न है और यह समय जितना ही पुराना है। हृदय और मन की चीज़ें दिखती नहीं हैं और इनका सटीकता से, निश्चितता से वर्णन नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर, सभी लोग प्रेम के किसी भी प्रकटीकरण को पहचान लेते हैं, लेकिन हम इसे देख नहीं सकते।

बुद्धिमत्ता को देखा नहीं जा सकता; केवल इसके परिणामों या कामों को देखा जा सकता है। ख़ुशी, क्रोध, शत्रुता अदृश्य होते हैं; केवल उनके प्रभाव दिखते हैं। दयालुता, करुणा, सहयोग को देखा नहीं जा सकता। सत्य केवल तुलनाओं, उपमाओं, नीति कथाओं और दृष्टांतों के ज़रिये ही पेश किया जा सकता है — सिखाने की सबसे पुरानी तकनीकें।

जब प्रोफ़ेसर यह बताने की कोशिश करते हैं कि किसी परमाणु के भीतर क्या होता है, तो न तो वे, न ही विद्यार्थी दरअसल समझाई जाने वाली चीज़ को देख सकते हैं। उन्हें एक तुलना का इस्तेमाल करना होता है, जैसे इलेक्ट्रॉन न्यूक्लियस के चारों ओर वैसे ही घूमते हैं, जैसे ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं। तब विद्यार्थी अंधकार की जगह "प्रकाश" देख सकते हैं।

यही वृद्धि के नियमों के साथ होता है। जब बीज (विचार) को पोषण दिया जाता है (मनन किया जाता है और इसके बारे में प्रार्थना की जाती है), तो फ़सल (पुरस्कार) काटी जाएगी।

प्रज्ञावान, सृजनात्मक स्रोत आपके विश्वासों, आपके गहरे (अच्छी तरह बोए गए) विचारों और अवधारणाओं पर प्रतिक्रिया करता है। अपनी कल्पना में वृद्धि के लिए नियमित रूप से धन्यवाद दें। आप पाएँगे कि परिवर्तन हो रहा है, हृदय में हलचल हो रही है। नए विचार, संपर्क, अवसर प्रकट होने लगते हैं — कल्पना शक्ति का अद्भुत रूप से सृजनात्मक उपयोग। अपने मन में आप किसी अपने की बात "सुनेंगे," जब वह आपकी ख़ुशक़िस्मती या अच्छी ख़बर पर आपको बधाई देगा।

अगर आप निराश हैं, तो नए विचार बोएँ; उन्हें जड़ पकड़ने का समय दें। वे बढ़ेंगे, समृद्ध होंगे और पल्लवित होंगे। वरना हम उस किसान की तरह होंगे, जिसके बीज राह में गिरकर निष्फल हो गए।

इन जीवनदायक विचारों को अपने ग्रहणशील हृदय की गहराई में बोएँ। आपकी फ़सल बढ़ जाएगी। प्रेम, स्वास्थ्य, सभी तरह की समृद्धि और गुणों पर मनन करें, जिनके बारे में शायद आपने सोचा भी नहीं होगा कि वे आपमें हैं। आपके पास आत्मा की, चेतना की समृद्धि आ सकती है, जिसमें भौतिक संपन्नता भी शामिल है।

ईश्वर साथ हो, तो सब कुछ संभव है। मन जो भी सोच सकता है, वह सब असीमित मन की संभावित वास्तविकता में मौजूद होता है। ईश्वर ने हमें वे सारी चीज़ें दी हैं, तो धरती पर हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं। ईश्वर ने हमें हर उस चीज़ की प्रचुरता दी है, जो सुखद उपलब्धि का आनंद लेने के लिए आवश्यक है।

अपने मन के बाग में बीज बो दें। एक उदार, इच्छुक मार्गदर्शक रक्षात्मक दैवी शक्ति का विचार रखें। वह बीज आपकी भावना से पोषण पाएगा, पाने की अपेक्षा से पोषण पाएगा और यह आपके अस्तित्व की गहराई में अंकुरित होगा और कई गुना होकर आपके संसार में प्रकट हो जाएगा। यह इतने गुना हो जाएगा कि आपने सपने में भी नहीं सोचा होगा और दिल में कल्पना भी नहीं की होगी।

एक आदमी दिवालिया था, बेरोज़गार था और बुरी तरह कुंठित था। वह कुछ समय पहले मेरे एक व्याख्यान में आया और उसने अवचेतन मन की शक्ति पर मेरी बातें सुनीं। वह घर गया और उन बातों पर अमल किया। उसने पहले कभी मन की शक्ति के बारे में कोई व्याख्यान नहीं सुना था, लेकिन उसने कहा, "इसमें समझदारी लगती है।" उसने उन तीन चीज़ों की सूची बनाई, जिन्हें वह चाहता था। आप उन्हें भौतिक इच्छाएँ कह सकते हैं, लेकिन वे उसकी आवश्यकताएँ थीं और वह उनका हक़दार था। सबसे पहली चीज़, उसे एक नौकरी पानी थी। किसी नौकरी से आमदनी के बिना उसकी इच्छाएँ पूरी होने की कोई संभावना नहीं थी।

इसके बाद एक कार थी। क्या यह आपके द्वार के बाहर का आध्यात्मिक विचार नहीं है? मान लें कि संसार की सारी मोटरें किसी विभीषिका से नष्ट हो जाएँ? कोई भी इंजीनियर एक नया डिज़ाइन तैयार करके ज़्यादा कारें बना सकता है। आपको क्या लगता है, कार कहाँ है? क्या यह इंजीनियर के मन में नहीं है? जो भी चीज़ आप देखते हैं, वह हर चीज़ अदृश्य मानव मन या असीमित के अदृश्य मन से बाहर निकली है। दौलत, स्वास्थ्य और हर दूसरी चीज़ यहीं पर है।

इसलिए इस व्यक्ति की सूची इस प्रकार थी: सच्ची जगह, नौकरी, एक कार और उसकी ज़रूरत का सारा पैसा। उसने ये ठोस चीज़ें यह देखने के लिए चुनी कि क्या उसके विचार वस्तुएँ बन सकते हैं। वह ख़ुद के सामने यह साबित करना चाहता था कि वस्तु का विचार आगे चलकर वस्तु में बदल जाता है। मैंने व्याख्यान में कहा था कि विचार वास्तविकता का एक रूप था, जिस तरह इस पुस्तक का विचार जिसे मैं लिख रहा हूँ। यह कहाँ है? यह मेरे मन में है, है ना?

उसने काम करने का एक निश्चित तरीक़ा तय किया और हर दिन नियम से इसका अभ्यास करने लगा। वह इसमें इतने समय तक जुटा रहा, ताकि इसे काम करने का अच्छा मौक़ा मिले। यह व्यक्ति जानता था कि आप एक-दो कोशिशों में ही तैरना नहीं सीख जाते हैं। उसने अपनी सच्ची जगह के लिए इस तरह प्रार्थना की: "मैं जानता हूँ कि असीमित प्रज्ञा मेरे विचारों पर प्रतिक्रिया करती है। यह अब मेरे सच्चे गुण मेरे सामने उजागर कर रही है। मैं अपनी छिपी प्रतिभाओं के बारे में जागरूक हूँ। मुझे एक अद्भुत आमदनी हो रही है। मैं जानता हूँ कि सच्ची जगह का विचार और इसका प्रकटीकरण दैवी मन में एक हैं। मैं अपने चेतन, तार्किक मन में आने वाली प्रेरणा का अनुसरण करता हूँ। इसे चूकना मेरे लिए असंभव है। यह स्पष्टता से आती है और मैं इसे पहचान लेता हूँ। यह प्रयोग शुरू करने के दो सप्ताह के भीतर ही उसने सैन फ़्रांसिस्को में एक नौकरी के अनुबंध पर हस्ताक्षर कर दिए। उसने अपने मन के नियम का आनंद लिया और धन्यवाद दिया। फिर वह अगले उद्देश्य यानी नई कार की ओर बढ़ गया। उसके पास इसे ख़रीदने के पैसे नहीं थे। उसने मुझसे कहा, "मैं जानता हूँ कि मेरे मन में कार का विचार है। यह वास्तविक है और मैं इसके प्रति निष्ठावान रहूँगा। इसे प्रकट होना ही होगा।" उसने लॉटरी में

एक कार जीत ली। अगर उसके पास पैसा होता, तो मुझे यक़ीन है कि वह कार ख़रीद लेता। लेकिन उसने इसे एक लॉटरी में जीता। इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि कार उसे कैसे मिली? उसने कार चुराई नहीं थी।

अब वह अवचेतन का रहस्य जान गया था: अगर वह मानसिक और भावनात्मक रूप से ख़ुद को विचार के साथ एक कर ले, तो अवचेतन इसे साकार कर देगा। वह बहुत शुक्रगुज़ार था।

अगली प्रार्थना ज़्यादा दौलत के लिए थी। हर सुबह और शाम प्रार्थना में उसने अपने जीवन में प्रवाहित हो रही दैवी दौलत के लिए धन्यवाद दिया, दावा किया कि दौलत का उसका विचार पूर्ण हो रहा है। उसे सैन फ़्रांसिस्को की एक रईस विधवा से प्रेम हो गया, जिसने उसके नए व्यवसाय के लिए उसे पूँजी दे दी। इस आदमी ने काम करने का एक निश्चित तरीक़ा तय किया था और अपनी प्रत्येक इच्छा के साथ यह दावा किया था कि यह पूरी हो चुकी है। उसने हर इच्छा पर अलग-अलग दावा किया, लेकिन सुबह-शाम अपनी प्रार्थना में एक ही चीज़ का दावा किया।

अगर आप ऊपर बताए व्यक्ति की तरह प्रार्थना करते हैं और अगर दो सप्ताह के भीतर कोई परिणाम नहीं दिखता है, तो इस तरीक़े को छोड़कर कोई नया तरीक़ा अपनाएँ। याद रखें, एक जवाब है। यह सूरज के उगने की तरह ही निश्चित है।

एक युवक उस रेडियो स्टेशन पर काम करता है, जहाँ मैं अपने कार्यक्रम प्रसारित करता हूँ। उसने मुझे बताया कि उसने यह आदेश दिया कि उसका अवचेतन मन उसके सामने एक संगठन के वार्षिक जलसे में जाने की आदर्श योजना उजागर कर देगा, जिसका वह सदस्य था। उसने इस बारे में प्रार्थना और मनन किया। जल्दी ही रास्ता खुल गया और उसे वहाँ मुफ़्त में आमंत्रित किया गया।

इसके अलावा, पिछले साल उसने आदेश दिया कि उसके अवचेतन की असीम प्रज्ञा यूरोप यात्रा की आदर्श योजना उजागर करेगी, जिसमें वह कई देश घूमेगा। जल्द ही द्वार खुल गया और रिश्तेदारों ने उसकी यात्रा का पूरा ख़र्च उठाया। वह ज़्यादा गहरे मन का इस्तेमाल करने का तरीक़ा जानता है। बहरहाल, उस वक़्त उसकी जेब में एक धेला भी नहीं था। लेकिन द्वार खुल गया और ज़्यादा गहरे मन ने प्रतिक्रिया की।

आपको कोई चीज़ चुराना नहीं है। अपने भीतर के असीमित भंडार तक पहुँचने की पूरी क्षमता आपके भीतर है। आप जो चाहते हैं, उसका दावा करें, उसे महसूस करें, उसका आनंद लें; और यह साकार हो जाएगा। सादगी और स्वतः प्रवृत्ति विकसित करने के साथ यह जान लें कि विश्वास के साथ आप प्रार्थना में जो भी माँगेंगे, वह आपको मिल जाएगा। इसी समय निर्णय लें कि आप जो करना चाहते हैं, वह आप कर सकते हैं। इसी समय निर्णय लें कि आप जो बनना चाहते हैं वह बन सकते हैं। कोई भी प्रबुद्ध व्यक्ति आज यह विश्वास नहीं करता कि कोई क्रूर भाग्य हमें ग़रीबी, बीमारी, दुख या कष्ट में रहने के लिए विवश करता है। यह जंगल का विश्वास है। यह बकवास है। यह इतना मूर्खतापूर्ण है कि शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

कुछ लोगों को यह यक़ीन होता है कि "इच्छा" करना ग़लत है। क्या वर्तमान से बेहतर जीवन जीने की हमारी इच्छा को स्वीकार करना सचमुच स्वीकार्य है? या फिर जब संसार में इतना कष्ट है, तो ज़्यादा की हसरत करना, प्रगति करने और समृद्ध होने की हसरत करना पूरी

तरह से ठीक है? ये पूरी तरह से वैध प्रश्न हैं और अगर हम स्थायी परिवर्तन चाहते हैं, तो इन्हें तुरंत हल करना चाहिए। कुछ धार्मिक समुदायों के सख़्त नैतिकतावादी, दमनकारी विश्वास तंत्र में एक गहरा विश्वास (या शायद मँडराता हुआ शक) बैठा रहता है कि इच्छा करना ग़लत बात है। अगर आप इस नज़रिये के शिकार हैं, तो इससे बाहर निकलने का समय आ चुका है। शंका और आध्यात्मिक अंधकार (उदार सृष्टि का अज्ञान) का पर्दा हटा दें।

ईश्वरीय उपस्थिति आपके भीतर का असीम जीवन सिद्धांत है, जो हमेशा आपका उपचार करना चाहता है। इसकी प्रवृत्ति आपको चंगा करना है। इसकी प्रवृत्ति आपकी राह को रोशन करना भी है। आपके विचारों और झूठे विश्वासों के अलावा कोई भी चीज़ नहीं है, जो आपको दोयम दर्जे या बीमारी या दुखद परिस्थिति में रख रहा है। डर, अभाव और एकाकीपन की जेल से बाहर निकलें। यह सोचना छोड़ दें कि ईश्वर आसमान में रहने वाला दाढ़ी वाला बूढ़ा आदमी है। ईश्वर आपके भीतर की असीम उपस्थिति, असीम शक्ति और असीम प्रज्ञा है, जो आपका ध्यान रखती है जब आप गहरी नींद में होते हैं, जो आपके भोजन को पचाती है और आपको जगा देती है, जब आप कहते हैं, "मैं सुबह दो बजे जागना चाहता हूँ।" यह आपको जगा देती है, है ना?

अपने भीतर की असीमित उपचारक उपस्थिति को पहचानें। यह आपको पूर्ण कर सकती है। यह कहना ईशनिंदा है कि ईश्वर आपको दंड दे रहा है। यह निरा अज्ञान है। अज्ञान इस सृष्टि में एकमात्र पाप है। सारा दंड, दुख और कष्ट अज्ञान के परिणाम हैं। आपका मन और शरीर एक हैं। मनोदैहिक चिकित्सा के क्षेत्र के लोगों को अब यह अहसास हो रहा है कि यह बताना असंभव है कि मन कहाँ शुरू होता है और शरीर कहाँ ख़त्म होता है। आज शोध उजागर कर रहा है कि शारीरिक रोग के छिपे हुए कारण मन की उलझी हुई गहराइयों में रहते हैं — कुंठित क्रोध में, दमित इच्छाओं में, ईर्ष्याओं और चिंताओं में।

अपनी मुश्किलों के लिए असीमित को दोष देना मूर्खतापूर्ण है, जब हम ख़ुद ही अपनी ग़लत सोच और नियम के दुरुपयोग से ख़ुद पर मुश्किलें लाते हैं। अगर आप अज्ञान से बिजली के सिद्धांत का इस्तेमाल करते हैं, तो आप मुश्किल में पड़ जाएँगे, है ना? आप किसी बच्चे को डुबोने के लिए पानी का इस्तेमाल कर सकते हैं, लेकिन पानी बुरा नहीं है। आप बिजली का बारूदी बम बनाकर लोगों को उड़ा सकते हैं, लेकिन बिजली बुरी नहीं है। आप इससे अंडा भी तल सकते हैं। अहम बात यह है कि आप इसका कैसे इस्तेमाल करते हैं? जीवन के सिद्धांत बुरे नहीं हैं; यह तो इस पर निर्भर करता है कि हम उनका कैसे इस्तेमाल करते हैं। हमारी प्रेरणा क्या है?

आप अपने अवचेतन की शक्ति का इस्तेमाल नकारात्मक तरीक़े से कर सकते हैं या फिर सृजनात्मक तरीक़े से भी कर सकते हैं।

एक युवा महिला ने मुझसे कहा कि वह सिर्फ़ बुद्धिमानी चाहती है। यह हर एक की इच्छा होती है। लेकिन हमारी शब्दावली समान नहीं है। जब आपके पास बुद्धिमत्ता होती है, तो आप यहीं पर ख़ुद को पूरी तरह व्यक्त कर रहे हैं। कार आपके दरवाज़े के सामने का एक आध्यात्मिक विचार है। जब आप भूखे होते हैं, तो सैंडविच आपकी प्रार्थना का जवाब है और यह भी आध्यात्मिक विचार है। अगर आप मंच पर अच्छा गाते हैं, तो यह उतना ही आध्यात्मिक है,

जितना कि भजनमंडली में भजन गाना। जो काम करने वाला आपके मकान की छत की मरम्मत करता है, वह उसी तरह आध्यात्मिक श्रम कर रहा है, जिस तरह कि पादरी, पुजारी, मौलवी या रब्बी करता है, जो बाइबल या कुरान की आयत पढ़ता है या प्रवचन देता है।

यह जान लें कि आत्मा और शरीर एक है। भौतिक चीज़ों को हिकारत से देखना छोड़ दें। ईश्वर की आत्मा को संसार के हाड़-मांस से अलग करना हमेशा के लिए छोड़ दें। वे एक ही चीज़ हैं।

किसी ने आइंस्टाइन से पूछा था, "पदार्थ क्या है?" उन्होंने कहा था, "आत्मा या ऊर्जा, जो दिखने के बिंदु तक सिकुड़ गई है।" 10,000 वर्ष पूर्व प्राचीन हिंदुओं ने कहा था, "पदार्थ वह आत्मा है, जो दिखने के बिंदु तक सिकुड़ गई है।" उन्होंने कहा था, "आत्मा और पर्दा एक ही हैं; पदार्थ आत्मा का न्यूनतम बिंदु है और आत्मा पदार्थ का सर्वोच्च बिंदु है।" हर शारीरिक कार्य, चाहे आप इसे कितने भी निचले स्तर का मानें, आपके भीतर की जीवंत आत्मा है, जो भौतिक स्वरूप को संचालित कर रही है। जब आप गंदे फर्श को साफ़ करते हैं या अस्तबल को धोते हैं, तो आप नीचे नहीं गिर रहे हैं या छोटे नहीं बन रहे हैं। अगर आप इस संसार में किसी चीज़ की निंदा कर रहे हैं, तो आप ख़ुद को नीचा कर रहे हैं और अपने मूल्य को कम कर रहे हैं।

अच्छाई और बुराई दोनों ही आपके अपने विचारों में हैं और आप जिस तरह सोचते और महसूस करते हैं, संसार की हर चीज़ को उसी रंग में रंग देते हैं। अपने शरीर या संसार की आलोचना न करें, निंदा न करें या हिक़ारत से न देखें। आपका शरीर ईश्वर का जीवित मंदिर है। अपने शरीर में ईश्वर को महिमामंडित करें। पूरा संसार ईश्वर का शरीर है। संसार ईश्वर का नृत्य है। संसार ईश्वर का गीत है।

मेरे सहकर्मी और रिलीजियस साइंस इंटरनेशनल के अध्यक्ष डॉ. जे. कैनेडी शुल्ट्ज़ ने लिखा था: "विचार तभी महान हैं, जब वे जीवन देने वाली, जीवन का उपचार करने वाली शाश्वत अवधारणाओं का समर्थन करते हों, जिन्हें लागू किया जा सकता है और जो वांछनीय हैं। ये व्यक्तिगत स्वतंत्रता, सर्वव्यापी शांति, बेशर्त प्रेम और हमेशा बढ़ती उत्पादकता जैसी चीज़ें हैं।"

"ऐसे विचार सभी को नवीन जीवन देते हैं। ये वह सामान (तत्व) हैं, जिन्होंने मानव जाति को हमारे युगों-युगों के अस्तित्व से बेहतर जीने की अनुमति दी है। ऐसे विचार हर पीढ़ी में पर्याप्त लोगों द्वारा नए सिरे से पेश किए जाते हैं, जो इंसान को इस संसार में आगे बढ़ाए रखते हैं, भले ही यह प्रगति धीमी हो और हर युग को पीड़ित करने वाले सारे अज्ञान और क्रूरता के बावजूद हो।"

इनमें से कुछ न सिर्फ़ अपने ख़ुद के युग में अगुआ और प्रेरणापुंज बने, बल्कि आगे आने वाली पीढ़ियों में भी — आज तक भी। इनमें मूसा, कृष्ण, बुद्ध और ईसा मसीह शामिल हैं।

उन्होंने हमें यह तरीक़ा सिखाया है। उनका महान संदेश कभी भी ख़ुद पर केंद्रित नहीं था, बल्कि एक ज़्यादा ऊँची शक्ति पर केंद्रित था, जो हम पर प्रतिक्रिया करती है। "मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।" एक प्रेमपूर्ण ईश्वर की जीवंत उपस्थिति। वे अलग-अलग समय और देश में रहे थे। केवल इसी मायने में वे समान थे और विचार वह माध्यम है, जिसके ज़रिये हम जीते हैं और संसार तथा एक दूसरे से संबंध रखते हैं। यह हमारा साझा जनक है। अपने विचार के माध्यम से ही हम जीवन को और दूसरों को महत्त्व देना सीखते हैं और जीवन का महान उद्देश्य जीवन की

इच्छाओं को प्रचुरता से जीना और पूरा करना है।

आइए, हम इसी समय मनन करें। आपके अस्तित्व के केंद्र में शांति है। यह ईश्वर की शांति है। इस शांति में आप उसकी पवित्र उपस्थिति की शक्ति, आनंद और प्रेम महसूस करते हैं। यह अहसास करें कि असीमित प्रज्ञा सभी मायनों में आपका नेतृत्व करती है और मार्गदर्शन देती है। यह आपके पैरों के पास रखी रोशनी है और आपके मार्ग पर पड़ने वाला प्रकाश है। सफ़ेद घोड़े पर चढ़ जाएँ, जो ईश्वर की आत्मा है और आपके मन के जल में सक्रिय है। अपना ध्यान समस्या से दूर हटा लें और पूर्ण इच्छा की वास्तविकता पर केंद्रित कर लें। पूर्ण इच्छा को देखें। इसमें आनंदित हों। हमेशा अंत तक जाएँ। अंत देखने के बाद आप इस तक पहुँचने का साधन भी खोज लेंगे।

सार

इच्छा असीमित का धक्का है, जो हमें कोई ऐसी चीज़ बता रहा है, जिसे स्वीकार करने पर हमारा जीवन ज़्यादा पूर्ण और ज़्यादा आनंददायक बन जाएगा। इच्छा से जितने ज़्यादा लाभ की अपेक्षा होती है, हमारी इच्छा भी उतनी ही ज़्यादा प्रबल होती है। जहाँ किसी लाभ या तरक्की की अपेक्षा नहीं होती है, वहाँ कोई इच्छा नहीं होती है; फलस्वरूप कोई कर्म भी नहीं किया जाता है।

इच्छा सृजनात्मक शक्ति है; इसे बुद्धिमत्ता से प्रवाहित और निर्देशित करना चाहिए। इच्छा और इसका साकार होना आपके ख़ुद के मन में घटित होता है।

मानसिक और भावनात्मक रूप से ख़ुद को विचार के साथ एक कर लें; अवचेतन इसे साकार कर देगा।

डर, अभाव और एकाकीपन की जेल से बाहर निकल आएँ। यह सोचना छोड़ दें कि ईश्वर आसमान में बैठा कोई दाढ़ी वाला बुज़ुर्ग है। ईश्वर आपके भीतर की असीमित उपस्थिति, असीमित शक्ति और असीमित प्रज्ञा है। यह अहसास कर लें कि असीमित उपचारक उपस्थिति आपके भीतर है। यह आपको पूर्ण कर सकती है। यह कहना ईशनिंदा है कि ईश्वर आपको दंड दे रहा है। यह निरा अज्ञान है। अज्ञान इस संसार का एकमात्र पाप है और सारा दंड, दुख और कष्ट अज्ञान के ही कारण होता है। आपका मन और शरीर एक ही हैं।

यह अहसास कर लें कि असीमित प्रज्ञा सभी तरीक़ों से आपका नेतृत्व करती है और आपको मार्गदर्शन देती है। अपना ध्यान समस्या से दूर हटा लें। इसके बजाय साकार इच्छा की वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करें। पूर्ण इच्छा की वास्तविकता को देखें। इसमें आनंदित हों। हमेशा अंत तक जाएँ। जब आप अंत को देख लेंगे, तो आप अंत तक पहुँचने के साधन भी खोज लेंगे।

3

अपने अवचेतन की प्रोग्रामिंग करना

आप अपने अवचेतन मन की शक्ति से दौलत कैसे कमा सकते हैं, यह समझने के लिए आइए ज़्यादा सावधानी से जाँच करते हैं कि यह कैसे होता है।

मान लें कि कोई मनोवैज्ञानिक या मनोविश्लेषक आपको सम्मोहित कर देता है। इस अवस्था में आपका चेतन, तार्किक मन शिथिल हो जाता है। अब आपका अवचेतन सुझाव ग्रहण करने के लिए अनुकूल स्थिति में होता है। फिर वह आपको सुझाव देता है कि आप अमेरिका के राष्ट्रपति हैं। आपका अवचेतन इस कथन को सच मान लेगा। आपका अवचेतन तर्क नहीं करता है, चुनाव नहीं करता है, भेद नहीं करता है, जैसा आपका चेतन मन करता है। आप महत्त्व और गरिमा के वे सारे हाव-भाव ओढ़ लेंगे, जो आप राष्ट्रपति पद के अनुरूप मानते हैं। इसी तरह, अगर आपको पानी का एक गिलास दिया जाता है और यह बताया जाता है कि आप मदहोश हो चुके हैं, तो आप अपनी सर्वश्रेष्ठ योग्यता से शराबी की भूमिका निभाएँगे।

यदि आप मनोविश्लेषक को बताते हैं कि आपको टिमोथी घास से एलर्जी है और वह आपकी नाक के नीचे साफ़ पानी का एक गिलास रखकर आपको उसी समय बताता है कि यह टिमोथी घास है, तो आपमें एलर्जी के सारे लक्षण उत्पन्न हो जाएँगे। दैहिक और शारीरिक प्रतिक्रियाएँ वैसी ही होंगी, जैसी टिमोथी घास होने पर होतीं।

अगर आपको बताया जाता है कि आप एक भिखारी हैं, तो आपका व्यवहार तुरंत बदल जाएगा और आप एक दीन-हीन याचक का नज़रिया अपना लेंगे, जिसके हाथ में टिन का काल्पनिक कटोरा है।

संक्षेप में, आपको मूर्ति, कुत्ता, सैनिक या तैराक कुछ भी होने का यक़ीन दिलाया जा सकता है। आप दिए गए सुझाव की प्रकृति के अनुरूप वह भूमिका आश्चर्यजनक निष्ठा से निभाएँगे,

जहाँ तक कि सुझाई गई चीज़ के बारे में आपको ज्ञान होगा।

याद रखने वाली एक और महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपका अवचेतन मन हमेशा दो विचारों में से ज़्यादा प्रबल विचार को ही स्वीकार करता है। यानी यह बिना किसी सवाल के आपके विश्वास को स्वीकार कर लेता है, चाहे वह पूरी तरह सच हो या सरासर झूठ हो। आधुनिक वैज्ञानिक विचारक ईश्वर को अपने अवचेतन मन के भीतर की असीम प्रज्ञा के रूप में देखते हैं। उन्हें इस बात की परवाह नहीं होती कि लोग इसे अतिचेतन, अचेतन, आत्मपरक मन, जीवंत आत्मा सर्वशक्तिमान, परम प्रज्ञा, अल्लाह, ब्रह्मा, यहोवा, वास्तविकता, परमात्मा या सर्वदृष्टा चक्षु कहते हैं। मुद्दे की बात यह है: यह वहाँ आपके भीतर है। असीमित की सारी शक्तियाँ आपके भीतर हैं।

ईश्वर आत्मा है और आत्मा का कोई चेहरा, स्वरूप या आकृति नहीं होती। यह समय से परे है, आकार से परे है और शाश्वत है। एक ही आत्मा हम सबमें रहती है। इसीलिए बाइबल में कहा गया है, "ईश्वर का साम्राज्य आपके भीतर है" (हाँ, ईश्वर आपके विचारों, आपकी भावनाओं, आपकी कल्पना में रहता है।) दूसरे शब्दों में, आपका अदृश्य हिस्सा ईश्वर है। ईश्वर आपके भीतर का जीवन सिद्धांत है, असीम प्रेम, पूर्ण सद्भाव, असीम प्रज्ञा है।

आप अपने विचार के ज़रिये इस अदृश्य शक्ति से संपर्क कर सकते हैं, यह ज्ञान प्रार्थना की पूरी प्रक्रिया से रहस्य, अंधविश्वास, शंका और आश्चर्य का पर्दा हटा देता है। बाइबल आपको बताती है: "शब्द ईश्वर था।" जैसा आप जानते हैं, शब्द और कुछ नहीं बल्कि व्यक्त विचार है। आपने अब तक जो सुना है, उसके आधार पर आप जानते हैं कि हर विचार सृजनात्मक होता है और आपके विचार की प्रकृति के अनुरूप आपके जीवन में प्रकट हो जाता है। यह तर्कपूर्ण लगता है कि जिस भी समय आप सृजनात्मक शक्ति को खोज लेते हैं, उसी समय आप ईश्वर को खोज लेते हैं, क्योंकि सृजनात्मक शक्ति दो नहीं, तीन नहीं, एक हज़ार नहीं, सिर्फ़ एक ही है।

जब हम छोटे थे, तो हममें से कई की परवरिश नकारात्मक तरीक़े से की गई थी। छोटे और बहुत संवेदनशील होते वक़्त हम सभी सुझाव के प्रति संवेदनशील होते हैं। मिसाल के तौर पर, आइए मान लेते हैं कि चार्ल्स एक बदमिज़ाज व्यक्ति है, उसका मूड हमेशा ख़राब रहता है या वह इसके बारे में शिकायत करता है। इससे निबटने का एक तरीक़ा यह है कि वह हर रात सोने से पहले, सुबह-दोपहर को भी इस तरह के दृढ़ कथन कहे।

"आगे से मैं अपने अच्छे स्वभाव को बढ़ावा दूँगा। मुझमें ज़्यादा आनंद, ख़ुशी और मानसिक शांति होगी। हर दिन मैं ज़्यादा से ज़्यादा प्रेमपूर्ण और समझ से पूर्ण बन रहा हूँ। मैं अपने आस-पास के सभी लोगों के लिए आनंद, सौहार्द और सद्भावना का केंद्र बन रहा हूँ। मैं अपने अच्छे स्वभाव से उन्हें संक्रमित कर रहा हूँ। यह सुखद, आनंददायक और प्रसन्न मनोदशा अब मेरी सामान्य, स्वाभाविक मानसिक स्थिति बन रही है और मैं कृतज्ञ हूँ।"

चार्ल्स इन्हें अपने अवचेतन में लिख सकता है; वह अपने मन की दोबारा प्रोग्रामिंग कर सकता है; वह इसे दोबारा निर्देशित कर सकता है; वह इस पर दोबारा लिख सकता है। अवचेतन की प्रकृति बाध्यकारी होती है, इसलिए वह सद्भावपूर्ण, सुखद और शुभेच्छु बनने के लिए मजबूर हो जाएगा।

वह इन कथनों को दोहरा सकता है, ख़ुद को याद दिला सकता है कि वह इन्हें अपने ज़्यादा

गहरे मन में लिख रहा है और जिस किसी चीज़ की छाप अवचेतन मन पर छोड़ी जाती है, वह आकार, कार्य, अनुभव और घटना के रूप में बाहर प्रकट होती है। अवचेतन के हृदय से ही जीवन के मुद्दे बाहर निकलते हैं।

कई लोग बचपन में नकारात्मक सुझावों या नकारात्मक कंडीशनिंग या प्रोग्रामिंग के शिकार हो जाते हैं।

हर युग में, समय के हर कालखंड में और पृथ्वी के हर देश में सुझाव की शक्ति ने मानव जीवन और विचार में अपनी भूमिका निभाई है। संसार के कई हिस्सों में यह धर्म की नियंत्रणकारी शक्ति रही है। सुझाव का इस्तेमाल ख़ुद को अनुशासित और नियंत्रित करने के लिए किया जा सकता है। सृजनात्मक सुझाव भी होते हैं और नकारात्मक सुझाव भी होते हैं। सुझाव का इस्तेमाल दूसरे लोगों को नियंत्रित और आदेशित करने के लिए किया जा सकता है, जो मन के नियम नहीं जानते। अपने सृजनात्मक रूप में सुझाव आश्चर्यजनक और अद्भुत होता है। नकारात्मक रूप में सुझाव बहुत विनाशकारी होता है, जिसका परिणाम हीनता, असफलता का सिलसिला, कष्ट, रोग और बीमारी हो सकता है।

बचपन से हममें से ज़्यादातर लोगों को कई नकारात्मक सुझाव दिए गए हैं। नकारात्मक प्रोग्रामिंग बेहतर शब्द होगा। हम यह नहीं जानते थे कि उन्हें अस्वीकार या विफल कैसे करें, इसलिए हमने उन्हें अचेतन रूप से स्वीकार कर लिया। यहाँ कुछ नकारात्मक सुझाव हैं, जिनका परिणाम आपके अवचेतन मन की नकारात्मक प्रोग्रामिंग में हुआ। आपको यह बताया गया था, “ओह, तुम यह नहीं कर सकते।” शायद किसी ने आपसे कहा था, “तुम कभी कुछ नहीं बन पाओगे।” अब आप हीन भावना के शिकार हो चुके हैं। उन्होंने कहा था, “तुम्हें यह नहीं करना चाहिए; तुम नाकाम हो जाओगे। तुम्हारे सफल होने की कोई संभावना नहीं है। तुम सरासर ग़लत हो। इसका कोई फ़ायदा नहीं है। तुम क्या जानते हो, यह मायने नहीं रखता है। मायने तो यह रखता है कि तुम किसे जानते हो। संसार रसातल को जा रहा है। क्या फ़ायदा होना है? किसी को परवाह नहीं है। इतनी कड़ी कोशिश करने का क्या फ़ायदा?” बाक़ी ने आपसे कहा था, “ओह, अब आपकी उम्र ज़्यादा हो चुकी है; इसे भूल जाएँ; आपकी याददाश्त कमज़ोर हो रही है। चीज़ें बदतर हो रही हैं। जीवन एक अंतहीन चक्की है।” बाक़ी ने आपसे कहा था, “प्रेम सिर्फ़ पक्षियों के लिए है। आप किसी हालत में नहीं जीत सकते। बहुत जल्दी ही आप दिवालिया हो जाएँगे। सावधान रहें: आपको वायरस लग जाएगा। आप किसी इंसान पर भरोसा नहीं कर सकते।”

अगर आप इन सभी नकारात्मक सुझावों को स्वीकार कर लेते हैं, तो आप अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग बहुत नकारात्मक तरीक़े से कर रहे हैं। आपने हीन भावना, अक्षमता और डर का अहसास विकसित कर लिया है।

जब तक कि आप वयस्क के रूप में अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग सृजनात्मक तरीक़े से नहीं कर लेते हैं, जो दोबारा कंडीशनिंग की मनोचिकित्सा है, तब तक अतीत में आप पर छूटी छाप आपसे ऐसे काम करा सकती है, जो आपके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में असफलता उत्पन्न करें। प्रोग्रामिंग ढेर सारी नकारात्मक शाब्दिक कंडीशनिंग से आपको छुटकारा दिलाने का साधन है, जो आपके जीवन के साँचे को विकृत कर सकती है, जिससे अच्छी आदतें

डालना मुश्किल हो जाता है।

किसी भी दिन का अख़बार उठा लें। आपको दर्जनों ख़बरें मिलेंगी, जो निरर्थकता, डर, चिंता, तनाव और आसन्न विनाश के बीज बो सकती हैं। अगर आप इन्हें स्वीकार कर लें, तो डर के इन विचारों की वजह से आपकी जीने की इच्छा भी ख़त्म हो सकती है। आप अपने अवचेतन मन को सृजनात्मक आत्मसुझाव देकर इन सभी नकारात्मक सुझावों को अस्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि आप यह जानते हैं कि आप इन सभी विनाशकारी विचारों को प्रभावहीन कर सकते हैं।

लोग आपको जो नकारात्मक सुझाव देते हैं, उनकी नियमित जाँच करें। आपको विनाशकारी, नकारात्मक सुझावों से प्रभावित होने की कोई ज़रूरत नहीं है। बचपन से लेकर किशोरावस्था तक हम सभी इसके शिकार हुए हैं। अगर आप पीछे पलटकर देखें, तो आपको आसानी से याद आ सकता है कि किस तरह माता-पिता, मित्रों, रिश्तेदारों, शिक्षकों और साथियों ने नकारात्मक सुझावों के अभियान में अपना योगदान दिया था। आपसे कही गई बातों का अध्ययन करें और आप पाएँगे कि इसमें से ज़्यादातर नकारात्मक थीं। उनमें से ज़्यादातर बातों का उद्देश्य आपको नियंत्रित करना था या फिर आपमें डर भरना था। नकारात्मक सुझाव हर घर, ऑफ़िस, फ़ैक्ट्री और क्लब में दिए जाते हैं।

देखिए, अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग करने का एक सही तरीक़ा है। हर सुबह आप स्थिर, शांत, तनावरहित होकर बैठ सकते हैं और इस तरह के दृढ़ कथन कह सकते हैं:

“दैवी नियम और योजना मेरे जीवन को शासित करती है। दैवी सही क्रिया सर्वशक्तिमान है। दैवी सफलता मेरी है। दैवी सौहार्द मेरा है। दैवी शांति मेरी आत्मा को भरती है। दैवी प्रेम मेरे समूचे अस्तित्व को सराबोर करता है। दैवी प्रचुरता मेरी है। दैवी प्रेम आज और हर दिन मुझसे आगे जाता है और मेरी राह को सीधी, आनंददायक तथा भव्य बनाता है।”

नौसेना के एक कप्तान ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इसी तरह अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग की। उसने इन सत्यों को बार-बार दोहराया। धीरे-धीरे दोहराव, आस्था और अपेक्षा के ज़रिये ये उसके अवचेतन मन में पहुँच गए। जो भी अवचेतन पर अंकित किया जाता है, वह बाध्यकारी होता है। इसलिए वह सौहार्द, शांति और प्रेम का जीवन जीने के लिए मजबूर हुआ। उसने अपने मन की प्रोग्रामिंग इस तरह की। हर सुबह और रात को वह 23 वें भजन का अपना ख़ुद का संस्करण दोहराता था:

> ईश्वर मेरा पायलट है। मैं भटकूँगा नहीं। वह अँधेरे जल के पार रोशनी दिखाता है। वह गहरी धाराओं में मेरे जहाज़ को खेता है। वह मेरा यात्रा-वृत्तांत रखता है। वह पवित्र तारे से मुझे दिशा दिखाता है। हाँ, हालाँकि मैं जीवन के तूफ़ानों और थपेड़ों के बीच तैरता हूँ, लेकिन मुझे किसी ख़तरे का अंदेशा नहीं है, क्योंकि तुम मेरे साथ हो। तुम्हारा प्रेम और परवाह, वे मेरी रक्षा करते हैं। तुमने अमरता के गृहनगर में मेरे लिए एक बंदरगाह बनाया है। तुम तेल से लहरों का लेप करते हो। मेरा जहाज़ शांति से चलता है। निश्चित रूप से मैं जो समुद्री यात्रा करता हूँ, उसमें सूरज और तारों की रोशनी मेरे साथ होगी और मैं अपने ईश्वर के बंदरगाह में हमेशा विश्वास करूँगा। आमीन।

आप भी यह कर सकते हैं। हर सुबह अपनी कार में बैठने से पहले आप बैठकर इसे दोहरा सकते हैं या आप इन सत्यों की ख़ुद को याद दिलाने की बात दोहरा सकते हैं। आप क्या कर रहे हैं? क्या आप प्रोग्रामिंग नहीं कर रहे हैं? क्या आप अपने अवचेतन मन में नहीं लिख रहे हैं? क्या

आप इसे जीवनदायी साँचे की ख़ुराक नहीं दे रहे हैं? जब आप इन चीज़ों को दोहराते हैं और ख़ुद को याद दिलाते हैं, जब आप इन सत्यों की घोषणा करते हैं और उनमें विश्वास करते हैं, तो वे आपके अवचेतन मन में धँस जाएँगे और वे बाध्यकारी बन जाते हैं, क्योंकि आपके अवचेतन मन की प्रकृति बाध्यकारी होती है।

न्यू ऑर्लिएंस के युनिटी टेंपल में मैंने एक व्याख्यान दिया। इसमें एक महिला ने मुझे बताया कि एक आदमी वहाँ आता था और काफ़ी बार कहता था, "मेरे इलाके में लूट की बहुत वारदातें होती हैं। मेरी दुकान रात को देर तक खुली रहती है और किसी रात मुझे भी लूटा जा सकता है। शायद वे मुझे गोली भी मार देंगे।" लोगों ने उससे कहा, "ऐसे नकारात्मक सुझाव देना छोड़ो। इस तर्ज पर सोचना छोड़ो।"

लेकिन वह उसी तर्ज पर सोचता रहा। उसने कोई ध्यान नहीं दिया। वह अपने अवचेतन मन की नकारात्मक प्रोग्रामिंग करता रहा और यह सच हो गया। उसे लूट लिया गया। उसे गोली भी मारी गई। देखिए, यह ग़लत तरीक़ा है। वह 91 वें भजन को उठाकर कह सकता था, "मैं सर्वोच्च के गोपनीय स्थल में वास करता हूँ। मैं सर्वशक्तिमान की छाया में वास करता हूँ। मैं ईश्वर के बारे में कहूँगा: वह मेरा आश्रय और मेरा दुर्ग है। मेरा ईश्वर, उसमें मैं विश्वास करूँगा। यक़ीनन वह मुझे अपने पंखों से ढँक लेगा और उसके पंख तले मैं आराम करूँगा। सत्य मेरा कवच और ढाल होगी। मैं रात को दहशत से नहीं डरूँगा, मैं दिन में उड़ने वाले तीर से भी नहीं डरूँगा।"

वह इन सत्यों को दोहरा सकता था। वह यह अहसास कर सकता था कि ईश्वर के प्रेम ने उसे घेर रखा है। जहाँ वह था, वहाँ ईश्वर था। वह ख़ुद से कह सकता था: "तुम मेरा आश्रय स्थल हो। तुम मुक्ति के गीतों से मुझे घेरे रहोगे।" फिर वह सारे नुक़सान से अपनी रक्षा बना सकता था। ये आध्यात्मिक प्रतिरक्षक हैं, जो आपकी रक्षा करते हैं। आप ईश्वर में मस्त हो जाते हैं। यह अपने मन की प्रोग्रामिंग करने का सही तरीक़ा है।

कुछ साल पहले एक पुलिस वाले ने मुझे एक महिला के बारे में बताया, जिसके साथ बलात्कार हुआ था और जिसका गला दबाकर उसकी हत्या कर दी गई थी। उसके अपार्टमेंट की छानबीन में उसे बलात्कार की ख़बरों की एक फ़ाइल मिली, जिसमें बीस साल का रिकॉर्ड था। दरअसल, वह अपने अवचेतन मन की नकारात्मक प्रोग्रामिंग कर रही थी और ज़ाहिर है, उसके जीवन में वही हुआ, जिससे वह डर रही थी। यह ग़लत काम है। डर विश्वास का बिलकुल उलटा है। डर ग़लत चीज़ में विश्वास है। एक नेता ने अख़बार के रिपोर्टरों से कहा, "मैं हत्या के सतत डर में जीता हूँ," हालाँकि यह बोलते वक़्त उसके सामने बुलेट प्रूफ़ काँच था। ज़ाहिर है, उसे मन के नियमों की जानकारी नहीं थी। वह शायद यह नहीं जानता था कि वह डर को दूर भगा सकता है। "मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि तुम मेरे साथ हो। तुम्हारी लाठी और तुम्हारी छड़ी, वे मुझे आराम देते हैं।" लाठी का मतलब है शक्ति और छड़ी का मतलब है आपका अधिकार। उसे पुकारें; वह आपको जवाब देगा। ईश्वर साथ हो, तो एक इंसान भी बहुमत में होता है। यदि ईश्वर मेरे साथ है, तो मेरे ख़िलाफ़ कौन टिक सकता है? तुम मेरा आश्रय स्थल हो। तुम मुक्ति के गीतों से मुझे घेर लोगे।

नेता कह सकता था, "मैं गोपनीय स्थान में रहता हूँ। ईश्वर के अनंत प्रेम का पवित्र दायरा मुझे घेरे रखता है। ईश्वर का पूरा बख़्तर मेरे चारों ओर है। जहाँ भी मैं जाता हूँ, ईश्वर का प्रेम मुझे

घेर लेता है और लपेट लेता है।" वह ख़ुद को सभी तरह के नुक़सान से सुरक्षित और अप्रभावित बना लेता। यह अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग करने का सही तरीक़ा है। आप प्रतिरक्षा बना सकते हैं। ओह हाँ, आप ऐसा कर सकते हैं। "जैसा कोई इंसान अपने दिल या अवचेतन में सोचता है, वैसा ही वह होता है," वैसा ही वह काम करता है, वैसा ही वह अनुभव करता है, वैसा ही वह व्यक्त करता है।

यही नियम है। मैं दिमाग़ में सोचने की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं तो दिल में — आपके अवचेतन में — सोचने की बात कर रहा हूँ। वहाँ जो भी छाप छोड़ी जाती है, व्यक्त होती है। याद रखें, जब आप अपने अवचेतन मन से पेश आ रहे हैं, तो आप सर्वशक्तिमान की शक्ति से पेश आ रहे हैं। यह वह शक्ति है, जो संसार को चलाती है। यह वह शक्ति है, जो अंतरिक्ष में आकाशगंगाओं को चलाती है। यह सर्वशक्तिमान है। इसका विरोध करने वाला कुछ नहीं है। चेतना ईश्वर है। बिना कंडीशनिंग वाली चेतना को जागरूकता कहा जाता है; यह "मैं हूँ," ईश्वर की जीवंत आत्मा। आपकी चेतना आपके चेतन और अवचेतन मन का संयोग है। यह आपकी स्वीकृतियों, आपके विश्वासों, आपकी रायों, आपके विश्वासों का महायोग है। यह ईश्वर है, यानी एकमात्र ईश्वर जिसे आप कभी जान पाएँगे।

आपके विचार और भावनाएँ आपकी तक़दीर बनाते हैं। अगर आप "ग़रीबी" के विचार सोचते हैं, तो आप हमेशा ग़रीब रहेंगे। "समृद्धि" के विचार सोचेंगे, तो आप समृद्ध बनेंगे। चेतना ईश्वर है, क्योंकि यह आपके जीवन की एकमात्र सृजनात्मक शक्ति है। आपका विचार और भावना ही सारे अनुभव के जनक या जननी हैं। अगर आप भीतर के जनक के बारे में बात करते हैं, तो हर चीज़ का जनक कौन है? आपके ख़ुद के विचार और भावनाएँ। आपका चेतन और अवचेतन। आपके चेतन और अवचेतन मन, आपका मस्तिष्क और हृदय, जिस पर भी सहमत होते हैं, वह घटित हो जाता है, चाहे वह सच हो या झूठ, अच्छा हो या बुरा। आप ही हैं, जो चुनाव कर रहे हैं। आप अपनी ख़ुद की तक़दीर को ढालते और आकार देते हैं। ईश्वर में आपकी आस्था आपकी तक़दीर है। आपकी आस्था जीवित की भूमि में ईश्वर की अच्छाई और ईश्वर के मार्गदर्शन और असीमित के सौंदर्य व महिमा में होनी चाहिए। यह यहीं होनी चाहिए।

आपको बताया जाता है: कोई भी प्रकटीकरण पिता के सिवाय कहीं से नहीं आता। पिता आपका ख़ुद का विचार और भावना है। यानी जो भी अनुभव हमारे पास आता है, हमारे अवचेतन मन में उसी जैसा ख़ाका होता है। हमेशा कोई न कोई कारण रहता है और ज़ाहिर है, वह कारण हमारे मन में होता है।

एक आदमी ने मुझसे कहा कि वह सफल होना चाहता था और जीवन में तरक्की करना चाहता था। लेकिन ऐसा नहीं हो पाया, क्योंकि उसके अंदर असफलता का एक अवचेतन खाका था। उसमें अपराधबोध था और उसे लगता था कि उसे सज़ा मिलनी चाहिए। हाँ, अपने चेतन मन से उसने बहुत कड़ी मेहनत की। अपने दिमाग़ में उसने ख़ुद से कहा, "मैं बहुत कड़ी मेहनत करता हूँ।" लेकिन उसके ज़्यादा गहरे मन में असफलता की प्रोग्रामिंग थी। उसके अंदर नाक़ाबिलियत का अहसास और विश्वास था, जिसने उसे असफल होने के लिए मजबूर किया। उसके मन में असफल होने की तसवीर थी। उसे महसूस हुआ कि उसे सज़ा मिलनी चाहिए, क्योंकि वह पापी था।

देखिए, आपके अवचेतन का नियम बाध्यकारी है। यह वह शक्ति है, जिसका मैंने ज़िक्र किया था। यह सर्वशक्तिमान की शक्ति है। यह ईश्वर की शक्ति है। मेरे सुझाव पर उसने यह अहसास किया कि वह जीतने के लिए पैदा हुआ था, सफल होने के लिए पैदा हुआ था, विजय पाने के लिए पैदा हुआ था। यह अहसास करके उसने अपने मन की दोबारा प्रोग्रामिंग करना सीखा। क्योंकि असीमित शक्ति उसके भीतर है। यह किसी असफलता को नहीं जानती। यह सर्वशक्तिमान है। इसने सारी चीज़ों को बनाया है। इसका विरोध करने, इसे चुनौती देने, विफल करने या दूषित करने वाला कुछ नहीं है। क्योंकि यह सर्वशक्तिमान है। यह एकमात्र शक्ति है।

इसके अलावा, उसने यह जाना कि वह ख़ुद को सज़ा दे रहा था। उसने हर सुबह और रात, दोपहर को भी, दृढ़ कथन कहना शुरू किया। देखिए, वह इसे अपने चेतन मन से लिख रहा था और उसने यह लिखा: "मैं जीतने के लिए पैदा हुआ हूँ। मैं अपने प्रार्थना जीवन, लोगों के साथ अपने संबंधों, अपने चुने हुए काम और अपने जीवन के सभी पहलुओं में सफल होने के लिए पैदा हुआ हूँ।" क्योंकि असीमित मेरे भीतर है और असीमित असफल नहीं हो सकता। यह सर्वशक्तिमान की शक्ति है, जो मेरे भीतर सक्रिय हो रही है। यह मेरी शक्ति है। यह मेरी बुद्धिमत्ता है।" फिर उसने कहा, "सफलता मेरी है। सौहार्द मेरा है। दौलत मेरी है। सौंदर्य मेरा है। दैवी प्रेम मेरा है। प्रचुरता मेरी है।" उसने इन सत्यों को बार-बार दोहराया। उसने इन पर मनन किया। उसने सड़क पर चलते समय ख़ुद को इसकी याद दिलाई, जब वह किसी ग्राहक से मिलने जाता था। उसने इन सत्यों की नियमित रूप से और सुनियोजित तरीक़े से घोषणा की और अपने कहे दृढ़ कथनों को नहीं नकारा।

धीरे-धीरे वह बेहद सफल हो गया, क्योंकि वह दोहराव से, ख़ुद को याद दिलाकर, इन चीज़ों की घोषणा करके अपने अवचेतन मन में बीज बोने में सफल हो गया था। उसने जीवन के महान सत्यों पर मनन करने की आदत अपने विचारों को सिखा दी थी। जब आप इसे नियमित रूप से और सुनियोजित तरीक़े से करते हैं, तो आपके जीवन में चमत्कार होने लगेंगे।

जब आप पैदा हुए थे, तो किसी को आपको यह नहीं बताना पड़ा था कि कैसे अपनी माँ का स्तन खोजना है। एक आत्मपरक बुद्धिमत्ता आपका मार्गदर्शन कर रही थी, आपको दिशा दिखा रही थी। हाँ, बाइबल कहती है: "मैं अपने नियम तुम्हारे अंदरूनी हिस्सों में लिखूँगा; मैं उन्हें तुम्हारे दिल पर लिखूँगा। मैं तुम्हारा ईश्वर रहूँगा और तुम मेरे बंदे रहोगे। ईश्वर की सारी शक्तियाँ तुम्हारे भीतर हैं और ईश्वर के नियम तथा सत्य तुम्हारे ही व्यक्तिपरक मन पर लिखे हुए हैं।" जब आप पैदा हुए थे और जब आप गहरी नींद में रहते थे, तब भी आपके सभी अति महत्त्वपूर्ण अंगों का सही नियंत्रण होता था। आपके जीवन की हर रात में वही प्रज्ञा आपके शरीर के सभी महत्त्वपूर्ण अंगों पर शासन करती है: आपकी साँस, आपके रक्त का संचार, आपका पाचन, आपके दिल की धड़कन आदि।

यह आपके भीतर मौजूद ईश्वर की उपस्थिति है। ईश्वर की उपस्थिति और शक्ति आपके भीतर है। महान शाश्वत सत्य वहीं पर हैं। वे आपके पैदा होने से पहले ही आपके हृदय पर उकेर दिए गए थे। लेकिन बचपन से ही हम सभी की प्रोग्रामिंग हुई है। करोड़ों लोगों की प्रोग्रामिंग डरों, झूठे विश्वासों, प्रतिबंधों, निषेधों और अंधविश्वासों से हुई है। जैसा नव विचार आंदोलन के प्रवर्तक फ़िनीज़ पार्कर क्विम्बी ने 1847 में कहा था, "हर बच्चा एक छोटी सफ़ेद स्लेट जैसा होता है।

हर व्यक्ति आकर इस पर कुछ न कुछ लिख देता है: दादी, दादा, पादरी, माता, पिता, भाई और बहन।"

दृश्यों और ध्वनियों, विश्वासों, रायों, क्या नहीं करना है, डरों और शंकाओं की बाढ़ — हमें यह सब मिलता है। देखिए, आप किसी भी डर के साथ पैदा नहीं हुए थे। आप किसी पूर्वाग्रह के साथ पैदा नहीं हुए थे। आप किसी धार्मिक विश्वास या ईश्वर व जीवन के बारे में किसी झूठी या विचित्र अवधारणा के साथ पैदा नहीं हुए थे। ये आपको कहाँ मिलीं? ये आपको किसी ने दी थीं। किसी ने आपकी प्रोग्रामिंग की, शायद नकारात्मक ढंग से: कई लोगों को बताया गया था कि ईश्वर क्रोधी है और वे पापी हैं।

मैंने सुंदर, आकर्षक, अच्छी तरह शिक्षित महिलाओं से बात की है। वे काले मोजे पहनती हैं और सोचती हैं कि किसी भी तरह का मेकअप करना या रूज़ लगाना या सोने के आभूषण पहनना पाप है। ओह, यह एक भयंकर पाप है। ताश खेलना — ताश के पत्ते शैतान के औज़ार हैं। या फ़िल्म देखने जाना। ये सभी पाप हैं। जब आप उन्हें देखते हैं, तो वे कुंठित, दमित, संकोची, नाख़ुश दिखती हैं। मैं उनसे कहता हूँ कि वे जाग जाएँ और ईश्वर के लिए पोशाक पहनें। संसार में कुछ भी बुरा नहीं है। पूरा संसार यहाँ है, जब वे पैदा हुई थीं, तब भी यह संसार यहीं था। सारे पक्षी आपके लिए गाते हैं और संसार के सारे पशु भी यहीं पर हैं और आसमान के सारे तारे भी वहाँ पर हैं, ताकि आप उनकी प्रशंसा करें, आराधना करें और आनंदित हों।

इसलिए मैं उन्हें बताता हूँ, "आप यहाँ पर नाचने के लिए हैं। आगे बढ़ें और नाचना सीखें, क्योंकि सृष्टि ईश्वर का नृत्य है।" मैं उनसे सीखने को कहता हूँ, गोल्फ़ में सबक़ सीखने, संगीत बजाने और सारी चीज़ें करने को कहता हूँ, जो आप नहीं कर रहे हैं। संगीत सीखें, कॉलेज जाएँ, सार्वजनिक व्याख्यान सुनें और पुरुषों से मिलें। बाहर जाएँ और स्पेनिश या किसी दूसरी चीज़ का कोर्स करें। कोई पेशा सीखें; पैसे कमाएँ। आप एक पूर्ण और आनंदित जीवन जीने के लिए यहाँ आए हैं। आप मनोरंजन करने, आनंद पाने, ख़ुशी और सृजनात्मकता पाने और ख़ुद को व्यक्त करने के लिए यहाँ आए हैं। ज़ाहिर है, आप मनन करने और प्रार्थना करने के लिए भी यहाँ आए हैं।

हम एक व्यक्तिपरक और वस्तुपरक संसार में रह रहे हैं। सृष्टि में कुछ भी बुरा नहीं है। ईश्वर ने हर चीज़ को अच्छा घोषित किया है। इसलिए नाचने या ताश खेलने या इस तरह की कोई चीज़ करने में कुछ भी बुरा नहीं है। फ़िल्म देखें, सृजनात्मक फ़िल्म। इनमें से किसी चीज़ में कोई बुराई नहीं है। कोई भी चीज़ अच्छी या बुरी नहीं है; सिर्फ़ सोच ही इसे ऐसा बनाती है।

फिर मैं उन्हें समझाता हूँ। मैं कहता हूँ, "आप कुंठित हैं। आप बीमार हैं। आप नाख़ुश हैं।" मैं उन्हें सिखाता हूँ कि वे अपने जीवन में किसी पुरुष को कैसे आकर्षित कर सकती हैं। मैं कहता हूँ, "आपको शादी करनी चाहिए। आपको प्रेम पाना चाहिए।" हर महिला चाहती है कि उससे प्रेम किया जाए, उसे लाड़-प्यार किया जाए, उसकी क़द्र की जाए। वह ध्यान पाना पसंद करती है। वह चाहती है कि किसी को उसकी ज़रूरत हो, कोई उसे चाहे। और अगर वह कहती है कि वह यह नहीं चाहती, तो वह रोगी है। हर महिला ऐसा चाहती है। फिर उन्हें एक सरल नियम सिखाया जाता है। वे बाहर जाकर ये सारी चीज़ें करती हैं। वे सारी चीज़ें करना सीखें, जिन्हें करने से आप डरते हैं और डर की मृत्यु तय है।

मैं उनसे कहता हूँ, “आपकी ब्रेनवॉशिंग हुई है। आपकी नकारात्मक और विनाशकारी प्रोग्रामिंग हुई है। आपके लिए ईश्वर की यह इच्छा है कि आपको ज़्यादा आनंद, ख़ुशी, प्रेम और मानसिक शांति मिले।” वे आकर्षण का नियम सीखती हैं। आपको उनमें से कुछ को अभी देखना चाहिए, जो सुंदर पोशाक पहनकर थिएटर जाती हैं। वे मेकअप भी करती हैं। और वे सुंदर अँगूठियाँ भी पहनती हैं — कई बार तो शादी की अँगूठी। ओह हाँ। उनका कायाकल्प हो चुका है। उन्होंने अपने दिमाग़ की दोबारा प्रोग्रामिंग कर ली है।

बचपन में मुझे बताया गया था कि अगर किसी बच्चे को सात साल की उम्र तक किसी ख़ास धार्मिक विश्वास में शिक्षित कर दिया जाए, तो कोई इसे नहीं बदल सकता। ज़ाहिर है, इसे बदला जा सकता है, लेकिन मुश्किल से। ज़ाहिर है, बच्चे की ब्रेनवॉशिंग हो चुकी है। लेकिन देखिए, वे मस्तिष्क की नकारात्मक कंडीशनिंग का ज़िक्र कर रहे थे। जब हम छोटे होते हैं, तो हम ग्रहणशील होते हैं, हम कोमल होते हैं और जल्दी सीख लेते हैं। हम सुझाव को जल्दी मान लेते हैं। हममें इसे अस्वीकार करने, नकारात्मक सुझावों को अस्वीकार करने की समझ नहीं होती। और हम ईश्वर, जीवन और सृष्टि के बारे में कई झूठे विश्वासों तथा ग़लत अवधारणाओं को स्वीकार कर लेते हैं।

आपको अपने पंथ या धर्म का विश्वास कहाँ से मिला? आप निश्चित रूप से इसके साथ पैदा नहीं हुए थे। क्या यह सच है? क्या यह तार्किक है? क्या यह अतार्किक है? क्या यह अवैज्ञानिक है? अगर यह अवैज्ञानिक, अतार्किक है, तो यह सच नहीं हो सकता। मिसाल के तौर पर, पैट। उसे इस बात का यक़ीन है कि संभावना उसके ख़िलाफ़ है। मुझे लगता है किसी भविष्यवक्ता ने उसे यह बताया था। संभावना उसके ख़िलाफ़ नहीं हैं। सृष्टि उसके पक्ष में है, लेकिन उसने इस अवधारणा को सिंहासन पर बैठा दिया है और वह इसमें यक़ीन करता है। उसका अवचेतन मन इसे स्वीकार करता है।

उसका झूठा विश्वास उसके मन में एक द्वंद्व उत्पन्न कर देता है और वह सोचता है कि लोग उसके ख़िलाफ़ काम कर रहे हैं और दुर्भाग्य उसके पीछे पड़ा है; किसी तरह की बदक़िस्मती उसके पीछे पड़ी है। उसने अपने लिए यह नियम बनाया था और यही उसे नियंत्रित व संचालित करता है। मनुष्य की अवचेतन मान्यताएँ और विश्वास उसके सभी चेतन कार्यों को प्रेरित और नियंत्रित करते हैं।

डॉ. डेविड सीबरी ने मुझे एक आदमी के बारे में बताया था, जो आंशिक रूप से अपाहिज था। उसकी शिक्षा बहुत कम थी या बिलकुल नहीं थी। प्रयोग और सुझाव के रूप में उन्होंने उसकी क्षमता का विश्लेषण करने का नाटक किया। उन्होंने कहा कि उसके दिमाग़ की लकीरों और उसके हाथ की लकीरों से उसकी मानसिक शक्तियों और चारित्रिक गुणों की सूचना मिलती है। सीबरी ने इस आंशिक अपाहिज व्यक्ति से कहा, “तुम्हारी तक़दीर में महान धर्मप्रचारक, महान उपदेशक बनना लिखा है। ईश्वर का इरादा है कि तुम जाओ और अद्भुत प्रवचन दो।” यह आदमी अपनी ख़ास चर्च में सक्रिय हो गया और उत्कृष्ट प्रवचन देने लगा। उसने इस विश्वास को स्वीकार कर लिया कि ईश्वर ने उसे एक महान प्रवचन देने वाला बनाया था। उसके विश्वास के अनुसार ही उसके साथ हुआ। यह इतना ही सरल था।

केवल एक ही शक्ति है, केवल एक ही उपस्थिति है। आपका विचार और भावना ही आपके

सारे अनुभव की जनक है। आप अपने अवचेतन मन की किस तरह प्रोग्रामिंग कर रहे हैं? सृजनात्मक शक्ति एक ही है। क्या आप सबसे महानतम सत्यों में से एक जानते हैं? "सुनो, ओ इज़राइल, मालिक, तुम्हारा ईश्वर एक ईश्वर, एक मालिक है।" इस संदर्भ में "इज़राइल" किसी ख़ास धर्म या लोगों तक सीमित नहीं है। इसका अर्थ है वे सारे लोग, जो ईश्वर को सर्वशक्तिमान मानते हैं, जो हमेशा अधिपति है — हमेशा सर्वोच्च है। वे उस एक शक्ति, अपने भीतर की जीवंत आत्मा को सारी निष्ठा और वफ़ादारी देते हैं। वे किसी भी निर्मित चीज़ को: इस सृष्टि के किसी पुरुष, महिला या बच्चे को: कोई शक्ति नहीं देते हैं।

आपका मालिक आपका प्रबल विचार या विश्वास है। यह आपका मालिक है। मान लें कि आप प्रेमपूर्ण ईश्वर में विश्वास करते हैं। मान लें कि यह विश्वास आपके मस्तिष्क में सिंहासन पर बैठा हुआ है और आप सचमुच इसमें विश्वास करते हैं। यह एकमात्र उपस्थिति और शक्ति है। यह प्रबल और सर्वोच्च है। इसे अपनी सारी निष्ठा और वफ़ादारी दें। यह आपका मालिक है। फिर आप एक जादुई जीवन जिएँगे।

इंग्लैंड में कुछ लोग यक़ीन करते हैं कि हर नवंबर में उन्हें गठिया होने वाला है। वे इसके लिए मौसम या माहौल बदलने आदि को ज़िम्मेदार ठहराते हैं। ज़ाहिर है, उन्हें गठिया हो जाता है। और क्यों न हो? उन्होंने अपने दिमाग़ की प्रोग्रामिंग की है। वे इसकी अपेक्षा करते हैं। और उनके विश्वास या अपेक्षा के अनुरूप ही उन्हें फल मिलता है। आपके परिवार में एक सदस्य ऐसा होगा, जिसे नवंबर में हमेशा गठिया होता है। लेकिन इस परिवार के बाक़ी सदस्य, जो उसी घर में रह रहे हैं, वही भोजन खा रहे हैं, उन्हीं माता-पिता की संतान हैं, उसी खेत पर काम कर रहे हैं, उन्हें गठिया नहीं होता है। वे स्वास्थ्य और दीर्घायु में यक़ीन करते हैं। बाक़ी लोग विश्वास करते हैं कि रात की हवा से उन्हें सर्दी हो जाएगी। या अगर कोई ऑफ़िस में छींकता है, तो उन्हें सर्दी हो जाएगी। उनके विश्वास के अनुरूप ही उन्हें फल मिलता है। ऑफ़िस में बाक़ी लोगों को सर्दी या फ्लू नहीं होता है। कुछ लोगों के पैर गीले होने पर वे कहते हैं, "मैं सर्दी से ठिठुर रहा हूँ। अब मुझे सर्दी हो जाएगी।" ज़ाहिर है, पानी सिर्फ़ एच2 ओ है। पानी ने कभी नहीं कहा, "मैं आपको सर्दी या कोई दूसरी चीज़ दूँगा।"

यह सब झूठा विश्वास या नकारात्मक कंडीशनिंग है। हवा हानिरहित है। रात की हवा हानिरहित है। यह हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन और कुछ अन्य गैसों का मिश्रण है। यह हानिरहित है। पानी हाइड्रोजन और ऑक्सीजन है। उनका विश्वास ही इसका कारण है। आपका विश्वास आपका मालिक है। वैसे तो कई मालिक होते हैं, लेकिन केवल एक ही सच्चा मालिक है, सभी चीज़ों का जनक, सभी चीज़ों का शासक। जब कोई व्यक्ति ऑफ़िस में छींकता है, तो इसका यह मतलब नहीं है कि आपको भी सर्दी का संक्रमण हो जाएगा या कोई कीटाणु आप पर हमला करने वाला है। ऑफ़िस के बाक़ी लोगों को सर्दी नहीं होती है। लेकिन अगर आप इस पर विश्वास करते हैं, तो आप सर्दी को अपनी ओर आमंत्रित कर रहे हैं। आप इसकी ज़िम्मेदारी ऑफ़िस और हवा के कीटाणुओं पर डाल सकते हैं। दूसरे इससे सुरक्षित हैं। ऐसे कुछ लोग हैं, जो दिन भर पंखे के नीचे बैठे रहते हैं, लेकिन उन्हें सर्दी नहीं होती है या उनकी गर्दन नहीं अकड़ती है। अगर आप झूठा विश्वास करते हैं, तो आपकी गर्दन अकड़ जाएगी। पंखा तो बस बहुत तेज़ गति से चलने वाले अणुओं का समूह है। बस इतना ही।

आपने छींकने या पंखे या हवा या पानी के बारे में एक नियम बनाया है। फिर आप पंखे या रात की हवा या किसी दूसरी चीज़ की तरफ़ इशारा करके कहते हैं कि आप ठंडी हवा के कारण बीमार हैं या आपको बुरी सर्दी है या आपकी गर्दन में काफ़ी दर्द है आदि। आप इन चीज़ों की ओर संकेत करके कहते हैं कि आपका विश्वास प्रमाणित हो गया है। लेकिन दूसरे इस बात से इंकार करते हैं और इस पर हँसते हैं। दरअसल, आपने ख़ुद के लिए एक नियम बना लिया है। क्योंकि अगर यह एक नियम होता कि पंखे के नीचे बैठने वाले हर व्यक्ति की गर्दन अकड़ जाएगी, तो संसार में पंखे के नीचे बैठने वाले हर व्यक्ति के साथ ऐसा ही होता। यह शाश्वत नियम क़तई नहीं है। यह तो एक ऐसा नियम है, जो आपने ख़ुद के लिए बनाया है। बाक़ी लोगों के लिए पंखे के नीचे बैठना पूरी तरह हानिरहित है।

ख़ुद के लिए नियम बनाना छोड़ दें। जैसे कोई व्यक्ति यह नियम बनाता है कि उसे लाल गुलाब से एलर्जी है। उससे बात करने पर आप पाते हैं कि वह कुछ साल पहले जिस लड़की से घुल-मिल रहा था, वह लाल गुलाब लगाती थी, लेकिन वह किसी दूसरे व्यक्ति के साथ भाग गई। उसने कभी उस लड़की को मुक्त या क्षमा नहीं किया। उसका द्वेष अब भी उसके अवचेतन मन में मौजूद है। इसलिए जब भी वह लाल गुलाब लगाए किसी दूसरी लड़की को देखता है, तो ग़ुस्से में तमतमाने लगता है। कारण लड़की नहीं है; कारण गुलाब नहीं है। कारण तो उसके ख़ुद के अवचेतन में भरा विष का भंडार है। उसे आनंदित होना चाहिए था और कहना चाहिए था कि मैं उस लड़की के लिए स्वास्थ्य, ख़ुशी, शांति और आनंद की कामना करता हूँ कि उसे अपने सपनों का इंसान मिल गया है और ईश्वर उसकी रक्षा करे। तब वह सही चीज़ कर रहा होता और अगर वह ऐसा करता, तो वह बहुत स्वार्थी होता, क्योंकि दरअसल वह ख़ुद को वरदान दे रहा होता।

आप किसी दूसरे के लिए जो कामना कर रहे हैं, वह वास्तव में आप ख़ुद के लिए कर रहे हैं। आपकी ख़ुद की चेतना के बिना बाहरी चीज़ों में कोई शक्ति नहीं होती है। आपकी चेतना आपके चेतन और अवचेतन मन का संयोग है। आपका चेतन मन चयन करता है। मिसाल के तौर पर, शराबी ने ख़ुद को बार-बार कमज़ोरी, अक्षमता, हीनता और अस्वीकृति का सुझाव दिया है। अगर वह ये नकारात्मक सुझाव देता रहता है और अपनी हिम्मत बढ़ाने के लिए पीता रहता है, तो वह अपने भीतर के देवत्व से इंकार कर रहा है, अपने भीतर के सर्वशक्तिमान की शक्ति से इंकार कर रहा है। दोहराए गए नकारात्मक सुझावों के कारण कुछ समय बाद वह अपने विकल्प चुनने की क्षमता गँवा देता है। अब वह एक पेग पीता है और दौड़ में शामिल हो जाता है। वह आदतन शराबी बन चुका है। वह पक्का शराबी बन चुका है। इससे पहले, उसके सामने विकल्प मौजूद थे। वह कह सकता था, "देखो, मैं एक-दो पेग पियूँगा और बस इतना ही।" अब उसके पास यह चयन मौजूद नहीं है। उसने वह शक्ति गँवा दी है। क्योंकि अवचेतन ही संसार में एकमात्र शक्ति है, जो कह सकती है "करूँगी" और सचमुच ऐसा कर सकती है।

वह एकमात्र उपस्थिति और शक्ति को अस्वीकार कर रहा है। उसने इन नकारात्मक सुझावों को दोहराकर अपने ज़्यादा गहरे मन में बो दिया है। ज़ाहिर है, वह इसे बदल सकता है। उसे कई बार आदतन शराबी कहा जाता है। ज़ाहिर है, आदतन जुआरी और आदतन भुक्खड़ भी होते हैं। सब कुछ बार-बार दोहराए गए नकारात्मक सुझावों पर आधारित है, जो ज़्यादा गहरे मन में डाले गए हैं। वह कहता है, "मैं शराब नहीं पियूँगा।" वह बाइबल पर हाथ रखकर क़ सम खा सकता है

कि वह कभी एक और पेग नहीं पिएगा। यह सब बकवास है। यह एक मज़ाक़ और तमाशे के अलावा कुछ नहीं है। वह बार में ख़ुद की तसवीर देख रहा है और सोच रहा है। दरअसल, वह शराब पीने के इस विचार को अपने अवचेतन मन में ज़्यादा गहराई पर लिख रहा है या अंकित कर रहा है। इसीलिए वह बाहर जाकर पीने के लिए मजबूर होता है।

अवचेतन मन हमारे आदतन विचारों और चित्रों के अनुरूप प्रतिक्रिया करता है। जैसा हम बोते हैं, वैसा ही हम काटेंगे। हम अपने अवचेतन पर जो छाप छोड़ते हैं, वही व्यक्त होती है। जब हम कंप्यूटर और प्रयोगशाला में ग़लत डाटा डालते हैं, तो ज़ाहिर है यह हमें ग़लत जवाब देता है। हमें अपने अवचेतन मन को जीवनदायी साँचों की ख़ुराक देनी चाहिए।

आइए सैली को देखते हैं, जो शराबी बन चुकी है। उसके लिए इस लत से उबरना आसान नहीं है। ज़ाहिर है, इसे छोड़ने के लिए उसके मन में सच्ची इच्छा होनी चाहिए, फिर उसे इसके बारे में एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँचना चाहिए। जब इसे छोड़ने की उसकी इच्छा इसे जारी रखने की उसकी इच्छा से ज़्यादा भारी हो जाती है, तो उसका 75 प्रतिशत उपचार हो जाएगा। फिर सर्वशक्तिमान की शक्ति उसका साथ देगी और उसकी तरफ़ से सक्रिय हो जाएगी।

तो वह एक निर्णय पर पहुँचती है। वह दावा करती है, परहेज़ और मानसिक शांति अब आगे से मेरी हैं। "मैं इसका आदेश देती हूँ, मेरा सचमुच यही आशय है, मैं पूरी तरह संजीदा हूँ। यह अटल है।" फिर वह यह तसवीर देखती है कि वह अपना मनपसंद काम कर रही है। मिसाल के तौर पर, अगर वह वकील है, तो वह चित्र देखती है कि वह अदालत में एक मुवक्किल के लिए मुकदमा लड़ रही है या फिर पॉलिश की हुई महोगनी की डेस्क के पीछे मुवक्किल से बात कर रही है। वह इसी समय भविष्य को वर्तमान में ले आती है। वह आदर्श पोशाक में है। वह न्यायाधीश से बात कर रही है। वह परिवार के साथ है। वह भूमिका को जी रही है। जब भी शराब पीने की इच्छा हावी होती है, वह अपने मन में उस फ़िल्म को चला लेती है कि वह अपने परिवार के साथ घर पर है या अदालत में मुकदमा लड़ रही है।

वह अब इस भूमिका को जी रही है और सर्वशक्तिमान उसे सहारा देता है। जब वह स्वतंत्रता, मानसिक शांति, परहेज़ के बारे में सोचती रहती है; जब वह इस बारे में सोचती रहती है; जब वह इस सबके आनंद और आश्चर्य को महसूस करने लगती है और घर पर अपनी मनचाही चीज़ें करने की तसवीर देखती है, तो यह विचार, मनोदशा और चित्र से निकलकर कार्य की अवस्था तक पहुँच जाता है।

किसी बीज की तरह यह ज़्यादा गहरे मन में दब जाता है और सफल प्रार्थना के फल के रूप में सामने आ जाता है। इसी तरह वह इससे उबर सकती है। उसे तो बस सौहार्द, स्वास्थ्य, परहेज़ और मानसिक शांति से अपने अवचेतन मन की दोबारा प्रोग्रामिंग करना है। सर्वशक्तिमान की शक्ति अब उसे सहारा दे रही है और उससे वह लालसा दूर कर रही है — वह मुक्त है। ज़ाहिर है, अब वह नकारात्मक विचार रखने के लिए ख़ुद को क्षमा करती है। वह हर दूसरे व्यक्ति को भी क्षमा करती है और अपने आस-पास के सभी लोगों के प्रति प्रेम, शांति और सद्भाव उड़ेलती है। आपको हमेशा पता चल जाएगा कि आपने कब क्षमा कर दिया है, क्योंकि अब उस व्यक्ति का चेहरा मन में आने पर कोई डंक शेष नहीं रहता। क्यों? क्योंकि आपने अपना प्रेम, सद्भाव और सौहार्द उँड़ेला था और उस व्यक्ति के लिए जीवन की सारी नियामतों की कामना की थी।

हम सभी यहाँ विकास करने, सीखने, अपने भीतर क़ैद भव्यता को मुक्त करने आए हैं। हम पूरी तरह विकसित शक्तियों के साथ पैदा नहीं हुए हैं। ओह नहीं। आप यहाँ सीखने आए हैं। आप यहाँ अपने मानसिक और आध्यात्मिक औज़ार पैने करने आए हैं। आनंद जीतने में है। आनंद महारत में है। हम विपरीत ध्रुवों के संसार में रहते हैं। हमें बताया गया है: आज के दिन चुनो तुम किसकी सेवा करोगे। आप पशु नहीं हैं। आप रोबोट नहीं हैं। आपके पास चयन करने की स्वतंत्रता है। आपके पास इच्छा की शक्ति है; आपके पास पहल शक्ति है। इसी तरह आप अपने देवत्व को खोजते हैं। इस धरती पर दूसरा कोई तरीक़ा नहीं है। आप अच्छे बनने के लिए विवश नहीं हैं। आप सिर्फ़ सहज बोध से संचालित नहीं हैं। इसलिए आपके पास पवित्र बनने का अवसर है। देखिए, आप जो चाहें, वह बन सकते हैं।

मैं तुम्हारे सामने एक खुला द्वार रखता हूँ, जिसे कोई इंसान बंद नहीं कर सकता। जो भी चीज़ें सच्ची हैं, प्यारी हैं, उदात्त हैं और ईश्वरीय हैं, उनके बारे में सोचें। उन चीज़ों के बारे में दिन भर सोचें। आप अपने दिमाग़ की दोबारा कंडीशनिंग शुरू कर सकते हैं। आप जो करने की हसरत रखते हैं, वह करते हुए अपनी तसवीर देख सकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि आप वहीं जाते हैं, जहाँ आपका सपना है। आपका सपना वह है जिसे आप देख रहे हैं, जिसके बारे में आप सोच रहे हैं, जिस पर आप केंद्रित हैं। जब आप अपना ध्यान प्यारी और अच्छी चीज़ों पर केंद्रित करते रहते हैं, तो आपका ज़्यादा गहरा मन प्रतिक्रिया करेगा और आप प्रकाश में आगे बढ़ने के लिए मजबूर हो जाएँगे। क्योंकि सर्वशक्तिमान शक्ति आपकी तरफ़ से सक्रिय हो जाएगी। आप राह पर चलते समय कुछ महान सत्य दोहरा सकते हैं। आप कहते हैं, "केवल एक ही शक्ति, एक ही उपस्थिति, एक ही कारण है। यह असीमित प्रेम है, असीम प्रज्ञा है और पूर्ण सद्भाव है। यह मेरे अंदर, मेरे ज़रिये और मेरे चारों तरफ़ सक्रिय है।" आप ऐसा तब कर सकते हैं, जब आप लंच में सड़क पर कार चला रहे हों, सड़क पर चल रहे हों या डिनर के लिए बैठ रहे हों। आप ये सभी अद्भुत चीज़ें कर सकते हैं। आप इन्हें दोहरा सकते हैं; आप ख़ुद को इन महान सत्यों की याद दिला सकते हैं।

अच्छाई को चुनें; सही कर्म को चुनें। हर एक के प्रति प्रेम, शांति व सद्भाव संचारित करें। सुबह, दोपहर और रात को ये सत्य दोहराते रहें। आख़िरकार, ये सत्य आपके अवचेतन में धँस जाएँगे। अवचेतन से वही बाहर आएगा, जिसकी भी छाप आपने इस पर छोड़ी है। पूरी मेहनत से अपने हृदय को स्वच्छ रखें। सुनिश्चित करें कि ईश्वर-सदृश विचारों के अलावा कुछ भी आपके ज़्यादा गहरे मन में दाख़िल न हो पाए। युगों पुराने सत्य को बार-बार सुनें, जब तक कि यह आपके अवचेतन मन में विश्वास न बन जाए। परम सत्य को सुनें: मैं हूँ; दूसरा कोई नहीं है। एक ही शक्ति, एक ही उपस्थिति, एक ही कारण और एक ही तत्व।

जब इसे हृदय पर उकेर दिया जाता है, तो यह बाध्यकारी बन जाता है और आप अच्छे व सही काम करने के लिए बाध्य होंगे। कुछ को स्वतः ही मार्गदर्शन मिल जाता है। उन्होंने बार-बार ख़ुद के सामने यह दोहराया है: "असीम प्रज्ञा मेरा मार्गदर्शन करती है। जो भी मैं करता हूँ, सही होगा। सही कार्य मेरा है।" सुबह, दोपहर, रात वे ये सत्य दोहराते हैं; क्योंकि सही क्रिया का एक सिद्धांत है, मार्गदर्शन का एक सिद्धांत है, और वे इसे शाश्वत या असीमित दृष्टिकोण से सक्रिय कर रहे हैं। उनमें से कई में पारस पत्थर का स्पर्श होता है और वे जिस चीज़ को छू देते हैं, वह

सोना बन जाती है।

देखिए, महिमा आपके सोचने वाले और सपने देखने वाले चेतन मन पर आपके अवचेतन मन की स्वचालित प्रतिक्रिया है। "मैं किसी बुराई से नहीं डरूँगा, क्योंकि तुम मेरे साथ हो। तुम्हारी लाठी और तुम्हारी छड़ी, वे मुझे राहत देते हैं। मालिक मेरा प्रकाश और मेरी मुक्ति है; मुझे किसका डर होगा? मालिक मेरे जीवन की शक्ति है; मैं किससे डरूँगा?" अद्भुत सच्चाई। सड़क पर कार चलाते वक़्त यह दोहराना बेहतरीन है।

कुछ साल पहले एक रब्बी ने हवाई जहाज़ में मुझे बताया कि जब वह छोटा था, तो सभी लड़के-लड़कियों को ड्यूटरोनॉमी पढ़ना और इसका अध्ययन करना सिखाया गया था। उन्हें यह याद करना था:

> ...तुम अपने पूरे दिल, अपनी पूरी आत्मा, अपनी पूरी शक्ति से मालिक, अपने ईश्वर से प्रेम करोगे। जिन शब्दों का मैं आज के दिन आदेश देता हूँ, वे तुम्हारे हृदय में रहेंगे: और तुम मेहनत से अपने बच्चों को उन्हें सिखाओगे, और उनसे बात करोगे, जब तुम अपने घर में बैठते हो और जब तुम रास्ते में चलते हो और जब तुम लेटते हो और जब तुम उठते हो, तब भी। और तुम अपने हाथ पर उनके लिए एक संकेत-चिह्न बाँधोगे और वे तुम्हारी आँखों के बीच ललाटपट्ट की तरह होंगे। तुम उन्हें अपने घर के स्तंभों पर लिखोगे और दरवाज़ों पर। तुम मालिक अपने ईश्वर से डरोगे (डर का मतलब सम्मान) और उनकी सेवा करोगे और उनके नाम की शपथ लोगे। तुम दूसरे देवी-देवताओं या अपने आस-पास के देवताओं की तरफ़ नहीं जाओगे। क्योंकि मालिक, तुम्हारा ईश्वर एक ईर्ष्यालु ईश्वर है, वरना मालिक, तुम्हारे ईश्वर का क्रोध तुम्हारे ख़िलाफ़ जाग जाएगा और तुम्हें नष्ट कर देगा।

बाइबल में ईर्ष्या का मतलब है कि आपको किसी दूसरी शक्ति को नहीं मानना चाहिए; आपको किसी निर्मित चीज़ के प्रति निष्ठा नहीं रखनी चाहिए। आपको केवल एक ही शक्ति को पहचानना चाहिए।

देखिए, इस सबके पीछे का विचार यह है कि उनके हृदय में एक दृढ़ विश्वास पहुँचा दिया जाना चाहिए: तुम मालिक, अपने ईश्वर से प्रेम करोगे। प्रेम निष्ठा और वफ़ादारी है। तुम दूसरे किसी ईश्वर को नहीं मानोगे, यानी वे केवल एक उपस्थिति और शक्ति को ही मानते हैं। वे संसार की किसी चीज़ या किसी पुरुष, महिला, बच्चे, सूर्य, चंद्रमा, तारे या किसी निर्मित चीज़ को शक्ति देने से इंकार करते हैं। जिस पल आप ऐसा करते हैं, आपके पास कोई ईश्वर नहीं होता। क्योंकि जैसा इसमें कहा गया है मालिक एक ईर्ष्यालु ईश्वर है। ईर्ष्यालु इस संदर्भ में कि आप किसी दूसरे को नहीं जानते हैं। आप केवल एक से ही विवाहित हैं; आपकी पूरी निष्ठा एक के ही प्रति है।

कुछ लोग ईश्वर को लगातार याद रखने के लिए ताबीज़, जंतर या अभिमंत्रित चीज़ पहन लेते हैं, जैसे क्रॉस, किसी संत का मेडल, बुद्धा या दूसरा धार्मिक प्रतीक। लेकिन आपको किसी ताबीज़, जंतर या जादू-टोने या बुद्ध या मूर्ति की ज़रूरत नहीं है। अहम बात इन सत्यों को आत्मा में उतारना है। क्योंकि आपके विचार के ज़रिये आप ईश्वर से जुड़े हुए हैं। आप विचारों के ज़रिये तुरंत संप्रेषण कर सकते हैं और अहसास कर सकते हैं कि मालिक आपका चरवाहा है और आपको कभी कमी नहीं होगी। आप ख़ुद को याद दिला सकते हैं: मेरा ईश्वर अपनी समृद्धि और भव्यता के अनुरूप आपकी सारी ज़रूरतें पूरी कर देगा। शांति में और विश्वास में आपकी शक्ति है। याद रखें, ये सत्य आपके दिमाग़ में नहीं, बल्कि दिल में बैठाना है।

सेब को अपने रक्त की धार में पहुँचाने से पहले आपको इसे खाना होता है। इसी तरह,

आपको इन सत्यों को ज़ज़्ब करना और पचाना होता है। कोरे दोहराव से ईश्वर नहीं सुनता है; लेकिन जब आप सोख लेते हैं, पचा लेते हैं और अपनी आत्मा में शामिल कर लेते हैं, तब ईश्वर अवश्य सुनता है। इसलिए, जब आप इन सत्यों को दोहराते हैं और उनका विकास करते हैं, तो उन्हें दोहराएँ, ख़ुद को उनकी याद दिलाएँ और अपने भीतर जाएँ और इन सत्यों की घोषणा करें, अपने मन में नियमित रूप से, धीरे-धीरे, बार-बार। धीरे-धीरे आपको यक़ीन होने लगेगा कि केवल एक ही शक्ति है। यह आपके मन के भीतर एक दार्शनिक परम सिद्धांत बन जाएगा कि आपके भीतर "मैं हूँ" एकमात्र ईश्वर है, जो है। यह सर्वशक्तिमान है, सर्वज्ञाता है। यह खोया शब्द है। यह करोड़ों लोगों से खो गया है।

मूसा आपको बताते हैं कि शब्द के लिए समुद्र के पार जाने या हवा में ऊपर जाने से कोई फ़ायदा नहीं है। शब्द आपके मुँह में है और इच्छा करने वाले हृदय में है तथा करने में है। यहाँ कुछ महान सत्य हैं: ईश्वर अपनी समृद्धि और भव्यता के अनुसार आपकी सारी ज़रूरतें पूरी करेगा।

शांति में और विश्वास में आपकी शक्ति है। ईश्वर ने हमें आनंद के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं। ईश्वर के साथ सारी चीज़ें संभव हैं। "वे बोलेंगे, उससे पहले मैं जवाब दूँगा; उनके बोलते समय ही मैं उनकी बात सुन लूँगा। तुम्हारे विश्वास के अनुरूप ही तुम्हारे साथ किया जाता है। अगर तुम यक़ीन करते हो, तो उसके लिए सारी चीज़ें संभव हैं जो यक़ीन करता है। वह मुझे पुकारेगा और मैं उसे जवाब दूँगा। मैं मुश्किल में उसके साथ रहूँगा। मैं उसे मुक्ति दिलाऊँगा और सम्मानित करूँगा। लंबे जीवन से मैं उसे संतुष्ट करूँगा और अपनी मुक्ति दिखाऊँगा। सारी चीज़ें तैयार हैं, बशर्ते मन तैयार हो। ईश्वर मेरा प्रकाश और मेरा मोक्ष है। मुझे किसका डर होगा? मालिक मेरे जीवन की शक्ति है; मैं किससे डरूँगा? मैं अपनी निगाह पहाड़ियों से उठाऊँगा, जहाँ से मेरी मदद आती है। माँगें और यह आपको दे दिया जाएगा; खोजें और आप खोज लेंगे; खटखटाएँ और यह आपके लिए खोल दिया जाएगा।"

यहाँ आपको बताया गया है कि आप जो माँगते हैं, वह आपको मिल जाएगा। जब आप खटखटाते हैं, तो आपके लिए दरवाज़ा खोल दिया जाएगा और आप जिसकी खोज कर रहे हैं, वह आपको मिल जाएगा। इस नसीहत में मानसिक और आध्यात्मिक नियमों की निश्चितता निहित है। आपकी चेतन सोच पर आपके अवचेतन मन की असीम प्रज्ञा हमेशा सीधी प्रतिक्रिया करती है। इसलिए आप अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग सृजनात्मक तरीक़े से, सौहार्दपूर्ण तरीक़े और शांति से कर सकते हैं। अगर आप रोटी माँगते हैं, तो आपको पत्थर नहीं मिलेगा। आपको इस विश्वास के साथ माँगना चाहिए कि आपको मिलने वाला है। आपका मन विचार से वस्तु पर चला जाता है। जब तक कि पहले मन में चित्र नहीं होगा, आपका मन उस पर नहीं जा सकता, क्योंकि इसके जाने के लिए कोई चीज़ ही नहीं होगी।

आपकी प्रार्थना, जो आपका मानसिक कार्य है, को पहले आपके मन में चित्र के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए, तभी आपके अवचेतन की शक्ति इस पर सक्रिय होगी और इसे उत्पादक बनाएगी। आपको अपने मन में स्वीकृति के बिंदु तक, सहमति की पूर्ण और निर्विवाद अवस्था तक पहुँचना चाहिए। इस मनन के साथ आपकी इच्छा पूरी होने का चित्र देखने में आनंद और आराम का भाव भी होना चाहिए।

आपके अवचेतन की सच्ची प्रोग्रामिंग की कला और विज्ञान का दमदार आधार आपका ज्ञान और पूर्ण विश्वास है कि आपके चेतन मन की गतिविधि पर आपका अवचेतन मन निश्चित प्रतिक्रिया करेगा, जो असीमित बुद्धिमत्ता और असीम शक्ति के साथ एक है। किसी विचार को निरूपित करने का सबसे आसान और स्पष्ट तरीक़ा इसका मानसिक चित्र देखना है। इसे अपने मन की आँख में उतनी ही स्पष्टता से देखना, मानो यह सजीव हो। आप इसे भौतिक आँखों से तभी देख सकते हैं, जब यह बाहरी जगत में पहले से मौजूद हो। इसी तरह, जिसका भी चित्र आप अपने मन की आँख में देखते हैं, वह आपके मन के अदृश्य क्षेत्रों में पहले से मौजूद होता है। आपके मन में मौजूद कोई भी तसवीर उन चीज़ों का सार है, जिनकी आशा की जाती है और उन चीज़ों का प्रमाण है जो दिखती नहीं हैं। आप अपनी कल्पना में जो आकार बनाते हैं, वह आपके शरीर के किसी अंग जितना ही वास्तविक है। विचार वास्तविक है और यदि आप अपने मानसिक चित्र के प्रति निष्ठावान बने रहते हैं, तो यह एक दिन आपके भौतिक संसार में प्रकट हो जाएगा।

सोचने की प्रक्रिया से आपके मन में छवियाँ बनती है। ये छवियाँ आपके जीवन में तथ्यों और अनुभवों के रूप में प्रकट हो जाती हैं। निर्माता अपनी मनचाही इमारत का चित्र देखता है। वह इसे उस रूप में देखता है, जैसी कि यह पूरी होने पर दिखेगी। उसका चित्र और विचार प्रक्रियाएँ एक लचीला ढाँचा बन जाती हैं, जिससे इमारत प्रकट होगी: सुंदर या बदसूरत, अट्टालिका या बहुत नीची इमारत। उसकी मानसिक तसवीर क़ागज़ पर उतारते समय प्रक्षेपित हो जाती है।

अंततः कॉन्ट्रैक्टर और उसके कर्मचारी आवश्यक सामग्री बटोरते हैं और इमारत बनने लगती है, जब तक कि यह पूरी नहीं हो जाती और वास्तुविद् के मानसिक नक़्शे जैसी ही नहीं बन जाती।

आप मानसिक चित्र की तकनीक का इस्तेमाल कर सकते हैं। यदि कोई प्रिय व्यक्ति बहुत बीमार हो, तो अपने मन की गतिशीलता को शांत कर ले — फिर प्रिय व्यक्ति की पूर्ण और स्वस्थ तसवीर देखें। वह प्रियजन आपको बता रहा है कि ईश्वर का चमत्कार हो गया है; मैंने अपने जीवन में इससे अच्छा कभी महसूस नहीं किया। आप उसकी आँखों में चमक देखते हैं। आप उसे मुस्कराते हुए देखते हैं। आप उसे अस्पताल में नहीं देखते हैं, बल्कि उसे घर पर वे चीज़ें करते देखते हैं, जो करना उसे पसंद है, प्रकाशमान, प्रसन्नचित्त और स्वतंत्र। आप अपने मन में यही चित्र बनाते हैं। इसे प्रार्थना कहा जाएगा। यह जान लें कि एक चित्र एक हज़ार शब्दों जितना मूल्यवान होता है।

अमेरिकी मनोविज्ञान के जनक विलियम जेम्स ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया था कि जो भी चित्र अवचेतन मन में रखा जाएगा, वह साकार हो जाएगा, बशर्ते इसके पीछे विश्वास का सहारा हो। इस तरह काम करें, जैसे मैं बन गया हूँ और मैं बन जाऊँगा। इस तरह काम करें, मानो आप इस समय वही हों, जो आप बनना चाहते हैं। अपने मन में भूमिका निभाएँ। इसे बार-बार, बारंबार करें। धीरे-धीरे यह आपके ज़्यादा गहरे मन में धँस जाएगा और जब आप इस तरह प्रार्थना करते हैं, तो चमत्कार होने लगेंगे।

हमें इसी समय यह अहसास करना चाहिए कि हम सम्राट के राजमार्ग पर चल रहे हैं। हम दाएँ या बाएँ हाथ की ओर नहीं मुड़ेंगे। आपका मार्ग ईश्वर का मार्ग है और ईश्वर के सारे तरीक़े

सुखद हैं और उसके सारे मार्ग शांतिपूर्ण हैं। ख़ुद को ईश्वर के मार्गदर्शन में रख दें। यह अहसास करें कि ईश्वर इसी वक़्त आपको मार्गदर्शन दे रहा है। आपके जीवन में सही क्रिया है और पवित्र आत्मा आपसे पहले जाती है और आपके मार्ग को सीधा, आनंददायक और भव्य बनाती है। इस समय से आपका राजमार्ग प्राचीन लोगों का शाही मार्ग है। यह बुद्ध का मध्यम मार्ग है। यह ईसा मसीह का सीधा और सँकरा मार्ग है। यह मक्का का मार्ग है। आपका राजमार्ग सम्राट का राजमार्ग है, क्योंकि आप अपने सारे विचारों और भावनाओं के सम्राट हैं। प्रेम के संदेशवाहक भेजें। उन्हें ईश्वर के दूत कहा जाता है। वे कहाँ हैं। ईश्वर के प्रेम, शांति, प्रकाश और सौंदर्य के संदेशवाहक आज और हर दिन आपके आगे जा रहे हैं और आपके मार्ग को सीधा, सुंदर, आनंददायक तथा उल्लासपूर्ण बना रहे हैं। हमेशा सम्राट के राजमार्ग से यात्रा करें; फिर आप जहाँ भी जाएँगे, आपको शांति और आनंद के ईश्वर के दूत मिलेंगे। इस ज्ञान के साथ पहाड़ी मार्ग से जाएँ कि आपकी निगाह ईश्वर पर टिकी हुई है, और आपकी राह में कोई बुराई नहीं आएगी। कार चलाते समय, ट्रेन, बस, हवाई जहाज़ से जाते समय या पैदल सफ़र करते समय यह अहसास करें कि ईश्वर का जादू आपके चारों ओर बिखरा हुआ है। यह ईश्वर का अदृश्य कवच है। आप एक बिंदु से दूसरे बिंदु तक स्वतंत्रता से, आनंद से और प्रेम से जाते हैं। मालिक की आत्मा आपको छत्रछाया में लेकर सारे मार्गों को आपके ईश्वर का राजमार्ग बना रही है।

ईश्वर की उपस्थिति में आपका विश्वास दृढ़ और शक्तिशाली है। यह जान लें कि जिस आध्यात्मिक परिवेश में आप रहते हैं, वह आपसे पहले जाकर रास्ते को सीधा, सुंदर, आनंददायक, सुखद और समृद्ध बना रहा है। यह अहसास करें कि दैवी प्रेम आपकी आत्मा को भरता है; दैवी शांति आपके मन को भरती है। अहसास करें कि आपके भीतर का ईश्वर इसी वक़्त आपका मार्गदर्शन कर रहा है और ईश्वर का प्रकाश आपके मार्ग को रोशन करता है। यह जान लें कि माँग और पूर्ति का एक आदर्श नियम है और आप हर उस चीज़ के तुरंत संपर्क में हैं, जिसकी आपको ज़रूरत है। आपको सभी तरीक़ों से दैवी मार्गदर्शन मिलता है। आप एक अद्भुत तरीक़े से अपने गुण दे रहे हैं। यह लिखा गया है: मैं ऐसे तरीक़े से दृष्टिहीनों को लाऊँगा, जिसके बारे में वे नहीं जानते। मैं ऐसे मार्गों पर उनका नेतृत्व करूँगा, जिन्हें वे नहीं जानते हैं।

बाइबल के इस शाश्वत आशीष को हमेशा दिमाग़ में रखें: “काश ईश्वर तुम्हें वरदान दे। काश ईश्वर का चेहरा तुम पर चमकता रहे। काश ईश्वर अपनी निगाह तुम्हारी ओर उठाए, तुम्हारे प्रति कृपालु रहे और तुम्हें शांति दे। मेरी शांति मैं तुम्हारे लिए छोड़ता हूँ। मेरी शांति मैं तुम्हें देता हूँ। वैसी नहीं जैसी संसार देता है, बल्कि वैसी जो मैं तुम्हें देता हूँ। तुम्हारा दिल मुश्किल में न रहे। डरो मत। ईश्वर में विश्वास करो और नेकी करो। इस तरह तुम ज़मीन पर चलोगे और तुम्हें सचमुच भोजन मिलेगा। किसका भोजन? बुद्धिमत्ता का, सत्य का और सौंदर्य का। सौहार्द का, स्वास्थ्य का, समृद्धि का और शांति का।

सार

आप अपने अवचेतन मन की शक्ति से दौलत कैसे निर्मित कर सकते हैं, यह समझने के लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि यह तंत्र कैसे काम करता है।

बचपन में हममें से कई लोगों की कंडीशनिंग नकारात्मक तरीक़े से की गई है। बचपन में बहुत संवेदनशील होने के कारण हम सभी सुझाव के प्रति ग्रहणशील होते हैं और हमें इन झूठे सुझावों को सकारात्मक विचारों में बदलने के लिए क़दम उठाने चाहिए।

अपने अवचेतन मन की प्रोग्रामिंग करने का एक सही तरीक़ा है। अपने जीवन की हर सुबह आप स्थिर, शांत, तनावरहित होकर अपना दृढ़ कथन कह सकते हैं।

> दैवी नियम और योजना मेरे जीवन को शासित करती है। दैवी सही क्रिया सर्वोच्च शक्ति है। दैवी सफलता मेरी है। दैवी सौहार्द मेरा है। दैवी शांति मेरी आत्मा को भरती है। दैवी प्रेम मेरे पूरे अस्तित्व को सराबोर करता है। दैवी समृद्धि मेरी है। दैवी प्रेम आज और हर दिन मेरे आगे जाता है और मेरे रास्ते को सीधा, आनंददायक तथा भव्य बनाता है।

आपका विचार और भावना ही आपकी तक़दीर बनाते हैं। अगर आप "ग़रीबी" के बारे में सोचते हैं, तो आप हमेशा ग़रीब रहेंगे। "अमीरी" के बारे में सोचेंगे, तो आप समृद्ध होंगे।

अवचेतन मन हमारी आदतन सोच और चित्रों के अनुसार प्रतिक्रिया करता है। जैसा हम बोते हैं, वैसा ही हम काटेंगे। हम अपने अवचेतन पर जिसकी भी छाप छोड़ते हैं, वही व्यक्त होती है। जब हम कंप्यूटर और प्रयोगशाला को ग़लत डाटा देते हैं, तो ज़ाहिर है, हमें ग़लत जवाब मिलता है। हमें अपने अवचेतन मन को जीवनदायक साँचों की ख़ुराक देनी चाहिए।

ईश्वर अपनी समृद्धि और भव्यता के अनुसार आपकी सारी ज़रूरतें पूरी करेगा। शांति में और विश्वास में आपकी शक्ति है। याद रखें, ये सत्य आपके दिमाग़ में नहीं, दिल में बैठना चाहिए।

विलियम जेम्स ने इस तथ्य पर ज़ोर दिया था कि जो भी चित्र मन में रखा जाएगा, उसे अवचेतन मन साकार कर देगा, बशर्ते उसके पीछे विश्वास का सहारा हो। इस तरह काम करो, जैसे मैं हूँ और मैं बन जाऊँगा। इस तरह काम करो, जैसे आप इस समय वही हैं, जो आप बनना चाहते हैं। अपने मन में भूमिका निभाएँ। इसे बार-बार, बारंबार करें। धीरे-धीरे यह आपके ज़्यादा गहरे मन में धँस जाएगा और जब आप इस तरह प्रार्थना करते हैं, तो चमत्कार होने लगेंगे।

4

निर्णय की अद्भुत शक्ति

सभी सफल स्त्री-पुरुषों में एक असाधारण गुण होता है। यह है तीव्र निर्णय लेने और उन निर्णयों पर लगन से अमल करके पूर्णता तक पहुँचाने की क़ाबिलियत। एक मशहूर उद्योगपति ने एक बार मुझे बताया था कि वाणिज्यिक और औद्योगिक क्षेत्रों में स्त्री-पुरुषों के साथ काम करने के पचास साल के अनुभव में उन्होंने यह पाया है कि जो लोग असफल हुए थे, उन सभी में एक गुण आम था। वे निर्णय लेने में झिझकते थे। वे ढुलमुल होते थे और इंतज़ार करते थे। इसके अलावा, जब वे निर्णय ले लेते थे, तो वे उन निर्णयों का पालन करने में लगनशील नहीं रहते थे।

निर्णय लेने और चुनने की शक्ति किसी व्यक्ति का सबसे मुख्य गुण और सर्वोच्च विशेषाधिकार है। चुनने और चुनी गई चीज़ को शुरू करने की मानव जाति की क्षमता ईश्वर द्वारा प्रदत्त सृजनात्मक शक्ति को उजागर करती है।

मुझे अपने धर्मसमुदाय के एक युवा सदस्य का एक पत्र मिला, जो निर्णय की शक्ति का उल्लेखनीय उदाहरण है। वह अपने मन में एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँचा और उसे पूरा विश्वास था कि सर्वशक्तिमान शक्ति उसके निर्णय को सहारा देगी। वह एक फ़ॉक्सवैगन कार चाहता था। वह जानता था कि जब वह भावना के साथ आदेश देगा, तो उसका ज़्यादा गहरा मन ऐसे तरीक़ों से प्रतिक्रिया करेगा, जिनके बारे में वह जानता भी नहीं है। उसने यह कहा: “मैं कार ख़रीदने के निर्णय पर पहुँचा। मेरे पास उतने पैसे नहीं थे। मैंने अपने ज़्यादा गहरे मन पर विश्वास करने का निर्णय लिया और अपने दिमाग़ से समस्या को यह जानते हुए निकाल दिया कि मेरे अवचेतन के पास जवाब है। 8 अप्रैल यानी शुक्रवार की रात को मेरे एक मित्र ने मुझसे पूछा कि क्या मैं किशोर मेले में जाऊँगा और मैंने रविवार की रात वहाँ जाने का निर्णय लिया। उस रात मुझे

लॉटरी में एक कार मिल गई। मेरे पास जीतने का अवसर 35,000 में से एक था। मेरा नाम चुना गया — मैंने अपने मन में मौजूद सपनों की कार जीत ली, जो फ़ॉक्सवैगन थी। मैं जानता हूँ कि मुझे वह कार इस कारण मिली, क्योंकि कार की समस्या सुलझाने के लिए मुझे अपने ज़्यादा गहरे मन पर विश्वास था, क्योंकि कार एक विचार है। अब मैं असीमित के सत्यों का उपयोग कर रहा हूँ और अब मेरा जीवन पूर्ण सामंजस्य में है। मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ, जो आपने परम शक्ति के प्रति मेरी आँखें खोल दीं। हर रविवार आपकी बात सुनने से मुझे वह मिल जाता है, जिसकी मुझे पूरे सप्ताह से गुज़रने के लिए ज़रूरत होती है। आपके विचार और शब्द मुझे तथा मेरे परिवार को एक बेहतर जीवन दे रहे हैं।"

एक युवा महिला ने एक बार मुझे बताया कि वह अकेली, चकराई हुई और कुंठित महसूस करती थी, क्योंकि वह यह निर्णय नहीं ले पा रही थी कि उसे शादी करनी चाहिए या नहीं। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? उसकी माँ बहुत दबंग थीं और वह युवती जिस भी युवक में रुचि लेती थी, हर एक पर आपत्ति करती थी। युवती ने सारी पहल शक्ति और निर्णय की शक्ति गँवा दी, जिसके फलस्वरूप एकाकीपन, कुंठा, दुख और बंधन उत्पन्न हुआ। दूसरे शब्दों में, उसने ख़ुद को बंधन की चहारदीवारी में रख दिया।

मेरे सुझाव पर वह एक के बाद एक निर्णय लेने लगी, जबकि इससे पहले उसकी माँ उसके सारे निर्णय लेती थीं। उसने अपने कपड़े ख़रीदने, अपने लिए एक अपार्टमेंट की व्यवस्था करने का निर्णय लिया। उसने किसी से पूछे बिना अपने मनचाहे तरीक़े से अपार्टमेंट की पुताई करने और सजाने का निर्णय लिया। वह नृत्य, तैराकी और गोल्फ़ में रुचि लेने लगी। उसने अपने सारे निर्णय ख़ुद लेने की आदत डाल ली। उसने आख़िरकार अपनी माँ या किसी दूसरे से परामर्श लिए बिना एक बेहतरीन युवक से शादी करने का निर्णय लिया और अपने ख़ुद के दिल के आदेशों का पालन किया। उसने खोजा कि निर्णय लेना शुरू करने और एक अद्भुत तरीक़े से जीवन जीना शुरू करने के लिए कभी बहुत ज़्यादा देर नहीं होती।

याद रखें, किसी अव्यवस्थित मस्तिष्क या अव्यवस्थित मसलों को व्यवस्थित करने के लिए कभी बहुत ज़्यादा देर नहीं होती, बशर्ते तार्किक निर्णयों पर पहुँचा जाए और उन निर्णयों को बदला न जाए।

बेट्टी एल यह निर्णय नहीं ले पा रही थी कि उसे क्या करना चाहिए। वह 26 साल की थी और अपने माता-पिता के घर पर रह रही थी। उसके पास एक अच्छी नौकरी थी और वह इतना कमा रही थी कि उसका गुज़ारा अच्छी तरह हो जाता था। उसने कहा, "मैं बहुत दुखी और अप्रसन्न थी। मैं अपने ख़ुद के अपार्टमेंट में जाकर रहना चाहती थी, लेकिन मेरे माता-पिता मुझे ऐसा नहीं करने देते थे। उन्होंने तो मुझे अपने कमरे की सजावट बदलने की भी अनुमति नहीं दी। मेरा पूरा परिवार कहता है कि मैं ग़लत हूँ। मैं अनिर्णय की स्थिति में हूँ। क्या ईश्वर नहीं चाहता कि मैं ख़ुश रहूँ?"

ज़ाहिर है, उसे अपना ख़ुद का जीवन जीना चाहिए था। अनिर्णय जैसी कोई चीज़ नहीं होती। उसने अपना निर्णय ले लिया था; उसने निर्णय न लेने का निर्णय लिया था। जो लोग निर्णय लेने या विकल्प चुनने से डरते हैं, वे दरअसल अपने ख़ुद के देवत्व को पहचानने से इंकार कर रहे हैं।

मैंने उसे बताया कि उसे ख़ुद के दिमाग़ का वरदान मिला था और स्वतंत्र, ख़ुश तथा समृद्ध बनने का निर्णय लेना उस पर निर्भर करता है, किसी दूसरे पर नहीं। जब वह अपने चेतन मन में यह बात स्वीकार कर लेगी, तो उसका अवचेतन मन प्रतिक्रिया करके उसे कर्म की प्रेरणा दे देगा।

उसने निर्णय पर पहुँचने में ज़रा भी देर नहीं की। उसने क़दम उठाया और पूरी तरह नया संसार खोल दिया। कुछ महीने बाद उसने मुझे पत्र लिखकर बताया कि उसके परिवार वाले पहले तो नाराज़ थे, लेकिन अब उसकी स्वतंत्रता को स्वीकार कर चुके हैं। "जीवन में पहली बार मैं रोमांचित और ख़ुश हूँ। मुझे इसका यक़ीन नहीं हो रहा है।"

नीचे दिया पत्र एक महिला का है, जिसे अपनी ख़ुद की मानसिक प्रक्रियाओं पर विश्वास था, जिसे निर्णय लेने की अपनी योग्यता और अपने निर्णय पर डटे रहने की अपनी क़ाबिलियत में विश्वास था, और जो यह जानती थी कि उसका मस्तिष्क असीमित मस्तिष्क के साथ एक है, क्योंकि एक ही मस्तिष्क सबमें मौजूद है। उसने लिखा: "कुछ साल पहले मैं एक गंभीर कार दुर्घटना का शिकार हो गई। डॉक्टर ने कहा कि उसने पहले कभी किसी की गर्दन और पीठ को इतनी सारी जगहों पर टूटा-फूटा नहीं देखा और उसे शक था कि मैं ज़िंदा रह पाऊँगी। मैं एक निर्णय पर पहुँची कि मैं जिऊँगी और असीमित की शक्ति से ठीक हो जाऊँगी। मैं जानती थी कि ईश्वर की सारी शक्ति मेरे निर्णय पर प्रतिक्रिया करेगी, जैसा मैंने आपको कई बार बोलते सुना था कि यह आपके निर्णय के अनुसार किया जाता है। मैंने प्रार्थना की मदद ली और बार-बार दावा किया कि असीमित उपचारक उपस्थिति मुझे पूर्ण और आदर्श बना रही है। इसके बाद अद्भुत उपचार हो गया। मुझे बताया गया था कि मुझे शरीर और गर्दन के पट्टे कई महीनों तक, शायद एक साल तक भी पहनने होंगे। मैंने पट्टे सिर्फ़ कुछ सप्ताह ही पहने और अब मेरी गर्दन या पीठ में कोई समस्या नहीं है। मेरा हृदय कृतज्ञता से भरा है। मैं जानती हूँ कि आपके निर्णय के अनुसार ही यह आपके साथ किया जाता है। मैंने उपचार का निर्णय लिया और असीमित उपचारक उपस्थिति ने इसी अनुरूप प्रतिक्रिया की।"

जब मैं एक दिन एक शीर्षस्थ फ़ार्मासिस्ट से बात कर रहा था, तो उन्होंने ज़िक्र किया कि उनके व्यावसायिक और कारोबारी जीवन में जटिलताएँ थीं, जिनकी वजह से निर्णय लेना अक्सर मुश्किल हो जाता था, लेकिन उन्होंने सही निर्णय पर पहुँचने और सही चीज़ करने के निर्णय पर पहुँचने की आदर्श तकनीक में महारत हासिल कर ली। उन्होंने बताया कि उनका प्रिय बाइबल कथन यह है: "स्थिर रहो और जानो कि मैं ईश्वर हूँ।" यह 46 वें भजन से है। फिर उन्होंने जोड़ा: "मैं इस तथ्य पर मनन करता हूँ कि ईश्वर या असीमित प्रज्ञा मेरे भीतर वास करती है और मैं अपना पूरा ध्यान अपने भीतर की असीम उपस्थिति पर केंद्रित करता हूँ।" मैं कल्पना करता हूँ कि असीमित मुझे जवाब दे रहा है। मैं पूरी तरह तनावरहित और बंधनमुक्त हूँ। मैं असीमित के प्रेम और प्रकाश से घिरा महसूस करता हूँ। मैं ईश्वर की शांति और मौन में भी डूबा महसूस करता हूँ। अंदर से झरने की तरह साफ़ जवाब मेरे दिमाग़ में आ जाता है और यह हमेशा अवसर के मुताबिक़ सही होता है।" इस फ़ार्मासिस्ट ने समस्याओं का जवाब पाने और अपने भीतर की असीमित शक्ति के ज़रिये सही निर्णय पर पहुँचने की एक अद्भुत तकनीक ईजाद की है।

कार्लाइल ने एक बार कहा था, "मौन वह तत्व है, जिसमें महान चीज़ें ख़ुद को ढालती हैं।"

यह एक ऐसी प्रार्थना है, जो मैंने निर्णय लेने में मार्गदर्शन के लिए हज़ारों स्त्री-पुरुषों को बताई है। उन्हें अद्भुत परिणाम मिले हैं और उनके सभी निर्णयों में अच्छे फल मिले हैं।

> मुझे जो भी जानने की ज़रूरत है, वह भीतर की असीम उपस्थिति के ज़रिये मेरे पास आता है। असीमित प्रज्ञा मेरे ज़रिये काम कर रही है और मेरे सामने वह उजागर कर रही है, जो मुझे जानने की ज़रूरत है। मैं विचार, शब्द और कर्म में पूरी मानव जाति के प्रति प्रेम, शांति और सद्भाव संचारित करता हूँ। मैं जानता हूँ कि जो मैं भेजता हूँ, वही हज़ार गुना होकर मेरी ओर लौटता है। मेरे भीतर वास करने वाला ईश्वर जवाब जानता है। आदर्श जवाब मुझे इसी समय दिया जाता है, क्योंकि ईश्वर इसी समय है और सर्वव्यापी है। यही मोक्ष का दिन है और यही सही समय है। दैवी बुद्धिमत्ता में असीमित प्रज्ञा मेरे ज़रिये सारे निर्णय लेती है और मेरे जीवन में केवल सही कर्म तथा सही निर्णय होते हैं। मैं प्रेम के असीमित महासागर के आवरण में ख़ुद को लपेट लेता हूँ और मैं जानता हूँ कि दैवी सही निर्णय अब मेरा है। मैं शांति में हूँ। मैं संसार की एकमात्र शक्ति में विश्वास से भरकर प्रकाशित मार्ग पर चलता हूँ। मैं अपने चेतन, तार्किक मन में आने वाली प्रेरणा को पहचानता हूँ। इसे चूकना मेरे लिए असंभव है। ईश्वर मुझसे दुविधा में नहीं, शांति में बोलता है। परम पिता, आपको इसी समय जवाब देने के लिए धन्यवाद।"

यह एक अद्भुत प्रार्थना है। इसका इस्तेमाल हज़ारों लोग कर रहे हैं। आप जब भी पशोपेश में हों कि क्या करना है, क्या कहना है या क्या निर्णय लेना है, तो शांति से बैठ जाएँ और इन सत्यों को दृढ़ता से कहें, जिन्हें मैंने अभी-अभी बताया है। इसे धीरे-धीरे, शांति से, आदर से और भावना के साथ करें। इसे तनावरहित, शांत मनोदशा में लगभग तीन बार करें और आपको दैवी आवेग मिल जाएगा। आपको आत्मा की आंतरिक मौन जानकारी का अनुभव होगा, जिसके ज़रिये आप जान जाते हैं कि आप जानते हैं। कई बार जवाब विश्वास की आंतरिक भावना, एक प्रबल अनुभूति, एक त्वरित विचार के ज़रिये आता है, जो आपके मन में उसी तरह उमड़ आता है, जिस तरह कोई टोस्ट टोस्टर से बाहर उछलता है। आंतरिक बोध से आप सही जवाब को पहचान जाएँगे। आप यह पहचान जाएँगे कि सही निर्णय क्या है। सृजनात्मक, बुद्धिमत्तापूर्ण प्रार्थना के ज़रिये सही निर्णय लें। प्रार्थना यह अहसास करना है कि एक असीम प्रज्ञा है, जो आप पर प्रतिक्रिया करती है; जब आप इसे पुकारते हैं, तो यह आपको जवाब देती है। माँगें और आपको मिल जाएगा। खोजें और आप पा लेंगे। खटखटाएँ और द्वार आपके लिए खोल दिया जाएगा। अगर आप रोटी माँगते हैं, तो आपको पत्थर नहीं मिलेगा, इसका मतलब यह है कि आपके लिए वही चीज़ साकार होती है, जिसका आपने आग्रह किया है।

जब आप "तार्किक" शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो इसका मतलब है कि आपका विचार तार्किक है, ठोस है, वैध है, सृष्टि के तार्किक सिद्धांत या वस्तु की वास्तविकता पर आधारित है या उस पर आधारित है, जो अविरोधी और अनुमान योग्य है। अच्छा सोचना आपके लिए तार्किक है, क्योंकि इससे केवल अच्छाई ही उत्पन्न हो सकती है। बुरा सोचना और अच्छे की उम्मीद करना अतार्किक है, क्योंकि बीज या विचार अपने जैसे ही फल देते हैं। यह एक मानसिक तथा आध्यात्मिक सृष्टि है और मानसिक नियम हमेशा सर्वोच्च होता है।

तार्किक निर्णय हमेशा उस असीमित बुद्धिमानी पर आधारित होते हैं, जो ग्रहों की कक्षा में उन्हें मार्गदर्शन देता है और सूर्य को चमकाता है।

लॉस एंजेलिस में एक डिपार्टमेंट स्टोर की एक सेल्सवुमैन कई सालों से शेयर बाजार में रुचि रखती थी और आगे चलकर वह एक बहुत सफल निवेशक बनी। इस युवा महिला ने रात की कक्षाओं में जाकर एक आवश्यक कोर्स किया, जिससे उसे किसी ब्रोकरेज हाउस में रोज़गार पाने

की योग्यता मिल गई। उसने बहुत से इंटरव्यू दिए, लेकिन उसे उसके लिंग की वजह से रोज़गार नहीं मिला। उसने मुझसे कहा, "वे औरतों को नहीं चाहते थे।" मैंने उसे सुझाव दिया कि वह एक निर्णय पर पहुँचे और साहस के साथ कहे: "मैं अब एक ब्रोकरेज हाउस में नौकरी कर रही हूँ और इससे मुझे शानदार आमदनी हो रही है, जो अखंडता और न्याय के सामंजस्य में है।"

मैंने उसे समझाया कि जिस पल वह अपने मन में निर्णय पर पहुँचती है और उस निर्णय पर डटी रहती है, उसका अवचेतन मन प्रतिक्रिया करेगा और उसके सामने वह योजना उजागर कर देगा, जिस पर चलकर वह अपनी इच्छा की मंज़िल तक पहुँच सकती है। मैंने उसे यह निर्देश भी दिया कि उसके चेतन, तार्किक मन में जो भी प्रेरणा आए, वह उसका अनुसरण करे। इसे चूकना असंभव है।

ज़ाहिर है, इसके आगे की कहानी रोचक है। उसके मन में यह शक्तिशाली इच्छा जागी कि वह स्थानीय अख़बार में विज्ञापन देकर दो महीने तक मुफ़्त में काम करने का प्रस्ताव रख, जिसमें यह संकेत भी था कि उसके मित्रों का काफ़ी बड़ा दायरा था, जो संभावित ग्राहक बन सकते थे। उसे तीन कंपनियों से तुरंत प्रस्ताव मिले, जिनमें से एक को उसने स्वीकार कर लिया। यह दर्शाता है कि आपको निर्णय की अपनी योग्यता में विश्वास होना चाहिए। जब आप एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँचते हैं, जिसके साथ आपको अपने अवचेतन मन की शक्ति पर विश्वास होता है, तो आपके जीवन में चमत्कार होंगे और सारी कुंठा दूर चली जाएगी।

जो लोग निर्णय लेने में घबराते हैं या विकल्प चुनने में डरते हैं, वे दरअसल अपने ख़ुद के देवत्व को पहचानने से इंकार कर रहे हैं, क्योंकि ईश्वर हम सभी के भीतर वास करता है। चुनाव करना और निर्णय लेना आपका दैवी तथा ब्रह्मांडीय अधिकार है। आप स्वस्थ, प्रसन्न, समृद्ध और सफल होने का निर्णय ले सकते हैं। आपका अवचेतन मन आपके चेतन मन के आदेशों के अधीन रहता है, इसलिए आप जो भी आदेश देंगे, यह उसका पालन करेगा। बाइबल में कहा गया है: "इंसान अपने अवचेतन मन में जैसा बोता है, वैसा ही वह काटेगा। वह आकार, कार्य, अनुभव या घटना के रूप में संसार के पर्दे पर फ़सल काटेगा।"

आपके अवचेतन मन का नियम कोई पक्षपात नहीं करता है; प्रकृति का कोई भी नियम नहीं करता है। गर्म स्टोव पर हाथ रखना अतार्किक है। अगर आप ऐसा करते हैं, तो आपको परिणाम भुगतने होंगे। किसी ऊँची छत से नीचे कूदना अतार्किक है, क्योंकि गुरुत्वाकर्षण का नियम अव्यक्तिगत है और किसी भी तरह से प्रतिशोधात्मक नहीं है। यह विश्वास अतार्किक है कि दो और दो पाँच होते हैं। यह मूर्खतापूर्ण है कि आप प्रकृति के नियमों के ख़िलाफ़ जाएँ, सृष्टि के अपरिवर्तनशील नियमों के ख़िलाफ़ जाएँ, यथास्थिति के ख़िलाफ़ जाएँ। चोरी करना अतार्किक है, क्योंकि आप ख़ुद को ग़रीब बना रहे हैं। आप अपनी ओर कमियों और सीमाओं को आकर्षित कर रहे हैं, साथ ही आप अपने जीवन में और ज़्यादा दुख ला रहे हैं।

एक आदमी ने एक बार मुझसे कहा था, "मैं नहीं जानता कि क्या करना है या क्या तार्किक है, इसलिए मैं कोई निर्णय नहीं लूँगा।" मैंने उसे बताया कि वह एक निर्णय ले चुका था। उसने निर्णय न लेने का निर्णय लिया था। क्या यह बहुत मूर्खतापूर्ण निर्णय नहीं है? क्या यह अतार्किक नहीं है? अवैज्ञानिक नहीं है? ज़ाहिर है, यह है। उसने निर्णय न लेने का निर्णय लिया था, जिसका मतलब था कि उसने उस चीज़ को स्वीकार करने का निर्णय लिया था, जो भी समूह-मन से

आता है, औसत के नियम से आता है, जिसमें हम सभी डूबे हैं। यह बहुत नकारात्मक मस्तिष्क होता है। इसके अलावा, अगर वह निर्णय न लेने का निर्णय लेता है, तो बेतरतीब मस्तिष्क उसकी तरफ़ से निर्णय लेगा, क्योंकि उसने अपने ख़ुद के मन पर शासन करने से इंकार कर दिया है।

अगर आप निर्णय लेने से इंकार करते हैं, तो क्या आप परिस्थितियों को अपनी तरफ़ से निर्णय लेने की अनुमति दे रहे हैं? या फिर अपनी सास या ससुर को? या किसी दूसरे बाहरी व्यक्ति को, जो आपकी तरफ़ से निर्णय लेने वाला है? अगर आप ख़ुद नहीं सोचते हैं, तो शायद किसी दूसरे का विचार आपके मन में सोच रहा है या शायद समूह-मन आपके मन में सोच रहा है। आप अपने ख़ुद के विचार नहीं चुनते हैं, इसलिए समूह-मन या औसत का नियम आपकी तरफ़ से आपके विचारों का चयन करता है। अगर आपकी सोच में डर, चिंता या तनाव है, तो आप ज़रा भी नहीं सोच रहे हैं। यह समूह-मन या औसत का नियम या प्रजातीय मस्तिष्क है, जो आपके भीतर सोच रहा है।

सच्ची सोच डर से मुक्त है, तनाव से रहित होती है। आप किसी इंजीनियर जैसे हैं। आप सिद्धांतों, शाश्वत सत्यों के दृष्टिकोण से सोच रहे हैं। आपके विचार सृजनात्मक हैं। आप सीधा सोचने वाले विचारक हैं।

इसके बाद इस आदमी को अहसास हो गया कि यह मूर्खतापूर्ण है कि वह अपनी ख़ुद की तरफ़ से सोच नहीं रहा है, तर्क नहीं कर रहा है और अनुमानयोग्य निष्कर्ष नहीं निकाल रहा है और इसके बजाय औसत के नियमों या प्रजाति की समूह-सोच को अपनी तरफ़ से निर्णय लेने की अनुमति दे रहा है। यह बहुत नकारात्मक है। समूह-मन हमेशा डर, नफ़रत, ईर्ष्या और डाह से भरा होता है। इसमें कुछ अच्छी चीज़ें तो होती है, लेकिन ज़्यादातर चीज़ें नकारात्मक होती हैं। यह त्रासदियों में, सभी तरह के दुर्भाग्यों में यक़ीन करता है।

निश्चित रूप से, अगर आप अपनी ख़ुद की तरफ़ से नहीं सोचते हैं, तो कोई दूसरा आपकी तरफ़ से सोचने वाला है और यह बहुत अच्छा नहीं होने वाला। अगर आप अपनी ख़ुद की भावनाएँ नहीं सोचते हैं, तो आपकी तरफ़ से कौन चुनेगा?

तो इस आदमी ने अपना नज़रिया उलट लिया और यह सकारात्मक कथन कहा: “मैं अपनी शक्ति, अपनी योग्यता और अपनी ख़ुद की मानसिक तथा आध्यात्मिक प्रक्रियाओं की अखंडता में विश्वास करता हूँ। मैं ख़ुद से पूछता हूँ: यदि मैं ईश्वर होता, तो मैं क्या निर्णय लेता? मैं जानता हूँ कि मेरा उद्देश्य सही है और मेरी इच्छा सही चीज़ करना है। मेरे सभी निर्णय इस तथ्य पर आधारित हैं कि असीमित बुद्धिमत्ता मेरे ज़रिये सारे निर्णय ले रही है, इसलिए यह सही क्रिया होगी।”

इस प्रार्थना के बाद यह व्यक्ति सारे कारोबारी, पेशेवर और पारिवारिक निर्णय लेने लगा। आज वह एक भव्य और अद्भुत जीवन जी रहा है। उसके पास बेहतर स्वास्थ्य है, बढ़ी हुई कार्यकुशलता है, ज़्यादा प्रेम है, ज़्यादा समझ है और ज़्यादा समृद्धि है। असीमित शक्ति आपके सारे निर्णयों को सहारा देती है। आप आत्म-चेतन व्यक्ति बन जाते हैं। आपके पास निर्णय लेने की क्षमता है। अपनी तरफ़ से दूसरों को निर्णय लेने देना या यह कहना ग़लत है, “मैं ईश्वर को अपनी तरफ़ से सोचने की अनुमति दूँगा।” जब आप यह कहते हैं, तो आपका मतलब अपने बाहर के किसी ईश्वर से होता है, जो आसमान में कहीं ऊपर बैठा है। ईश्वर या असीमित प्रज्ञा

जिस एकमात्र तरीक़े से आपके लिए काम करती है, वह आपके ख़ुद के ज़रिये है: आपके ख़ुद के विचार, आपके ख़ुद के चित्र, आपके ख़ुद के निर्णय के ज़रिये। ईश्वर की उपस्थिति ने आपके लिए हर चीज़ की है। इसने आपको और पूरी सृष्टि को बनाया है। इसने आपको एक चेतन और एक अवचेतन मन दिया है। इसने आपको ख़ुद को दिया है। असीमित या परम प्रज्ञा, जो ईश्वर की उपस्थिति है, आपकी अवचेतन गहराइयों के भीतर मौजूद है।

आप यहाँ इसका इस्तेमाल करने आए हैं। आप अपने ख़ुद के विचार के माध्यम से इससे संपर्क करते हैं। इसलिए असीमित प्रज्ञा आपकी ख़ातिर काम करेगी। यह आपके ज़रिये, आपके ख़ुद के विचार के ज़रिये काम करेगी। व्यक्तिगत धरातल पर कार्य करने के लिए सर्वव्यापी को व्यक्तिगत बनना होगा। निश्चितता के बिना असीमित प्रज्ञा आपकी ख़ातिर कुछ नहीं करेगी। इसलिए कार्य करने के लिए इसे निश्चित बनना होगा।

आप यहाँ चयन करने के लिए हैं। आपके पास इच्छा की शक्ति और पहल शक्ति है। इसीलिए आप एक इंसान हैं। अपने देवत्व और अपनी ज़िम्मेदारी को इसी समय स्वीकार करें और अपने निर्णय स्वयं लें। दूसरा व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ नहीं जानता है। जब आप निर्णय लेने से इंकार करते हैं, तो आप दरअसल अपने देवत्व को अस्वीकार कर रहे हैं; और आप किसी ग़ुलाम व अधीनस्थ की तरह कमज़ोरी और हीन भावना के दृष्टिकोण से सोच रहे हैं। अपने देवत्व को स्वीकार करें। आप एक चयनशील, इच्छा करने वाले इंसान हैं। आप यहाँ चुनने के लिए आए हैं। आज के दिन चुनें कि आप किसकी सेवा करेंगे। उन चीज़ों को चुनें, जो भी सच्ची हैं, जो भी प्यारी हैं, जो भी न्यायपूर्ण हैं, जो भी पवित्र हैं और जो भी सच्ची तथा अच्छी छवि की हैं। इन विचारों को चुनें। इन विचारों को अपने मन के सिंहासन पर बैठाने का निर्णय लें और फिर इस निर्णय पर अटल रहें।

एक पक्के शराबी ने एक बार मुझे बताया कि एक व्यक्ति ने एक बार उसकी कनपटी पर बंदूक रखकर उससे कहा था कि अगर उसने उसके सामने व्हिस्की पी, तो वह उसे गोली मार देगा। उसने कहा, "मुझे शराब पीनी ही थी। मैं रुक नहीं सकता था। यह एक बाध्यकारी कार्य था। मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह मुझे गोली मारता है या नहीं।" हाँ, इससे आपको पता चलता है कि उसके पास ज़बर्दस्त शक्ति थी। असीमित की पूरी शक्ति उसके उस निर्णय के पीछे थी। केवल एक ही शक्ति होती है। इसका उद्देश्य आपको यह बताना है कि असीमित की सारी शक्ति उस निर्णय के पीछे थी। दरअसल अपने निर्णय के अनुरूप ही उसने अनुभव किया। बाद में उसने इस निर्णय को उलट दिया। मेरे सुझाव पर वह लगभग दस मिनट तक गंभीरता से घोषणा करने लगा: "मैं अपने मन में एक निश्चित निर्णय पर पहुँचा हूँ और मेरा निर्णय यह है कि मैं शराब के इस शाप से मुक्त हूँ। असीमित शक्ति के ज़रिये, जो इस निर्णय को सहारा देती है, मैं पूरी तरह से आज़ाद हूँ। अब मेरे पास मानसिक शांति है, परहेज़ है और मैं इस समय असीमित को धन्यवाद देता हूँ।"

पाँच साल से ज़्यादा बीत चुके हैं, लेकिन इस आदमी ने किसी भी नशीले पेय को नहीं छुआ है और अब उसकी शराब की लत छूट चुकी है। वह एक नया इंसान बन गया है। जब वह एक निर्णय पर पहुँचा, तो उसका इरादा पक्का था। शक्ति बोतल में नहीं थी; शक्ति तो उसके भीतर थी। इसलिए असीमित की सारी शक्ति उसके निर्णय के पीछे थी। इसलिए आज के दिन चुनें कि

आप किसकी सेवा करेंगे।

ईश्वर असीमित है, असीमित में है; इसका विभाजन नहीं किया जा सकता, इसका गुणा नहीं किया जा सकता। बाइबल में कहा गया है: "मैं प्रकाश को बनाता हूँ; मैं अंधकार उत्पन्न करता हूँ। मैं शांति बनाता हूँ और मैं बुराई बनाता हूँ। मैं ईश्वर ये सारी चीज़ें करता हूँ।"

बाइबल का कथन स्पष्टता से और नाटकीयता से दर्शाता है कि केवल एक ही शक्ति है, जिसका इस्तेमाल आप रोशनी पाने के लिए कर सकते हैं। इसका मतलब है कि जब आप चेतन रूप से इसका आह्वान करते हैं, तो असीमित प्रज्ञा किसी समस्या पर प्रकाश डाल सकती है। इसके लिए बस इतना ज़रूरी है कि आप अपने मन में एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँच जाएँ। आप अंधकार उत्पन्न करते हैं, जब आप कहते हैं, "मैं बाधित हो गया हूँ; मैं अटक गया हूँ। बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है।" यह एक मूर्खतापूर्ण निर्णय है। असीमित रास्ता जानता है। केवल यही जवाब जानता है। बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं है, मैं बाधित हूँ, स्थिति निराशाजनक है, यह कहकर आप अपना चेतन आदेश दे रहे हैं और यह आपका निर्णय है। यह ग़लत है। यह अतार्किक और अवैज्ञानिक है। यह मूर्खतापूर्ण है। जब आप यह मानसिक नज़रिया अपना चुकते हैं, तो आप अपने चेतन आदेश से यह कह रहे हैं, "असीमित प्रज्ञा बाहर निकलने का रास्ता नहीं जानती है।" आपके निर्णय के अनुसार आप अपने ख़ुद के अज्ञान, नियम के दुरुपयोग या सही निर्णय पर पहुँचने में असफलता के द्वारा निर्मित अंधकार और दुविधा में जीते हैं।

आप शांति उत्पन्न करते हैं, जब आप मानसिक रूप से उन चीज़ों पर मनन करते हैं, जो सच्ची, प्यारी, उदात्त और ईश्वरीय होती हैं। आप नकारात्मक, दुष्टतापूर्ण और विनाशकारी सोच के ज़रिये बुरी चीज़ों को अपने अनुभव में लाते हैं। दूसरे शब्दों में, ख़ुद से यह सवाल पूछें: मैं इस शक्ति का इस्तेमाल कैसे कर रहा हूँ? मैं किस तरह के निर्णय पर पहुँचा हूँ? निर्णय करें कि आप इस शक्ति का इस्तेमाल सृजनात्मक तरीक़े से, सामंजस्यपूर्ण तरीक़े से और इसकी प्रकृति के अनुसार करने जा रहे हैं। तब आप इसे ईश्वर की सक्रियता कहेंगे। जब आप इसका इस्तेमाल विनाशकारी तरीक़े से, नकारात्मक तरीक़े से और इसकी प्रकृति के विरोध में करते हैं, तो लोग इसे शैतान, दुख, कष्ट, दर्द, पीड़ा आदि कहते हैं। आपके भीतर एक अद्भुत शक्ति है। इसका इस्तेमाल करना सीखें।

पिछले साल मैंने एक आदमी का इंटरव्यू लिया, जो कुछ समय पहले दिवालिया हो गया था। उसे अल्सर और हाई ब्लड प्रेशर था। जैसा उसने कहा, वह "बुरे हाल" में था। उसे यक़ीन था कि कोई शाप उसके पीछे लगा है; कि ईश्वर उसे उसके पिछले पापों की सज़ा दे रहा था; कि ईश्वर उसके पीछे हाथ धोकर पड़ा था, कि वह अपने किए की सज़ा भुगत रहा था। ये सब उसके मन के झूठे विश्वास थे।

मैंने उसे समझाया कि जब तक वह यक़ीन करता रहेगा कि कोई शाप उसके पीछे पड़ा है, वह इसी कारण कष्ट उठाता रहेगा, क्योंकि इंसान के विश्वास ही अनुभव, परिस्थितियों और घटनाओं का रूप ले लेते हैं। मैंने उसे बताया कि उसे एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँचना होगा — अपने मन में एक निश्चित निर्णय पर पहुँचना होगा — कि केवल एक ही शक्ति है और वह शक्ति एकता, सौहार्द, शांति और प्रेम के रूप में संचालित हो रही है। और उस जीवन की प्रवृत्ति

उपचार करने और पूर्ण करने की है।

इसलिए वह दृढ़ता से इस निर्णय पर पहुँचा। उसने इस बात पर ध्यान किया:

> केवल एक ही सृजनकर्ता, एक ही उपस्थिति, एक ही शक्ति है। यह शक्ति मेरे भीतर मेरे मन और आत्मा के रूप में है। यह उपस्थिति मेरे ज़रिये सौहार्द स्वास्थ्य और शांति के रूप में संचालित होती है। मैं असीमित प्रज्ञा के दृष्टिकोण से सोचता हूँ, बोलता हूँ और काम करता हूँ। मैं जानता हूँ कि विचार ही वस्तुएँ हैं। जो मैं महसूस करता हूँ, उसे मैं आकर्षित करता हूँ; जो मैं कल्पना करता हूँ वह मैं बन जाता हूँ। मैं लगातार इन सत्यों पर मनन करता हूँ। मैं एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँच गया हूँ कि दैवी सही क्रिया मेरे जीवन को शासित करती है। दैवी क़ानून और योजना सर्वोच्च सत्ता हैं और मेरे जीवन के सभी पहलुओं में काम करती हैं। दैवी मार्गदर्शन मेरा है। दैवी सफलता मेरी है। दैवी समृद्धि मेरी है। दैवी प्रेम मेरी आत्मा को भरता है। दैवी बुद्धिमत्ता मेरे सारे कामों को शासित करती है। जब भी डर या चिंता मेरे मन में आते हैं, मैं तुरंत दृढ़ कथन कह देता हूँ: "ईश्वर अब मुझे मार्गदर्शन दे रहा है" या "ईश्वर जवाब जानता है।" मैं इसकी आदत डाल लेता हूँ और मैं जानता हूँ कि मेरे जीवन में चमत्कार हो रहे हैं।

उसने हर दिन पाँच-छह बार इस तरह ज़ोर-ज़ोर से प्रार्थना की। एक महीने बाद उसका स्वास्थ्य बेहतर हो गया और उसे एक प्रगतिशील कंपनी में साझेदार बना लिया गया। उसके पूरे जीवन का कायाकल्प हो गया। वह एक निर्णय पर पहुँचा: सिर्फ़ एक ही शक्ति है — वह शक्ति एकता, सौहार्द, स्वास्थ्य और शांति के रूप में सक्रिय होती है। उस शक्ति में कोई विभाजन या झगड़े नहीं हैं; इसका विरोध करने, इसे रोकने, इसे दूषित करने या इसके साथ हस्तक्षेप करने वाली कोई चीज़ नहीं है। उसके मन में आने वाला नया विचार, नया निर्णय उसका मालिक बन गया और उसे जीवन की अमीरी को व्यक्त करने के लिए मजबूर किया।

एक महिला मेरे पास आई; वह परेशान और व्याकुल दिख रही थी। उसने एक कारोबार में काफ़ी बड़ी धनराशि का निवेश किया था और उसे एक निश्चित तारीख़ तक एक अतिरिक्त राशि चुकानी थी, जैसा कि अनुबंध था।

समय क़रीब आने पर उसे अहसास हुआ कि वह पैसे का इंतज़ाम नहीं कर सकती और इस वजह से उसका पूरा निवेश डूब सकता है। उसने वह सब कर लिया था, जो वह जानती थी। उसने अपनी ज़िम्मेदारी का सम्मान करने के लिए सारे तार्किक और उचित क़दम उठा लिए थे। वह दहशत में आने वाली थी, तभी ईश्वर में उसकी प्रबल आस्था ने ख़ुद को व्यक्त किया। वह एक निश्चित, स्पष्ट निर्णय पर पहुँची कि वे अपने मन में आने वाले किसी भी तरह के डर भरे या विनाशकारी विचारों को अस्वीकार कर देगी। उसने एक सरल प्रार्थना की: "मैं जानती हूँ कि आप जवाब जानते हैं और आप मुझे रास्ता दिखाएँगे। इसी समय यह करने के लिए धन्यवाद।"

उसने मुझे बाद में बताया, "मैं इस प्रार्थना को इस तरह पकड़े रही, मानो मेरी ज़िंदगी इस पर निर्भर थी। हर रोज़ मैं इसे मन ही मन दोहराती रहती थी — ख़ामोशी से और शांति से। जब मैं अकेली होती थी, तब मैं इसे ज़ोर से भी बोलती थी।

बहुत जल्दी ही उसने ग़ौर किया कि दहशत और हताशा का अहसास कम हो गया था। वह ज़्यादा शांत महसूस कर रही थी, हालाँकि बाहर कुछ भी नहीं बदला था या नहीं हुआ था। वह दिन भी आया, जब उसने कहा कि उसमें चिंता करने की कोई इच्छा नहीं रह गई और वह परिस्थितियों के बारे में हल्का महसूस करने लगी। वह जानती थी कि उसे उसकी प्रार्थना का जवाब मिल गया है।

एक सहयोगी ने उसका ज़िक्र एक मित्र से किया, जिसके पास निवेश करने के लिए बहुत

सारे पैसे थे और जो निवेश करने के तरीक़े तलाश रहा था। वह जिसे खोज रही थी, वह उसे खोज रहा था। यह अक्सर होता है, जब रोज़गार के किसी पद या कारोबारी अवसर की इच्छा की जाती है।

विचार हमारे स्वामी हैं। हमारे निर्णय ही तय करते हैं कि हमारे साथ क्या किया जाता है। अपने मन में दैवी विचारों को सिंहासन पर बैठा लें और फिर प्रार्थना के चमत्कारों को देखें। आपके भीतर एक अद्भुत शक्ति है। इसका इसी समय इस्तेमाल शुरू कर दें। यह सर्वशक्तिमान शक्ति है; एक अकेला हम सभी के हृदय में रहता है। "हाँ" कहें। किसी निर्णय पर पहुँचें। उन सभी विचारों और सत्यों को "हाँ" कहें, जो उपचार करते हैं, वरदान देते हैं, प्रेरित करते हैं, ऊपर उठाते हैं और आपकी आत्मा को गरिमामय बनाते हैं। उन सभी नकारात्मक विचारों को निश्चित रूप से, पूरी तरह "न" कहें, जो आपके मन में डर भरते हों, आपको नीचे घसीटते हों, आपके मन में शंका लाते हों। इन सभी सुझावों को अस्वीकार कर दें, क्योंकि ये ईश्वर के घर के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

इन दो शब्दों के बारे में निर्णय पर पहुँचें। स्वास्थ्य, प्रसन्नता, शांति, प्रचुर और समृद्ध जीवन को "हाँ" कहें। रोग, दुख, कष्ट और ग़रीबी को "न" कहें। इन विचारों को अस्वीकार कर दें। ऐसे किसी भी सुझाव या विचार को अस्वीकार कर दें, जो आपकी आत्मा को ख़ुशी से न भरता हो। ऐसे किसी भी सुझाव को अस्वीकार कर दें, जो आपको ज़्यादा आत्मविश्वास न देता हो। पुरानी कहावत है कि जिसे आप आज कर सकते हों, उसे कल पर न टालें। टालमटोल समय का चोर है। हाँ, अगर आप इसे आज टाल रहे हैं और सोच रहे हैं, "मैं क्या और कब निर्णय करने वाला हूँ, शायद अगले सप्ताह," तो आप न्यूरॉटिक, कुंठित और अप्रसन्न बन जाएँगे। आप ख़ुद को बंधन में रख रहे हैं।

अगर आपकी प्रेरणा अच्छी है, अगर यह आपको अच्छा दिखता है, तो किसी निर्णय पर पहुँचें। कुछ न करने से कहीं बेहतर है अभी कुछ अच्छा करना। "क्योंकि जैसा इंसान अपने दिल में सोचता है, वैसा ही वह होता है।" दिल आपका अवचेतन मन है, आपकी भावनाओं का स्थान है। इसलिए जो भी विचार या चित्र आपके मन में अभी हैं, आपकी भावनात्मक प्रकृति (आपके भीतर की आत्मा) उस साँचे में प्रवाहित होने लगती है। आपका विचार और भावना आपकी तक़दीर बनाती हैं। आपका विचार और भावना आपके जीवन के साँचे में हर चीज़ को बनाती हैं और आपकी तक़दीर को आकार देती हैं। आप जिसे भी सच मानते और महसूस करते हैं, वह साकार हो जाता है। अभी किसी निर्णय पर पहुँचें।

एक इंसान ने एक बार मुझसे कहा था कि उसके सामने दो पदों का प्रस्ताव रखा गया। वे दोनों ही उसे अच्छे दिख रहे थे। एक आदमी दो बजे उसे फ़ोन करने वाला था और वह जवाब चाहता था। उसने कहा, "मेरी इनमें से किसी के बारे में भी कोई ख़ास भावना नहीं है। वे दोनों ही अच्छे दिखते हैं। वे लगभग एक जैसे हैं।" मैंने कहा, "जब वह आदमी दो बजे आता है और अगर आपके उद्देश्य अच्छे हैं, आपके कोई छिपे हुए उद्देश्य नहीं हैं, यह आपको अच्छा लगता है, तो आप इसे अच्छा घोषित करें और उसके आने पर आपके मन में जो भी पहला विचार आता है — चाहे हाँ या नहीं — वह सही होगा। इस पर उसने कहा, "हाँ।" मैंने कहा, "अगर आपकी प्रेरणा सही है, वह चीज़ आपको अच्छी दिख रही है, तो आप संसार में किस चीज़ से डर रहे

हैं?” सही क्रिया का एक सिद्धांत होता है; ग़लत क्रिया का कोई सिद्धांत नहीं होता। इसलिए आप इसे अच्छा घोषित करें और यह अच्छा ही होगा। आप इसे सही घोषित करें।

टॉम मोनाहन एक ऐसे इंसान थे, जो निर्णय लेने में नहीं हिचके। उन्होंने एक स्टोर के पिज़्ज़ा पार्लर से डोमिनोज़ पिज़्ज़ाज़ की स्थापना की और इसे लगभग 30 साल में कई हज़ार होम डिलिवरी आउटलेट्स की चेन में बदला। 1989 में उन्होंने अपनी बेहद सफल कंपनी को बेचने का निर्णय लिया, क्योंकि वे उस वक़्त परोपकारी काम पर ध्यान केंद्रित करना चाहते थे।

लेकिन उनकी योजना कारगर नहीं रही। जिस कंपनी ने उनकी चेन को ख़रीदा था, ढाई साल में ही उसने इसे लगभग दिवालिएपन की कगार पर पहुँचा दिया, इसलिए मोनाहन को यह कठिन निर्णय लेना पड़ा कि वे अपनी चुनी हुई गतिविधियों को एक तरफ़ रख दें और डोमिनोज़ को बचा लें।

संगठन को दोबारा बनाने और फिर इसका विस्तार करने में बहुत कड़ी मेहनत और लगन की ज़रूरत पड़ी। मोनाहन ने अपने जीवन की शुरुआत में ही आवश्यक संकल्प विकसित कर लिया था। वे ग़रीबी और अपमान भरे बचपन से उबरकर महान उद्यमी बने थे। अब एक बार फिर उन्होंने अपने सारे प्रयास किए, ताकि न सिर्फ़ डोमिनोज़ को इसके मूल उत्कर्ष पर पहुँचाएँ, बल्कि इसका विस्तार 6,000 स्टोर्स में भी करें — जिनमें से 1,100 अमेरिका के अलावा दूसरे देशों में हैं।

एक बार जब चेन अपने पैरों पर खड़ी हो गई, तो मोनाहन को एक नई और गंभीर चुनौती का सामना करना पड़ा। डोमिनोज़ ने अपना मुख्य प्रचार तेज़ डिलिवरी की गारंटी पर केंद्रित किया था। उनकी गारंटी थी कि ग्राहक को उसका पिज़्ज़ा 30 मिनट में मिल जाएगा।

इससे उन लोगों के कई मुकदमे शुरू हो गए, जिन्होंने डोमिनोज़ के डिलिवरी ड्राइवरों की वजह से दुर्घटनाओं में चोट लगने का दावा किया, जो 30 मिनट की डेडलाइन पूरी करने के चक्कर में तेज़ गाड़ी चला रहे थे। इंडियाना में डोमिनोज़ के ड्राइवर द्वारा कथित रूप से मृत महिला के परिवार को 3 मिलियन डॉलर का मुआवज़ा देना पड़ा। अंतिम प्रहार तब हुआ, जब एक और महिला को 78 मिलियन डॉलर का मुआवज़ा दिया गया। इसके बाद डोमिनोज़ ने 30 मिनट की गारंटी ख़त्म कर दी।

इस वित्तीय तबाही के बावजूद मोनाहन ने हार मानने से इंकार कर दिया। उन्होंने कंपनी में ज़्यादा पैसा, समय और ऊर्जा लगाई और इसे दोबारा शिखर पर ले आए। अपनी लगन व सकारात्मक नज़रिये की बदौलत वे आगे बढ़े और अपनी टीम को उस विजेता भाव से प्रेरित किया, जिसने डोमिनोज़ को अपने उद्योग में नंबर वन बना दिया है।

कुछ साल पहले मैंने एक होटल में एक आदमी से बात की थी। उसकी उम्र नब्बे साल थी और वह बैसाखियों पर था। हमने कुछ देर बात की और उसने कहा, “आप जानते हैं, जब मैं साठ साल का था, तो पूरे संसार की सैर करना चाहता था। मैं अपनी पत्नी को संसार की सैर कराने ले जाना चाहता था। मैं इसे टालता रहा। मैंने कहा, ‘मैं तब तक इंतज़ार करूँगा, जब तक कि मेरी बेटी बड़ी नहीं हो जाती और उसकी शादी नहीं हो जाती।’ अब मेरी पत्नी मर चुकी है और मैं आर्थ्राइटिस से अपाहिज हूँ और मैं उस सपने को कभी साकार नहीं कर पाऊँगा। उसने इसे मुल्तवी किया। उसने ख़ुद का या अपनी पत्नी को उस सैर की ख़ुशी नहीं दी। उसने निर्णय

पर पहुँचने से इंकार किया। वह इसे बाद पर टालता रहा, जब तक कि उसकी बेटी बड़ी नहीं हो जाती और उसकी शादी नहीं हो जाती, जो बकवास है। आपकी अच्छाई इसी समय सही है। आपको किसी चीज़ का इंतज़ार नहीं करना है। आप निर्णय इसी समय लेते हैं। क्योंकि संसार की सैर का आपकी बेटी की शादी होने या कुँवारे रहने से कोई संबंध नहीं है — इसका ज़रा भी संबंध नहीं है। इसका संबंध तो आपसे है। अपना मन बनाएँ। एक स्पष्ट निर्णय पर पहुँचें। अगर आपकी प्रेरणा सही है, तो वह निर्णय सही है। यह ईश्वर की सक्रियता है, इसी समय।

इसी समय अपना मन बनाएँ या फिर आप यह चाहते हैं कि आपके रिश्तेदार आपकी तरफ़ से निर्णय लें? क्या स्थितियाँ या परिस्थितियाँ आपको विवश करने जा रही हैं?

प्रार्थना और दावा करें कि एक असीमित प्रज्ञा इसी समय आपको मार्गदर्शन दे रही है। अपने भीतर के मार्गदर्शक सिद्धांत को स्वीकार करें। सही क्रिया का दावा करें। आपके भीतर मार्गदर्शन का एक सिद्धांत है। लेकिन जब तक आप इसका इस्तेमाल नहीं करते हैं, तब तक इसका होना या न होना बराबर है। आपके मन में सहज बोध का जो पहला आवेग आता है, वह आम तौर पर सही जवाब होता है।

यह आपका अवचेतन मन है, जहाँ सारे विचार रहते हैं। यहीं से वैज्ञानिक, पुरातत्ववेत्ता, जीवाश्म विशेषज्ञ, चिकित्सक को उनके जवाब मिलते हैं। जवाब गहराइयों से आते हैं। यह आपका कर चुकाता है, है ना?

इंजीनियर को धैर्य के लिए कर चुकाना पड़ता है। उसे इंजीनियरिंग के अपने ज्ञान के लिए कर चुकाना होता है। केमिस्ट को कर चुकाना होता है; डॉक्टर को कर चुकाना होता है। अगर वह छह घंटे का ऑपरेशन करता है, तो उसकी निपुणता, योग्यता, ज्ञान, आस्था, विश्वास — सभी पर कर चुकाना होता है। आपको कई बार अपने प्रेम के लिए भी कर चुकाना होता है, है ना? इसलिए आपको एक निर्णय पर पहुँचना होता है। जब आप किसी निर्णय पर पहुँचते हैं, तो आपने अपना कर चुका दिया है। तब आप कुंठा, दुविधा, क्रोध और दुख से मुक्त हो जाते हैं।

जब आप मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं और कोई निर्णय लेना चाहते हैं, तो यह कहें:

> असीमित प्रज्ञा मेरा मार्गदर्शन कर रही है। मेरे जीवन में सही क्रिया है। एक विराट उपस्थिति है, जिसमें मैं जीता हूँ, चलता हूँ और जिसमें मेरा अस्तित्व है। यह मेरे लिए द्वार खोलती है। मैं उस प्रेरणा का अनुसरण करता हूँ, जो स्पष्टता से मेरी ओर आती है। मैं इसे अपने ज़्यादा गहरे मन तक पहुँचा देता हूँ और अपने काम में लग जाता हूँ।

फिर जो पहला विचार आपके मन में आता है, वह पहली चीज़ जो आपके भीतर से बाहर उमड़ती है, वही आपका जवाब है। यह आपकी गहराइयों से बाहर निकलती है। यह पहला ऊपर आने वाला विचार है। आप इसके साथ बहस नहीं करते हैं या अपने रिश्तेदारों से इसके बारे में बात नहीं करते हैं। अगर आप ऐसा करते हैं, तो अचानक आपके दिमाग़ में बीस विचार होंगे। यह स्पर्श का आंतरिक अहसास है, आत्मा का आंतरिक मौन ज्ञान।

कई बार जब आप रात को सोने जाते हैं, तो इसे आज़माएँ: कहें, "असीमित प्रज्ञा मेरे सामने जवाब उजागर करती है; यह मेरे लिए सही निर्णय प्रकट करती है। जब मैं सुबह जागता हूँ, तो मेरा पहला विचार ही जवाब होगा।" फिर उस पहले विचार पर ग़ौर करें, जो सुबह आपके मन में आता है। लेकिन फ़र्श पर इधर-उधर चहलक़दमी करके इसकी चिंता न करते रहें। जवाब

आपको मिल जाएगा। आप अपने जीवन में दैवी नियम और योजना का दावा कर रहे हैं। अपने जीवन में दैवी सही क्रिया का दावा करें। दैवी नियम और योजना का मतलब है कि आपके अवचेतन में मानवीय नियमों के बजाय, धर्मसिद्धांतों और परंपरा के बजाय सौहार्द, सौंदर्य, प्रेम, शांति और प्रचुरता का नियम काम कर रहा है। इसका यह भी मतलब है कि आप ख़ुद को अपने सर्वोच्च स्तर पर व्यक्त कर रहे हैं। आप अपने गुणों को एक अद्भुत ढंग से मुक्त कर रहे हैं, जो अखंडता और ईमानदारी के सामंजस्य में है। इसका यह भी मतलब है कि आपको शानदार और अद्भुत प्रतिफल मिल रहा है। क्योंकि अगर आपके पास ज़रूरत का सारा पैसा नहीं है, तो यह वहाँ होना चाहिए, इसे उपलब्ध होना चाहिए, इसका संचार होना चाहिए। जब आप वह सब करने में समर्थ होते हैं, जो आप करना चाहते हैं और जिस समय आप करना चाहते हैं, तो आप सचमुच अमीर हैं। यह दैवी नियम और योजना है। निश्चित रूप से, अगर आपको एक नई कार की ज़रूरत है और आप उसे नहीं ख़रीद सकते, तो यह दैवी नियम और योजना नहीं है। कोई चीज़ बहुत ग़लत है।

इसलिए सही क्रिया में विश्वास करें। सही क्रिया का एक सिद्धांत है। ग़लत क्रिया का कोई सिद्धांत नहीं है। इसलिए, जब आप किसी व्यक्ति को यह कहते सुनें, "शायद मैंने कोई ग़लत चीज़ कर दी," तो आप मुड़कर यह यक़ीन क्यों नहीं करते कि सही क्रिया का एक सिद्धांत है, जैसे आपकी कार के पहियों को गोल होना होता है। अगर वे गोल नहीं हैं, तो आपकी जान चली जाएगी। यह सही क्रिया है। दावा करें कि आप सर्वशक्तिमान की छत्रछाया में है। "मैं मालिक से कहूँगा, वह मेरा आश्रय और मेरा दुर्ग है। मेरे ईश्वर, मैं उसमें विश्वास करूँगा।" क्या यह मार्गदर्शन और सही क्रिया के लिए अद्भुत प्रार्थना नहीं है? "मैं एक गोपनीय स्थान में रहता हूँ।" यह आपका ख़ुद का मन है, जहाँ आप ईश्वर के साथ चलते और बात करते हैं। "मैं सर्वशक्तिमान की छत्रछाया में रहता हूँ, मैं मालिक से कहूँगा: वह मेरा आश्रय है, मेरा दुर्ग है। मेरे ईश्वर, मैं उसमें विश्वास करूँगा। वह मुझे अपने पंखों से ढँकता है और उसके डैनों तले मैं आराम करूँगा।"

तो फिर आपको सही चीज़ करने के बारे में चिंता या डर क्यों होना चाहिए? नहीं, आप एक मार्गदर्शक सिद्धांत के अधीन हैं। आपको बताया गया है, देवदूत आप पर निगाह रखेंगे। देवदूत प्रज्ञा, बुद्धिमानी और सृजनात्मक विचार हैं, तो आपके भीतर से उमड़ते हैं। तो आपका मार्गदर्शन आपकी सच्ची जगह की ओर किया जा रहा है, आपका मार्गदर्शन सही चीज़ की ओर किया जा रहा है, क्योंकि सर्वोच्च और सर्वश्रेष्ठ आपके ज़रिये सक्रिय होने लगते हैं। ईश्वर को अपने जीवन में पहले स्थान पर रखें। ईश्वर परम प्रज्ञा है, जिसने आपके दिल की धड़कन शुरू की थी। यह सभी अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंगों को शासित करती है, यह आप पर निगाह रखती है। इसकी प्रवृत्ति उपचार करने और पूर्ण करने की है।

इस दिन तुम चुनो कि तुम किसकी सेवा करोगे। सौहार्द को चुनें।

सही क्रिया को चुनें। सौंदर्य को चुनें, समृद्धि को चुनें और अपने जीवन में सुरक्षा को चुनें। इन चीज़ों को चुनें, क्योंकि ज़्यादा ऊँचा स्व ईश्वर है और सर्वशक्तिमान शक्ति आपकी तरफ़ से सक्रिय होगी। लेकिन आपको इसकी ओर मुड़ना होगा। अपनी भावनाओं से नहीं, बल्कि अपने मन से निर्णय लें।

यहाँ एक आदमी है, जो बॉस पर पगला गया। ओह हाँ, वह कटुता, शत्रुता से भरा हुआ है।

तो वह कहता है, उसने अपने बॉस को झिड़क दिया। और उसने फटाफट नौकरी छोड़ दी। उसने एक और नौकरी कर ली और उसने मुझसे कहा, "मेरे पास इस नौकरी में इतनी समस्याएँ हैं, जितनी पिछली नौकरी में नहीं थीं।" देखिए, उसने क्रोध, द्वेष और शत्रुता — उसकी भावनाओं — के आधार पर निर्णय लिया था। वह अपनी भावनाओं से संचालित था। आप सच्चे विवेक के आधार पर, बुद्धिमत्ता और समझ के आधार पर निर्णय लें। तर्क से पूरी चीज़ को देखें। अच्छे और बुरे परिणामों का अध्ययन करें। तार्किक बनें। उसे अहसास हुआ कि उसका निर्णय ग़लत था। तथ्यात्मक तार्किकता के आधार पर निर्णय लें। उस चीज़ पर पूरी तरह तर्कसम्मत सोच-विचार करें। क्या यह आपको तार्किक लगता है? तथ्यों को एकत्रित कर लें। जितनी जानकारी हासिल कर सकते हों, कर लें। इसे तटस्थता से सुलझाने की कोशिश करें, क्योंकि आपको यही करना चाहिए। किसी मानसिक दबाव का इस्तेमाल न करें, किसी शक्ति का इस्तेमाल न करें। अपने दाँत न भींचें और अपना मुक्का न तानें। यह न कहें, "मुझे एक ख़ास समय तक जवाब मिल जाना चाहिए," या "न्यायाधीश को पंद्रह अप्रैल तक निर्णय दे देना चाहिए।" यह बकवास है।

जो भी चीज़ आप कर सकते हों, उसे तटस्थता से, शांति से और विश्वास से करें। अगर कोई स्पष्ट जवाब न मिले, तो भी अगर वह अच्छा महसूस होता हो, स्थिति आपको अच्छी दिखती हो, तो निवेश या जो भी हो, उसमें आगे बढ़ें और उस काम को कर दें। हमेशा याद रखें, अगर आपकी प्रेरणा सही है और आप मार्गदर्शन व सही क्रिया के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, तो अगर कोई चीज़ आपको अच्छी दिखती है, तो आगे बढ़ जाएँ। कहें, "यह ईश्वर की गतिविधि है" और इसे अच्छा घोषित करें। आपको क्यों हिचकना चाहिए?

आपको क्यों डगमगाना और इंतज़ार करना चाहिए? आपको न्यूरॉटिक क्यों बनना चाहिए? कुंठित क्यों बनें? किसी निर्णय पर पहुँचें। किसी निर्णय पर जल्दी से पहुँचें। जब कोई फ़ोन पर कहता है, "मुझे अभी जवाब चाहिए" और अगर आप इस बारे में प्रार्थना कर रहे हैं और सोच रहे हैं, तो मिलने वाले स्पष्ट आभास के अनुरूप आप जो भी कहेंगे, वह सही होगा।

सारी पूर्व धारणाओं को बाहर निकाल दें। एक आदमी ने मुझसे एक बार कहा था, "क्या आपको लगता है कि मैं सही निर्णय पर पहुँचा हूँ?"

मैंने उससे कहा, "देखिए, क्या यह स्वर्णिम नियम और प्रेम के नियम पर आधारित है?" इस पर उसका चेहरा लाल हो गया। मैंने उससे कहा, "आपने अपने सवाल का जवाब ख़ुद दे दिया है।" अगर आपका निर्णय किसी से लाभ उठाना है, किसी की आँखों में धूल झोंकना है या उसे धोखा देना है, तो आप ऐसे मामले में जिस भी निर्णय पर पहुँचेंगे, वह ग़लत होगा, क्योंकि किसी दूसरे को चोट पहुँचाने का मतलब ख़ुद को चोट पहुँचाना है। तो क्या आपका निर्णय स्वर्णिम नियम और प्रेम के नियम पर आधारित है? प्रेम का मतलब हर एक के लिए वही कामना करना है, जो आप ख़ुद के लिए करते हैं। जब आप किसी दूसरे से प्रेम करते हैं, तो आप दूसरे को वह बनते और व्यक्त करते देखना पसंद करते हैं, जो वे बनना और व्यक्त करना चाहते हैं।

मैं चालीस-पचास साल की महिलाओं से बात करता हूँ, जिनकी माताएँ उनके लिए सारे निर्णय लेती थीं। अगर आप इसकी अनुमति देते हैं, तो आप ख़ुद को अपनी पहलशक्ति, अपने ख़ुद के अनुभव, अपने ख़ुद के देवत्व से वंचित रख रहे हैं, क्योंकि ईश्वर की उपस्थिति आपके

भीतर है। आप ख़ुद ईश्वर हैं और आपकी सभी संतानें सर्वोच्च की संतानें हैं। आप यहाँ चुनने के लिए हैं, निर्णय लेने के लिए हैं, अपनी ख़ुद की तक़दीर को बनाने और ढालने के लिए हैं। निर्णय लेना सीखें। अभी शुरू कर दें। सात-आठ साल की उम्र के बाद आपको निर्णय लेना सीखना चाहिए, ज़ाहिर है थोड़ी निगरानी के साथ। लेकिन जब आप अठारह साल के हो जाते हैं, तो आपको निश्चित रूप से अपने ख़ुद के निर्णय लेना चाहिए, घर से बाहर रहने लगना चाहिए, अपना ख़ुद का अपार्टमेंट कर लेना चाहिए, अपनी आस्तीनें चढ़ा लेनी चाहिए और व्यस्त हो जाना चाहिए। निर्णय लेना सीखें, हाँ; और अपनी पहल शक्ति का इस्तेमाल करें।

एक आदमी ने कहा था, "जब मैं थोड़ी दुविधा और उलझन में रहता हूँ, तो इस बारे में प्रार्थना करने के बाद मैं कई बार सिक्का उछालता हूँ। लेकिन मैं जानता हूँ कि किसी भी तरह की क्रिया निष्क्रियता से बेहतर है, इसलिए मैं किसी निर्णय पर पहुँच जाता हूँ।"

अगर आप सैन फ़्रांसिस्को जाते वक़्त ग़लत सड़क पर हों और कोई व्यक्ति आपको रोककर कहता है, "दाएँ मुड़ जाएँ, वह सही सड़क है," तो आपको पता चल जाता है कि आप ग़लत थे। अब आप सही हैं, है ना? आप सही सड़क पर हैं। तो क्या? आपने ग़लती कर दी थी। हर कोई ग़लतियाँ करता है। जब आप स्कूल गए थे, तो क्या आपने सैकड़ों ग़लतियाँ नहीं की थीं? इसीलिए आपकी पेंसिल के छोर पर एक रबड़ लगा था। आपके माता-पिता सहित हर कोई जानता था कि आप ग़लतियाँ करेंगे। तो जब आप निर्णय लेना जारी रखते हैं, तो आपको एक नया उत्साह और एक नया रोमांच मिलता है।

चीज़ें पहले से तय नहीं हैं। परिस्थितियाँ परिस्थितियों का निर्माण नहीं कर सकतीं। स्थितियाँ सृजनात्मक नहीं हैं। आपके बाहर कोई शक्ति नहीं है। आप किसी निर्मित वस्तु को शक्ति नहीं देते हैं। आप केवल इस संसार के दिखने वाले स्वरूप को ही शक्ति नहीं देते हैं। आप सृजनकार को, अपने भीतर की परम प्रज्ञा को शक्ति देते हैं। अनिर्णायकता से बचें।

लोग कहते हैं: "क्या दौलत की ख़ातिर प्रार्थना करना मेरे लिए सही है?" कितनी बकवास बात है! कितनी मूर्खतापूर्ण बात है! "क्या सफलता की ख़ातिर प्रार्थना करना मेरे लिए सही है? शायद ईश्वर नहीं चाहता कि मैं सफल होऊँ।" यह मूर्खतापूर्ण है। यह जंगल दर्शन है। यह इतना मूर्खतापूर्ण है कि शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। "क्या ईश्वर चाहता है कि मैं गाऊँ?" देखिए, अगर ईश्वर ने आपको आवाज़ दी है, तो वह चाहता है कि आप गाएँ। गाने की क्षमता आपके भीतर है। अगर आप गाने में सक्षम हैं और वह गुण आपके भीतर है, तो आगे बढ़ें और गाएँ। आप ईश्वर के गाने का इंतज़ार नहीं करते हैं। ईश्वर आपके माध्यम से गाएगा। ईश्वर एकमात्र उपस्थिति और शक्ति है। अगर आपकी इच्छा चित्रकला करने की है, तो आगे बढ़ें और चित्रकारी करें। अगर आप पशुओं से प्रेम करते हैं या अगर आप केमिस्ट या संगीतकार बनना बेहद पसंद करते हैं, तो अपने पास आने वाली प्रेरणा का अनुसरण करें।

लोग कहते हैं, "क्या यह सही है कि मुझे कार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए?" कार क्या है? कार तो बस ईश्वर के मन का एक विचार है। यह ईश्वर का भाव है, जो प्रकट हो गया है। यह आपके दरवाज़े के बाहर ईश्वर है, जो कार का रूप ले रहा है। यह ईश्वर के सिवा कुछ नहीं है। ईश्वर आत्मा है और घास भी ईश्वर है। आप जो कपड़े पहनते हैं, वे भी ईश्वर हैं। ईश्वर और वस्तुएँ पर्यायवाची हैं। आप किसी स्टोर में जाते हैं और कहते हैं, "वस्तुएँ।" आप किस बारे में बात कर

रहे हैं? ईश्वर और वस्तुएँ एक ही हैं। वस्तुएँ प्रकट आत्मा हैं। किसी पेड़ पर लगा सेब फल प्रकट आत्मा है। केवल आत्मा है। हर चीज़ अंदर बनती है और फिर बाहर निकलती है। भौतिक जगत प्रकट आत्मा है। जिस भी चीज़ को आप स्पर्श करते हैं, वह प्रकट आत्मा है।

क्या यह मेरे लिए सही है, जैसे सवालों के बारे में क्या? आप कह सकते हैं, "क्या शादी करना मेरे लिए सही है?" ये बातें कितनी बकवास हैं! ये अंधविश्वास, अज्ञान और डर पर आधारित हैं। इस तरह के सवाल मन से निर्णय और शक्ति को छीन लेते हैं। अगर आप मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं, जो प्रार्थना का सर्वोच्च रूप है, तो आप धर्मशास्त्रीय अवधारणा को पार कर लेंगे, क्योंकि आपके चलते-चलते आपका उच्चतर स्वरूप आपको रास्ते में सिखा देगा। सत्य की आत्मा आपको सत्य की ओर ले जाएगी। कहें, "ईश्वर इसी वक़्त मुझे मार्गदर्शन दे रहा है। सही क्रिया सर्वोच्च है। सत्य का भाव मुझे सारे सत्य की ओर ले जाता है।" आप एक अद्भुत निर्णय पर पहुँच गए हैं। निश्चित बनें। लक्ष्य रखें। उद्देश्यों की घोषणा करें। आपकी प्राप्तियाँ आपके दायित्वों से अधिक होंगी, जैसा कि सारे व्यवसाय में होता है। आपकी प्रार्थना का जवाब आपके विश्वास के स्तर पर दिया जाएगा। आपकी चेतना वह है, जो आप चेतन और अवचेतन रूप से जानते हैं। यदि आप समृद्धि, सफलता, उपलब्धि और विजय के लिए प्रार्थना करते हैं और आप एक निर्णय पर पहुँचकर कहते हैं, "समृद्धि अब मेरी है। मैं दौलतमंद बनने जा रहा हूँ। मेरे पास वह सारी दौलत होगी, जिसकी मुझे कोई काम करने के लिए ज़रूरत है, जब मैं उसे करना चाहता हूँ, जो भी मैं करना चाहता हूँ," तो आपका अवचेतन प्रतिक्रिया करेगा। इसके अलावा, जवाब आपकी वर्तमान मानसिक अवस्था से फ़िल्टर होगा। अपनी निगाह ऊपर उठाएँ और आप वहाँ पहुँच जाएँगे, जहाँ आपकी निगाह जमी हुई है।

संसार के कई हिस्सों में व्यापारी बहुत ऊँचे भाव बताते हैं। पर्यटक से भावताव करने की उम्मीद की जाती है। वे भाव कम कर देते हैं, फिर भी उन्हें मुनाफ़ा होता है।

अगर आप समृद्धि, सफलता और उपलब्धि के लिए प्रार्थना कर रहे हैं और आप दूसरों के प्रति या उनके प्रमोशन या उनकी संपत्तियों या उनके पास मौजूद करोड़ों डॉलरों के प्रति ईर्ष्यालु हैं, तो वह नकारात्मकता, वह द्वेष, वह ईर्ष्या आपकी अच्छाई और आपके विकास को रोक देती है और ज़ाहिर है आपकी ख़ुद की समृद्धि में हस्तक्षेप करती है।

जर्मन सम्राट फ़्रेडरिक महान ने बहुत सारा पैसा इकट्ठा किया। कम से कम उनके प्रतिनिधियों ने किया। उन्होंने कहा, "हम जो पैसा इकट्ठे करते हैं, उसका क्या होता है?" एक गर्म दिन उनकी कैबिनेट के सदस्य टेबल के आस-पास बैठे थे। वहाँ बर्फ़ का एक तसला था और उसमें बर्फ़ के साथ कुछ पानी था। एक आदमी ने बर्फ़ का एक छोटा टुकड़ा उठाया और उसे आदमियों के हाथों से गुज़ारा। सम्राट के पास पहुँचते-पहुँचते टुकड़ा बहुत छोटा हो गया था। उसने कहा, "सम्राट, यही जवाब है।" बिलकुल सही। तो अगर आप ख़ुद को दोष देते हैं या आप दूसरों के प्रति ईर्ष्यालु हैं, तो आप अपने ज़रिये दौलत के असीम महासागर के प्रवाह को रोक रहे हैं। इसलिए हर एक के लिए वही कामना करें, जो आप ख़ुद के लिए करते हैं। क्योंकि प्रेम नियम की परिपूर्णता है। प्रेम सद्भाव है। हर एक के लिए वही कामना करें, जो आप ख़ुद के लिए करते हैं।

मन की नकारात्मक बातें — अफ़सोस, ग्लानि, नफ़रत, चिढ़, द्वेष, बाहरी चीज़ों को देखना,

लोगों, स्थितियों और परिस्थितियों को शक्ति देना — असीमित की समृद्धि में कटौती करते हैं। अपनी पूरी निष्ठा और समर्पण दें। अपनी अपेक्षा उस एक से रहने दें, जो हमें जीवन, साँस और सारी चीज़ें देता है। इसे सीधे समझ लें! उस निर्णय पर पहुँचें। स्रोत तक जाएँ। यह सब करने के बाद इस निर्णय पर पहुँचें: "अपने दिल की गहराई से मैं संसार के हर व्यक्ति के लिए असीम की समृद्धि की कामना करता हूँ: स्वास्थ्य, प्रसन्नता, शांति और जीवन की सारी नियामतें।" फिर देखें कि स्फूर्ति और समृद्धि आपकी ओर कैसे प्रवाहित होती हैं।

यही इतने सारे लोगों को पीछे रोककर रखता है। वे ख़ुद को दोष देते हैं; ग्लानि, चिढ़, द्वेष और ऐसी ही तमाम चीज़ों से भरे रहते हैं। मन के इस नज़रिये की वजह से उनका उपचार भी नहीं हो पाता है। वे समृद्ध भी नहीं होते हैं। देखिए, सच्ची सफलता आध्यात्मिक विकास है। इसलिए आलोचना करना छोड़ दें, क्योंकि यह आपको मिलने वाली अच्छाई में कटौती कर देती है। ईश्वर को ऊपर उठाएँ, जिसमें उपचार करने की शक्ति है।

जब भी आप किसी निर्णय पर पहुँचें, तो याद रखें कि सर्वशक्तिमान की शक्ति इसके पीछे रहेगी, चाहे यह अच्छा हो या बुरा। यह एक धर्मशास्त्रीय निर्णय है। तर्क की शक्ति आपके भीतर है। जीवन का एक सिद्धांत है। यह जानता है कि इसकी रक्षा कैसे करनी है। यह आपके भीतर है। यह आपकी अँगुली के घाव को ठीक करता है। अगर आप कहते हैं, "मैं सुबह तीन बजे जागना चाहता हूँ," तो यह आपको जगा देता है, चाहे कमरे में घड़ी हो या न हो, या चाहे तूफ़ान आने के कारण घड़ी रुक गई हो। आपके भीतर एक प्रज्ञा है, जो आपके सारे महत्त्वपूर्ण अंगों, आपकी साँस को शासित करती है और आपका उपचार करती है। असीमित आपको दंड नहीं दे सकता। जीवन आपको दंड नहीं दे सकता; परम दंड नहीं दे सकता; क़ानून दंड नहीं दे सकता। हम ही अपनी नकारात्मक, विनाशकारी सोच के ज़रिये, नियमों के दुरुपयोग के ज़रिये ख़ुद को दंड देते हैं। एक अच्छा न्यायाधीश दंड नहीं देता है; वह तो बस क़ानून को लागू करता है।

अतार्किक निर्णय लेना छोड़ दें। सरल सच्चाई को जान लें। हम ख़ुद के ख़िलाफ़ असीमित की शक्ति का इस्तेमाल कर रहे हैं। आप जीवंत ईश्वर के मंदिर हैं और ईश्वर का साम्राज्य आपके भीतर है। इसलिए असीमित बुद्धिमत्ता और असीमित शक्ति आपके भीतर है। अगर आप ईश्वर होते, तो आप क्या निर्णय लेते? आप सही क्रिया, सौहार्द, शांति, प्रेम और सद्भाव पर निर्णय लेते, है ना? आप असीमित केंद्र, असीमित शक्ति के दृष्टिकोण से सोचते, बोलते और काम करते। आप किसी पुराने धर्मगुरु के दृष्टिकोण से निर्णय नहीं लेते या आपकी दादी की कही बातों या ऐसी ही किसी चीज़ के आधार पर निर्णय नहीं लेते। आप कहते, "मेरे भीतर एक मार्गदर्शक सिद्धांत है और मैं इस मार्गदर्शक सिद्धांत के अनुसार निर्णय लेने जा रहा हूँ, जो परम सौहार्द और पूर्ण शांति है।" अपने देवत्व को नकारना छोड़ दें।

आपकी दादी सबसे अच्छा नहीं जानती हैं। जब आप शादी करना चाहते हैं, तो एक निर्णय पर पहुँचें और कहें, "असीमित प्रज्ञा मेरी ओर सही व्यक्ति को आकर्षित करती है, जो हर मायने में मेरे साथ सामंजस्य में है। मेरे मन की ज़्यादा गहरी धाराएँ हम दोनों को एक साथ लाती हैं।" असीमित प्रज्ञा पर भरोसा रखें। अपनी माँ या दादी से न पूछें कि क्या आपको उस पुरुष या महिला से शादी करना चाहिए, क्योंकि तब आप अपने देवत्व को नकार रहे हैं। आप कह रहे हैं, "देखिए, मैं नहीं चुन सकता," जो कि ज़ाहिर है आप कर सकते हैं। यह आपका विशेषाधिकार

है।

एक व्यक्ति कहता है: "अगर ईश्वर मुझे स्वस्थ रखना चाहता, तो वह मेरा उपचार कर देता।" ज़ाहिर है, यह एक तरह की ईशनिंदा है, क्योंकि जीवन की प्रवृत्ति ही उपचार करना और स्वस्थ करना है। जब आप जल जाते हैं, तो यह फफोलों को कम करने लगता है और आपको नई त्वचा व ऊतक देता है। जब आपका कोई अंग कट जाता है, तो यह थ्रॉम्बिन बनाता है, घाव पर परत बनाता है और आपका उपचार करना चाहता है। जब कीटाणु आपके शरीर के भीतर अतिक्रमण करते हैं, तो यह उन्हें मार डालता है।

सभी व्यक्तियों में एक ही मन साझा है, जैसा इमर्सन ने कहा था। आप यहाँ चुनाव करने आए हैं। आप ईश्वर के अंग हैं और आप जहाँ भी हैं, ईश्वर को आपकी ज़रूरत है; वरना आप यहाँ नहीं होते। इसलिए आप यहाँ पर उस सबको उत्पन्न करने के लिए हैं, जो असीमित के बारे में सच है। आप ऐसे निर्णय ले सकते हैं, जो सामान्य और तार्किक हों। इसलिए जीवन की प्रवृत्ति, आपके लिए ईश्वर की इच्छा जीवन, सत्य, प्रेम और सौंदर्य का ज़्यादा बड़ा पैमाना है। तो यह कहना मूर्खतापूर्ण है, अंधविश्वास है, घोर अंधविश्वास है, "अगर ईश्वर मुझे स्वस्थ रखना चाहता, तो वह मेरा उपचार कर देता।" यह ईशनिंदा है, क्योंकि आप असीमित के बारे में झूठ बोल रहे हैं। आप असीमित अस्तित्व के बारे में झूठ बोल रहे हैं।

मैंने देखा है कि कई स्त्री-पुरुष बरसों तक एक दूसरे के साथ नफ़रत और द्वेष में रहते हैं, लेकिन तलाक़ नहीं लेते हैं। वे कहते हैं कि वे बच्चों के संदर्भ में सोच रहे हैं। देखिए, बच्चे घर के प्रबल मानसिक और भावनात्मक माहौल की छवि में ही बड़े होते हैं। बच्चे आवारा बन गए और सारे समय बीमार रहे, क्योंकि घर का माहौल नफ़रत, द्वेष, शत्रुता और ग़ुस्से से भरा हुआ था। यह जीने का भयावह तरीक़ा है। एक निर्णय लें। यह अहसास करें कि किसी झूठ को जीने से ज़्यादा अच्छा यह है कि झूठ को ख़त्म कर दिया जाए। यह कहीं ज़्यादा अच्छा, सम्मानजनक और ईश्वरीय है। किसी झूठ को जीना और अपने आस-पास के सभी लोगों के मन को संक्रमित करना एक डरावनी बात है। कम से कम, आपके मन में उस महिला के प्रति कहीं अधिक सम्मान होता है, जिसने तलाक़ लिया, बजाय उस महिला के, जो बीस-पच्चीस साल से एक झूठ को जी रही है।

कुछ लोग निर्णय लेने से घबराते हैं, कई बार धार्मिक कारणों से, तो कई बार राजनीतिक या आर्थिक कारणों से। कुछ लोग तो झूठ को ख़त्म करने के बजाय कैंसर, टी.बी. और आर्थ्राइटिस के शिकार होना ज़्यादा पसंद करते हैं। कई लोग इस बारे में कुछ करने का निर्णय हर दिन लेते हैं, लेकिन कभी कुछ नहीं करते हैं। जीवन की तमाम शक्ति आपके भीतर इसी समय है और आपको इसी समय अपना निर्णय लेने में सक्षम बना रही है। किसी झूठ को जीना अतार्किक है।

मैंने लोगों को तार्किक निर्णय पर पहुँचते देखा है। उन्होंने कहा, "मैं उठूँगा और अपने पिता के पास जाऊँगा।" उन्होंने कहा, "मैं इस तरह से अब और नहीं जियूँगा।" विवाह को सफल बनाने या किसी कारोबार को समृद्ध बनाने के लिए दो लोगों की ज़रूरत होती है। अगर दो लोग कारोबार में हैं और एक सारे समय नशे में रहता है, ग्राहकों का अपमान करता है, तो कारोबार विभाजित है — निश्चित रूप से वे दिवालिया होने वाले हैं। उनके लिए रास्ता यही है कि वे साझेदारी को ख़त्म कर दें और एक दूसरे को दुआएँ दें; अपने-अपने काम पर चले जाएँ और

एक पूर्ण तथा ख़ुशहाल ज़िंदगी जीने का निर्णय लें। लेकिन विभाजित होकर जीना ग़लत है। स्वर्णिम नियम और प्रेम के नियम का अभ्यास करना ही सही चीज़ है।

वही करें, जो आपको करना चाहिए। आप इसे करने के साज़ो-सामान से लैस हैं। आपके भीतर एक मार्गदर्शक सिद्धांत है। ईश्वर चाहता है कि आप प्रसन्न रहें। आप यहाँ उस सबको उत्पन्न करने आए हैं, जो ईश्वर के बारे में सच है। आप यहाँ ईश्वर को महिमामंडित करने और हमेशा के लिए उसका आनंद लेने आए हैं। यह आपका निर्णय होना चाहिए। आपका निर्णय एक पूर्ण और ख़ुशहाल जीवन जीना होना चाहिए। ईश्वर ने आपके आनंद के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं। ईश्वर ने आपको अमीर बनाया था, फिर आप ग़रीब क्यों हैं? ईश्वर ने हम सभी को बनाया, ताकि हमें जीवन मिल सके और ज़्यादा प्रचुरता में मिल सके। अब तक आपने कुछ नहीं माँगा है; अब माँगें कि आपकी प्रसन्नता पूर्ण हो। ईश्वर में आनंद की पूर्णता है; उसमें कोई अंधकार नहीं है। वहाँ जीवन की शक्ति है। जैसा मैं पहले भी कह चुका हूँ, अनिर्णय जैसी कोई चीज़ नहीं होती। सिर्फ़ निर्णय होता है। तो जब व्यक्ति निर्णय न लेने का निर्णय लेता है, तो सामूहिक मन आपकी तरफ़ से निर्णय लेने लगता है, जिससे आपका जीवन गड़बड़ हो जाएगा, क्योंकि सामूहिक मन त्रासदियों में, अराजकता में और सभी तरह के दुर्भाग्यों में यक़ीन करता है। इसमें से ज़्यादातर बेहद नकारात्मक होता है। निश्चित रूप से आप नहीं चाहते कि यह सब आपके दिमाग़ में दाख़िल हो जाए। अगर आप हर सुबह इस निर्णय पर नहीं पहुँचते हैं कि आप ईश्वर-सदृश सत्यों से अपनी मानसिक और आध्यात्मिक बैटरियाँ रिचार्ज करेंगे, तो फिर आपकी तरफ़ से कौन सोचेगा? आपकी भावनाओं को कौन संचालित करेगा? आपकी मनोदशा को कौन संचालित करेगा? आपकी भावनाओं का चुनाव कौन कर रहा है?

असीमित की शक्ति और बुद्धिमत्ता आपके भीतर है और आप यहाँ उसका इस्तेमाल करने आए हैं। पानी के पास आओ और पियो। पैसे के बिना, क़ीमत दिए बिना सुरा और दूध ख़रीदो। क़ीमत विश्वास है, पहचानना है। यह मान्यता है। यह मानें कि एक सर्वशक्तिमान शक्ति है। जैसा चर्चिल ने कहा था, आपकी मान्यताएँ कठोर होकर सत्य बन जाएँगी।

अगर आप पहाड़ों में हैं और आप मछली पकड़ रहे हैं और आप रास्ता भटक गए हैं, मिसाल के तौर पर पहाड़ी नदी में, और आप जंगल में एक बूढ़े आदमी को देखते हैं और पूछते हैं: "मैं मुख्य मार्ग पर कैसे पहुँच सकता हूँ?" तो वह आपको सटीकता से बता देता है कि कैसे जाना है। आप उसका अनुसरण करते हैं। आप पाते हैं कि उसकी बात सही है। आपने मान लिया था कि उसकी बात सच है और यह कठोर होकर तथ्य में बदल गई, है ना? इसी तरह मान लें कि आपके भीतर एक असीमित प्रज्ञा है, जिसने आपके दिल की धड़कन शुरू की, जो आपके चेहरे पर बाल उगाती है और आपके भोजन को पचाती है। यह गहरी नींद में आपकी रखवाली करती है। यह आपको जगा देती है, अगर आप सोते समय इसे किसी ख़ास समय का सुझाव देते हैं। अगर आप किसी निवेश के बारे में कोई जवाब चाह रहे हैं और कहते हैं, "असीमित प्रज्ञा मेरे सामने इस निवेश के बारे में जवाब उजागर करती है," तो यह आपको दुरुस्त करना चाहती है। आप सुबह-सुबह जागते हैं और आपके मन में निवेश न करने का भाव आता है। यह दैवी स्वर है, जो आपको जवाब दे रहा है। इसमें निवेश न करें।

मैंने सैकड़ों महिलाओं से बात की है। उन्होंने कहा, "मैं जब उस आदमी से शादी करने के

लिए गलियारे में चल रही थी, तब मैं जानती थी कि मुझे यह नहीं करना चाहिए।" वह लगातार मँडराता भाव जो आपके भीतर होता है, एक तरह का आभास, एक प्रबल भाव, वह जीवन सिद्धांत है, जो आपकी रक्षा करने की कोशिश कर रहा है। उन्होंने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया। उन्होंने इसे अस्वीकार किया। ज़ाहिर है, उन्हें तलाक़ लेना पड़ा। इस अंदरूनी भाव का कहना मानें। यह स्पर्श का आंतरिक अहसास है।

मेरे धर्मसमुदाय के एक व्यक्ति ने हाल में नेवाडा में एक निवेश के बारे में प्रार्थना की। उसने कहा, "असीमित प्रज्ञा मेरा मार्गदर्शन कर रही है। यह मुझे और मेरी पत्नी के सामने इस निवेश के बारे सही निर्णय उजागर कर रही है।" वह इस निर्णय पर पहुँचा कि एक मार्गदर्शक सिद्धांत होता है। इस बारे में कोई अगर-मगर, किंतु-परंतु नहीं था। फिर उस निर्णय पर काम करने के एक दिन पहले आधी रात को उसे एक सपना आया, जिसमें उसने देखा कि जिस कंपनी में वह निवेश करने की योजना बना रहा था, उसके अगुआ जेल में बंद थे, उनके चारों तरफ़ पहरेदार थे और एक प्रहरी दरवाज़े पर बंदूक लेकर खड़ा था। जब वह जागा — तो वह जान गया कि वह धोखेबाज़ अपराधियों के साथ पेश आ रहा था, जो सज़ा काट चुके थे। अगर उसने निवेश किया होता, तो उसका सारा पैसा डूब जाता।

लेकिन जब आपको इस निर्णय पर पहुँचना होता है कि आपके भीतर एक मार्गदर्शक सिद्धांत है, तो आपके जीवन में क्या होगा। जब आपको मुश्किल निर्णय लेना हो या जब आप अपनी समस्या का समाधान देखने में असफल हों, तो तुरंत इसके बारे में सृजनात्मक तरीक़े से सोचना शुरू करें। अगर आप डरे हुए और चिंतित हैं, तो आप दरअसल सोच नहीं रहे हैं। अपने शरीर को तनावरहित होने को कहें; इसे आपका आदेश मानना होगा। आपके शरीर की कोई इच्छा, पहल शक्ति या चेतन बुद्धि नहीं है। आपका शरीर एक भावनात्मक डिस्क है, जो आपके विश्वासों और आभासों को रिकॉर्ड करती है। अपने ध्यान को बटोरें; अपने विचार अपनी समस्या के समाधान पर केंद्रित करें। अपने चेतन मन से इसे उसी तरह सुलझाने की कोशिश करें, जैसे कोई जासूस करता है। सोचें कि आप आदर्श समाधान पाकर कितने ख़ुश होंगे। ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी हासिल करें। कल्पना करें कि अगर वह आदर्श जवाब इसी समय आपके पास होता, तो आपके मन में क्या भावना होती। अपने मन को इस अवस्था में तनावरहित ढंग से खेलने दें। अगर आप सोने जा रहे हैं, तो जवाब पर मनन करते हुए नींद में चले जाएँ। जब आपको जागने पर जवाब न मिले, तो किसी दूसरी चीज़ के बारे में व्यस्त हो जाएँ। शायद जब आप किसी दूसरी चीज़ में मसरूफ़ होंगे, तो जवाब आपके मन में उसी तरह फुदक आएगा, जिस तरह कोई टोस्ट टोस्टर से बाहर निकलता है।

अपने अवचेतन मन से मार्गदर्शन पाने के लिए सरल तरीक़ा सबसे अच्छा होता है। एक आदमी की एक क़ीमती अँगूठी खो गई, जो उसे विरासत में मिली थी। उसने हर जगह इसकी तलाश की, लेकिन यह कहीं नहीं मिली। रात को उसने मेरे बताए अंदाज़ में अवचेतन से बात की। उसने सोने से पहले अपने उच्चतर स्वरूप से बात की; वह इस निर्णय पर पहुँचा कि असीमित में कुछ खोता नहीं है। उसने अपने उच्चतर स्वरूप से कहा, "आप सारी चीज़ें जानते हो। आप सर्वज्ञाता हो। आप हर जगह मौजूद हो। आप जानते हो कि वह अँगूठी कहाँ है। अब आप मेरे सामने उजागर कर रहे हैं कि यह कहाँ है।" इसे प्रार्थना कहा जाता है। यह एक निर्णय

पर पहुँचना है। यह अनर्गल या अनाप-शनाप शब्द नहीं हैं। सुबह वह अचानक जागा और उसे कान में शब्द गूँज रहे थे: "रॉबर्ट से पूछो।" रॉबर्ट उसके बेटे का नाम था। जब उसने रॉबर्ट से इसके बारे में पूछा, तो उसने जवाब दिया, "ओह हाँ। मुझे यह आँगन में मिली थी, जब मैं दूसरे लड़कों के साथ खेल रहा था। मैंने इसे अपने कमरे की डेस्क पर रख दिया था। मुझे यह क़ीमती नहीं लगी थी, इसलिए मैंने आपको इसके बारे में कुछ नहीं बताया।" ईश्वर केवल जवाब जानता है। जब आप उसका आह्वान करते हैं, तो वह आपको जवाब देगा; वह मुश्किल में आपके साथ रहेगा, वह आपको ऊपर उठाएगा, क्योंकि तुम उसका नाम जानते हो। शांति और विश्वास में तुम्हारी शक्ति होगी। यह लिखा गया है: "वह तुम्हारी परवाह करता है।" ईश्वर जवाब जानता है।

सार

निर्णय लेना और चुनना किसी इंसान का सबसे मुख्य गुण है। चुनाव करने और चुनी गई चीज़ को शुरू करने की मानव जाति की क्षमता उजागर करती है कि ईश्वर ने हमें सृजन करने की शक्ति दी है।

जब आप "तार्किक" शब्द का इस्तेमाल करते हैं, तो आपका मतलब यह होता है कि आपका विवेक तार्किक, ठोस, वैध है और सृष्टि के तार्किक सिद्धांत या वास्तविक चीज़ पर आधारित है या उस पर आधारित है, जो अविरोधी और अनुमान योग्य है। अच्छाई सोचना आपके लिए तार्किक है, क्योंकि इससे केवल अच्छाई ही उत्पन्न हो सकती है। बुरा सोचना और अच्छे की अपेक्षा करना आपके लिए अतार्किक है, क्योंकि बीज या विचार अपनी ही तरह के फल देते हैं।

चुनना और निर्णय लेना आपका दैवी और ब्रह्मांडीय अधिकार है। आप स्वस्थ, प्रसन्नचित्त, समृद्ध और सफल होने का निर्णय ले सकते हैं, क्योंकि अपने संसार पर आपका पूरा अधिकार है। आपका अवचेतन मन आपके चेतन मन के आदेशों के अधीन रहता है, इसलिए आप जो भी आदेश देते हैं, वह साकार हो जाएगा।

जब आप अपनी तरफ़ से निर्णय लेने से इंकार करते हैं, तो आप दरअसल अपने देवत्व को अस्वीकार कर रहे हैं और आप किसी ग़ुलाम या अधीनस्थ की तरह कमज़ोरी और हीनता के दृष्टिकोण से सोच रहे हैं। अपने देवत्व को स्वीकार करें। आप चुनाव करने के लिए यहाँ आए हैं। उन चीज़ों को चुनें, जो भी सच्ची हैं; जो भी प्यारी हैं, जो भी न्यायपूर्ण हैं, जो भी शुद्ध हैं और जो भी ईमानदार और अच्छी हैं। इन विचारों को चुनें। इन विचारों को अपने मन के सिंहासन पर बैठाने का निर्णय लें और इस निर्णय पर अटल रहें।

जब आप मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करें और कोई निर्णय लेना चाहते हों, तो कहें, "असीमित प्रज्ञा मुझे मार्गदर्शन दे रही है। मेरे जीवन में सही क्रिया है। एक विराट उपस्थिति है, जिसमें मैं जीता हूँ और चलता हूँ और जिसमें मेरा अस्तित्व है। यह मेरे लिए द्वार खोल देती है।"

अगर आप समृद्धि, सफलता और उपलब्धि के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, लेकिन आप दूसरों के प्रति या उनके प्रमोशन के प्रति या उनकी संपत्तियों के प्रति या उनके पास के दस लाख

डॉलरों के प्रति ईर्ष्यालु हैं, तो यह नकारात्मकता, यह द्वेष, यह ईर्ष्या, यह डाह आपकी अच्छाई को रोक देती है और आपके विकास को रोक देती है और ज़ाहिर है आपकी ख़ुद की समृद्धि के साथ हस्तक्षेप करती है।

लोग निर्णय लेने से डरते हैं, कई बार धार्मिक कारणों से तो कई बार राजनीतिक या आर्थिक कारणों से। उनमें से कुछ तो किसी झूठ को छोड़ने के बजाय कैंसर, टी.बी. और आर्थ्राइटिस होना पसंद करेंगे। कई लोग हर दिन इस बारे में कुछ करने का निर्णय लेते हैं, लेकिन कभी कुछ नहीं करते हैं। जीवन की सारी शक्ति इसी समय आपके भीतर है और इसी समय निर्णय लेने में आपको सक्षम बना रही है। किसी झूठ को जीना अतार्किक है।

आपका निर्णय पूर्ण और ख़ुशहाल ज़िंदगी जीना होना चाहिए। ईश्वर ने आपके आनंद के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में दी हैं। ईश्वर ने आपको अमीर बनाया है, तो फिर आप ग़रीब क्यों हैं? ईश्वर ने हमें इसलिए बनाया था, ताकि हमें जीवन मिल सके और ज़्यादा प्रचुरता से मिल सके।

5

अनुशासित कल्पना के चमत्कार

कल्पना हर कार्य की शुरुआत है। हम अनुशासित, नियंत्रित, निर्देशित कल्पना के बारे में बात कर रहे हैं। कल्पना करना किसी चीज़ को सोचना और अवचेतन मन पर उसकी छाप छोड़ना है। अवचेतन पर जिस भी चीज़ की छाप छोड़ी जाती है, वह आकार, कार्य, अनुभव और घटना के रूप में संसार के पर्दे पर व्यक्त हो जाती है। यदि आप सफल होना चाहते हैं, तो पहले आपको सफल व्यक्ति के रूप में अपनी कल्पना करनी चाहिए। इसी तरह, यदि आप दौलतमंद होना चाहते हैं, तो पहले दौलतमंद व्यक्ति के रूप में आपको अपनी कल्पना करनी चाहिए।

नियंत्रित कल्पना मानव जाति की आदिकालीन शक्तियों में से एक है। इसमें आपके विचारों को प्रक्षेपित करने और वस्त्र पहनाने की शक्ति है, जिससे वे संसार के पर्दे पर दिखने लगते हैं। मानव जाति एक आध्यात्मिक रूप से जाग्रत अस्तित्व है, जो नियंत्रित कल्पना की शक्ति को जानती है। उम्र बढ़ने पर हम बुद्धिमत्ता और मन के नियमों का ज्ञान हासिल करते हैं। उम्र बरसों की उड़ान नहीं है; यह तो बुद्धिमत्ता की भोर है। कल्पना वह शक्तिशाली औज़ार है, जिसका इस्तेमाल वैज्ञानिक, चित्रकार, भौतिकशास्त्री, आविष्कारक, वास्तुविद् और रहस्यवादी युगों-युगों से करते आ रहे हैं।

जब संसार कहता है, “यह असंभव है; यह नहीं किया जा सकता,” तो कल्पनाशील व्यक्ति कहता है, “यह किया जा चुका है।” कल्पना वास्तविकता की गहराइयों को भेद सकती है और प्रकृति के रहस्य उजागर कर सकती है।

एक बड़े उद्योगपति ने एक बार मुझे बताया था कि उसने एक छोटे स्टोर से कैसे शुरुआत की। उसने कहा, “मैं एक बड़े कॉरपोरेशन के सपने देखता था, जिसकी शाखाएँ सारे देश में थीं।” उसने आगे बताया कि नियमित और सुनियोजित तरीक़े से उसने अपने मन में विशाल

इमारतों, ऑफ़िसों, फ़ैक्ट्रियों और स्टोरों का चित्र देखा। वह जानता था कि मन की जादूगरी से वह अपने सपनों की सामग्री से उनके साकार होने की पोशाक बुन सकता है। आगे चलकर वह समृद्ध हुआ और आकर्षण के सर्वव्यापी नियम के ज़रिये आवश्यक विचारों, कर्मचारियों, मित्रों, धन और हर चीज़ को अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए आकर्षित करने लगा। बीज मिट्टी में मरता है और अपनी ऊर्जा अपने दूसरे स्वरूप को दे देता है, जो व्यक्तिपरक बुद्धिमत्ता से विकास के लिए आवश्यक हर चीज़ को मिट्टी से खींच लेता है। जब यह ज़मीन के ऊपर आता है, तो प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के ज़रिये यह अपने विकास के लिए आवश्यक हर चीज़ परिवेश और सूरज के विकिरण से खींच लेता है।

इस आदमी ने सचमुच अपनी कल्पना का अभ्यास किया, विकास किया और इन मानसिक साँचों के साथ तब तक रहा, जब तक कि कल्पना ने उन्हें आकार की पोशाक नहीं पहना दी। मुझे उसकी एक ख़ास टिप्पणी बड़ी पसंद आई: "सफल व्यक्ति के रूप में अपनी कल्पना करना भी उतना ही आसान है, जितनी कि असफल व्यक्ति के रूप में करना है; और यह कहीं अधिक रोचक है।"

जिन लोगों के मन में स्वप्न, चित्र और आदर्श होते हैं, वे जानते हैं कि एक सृजनात्मक शक्ति है, जो इन मानसिक चित्रों पर प्रतिक्रिया करती है। हम जो मानसिक तसवीरें रखते हैं, वे भावना में विकसित होती हैं। यह बुद्धिमत्तापूर्वक कहा गया है कि हमारी सारी इंद्रियाँ एक ही इंद्रिय के अहसास का परिवर्तन हैं। उन्नीसवीं सदी के मनोवैज्ञानिक जज थॉमस ट्रोवर्ड ने मन के नियमों पर बड़ी मौलिक पाठ्यपुस्तकें लिखी थीं। उन्होंने कहा था: "भावना ही नियम है; नियम ही भावना है। भावना शक्ति का बुनियादी स्रोत है।" परिणाम पाने के लिए हमें अपनी मानसिक तसवीरों में भावना का आवेश भरना होगा।

शायद जब आप यह पढ़ते हैं, तो आपका एक सपना होगा, एक आदर्श होगा, एक योजना होगी, एक उद्देश्य होगा, जिसे आप हासिल करना चाहते होंगे, लेकिन मित्र, सहकर्मी और दूसरे आपको बताते हैं कि ऐसा नहीं किया जा सकता। हो सकता है आप भी ख़ुद से कहते हों: "तुम्हें क्या लगता है तुम कौन हो? तुम यह नहीं कर सकते। तुम्हारे पास पर्याप्त ज्ञान नहीं है। तुम्हारे पास सही संपर्क नहीं हैं।"

देखिए, आपके पास हैं। सही संपर्क आपके भीतर की ईश्वरीय उपस्थिति है, जिसने आपको विचार दिया है। वही ईश्वरीय उपस्थिति दैवी प्रेम के ज़रिये दैवी योजना में इसे घटित करा सकती है। शायद आपके मन में आने वाले दूसरे विचार आपकी योजना या महत्त्वाकांक्षा पर अँगुली उठाएँ। विरोध अंदर पहुँच जाता है। अपने मन में विरोध से मुक़ाबला करने का तरीक़ा यह है कि आप अपना ध्यान इंद्रियों के प्रमाण और चीज़ों के दिखावे से अलग कर लें। फिर स्पष्टता व रुचि से अपने लक्ष्य या उद्देश्य के बारे में सोचने लगें। जब आपका मन अपने लक्ष्य या उद्देश्य में संलग्न होता है, तो आप अपने मन के सृजनात्मक नियम का इस्तेमाल कर रहे हैं और यह साकार हो जाएगा।

अपने आदर्श या इच्छा को चेतना में ऊपर उठा लें। इसे उन्नत कर लें। ख़ुद को पूरे दिल से इसके प्रति समर्पित कर लें। इसकी प्रशंसा करें। अपने आदर्श को ध्यान, प्रेम और निष्ठा दें। जब आप यह करना जारी रखते हैं, तो सारे डरावने विचार आपकी उन्नत मानसिक अवस्था के सामने

दंडवत प्रणाम करेंगे। उनकी शक्ति क्षीण हो जाएगी और वे मन से ग़ायब हो जाएँगे। अंतिम परिणाम की कल्पना करने की शक्ति के ज़रिये आपका किसी भी परिस्थिति या स्थिति पर नियंत्रण होता है। अगर आप किसी भी कामना, इच्छा, विचार या योजना को साकार करने की आकांक्षा करते हों, तो अपने मन में इसकी पूर्णता का मानसिक चित्र बना लें। अपनी इच्छा की वास्तविकता की लगातार कल्पना करें। इस तरह आप दरअसल इसे अस्तित्व में लाने के लिए मजबूर हो जाएँगे।

आप जिसकी भी सच के रूप में कल्पना करते हैं, उसका अस्तित्व आपके मन के अगले आयाम में पहले से ही मौजूद है। यदि आप अपने आदर्श के प्रति निष्ठावान रहते हैं, तो यह एक दिन आपकी वास्तविकता बन जाएगा। आपके भीतर का निष्णात वास्तुविद् संसार के दिखने वाले पर्दे पर हर उस चीज़ को प्रकट कर देगा, जिसकी छाप आप अपने मन पर छोड़ते हैं।

एक अभिनेता ने एक बार मुझे बताया था कि करियर की शुरुआत में वह औसत था। उसे छोटी भूमिकाएँ मिलती थीं, लेकिन फिर उसने अपने अवचेतन मन की शक्तियों को जान लिया। हर रात वह कल्पना में उस भूमिका को निभाता था, जिसे वह करना चाहता था। उसने हर रात लगभग पंद्रह मिनट तक इसका बार-बार अभ्यास किया और अपने भीतर आत्मा की शक्ति को उन्नत किया। उसने अपने अवचेतन मन में एक साँचा बना लिया और चूँकि अवचेतन की प्रकृति बाध्यकारी होती है, इसलिए वह अपने पेशे में शिखर पर पहुँच गया। हर रात पंद्रह मिनट तक नियमित और सुनियोजित तरीक़े से वह अपने मन में उस काल्पनिक फ़िल्म को चलाता था। वह कल्पनाशील था। उसने अपने मन में एक प्रीमियर की कल्पना की। वह जानता था कि सर्वशक्तिमान की शक्ति उसका साथ देगी। उसकी कल्पना साकार हो गई। आपकी कल्पना आपसे पहले और आगे जाती है। यह आपके बाहरी या वास्तविक जीवन में आपके अनुभव से पहले आती है।

एक बेहद सफल युवा अभिनेत्री ने मुझे बताया कि हर रात वह एक मानसिक फ़िल्म चलाती है, जिसमें वह एक निश्चित भूमिका का नाटकीयकरण करती है। वह इसे हर रात पाँच-छह मिनट तक अपनी कल्पना में बार-बार चलाकर अनुभव करती है। वह अपने सपनों के नीचे बुनियाद रखती है। हवा में महल बनाना बिलकुल ठीक है, लेकिन उनके नीचे एक बुनियाद अवश्य रखें। निश्चित रूप से बार-बार चलाई गई इस फ़िल्म से उसे बहुत फ़ायदा हुआ है।

रॉबर्ट राइट मेरे रेडियो स्टाफ़ के सदस्य हैं और उन्होंने कुछ समय पहले एक कार रेस में एक पुरस्कार जीता। उन्होंने कहा कि रेस से पहले उन्होंने "अपनी मानसिक स्थिति को उन्नत किया।" उन्होंने कल्पना की कि उनका भाई उन्हें बधाई दे रहा है। उन्होंने कल्पना की कि वे रेस में जीत रहे हैं और अपने मित्रों की बधाई ग्रहण कर रहे हैं। उन्हें ऐसा महसूस हुआ कि रेस में एक परम शक्ति उन्हें नियंत्रित कर रही थी। कोई चीज़ उन पर हावी हो गई — उनके मन में मौजूद विजय की तसवीर पर असाधारण शक्ति ने प्रतिक्रिया की।

जो व्यक्ति लगातार असफल होता है, उसके मन में असफलता की तसवीर होती है। ओह, हाँ। आप अपनी कल्पना का इस्तेमाल दो तरीक़ों से कर सकते हैं। ज़ाहिर है, आप किसी भी शक्ति का इस्तेमाल दो तरीक़ों से कर सकते हैं। जो व्यक्ति लंबे समय से बीमार है और हमेशा इसका रोना रोता रहता है, उसके पास बीमारी और कमज़ोरी की तसवीर होता है। जब भी आप

बीमारी या असफलता की कल्पना करते हैं, तो आपका अवचेतन उसी अनुसार परिस्थितियाँ बना देता है। यह पाया गया है कि जो लोग लगातार असफल होते हैं, उनके मन में असफलता की तसवीर होती है और अवचेतन उसी अनुसार प्रतिक्रिया करता है।

सफलता की तसवीर देखें। आप जीतने और सफल होने के लिए पैदा हुए हैं। शराबी जानते हैं कि अगर वे इच्छा शक्ति का इस्तेमाल करें या शराब छोड़ने के लिए ख़ुद को मजबूर करने की कोशिश करें, तो यह उन्हें और पीने की दिशा में धकेलता है। मानसिक दबाव, शक्ति, इच्छाशक्ति आपको कहीं नहीं ले जाएगी। लेकिन जब वे संयम और मानसिक शांति पर मनन करते हैं और कल्पना करते हैं कि वे स्वतंत्र हैं और काम पर लौट गए हैं और अपना प्रिय काम कर रहे हैं, तो वे ख़ुद को लत से मुक्त कर लेते हैं और उनका उपचार हो जाता है। ज़ाहिर है, इसके साथ ही उन्हें यह भी मानना होता है कि सर्वशक्तिमान उनके मानसिक चित्र को साकार करने में उनके साथ है।

वाल्ट व्हिटमैन की कल्पनाशक्ति ज़बर्दस्त थी। उन्होंने कहा था, "जब घाटियों में धुंध भर जाती थी, तो वे पहाड़ के शिखर देखते थे। जब अँधेरे में पहाड़ ओझल हो जाता था, तो वे अपनी निगाह तारों पर जमा लेते थे।" कल्पना आपको ज़बर्दस्त ऊँचाइयों पर ले जा सकती है या यह आपको सबसे निचले गर्त तक पहुँचा सकती है। धुंध से परे जाएँ, शंका, डर और चिंता के कोहरे से परे जाएँ और आध्यात्मिक वास्तविकता का भविष्यचित्र देखें।

भविष्य का चित्र वह है जिसे आप देख रहे हैं, जिस पर आपकी निगाह जमी है, जिस पर आप एकाग्रचित्त हैं, जिस पर आप अपना पूरा ध्यान दे रहे हैं। आप जीवन में वहीं जा रहे हैं। अगर आप पहाड़ के शिखर को देखकर कहते हैं, "मैं वहाँ पहुँचने जा रहा हूँ," तो आप ऐसा कर लेंगे। लेकिन अगर आप कहते हैं, "मैं बूढ़ा हूँ, मेरे पैरों में छाले पड़ सकते हैं, मैं थक सकता हूँ," तो आप पहाड़ के शिखर पर नहीं पहुँच पाएँगे। लेकिन अगर आपकी भविष्यदृष्टि उस पहाड़ के शिखर पर टिकी रहती है, तो आप वहाँ पहुँच जाएँगे।

आपको यह अहसास भी होना चाहिए कि आपके भीतर की अदृश्य उपस्थिति और दयालु शक्तियाँ आपके सपने को साकार करने में आपका नेतृत्व और मदद करेंगी। जीवन की आपकी यात्रा के दौरान, चाहे यह कितनी ही मुश्किल क्यों न हो, याद रखें कि आपके भीतर एक पवित्र स्थान है — ईश्वर का अभयारण्य — जहाँ आप उस एक के साथ रिश्ता महसूस कर सकते हैं, जो हमेशा एक अकेला है, जो हम सभी के दिल में रहता है। अपनी कल्पनाशक्ति के ज़रिये आप अपने हृदय से प्रेम और सौंदर्य के पुष्प को मुक्त कर सकते हैं।

कल्पना ईश्वर की कार्यशाला है। कार्यशाला वह जगह है, जहाँ कच्चे माल का रूप बदला जाता है और इसे उपयोगी वस्तुओं तथा उपकरणों में ढाला जाता है। इसी तरह, हमारी कल्पना वह कार्यशाला है, जहाँ विचार, राय और अवधारणाओं का रूप बदलता है और इन्हें हमारे दैनिक जीवन की स्थितियों, परिस्थितियों तथा घटनाओं में निर्मित और उत्पन्न किया जाता है। जैसी हम कल्पना करते हैं, वैसे ही हम बन जाएँगे और वैसा ही हम हासिल करेंगे, जानेंगे और अनुभव करेंगे।

एक पल विचार करने पर हम यह पाते हैं कि हमारे रोज़मर्रा के जीवन में जो भी उपयोगी और व्यावहारिक दिखता है, वह स्त्री-पुरुषों की कल्पनाशक्ति के ज़रिये आया है: जो कपड़े हम

पहनते हैं, जो कार हम चलाते हैं, जिस सीट पर हम आराम करते हैं, जिन इमारतों में हम रहते हैं, घर, होटल, सड़क और हवाई जहाज़ — ये सभी और बाक़ी सारी चीज़ें पहले इंसान के मन की कल्पनाशक्ति में विचार के रूप में शुरू हुई थीं।

हाँ, सारे महान चित्र और प्रतिमाएँ प्रेरित कल्पना के परिणाम हैं, जैसा आप जानते हैं। आपकी कल्पना आदर्श का चित्र देखती है और ये आदर्श इंसान को आगे, ऊपर और ईश्वर की ओर ले जाते हैं। सुंदर मैडोना का चित्र कहाँ पर है — संसार के पर्दे पर या कैनवास पर? क्या इसका अस्तित्व अनुशासित चित्रकार के मन में नहीं है?

यूनान के स्वर्णिम युग में (यानी 2,600 साल या इससे भी ज़्यादा पहले) यूनानियों ने मन के नियम और कल्पना का इस्तेमाल किया। हाँ, वे अनुशासित, नियंत्रित कल्पना, असीमित की कार्यशाला की शक्ति जानते थे। जो माताएँ गर्भवती होती थीं — वे क्या करती थीं? वे ख़ुद को सुंदर चित्रों और प्रतिमाओं से घेरे रखती थीं, ताकि अजन्मी संतान हर माँ के मन से स्वास्थ्य, सौंदर्य, सुडौलपन, व्यवस्था और अनुपात के चित्र ग्रहण करें। भावी माताएँ सुंदर चित्र और प्रतिमाएँ ही देखती थीं, ताकि यह सुनिश्चित हो जाए कि बच्चा सुंदरता, व्यवस्था, सुडौलपन और अनुपात के समान ही जन्मे। सरल है, है ना? ज़ाहिर है, यह सरल है। जीवन के सभी महान सत्य सरल हैं।

फ़ारस के राजकुमार के बारे में एक पुरानी कहानी है, जिसकी पीठ पर कूबड़ था और जो सीधा खड़ा नहीं हो पाता था। उसने एक सुयोग्य मूर्तिकार से आग्रह किया कि वह उसकी प्रतिमा बनाए — जो हूबहू उसके जैसी हो, पर उसने कहा, मैं चाहता हूँ कि प्रतिमा में मेरी पीठ तीर की तरह सीधी हो। मैं ख़ुद को उस तरह देखना चाहता हूँ, जैसा मुझे होना चाहिए और जैसा ईश्वर मुझे देखना चाहता है। मूर्तिकार ने प्रतिमा बना दी। राजकुमार ने कहा, “अब इसे बगीचे में एक गोपनीय कोने में रख दो।” मूर्तिकार ने यह काम भी कर दिया। उसके बाद हर दिन — नियमित और सुनियोजित तरीक़े से — दिन में दो-तीन बार राजकुमार बाहर आता था और मूर्ति के सामने जाकर मनन करता था, इसकी तरफ़ हसरत, आस्था और विश्वास से देखता था कि किसी दिन उसकी पीठ भी उस मूर्ति की तरह सीधी हो जाएगी। उसने सीधी पीठ, तने हुए सिर और सुंदर भौंह पर ध्यान केंद्रित किया।

कई सप्ताह गुज़र गए, कई महीने गुज़र गए, दो साल गुज़र गए। फिर लोग कहने लगे, “राजकुमार की पीठ अब झुकी हुई नहीं है। वे तो किसी सामंत की तरह सीधे खड़े हैं।” जैसा कहानी में कहा गया है, राजकुमार बाहर गया, बगीचे में गया और उसने देखा, यह सच था। उसकी पीठ उतनी ही सीधी थी, जितनी कि मूर्ति में थी। सुंदर, हाँ। वह इसे देख रहा है, इसे निहार रहा है, सीधी पीठ की अपनी भविष्यदृष्टि को साकार देख रहा है।

चमत्कार होने लगते हैं, जब आप कल्पना करते हैं कि आप इस समय वही हैं, जो आप बनना चाहते हैं। इस भूमिका को बार-बार निभाएँ। आप वैसे ही बन जाएँगे। पाने के लिए आपको पहले अपनी इच्छा को मन में बार-बार आकार देना होगा या उसका चित्र देखना होगा, उसकी वास्तविकता का चित्र देखना होगा।

कुछ साल पहले मैं एक युवक से मिला, जिसे सेना में भर्ती कर लिया गया था। उसे अफ़सोस हुआ कि उसे डॉक्टर बनने की अपनी योजना को छोड़ना होगा। मैंने उससे कहा:

“डॉक्टर के रूप में अपना चित्र देखो। अंतिम परिणाम को देखो। तुम्हारे पास एक अच्छे मेडिकल कॉलेज का डिप्लोमा है, जो कहता है कि अब तुम एक चिकित्सक और सर्जन हो। उसकी ओर देखो। अंतिम परिणाम का चित्र देखो। जाग जाओ। अपने मन के नियमों का इस्तेमाल करो।” मैंने पाँच मिनट में उसे मन के नियम समझा दिए। देखिए, चिकित्सा का विद्यार्थी होने के नाते वह समझ गया। उसके पास दिमाग़ था। उसने यह करना शुरू कर दिया। बाद में सेना ने उसे मेडिकल कॉलेज भेज दिया। आज वह एक डॉक्टर है। उसने अंतिम परिणाम देख लिया था। अंतिम परिणाम देखने के बाद आपको उसे साकार करने के तरीक़े मिल जाएँगे।

पुरातत्ववेत्ता, जीवाश्म विशेषज्ञ और बाक़ी लोग हमें बताते हैं (जो प्राचीन काल में गोता लगाते हैं) कि प्रागैतिहासिक गुफा मानव अपनी गुफाओं की दीवारों पर शिकार, मछली और पक्षियों या हाथी या अपने मनचाहे जानवर के चित्र उकेरते थे। वे ऐसा क्यों करते थे? वे सहज बोध से जानते थे कि कोई शक्ति इन मछलियों या खाने क़ाबिल जानवरों को उनके जीवन में ले जाएगी, जिसका चित्र वे अपने मन में देखते थे। आदिकालीन हाँ, लेकिन देखिए, वे सहज बोध से मन के नियम जानते थे और यह हमेशा सच हो जाता था। वह ख़ास जानवर आता था और वे उसका शिकार करके उसे खा लेते थे।

ये कल्पना की शक्तियाँ हैं। ये आपके भीतर हैं और मैं आपको कुछ बताना चाहूँगा, जो मैंने कैंसर विशेषज्ञ डॉ. कैल सिमोन्टन के लेख में पढ़ा है।

वे कहते हैं कि तनावमुक्ति और ध्यान की सहायता से कैंसर जैसे असाध्य रोग के रोगी भी उबरे हैं, बशर्ते वे सचमुच स्वस्थ होना चाहते थे। उन्होंने कैंसर चिकित्सा में मन की भूमिका पर विचार किया। उन्होंने यह कहा (मैं आपको इसकी कुछ ख़ास बातें बता रहा हूँ, क्योंकि इसका संबंध कल्पना से है):

“मैंने यह प्रक्रिया (वे मन के बारे में बात कर रहे हैं) अपने पहले रोगी के साथ शुरू की। चिकित्सकीय उपचार के साथ मैंने उसे अपनी सोच के बारे में भी समझाया। मैंने इस रोगी को साझे चित्र द्वारा बताया कि हम कैंसर के रोग से उबरने की कोशिश करने वाले हैं। वह 61 साल का था और उसका गले का कैंसर बहुत आगे की अवस्था में था। उसका बहुत वज़न कम हो गया था, वह अपनी लार भी मुश्किल से निगल सकता था और भोजन नहीं कर सकता था। उसके रोग को समझाने के बाद मैंने उसे समझाया कि विकिरण कैसे काम करता है। मैंने उससे कहा कि वह दिन में तीन बार तनावमुक्त हो और मानसिक रूप से अपने स्वास्थ्य का चित्र देखे। देखिए, मैं आपको एक आदर्श गले का चित्र दिखाता हूँ और मैं आपको बताता हूँ कि सारी कोशिकाएँ सही जगह पर हैं। आप अपने मन में बार-बार यह चित्र देखने वाले हैं, यह अहसास रखते हुए कि आपके भीतर एक रक्षा तंत्र है, जो आपके गले को उसी आदर्श स्थिति में पहुँचा रहा है। बिलकुल ठीक।”

उन्होंने कहा, “बीमारी और विकिरण चिकित्सा की प्रक्रिया के बारे में समझाने के बाद मैंने कहा कि वह ख़ुद को दिन में तीन बार तनावमुक्त करे, मानसिक रूप से स्थिति का, अपने उपचार का चित्र देखे और यह भी कि उसका शरीर किस तरह उपचार और रोग पर प्रतिक्रिया कर रहा है, ताकि वह उसके रोग को बेहतर समझ सके और जो हो रहा है, उसके साथ सहयोग कर सके। परिणाम सचमुच आश्चर्यजनक थे। देखिए, वे साझे चित्र की बात करते हैं — यानी

डॉक्टर एक आदर्श गला देख रहा है और वह उसे सिखा रहा है कि कैसे एक आदर्श गला देखना है और यह अहसास करना है कि शक्ति प्रतिक्रिया कर रही है।"

उन्होंने कहा, "जब मैंने अपने सहकर्मियों को बताया कि मैं क्या कर रहा था, तो उन्होंने मज़ाक़ में मुझसे कहा, 'तुम मशीन चलाने की जहमत भी क्यों उठाते हो?' मेरी प्रतिक्रिया थी, 'मैं अभी पर्याप्त नहीं जानता हूँ।' रोगी का उपचार अब डेढ़ साल से बंद है और उसके गले में कैंसर का कोई प्रमाण नहीं है। उसे आर्थ्राइटिस भी था और उसने उससे छुटकारा पाने के लिए उसी बुनियादी मानसिक प्रक्रिया का इस्तेमाल किया। दूसरे शब्दों में, पूर्ण के रूप में अपनी तसवीर देखना, वह सब करते हुए अपनी तसवीर देखना जो आप सामान्य रूप से करते। अगर आपका पूरी तरह उपचार हो जाए, तो आप क्या करेंगे? आप कहते हैं, 'देखिए, मैं घुड़सवारी करूँगा, तैरूँगा' आदि। इसी व्यक्ति को नपुंसकता की समस्या भी थी। वह बीस साल से ज़्यादा समय से नपुंसक था — अपनी पत्नी के साथ शारीरिक संबंध नहीं बना सकता था। उसे तनावमुक्त होने और अपने मन की आँख में समाधान का मानसिक चित्र देखने में दस दिन लगे। अब वह बताता है कि वह सप्ताह में दो-तीन बार संसर्ग करता है। जब उसने मुझे बताया कि उसने अपनी नपुंसकता का हल खोज लिया है, तो मैंने उससे पूछा कि वह मुझे बताए कि उसने ऐसा कैसे किया, ताकि अगर अपने जीवन में बाद में तकनीकों की ज़रूरत हो, तो काम आए।

डॉ. सिमोन्टन ट्राविस एयर फ़ोर्स बेस में डॉक्टर थे। वे एयर फ़ोर्स के अपने पहले रोगी के बारे में बताते हैं, जिसका उन्होंने इलाज किया। उन्होंने कहा कि यह एयर फ़ोर्स का दिशा संचालक था। वह सिगरेट नहीं पीता था और उसके तालू में कैंसर था। इसके अलावा उसके गले में पीछे की तरफ़ एक ज़्यादा बड़ी ग्रंथि थी। उसके तालू वाले कैंसर की उपचार दर 20, 30 या 50 प्रतिशत थी। उसके गले वाले कैंसर की उपचार दर 5 से 40 प्रतिशत थी। दोनों को मिला लिया जाए, तो अनुमानित उपचार दर शायद 5 से 10 प्रतिशत होगी, क्योंकि एक साथ दो कैंसर होने पर निश्चित रूप से स्थिति बदतर हो जाती है।

वे कहते हैं (और मैं उन्हीं के शब्द उद्धृत कर रहा हूँ), "मुझे इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि वह बहुत सकारात्मक रोगी था। वह बहुत सहयोगी भी था और एक सप्ताह के उपचार के बाद ही ट्यूमर सिकुड़ने लगा। चार सप्ताह के उपचार के बाद फोड़े में ट्यूमर के विकास का कोई प्रमाण नहीं था, और यह बुनियादी तौर पर बहुत ही सकारात्मक प्रतिक्रिया थी। आम तौर पर इतने कम समय में दो अलग-अलग ट्यूमरों में इतनी सकारात्मक प्रतिक्रिया पाना मेरे अनुभव के बाहर था। एक महीने बाद छोटा ट्यूमर अच्छी तरह ठीक हो गया और उपचार के दस सप्ताह बाद उसका तालू सामान्य दिखने लगा। सचमुच सुंदर बात यह थी कि गले के घाव की प्रतिक्रिया भी वही थी, जो उसके मुँह वाले ट्यूमर की थी — सामान्य जाँच में यह बताना असंभव था कि गले का ट्यूमर कहाँ था। उड़ान भरने से हटाने के तीन महीने बाद ही इस व्यक्ति को सिर और गर्दन के ट्यूमर से एकमत से मुक्त घोषित कर दिया गया, ताकि वह उड़ान भर सके और अपने पेशे को दोबारा शुरू कर सके।"

तनावमुक्ति और ध्यान की सहायता से कैंसर के लाइलाज समझे जाने वाले रोगी भी ठीक हुए हैं। वे बताते हैं कि उनके मन में ठीक होने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए। देखिए, कुछ लोगों में नहीं होती है। जैसा आप जानते हैं, कुछ लोग बीमार रहना चाहते हैं।

देखिए, यह बहुत रोचक है और मैंने सोचा कि इसे बता दूँ और आपको कल्पना की शक्तियाँ दिखा दूँ। ज़ाहिर है, ऐसे लोग भी हैं, जो इस कल्पना का दुरुपयोग करते हैं। एक व्यवसायी है, जो सफल है, समृद्ध हो रहा है, लेकिन इसके बावजूद वह ख़ाली शेल्फ़ों, दिवालिएपन और ग़रीबी की कल्पना करता है। अगर वह इस सिलसिले को जारी रखे, तो वह दिवालिया हो सकता है। लेकिन हाल-फ़िलहाल वह समृद्ध हो रहा है। जिन चीज़ों की वह कल्पना कर रहा है, वे बिलकुल भी मौजूद नहीं हैं। लेकिन वह दिवालिएपन और ख़ाली शेल्फ़ों, कोई ग्राहक नहीं की फ़िल्म चला रहा है। अगर आप अपने मन में इस तरह की फ़िल्म चलाते हैं, तो यह साकार होने जा रही है।

निश्चित रूप से, आप बीमारी की कल्पना कर सकते हैं, आप असफलता की कल्पना कर सकते हैं और किसी भी शक्ति का दुरुपयोग कर सकते हैं। लेकिन ऐसा करना मूर्खतापूर्ण है। उपमा के मान से कोट एक मनोवैज्ञानिक आवरण है। आप डर, विश्वास, प्रेम या सद्भाव का कोट पहन सकते हैं। आप एक अद्भुत कोट पहन सकते हैं है ना? शारीरिक दृष्टि से बोलें, तो आप अवसर के लिए उपयुक्त पोशाक पहनते हैं। खेलते समय आप अलग पोशाक पहनते हैं, ऑफ़िस जाते समय अलग पोशाक पहनते हैं और किसी समारोह या ओपेरा में जाते समय अलग पोशाक पहनते हैं। लेकिन यह ध्यान रखें कि शारीरिक पोशाकों के अलावा हम मानसिक पोशाकें भी पहनते हैं। ये मन के नज़रिये हैं, मनोदशाएँ हैं और भावनाएँ हैं, जिन्हें हम धारण करते हैं। आपमें किसी विचार को पोशाक पहनाने या साकार करने की क्षमता है।

आप किसी भी चीज़ की कल्पना कर सकते हैं। आप प्यारी और अच्छी चीज़ों की कल्पना कर सकते हैं। आप यह कल्पना कर सकते हैं कि आपका ग़रीब दोस्त विलासिता की गोद में जी रहा है। आप देख सकते हैं कि उसका चेहरा प्रसन्नता से चमक रहा है, उसके हाव-भाव बदल गए हैं और उसके होंठों पर एक चौड़ी मुस्कान थिरक रही है। आप सुन सकते हैं कि वह आपको वह सब बता रहा है, जो आप सुनना चाहते हैं। आप उसे हूबहू वैसे ही देख सकते हैं, जैसे आप उसे देखना चाहते थे। यानी वह कांतिमान, प्रसन्नचित्त, समृद्ध और सफल है। आपकी कल्पना किसी भी विचार या इच्छा को पोशाक पहना सकती है और वस्तु का रूप दे सकती है। आप अभाव में समृद्धि की कल्पना कर सकते हैं, विवाद में शांति की कल्पना कर सकते हैं और रोग में स्वास्थ्य की कल्पना कर सकते हैं।

कल्पना आपकी बुनियादी शक्ति है और यह आपके मन की सभी शक्तियों या तत्वों से पहले आती है। आपके पास बहुत सी शक्तियाँ हैं। लेकिन जब आपकी कल्पना को अनुशासित कर लिया जाता है, तो यह आपको सक्षम बनाती है कि आप समय और स्थान के बंधन से स्वतंत्र हो जाएँ, अपनी सारी सीमाओं से ऊपर उठ जाएँ। जब आप अपनी कल्पना को उदात्त, ईश्वर-सदृश अवधारणाओं और विचारों से व्यस्त रखते हैं, तो आप पाएँगे कि यह आपकी आध्यात्मिक यात्रा में सबसे प्रभावी शक्ति है।

कल्पना अवधारणा के पूरे धरातल को नियंत्रित करती है। आप किसी भी जेल में क्यों न बंद हों, आप स्वतंत्रता की कल्पना कर सकते हैं, है ना? कल्पना करें कि आप अपने प्रियजनों के पास लौट गए हैं और वह सब कर रहे हैं, जो करने से आपको प्रेम है? तो जेल डर, बीमारी, आवश्यकता या किसी तरह की सीमा की जेल थी। आप अपनी स्वतंत्रता की कल्पना कर सकते

हैं और ऐसा तब तक करते रह सकते हैं, जब तक कि यह सचमुच साकार नहीं हो जाता। फिर अँधेरे में अंकुरण के बाद प्रकटीकरण आता है और आपकी प्रार्थना का जवाब मिलता है।

एक खिलाड़ी को फ़ुटबॉल खेलते समय टखने में मोच आ गई और मांसपेशी चोटिल हो गई। जब वह अस्पताल जाता है, तो वह कल्पना करता है कि वह फ़ुटबॉल के मैदान में दोबारा लौट गया है और दोबारा फ़ुटबॉल खेल रहा है! अगर उसने ऐसा नहीं किया, तो वह अस्पताल में ही रहेगा। वह अस्पताल से बाहर नहीं निकल पाएगा। वह अस्पताल से इसलिए बाहर निकलता है, क्योंकि वह ख़ुद से कहता है, "मैं यहाँ चार-पाँच दिन या एक सप्ताह ही रहने वाला हूँ," और वह अपनी कल्पना में दोबारा फ़ुटबॉल के मैदान में पहुँच चुका है। आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि यह सच है और कि अगर वह दोबारा फ़ुटबॉल के मैदान में पहुँचने की कल्पना नहीं करता है, तो वह कभी अस्पताल से बाहर नहीं निकल पाएगा।

देखिए, मैं मानता हूँ कि कुछ लोग ऐसे होते हैं, जो ठीक नहीं होना चाहते हैं। वे अपने दुख में आनंदित होते हैं। वे ध्यान और इसी तरह की चीज़ पाना चाहते हैं। देखिए, आपको ठीक होने की इच्छा करनी चाहिए। आपके लिए ईश्वर का इरादा यह है कि आप ख़ुद को सर्वोच्च स्तर पर व्यक्त करें और सर्वोच्च सीमा पर अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करें। हाँ मित्रों, इस संसार में बहुत सारे लोग हैं, जो ठीक नहीं होना चाहते। वे चाहते ही नहीं हैं। हाँ, वे अपने दुख में आनंदित होते हैं। वे इस बारे में बात करते हैं। मेरा गठिया कहकर वे धीरे से अपना पैर थपथपाते हैं। हाँ, मेरा आर्थ्राइटिस और मेरा माइग्रेन आदि।

एक पल के लिए अनुशासित, गुणी वास्तुविद् के बारे में सोचें। वह अपने मन में एक सुंदर, आधुनिक, इक्कीसवीं सदी का शहर बना सकता है, जिसमें सुपरहाइवे, स्विमिंग पूल, मछलीघर, पार्क आदि हों। वह अपने मन में वह सबसे सुंदर महल बना सकता है, जो किसी इंसानी आँख ने कभी देखा है। अपनी योजना निर्माताओं को देने से पहले ही वह इमारत को पूरी तरह खड़ी देख सकता है। इमारत कहाँ थी? यह उसकी कल्पना में थी।

मैंने आपको बताया था कि कल्पना करने का अर्थ है सोचना। जो भी आप सोच सकते हैं, उसे आप आकार दे सकते हैं। यह अपने अवचेतन मन को विचार, आदर्श के चित्र से सराबोर करना है। धरती के नीचे की उसकी अदृश्य चीज़ें साफ़ दिखाई देने लगती हैं। हाँ, प्राचीन लोगों ने कहा था, इसलिए वह आत्मा आपके मन में अदृश्य चीज़ें देख सकती है। आविष्कार कहाँ है? नया नाटक कहाँ है? आपका वह गोपनीय आविष्कार कहाँ है? क्या यह आपके मन में नहीं है? यह वास्तविक है। इसका मन के दूसरे आयाम में आकार है, रूप है और सामग्री है। यक़ीन करें कि यह इसी समय आपके पास है और आप इसे पा लेंगे।

अपनी कल्पना के सहारे आप अपनी माँ की अदृश्य आवाज़ सचमुच सुन सकते हैं, भले ही वे यहाँ से 10,000 मील दूर रहती हों। मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से वे ठीक आपके सामने हैं। वे आपको वह बता रही हैं, जो आप सुनना चाहते हैं। अंततः हम सभी मानसिक और आध्यात्मिक प्राणी हैं। ज़ाहिर है, वे वहाँ हैं। वे आपको बता रही हैं, जो आप सुनना चाहते हैं। वह क्या है, जो आप सुनना चाहते हैं? वे आपको ईश्वर के चमत्कार के बारे में बता रही हैं, जो उनके जीवन में घटित हो रहा है, वे कितनी जीवंत और स्फूर्तिवान हैं, उत्साह से लबरेज़ हैं। वे आपको बता रही हैं, जो आप सुनना चाहते हैं। आप इसे सुनने से प्रेम करते हैं। आप उन्हें उतनी

ही स्पष्टता से देख सकते हैं, मानो वे सचमुच मौजूद हों। यह अद्भुत शक्ति आपके पास मौजूद है। आप बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि आप ऐसा कर सकते हैं। आप इस शक्ति का विकास करके सफल व समृद्ध बन सकते हैं।

मान लें कि आपकी माँ अस्पताल में बीमार हैं। आप उन्हें अस्पताल में नहीं देखते हैं। आपको सत्य का ज्ञान है। अस्पताल में देखने का मतलब यह होगा कि आप उन पर वह अवस्था थोप रहे हैं। यह करना भयावह होगा। यह करना बहुत मूर्खतापूर्ण होगा। अगर आप मन के नियम जानते हैं, तो आपको अहसास होता है कि ईश्वर की उपचारक शक्ति आपकी माँ में प्रवाहित हो रही है और दैवी प्रेम उनका उपचार कर रहा है, दैवी प्रेम उन्हें मार्गदर्शन दे रहा है और दैवी प्रेम उन पर निगाह रख रहा है। दैवी प्रेम अपने से विपरीत हर चीज़ को घोल देता है। दैवी प्रेम उपचार करने वाले डॉक्टरों और नर्सों और सभी लोगों को मार्गदर्शन दे रहा है। यह आपका दृढ़ कथन होगा। लेकिन आपके दृढ़ कथन को आपकी तसवीर के जैसा ही होना चाहिए। आपकी तसवीर आपके दृढ़ कथन जैसी होनी चाहिए और आपका दृढ़ कथन आपकी तसवीर जैसा होना चाहिए।

इसलिए आप उन्हें अस्पताल में नहीं देखते हैं। वे ठीक आपके सामने हैं। वे आपको बता रही हैं कि ईश्वर का चमत्कार हो गया है, वे कितनी बढ़िया महसूस करती हैं, किस तरह सर्वशक्तिमान ने उन्हें छुआ है। आपने मुझे छुआ; मैं पवित्र महसूस करती हूँ और यही आप देखना चाहते हैं। तब आप सचमुच प्रार्थना कर रहे हैं और तब आप मन के नियमों को सचमुच समझते हैं और आप एक अच्छे अभ्यासी हैं।

लेकिन अगर आप एक चीज़ का दृढ़ कथन कहें और दूसरी चीज़ की तसवीर देखें, तो इसे पाखंड कहा जाता है और आपको कोई परिणाम नहीं मिलते हैं, क्योंकि आपकी तसवीर आपके दृढ़ कथन के अनुरूप होनी चाहिए। कोई भी चीज़ इससे ज़्यादा आसान नहीं हो सकती। अक्सर मैं कहता हूँ कि 99 प्रतिशत लोग यह जानते ही नहीं हैं कि प्रार्थना कैसे करनी है। ओह हाँ, वे अद्भुत प्रार्थनाओं का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन वे पिता, माता, बेटे को जेल या अस्पताल में देख रहे हैं या बीमार या ऐसी ही किसी अवस्था में देख रहे हैं।

क्या आपने किसी सेल्स मैनेजर को यह कहते नहीं सुना कि उसे जॉन को निकालना पड़ा, क्योंकि उसका नज़रिया ग़लत था? हाँ, आपका नज़रिया। बदला हुआ नज़रिया हर चीज़ को बदल देता है। कारोबारी जगत सही नज़रिये का महत्त्व जानता है।

आपके मानसिक नज़रिये का मतलब है लोगों, परिस्थितियों, स्थितियों, वस्तुओं और संसार पर आपकी मानसिक प्रतिक्रिया। अपने सहकर्मियों के साथ आपके कैसे संबंध हैं? क्या आप लोगों के साथ, पशुओं के साथ, आम तौर पर पूरी सृष्टि के साथ दोस्ताना हैं? क्या आप सोचते हैं कि सृष्टि शत्रुतापूर्ण है? संसार आपको आजीविका देने के लिए बाध्य है? संक्षेप में, आपका नज़रिया क्या है? तो अहसास कर लें कि आपका नज़रिया यह है कि ईश्वर आपको मार्गदर्शन दे रहा है, आपके जीवन में सही क्रिया है और आप संसार के हर व्यक्ति के प्रति प्रेम, शांति तथा सद्भाव संचारित करते हैं। जब आप अपने नज़रिये को बदल लेते हैं, तो आप अपनी पूरी सृष्टि को बदल लेते हैं; आपके जीवन के सभी पहलू जादुई ढंग से आपके नज़रिये और उसके चित्र में ढल जाते हैं।

मिसाल के तौर पर, अगर आप कल्पना करते हैं कि सामने वाला ओछा, बेईमान और ईर्ष्यालु है, तो ग़ौर करें कि आप अपने भीतर कौन सा भाव जगाते हैं। अब स्थिति को उलट लें। यह कल्पना करें कि वही लड़का या लड़की ईमानदार, संजीदा, प्रेमपूर्ण और दयालु है। ग़ौर करें कि इससे आपके भीतर क्या प्रतिक्रिया होती है। इसलिए क्या आप अपने नज़रिये के स्वामी नहीं हैं? वास्तविकता में पूरे मामले की सच्चाई यह है कि ईश्वर की आपकी सच्ची धारणा ही आम तौर पर जीवन के बारे में आपका पूरा नज़रिया तय करती है। मान लें, शिक्षक कहता है कि आपका लड़का स्कूल में धीमा है या वह मंदबुद्धि है या ऐसी ही कोई चीज। वह बहुत अच्छी तरह नहीं सीख सकता। मान लें कि आप उसकी माँ हैं। आप क्या करती हैं? हम यह भी मान लेते हैं कि आप मन के नियम और आत्मा के तौर-तरीक़े जानती हैं। क्या आप अपनी कुर्सी या सोफ़े पर बैठ जाती हैं, तनावरहित होती हैं, अपने ध्यान को बटोरती हैं? सबसे पहले आप तनावमुक्त होती हैं। शरीर को तनावमुक्त कर लें; ज़ाहिर है, आपका मन शांत हो जाता है। आप अपने पंजों से कह सकती हैं, मेरे पंजे तनावमुक्त हैं, मेरे पैर तनावमुक्त हैं, मेरे पेट की मांसपेशियाँ तनावमुक्त हैं, मेरा हृदय और फेफड़े तनावमुक्त हैं, मेरी रीढ़ तनावमुक्त है, मेरी गर्दन तनावमुक्त है, मेरे हाथ और बाँहें तनावमुक्त हैं, मेरा मस्तिष्क तनावमुक्त है, मेरी आँखें तनावमुक्त हैं, मेरा पूरा शरीर सिर से पैर तक पूरी तरह तनावमुक्त है।

जब आप तनावमुक्त होते हैं, तो आपके शरीर को आपका आदेश मानना होता है। जब आप तनावमुक्त हो जाते हैं और विश्वास करते हैं, तो आपकी प्रार्थना का हमेशा जवाब मिलता है। अगर आप तनावमुक्त नहीं होते हैं, तो परिणाम नहीं मिलते हैं। तनावमुक्त हों और विश्वास करें। सर्वशक्तिमान शक्ति उस ख़ास पल काम करने लगती है और जब आप अपने शरीर को तनावमुक्त करते हैं, तो आप अपने मन को भी तनावमुक्त कर रहे हैं। आपका मन शांत और स्थिर हो जाता है। तो इस छोटे लड़के के साथ आप क्या करेंगी? आप कल्पना करेंगी कि आपका बेटा आपके ठीक सामने है। अब जिमी आपको बता रहा है, “माँ, आप जानती हैं, मुझे सभी विषयों में ए ग्रेड मिले हैं। टीचर ने मुझे बधाई दी।” आपको इस बात का अहसास होगा कि असीमित प्रज्ञा लड़के के अंदर पुनर्जीवित हो रही है। ईश्वर की बुद्धिमत्ता उसकी बुद्धि को एकरूप बना देती है। वह प्रसन्नचित्त, आनंदित और स्वतंत्र है। ईश्वर उसके भीतर जीता है, चलता है और बोलता है। आप उसकी आँखों में चमक देखेंगी। वह आपको बता रहा है जो आप माँ के रूप में सुनना चाहती हैं। उसने कहा, “टीचर ने मेरी प्रशंसा की। मैं सारे विषयों में बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रहा हूँ।”

यह फ़िल्म चलाना और चलाते रहना आपके लिए महत्त्वपूर्ण है, अगर आप लड़के के भीतर ईश्वर की सोई हुई बुद्धिमत्ता और ज्ञान को पुनर्जीवित कर रही हैं। यह वहाँ है। माँ इसका आह्वान कर सकती हैं। ज़ाहिर है, वे कर सकती हैं। यह क्या है? अनुशासित कल्पना। लड़का आपको वास्तविकता के धरातल पर वही शब्द बोलेगा, जो आपने उस निष्क्रिय, आत्मिक, ग्रहणशील अवस्था में कल्पना से कहे हैं।

देखिए, यह एबीसी जितना सरल है। हम अनुशासित, नियंत्रित, निर्देशित कल्पना की बात कर रहे हैं। हम मन के नियमों की बात कर रहे हैं। ये चीज़ें कारगर हैं! आधुनिक वैज्ञानिक यह बात जानता है। ईश्वर के बारे में आपका प्रबल विचार जीवन का आपका विचार है, क्योंकि ईश्वर

ही जीवन है। अगर आपका प्रबल विचार या नज़रिया यह है कि ईश्वर आपके भीतर मौजूद आध्यात्मिक शक्ति है, आपके विचार पर प्रतिक्रिया करता है और चूँकि आपकी आदतन तसवीरें और सोच सृजनात्मक व सौहार्दपूर्ण हैं, तो यह शक्ति सभी मायनों में आपका मार्गदर्शन कर रही है और समृद्ध बना रही है। यह प्रबल नज़रिया हर चीज़ पर प्रभाव डालेगा। आप सकारात्मक मानसिक नज़रिये से संसार को देखेंगे। आपका दृष्टिकोण सकारात्मक होगा और आपको सर्वश्रेष्ठ की सुखद अपेक्षा होगी।

किसी इंसान की कल्पना से बेहद सफल व्यवसाय कैसे बना, इसका एक अच्छा उदाहरण हैं हॉवर्ड शुल्ट्ज़, जो "स्टारबक्स वाले इंसान" हैं। किसी नई अवधारणा को सफल बनाने के लिए इंसान के पास भविष्यदृष्टि, साहस और अकूत आत्मविश्वास होना चाहिए।

शुल्ट्ज़ को एक छोटे कॉफ़ी डिस्ट्रिब्यूटर के यहाँ रिटेल सेल्स और मार्केटिंग के प्रबंधन की नौकरी मिली, जिसके सिएटल में कुछ रिटेल आउटलेट थे। वे 29 साल के थे और उनकी उसी समय शादी हुई थी। उन्होंने और उनकी पत्नी ने इस नई नौकरी को स्वीकार करके न्यू यॉर्क शहर छोड़ दिया।

लगभग एक साल बाद शुल्ट्ज़ ख़रीदारी की यात्रा पर इटली गए। मिलान में घूमते वक़्त उन्होंने ग़ौर किया कि कॉफ़ी इतालवी संस्कृति के लिए कितनी महत्त्वपूर्ण थी। कामकाजी दिन आम तौर पर कॉफ़ी बार में एक कप शानदार कॉफ़ी के बाद शुरू होता है। ऑफ़िस के बाद घर लौटने से पहले आराम करने के लिए मित्र और सहकर्मी एक बार फिर कॉफ़ी बार में रुकते थे। कॉफ़ी बार इतालवी सामाजिक जीवन का केंद्र थी। शुल्ट्ज़ ने अमेरिका की भी ऐसी ही तसवीर देखी। यह पहले कभी नहीं किया गया था। लेकिन उन्हें महसूस हुआ कि स्टारबक्स कॉफ़ी की उच्च गुणवत्ता की बदौलत यह कारगर हो सकता था।

शुल्ट्ज़ ने पूरे अमेरिका में सैकड़ों स्टारबक्स कॉफ़ी शॉप्स का सपना देखा, ऐसी कॉफ़ी शॉप जहाँ व्यवसायी लोग ऑफ़िस जाते समय रुकें और ऑफ़िस के बाद सुस्ताने के लिए वहाँ आएँ। ख़रीदार वहाँ आराम करने के लिए रुकें। युवा वर्ग कॉकटेल के बजाय कॉफ़ी पर डेटिंग करे। परिवार फ़िल्म देखने जाने से पहले या बाद में तरोताज़ा होने के लिए वहाँ आएँ।

यह शुल्ट्ज़ के लिए जुनून बन गया। वे इतालवी कॉफ़ी बार के आधार पर कॉफ़ी बार की राष्ट्रीय चेन बनाने पर आमादा थे, लेकिन स्टारबक्स के मालिक इसके लिए तैयार नहीं थे। वे कॉफ़ी बीन के थोक व्यापारी थे। वे जिन रेस्तराँओं के मालिक थे, वे उनके काम का बस एक छोटा सा हिस्सा थीं।

अपने लक्ष्य पर अमल करने के लिए शुल्ट्ज़ ने स्टारबक्स छोड़कर एक नई कंपनी की योजना बनाई। 1986 में शुल्ट्ज़ ने सिएटल में अपना पहला कॉफ़ी बार खोला। यह तुरंत सफल हो गया। शुल्ट्ज़ ने जल्दी ही सिएटल में एक और बार खोल लिया और तीसरा वैंकुवर में खोला। अगले साल उन्होंने स्टारबक्स कंपनी को ख़रीद लिया और अपनी कंपनी का नाम भी यही कर लिया।

शुल्ट्ज़ को यक़ीन है कि स्टारबक्स की गुणवत्ता एक दिन अमेरिकी जीवनशैली को बदल देगी। अगर शुल्ट्ज़ का वश चले, तो एक कप स्टारबक्स अमेरिकी संस्कृति का बुनियादी हिस्सा बन जाएगी। उनकी अवधारणा रंग लाई। 1988 के बाद स्टारबक्स की बिक्री हर साल नौ गुना

बढ़ी है।

स्टारबक्स को तीन साल तक घाटा हुआ — 1989 में 1 मिलियन डॉलर से ज़्यादा, लेकिन शुल्ट्ज़ ने कभी हार नहीं मानी। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि यही कंपनी बनाने का तरीक़ा था और घाटा जल्दी ही मुनाफ़े में बदल जाएगा।

जब उनके सिएटल के स्टोर मुनाफ़े में आ गए, तो स्टारबक्स जल्द ही दूसरे शहरों में फैलने लगा — वैंकुवर, पोर्टलैंड, लॉस एंजेलिस, डेनवर, शिकागो और बाद में पूर्वी शहरों तथा विदेशों में। आज स्टारबक्स पूरे संसार में एक जाना-पहचाना नाम बन चुका है और अमेरिकी प्रचार चातुर्य की मिसाल है। इसने हॉवर्ड शुल्ट्ज़ को संसार के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक भी बना दिया है।

जीवन के बारे में कई लोगों का नज़रिया अंधकारपूर्ण और निराशाजनक होता है। वे रूखे, आलोचनात्मक और चिड़चिड़े होते हैं। यह उस प्रबल मानसिक नज़रिये के कारण होता है, जो हर चीज़ पर उनकी प्रतिक्रिया तय करता है। जब आप या आपका परिवार किसी अद्भुत चीज़ का अनुभव करता है, तब भी ख़ुशी की मनोदशा आम तौर पर संक्षिप्त होती है, अगर आप लगातार निराशा में रहते हों।

हाई स्कूल में पढ़ने वाले सोलह साल के एक छोटे लड़के ने मुझसे कहा था, “मुझे बहुत ख़राब ग्रेड मिल रहे हैं। मेरी याददाश्त ख़राब हो रही है। मैं नहीं जानता कि क्या मामला है।” उसके साथ जो एकमात्र चीज़ ग़लत थी, वह था उसका नज़रिया। जब उसे यह अहसास हुआ कि अगर वह कॉलेज में प्रवेश लेना चाहता है और वकील बनना चाहता है, तो उसकी पढ़ाई के ग्रेड कितने महत्त्वपूर्ण थे, तो उसका मानसिक नज़रिया बदल गया। वह वैज्ञानिक ढंग से प्रार्थना करने लगा।

यह मानसिकता बदलने के सबसे तेज़ तरीक़ों में से एक है। वैज्ञानिक प्रार्थना में हम उस सिद्धांत से सरोकार रखते हैं, जो विचार पर प्रतिक्रिया करता है। इस युवक को अहसास हो गया कि उसके भीतर एक आध्यात्मिक शक्ति है और यह एकमात्र कारण व शक्ति है। यही नहीं, वह दावा करने लगा कि उसकी स्मृति आदर्श है, कि असीम प्रज्ञा लगातार उसके सामने हर चीज़ उजागर करती है, जो उसे सारे समय, हर जगह जानने की ज़रूरत है। वह सभी शिक्षकों और साथी विद्यार्थियों के प्रति सद्भाव संचारित करने लगा, जो बहुत, बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह युवक अब इतनी स्वतंत्रता का आनंद ले रहा है, जो उसने बरसों से नहीं लिया था। वह लगातार कल्पना करता है कि उसके टीचर और माँ उसके अद्भुत प्रदर्शन, उसकी अद्भुत रिपोर्टों पर उसे बधाई दे रही हैं। पढ़ाई के प्रति नज़रिया बदलने के बाद वांछित परिणामों की कल्पना आई। अगर आप कल्पना करते हैं कि आप सफल हैं, अपना प्रिय काम कर रहे हैं और इसे नियमित तथा सुनियोजित रूप से करते रहते हैं — और जो आप दृढ़ कथन कहते हैं, उसे नकारते नहीं हैं — तो आपकी सफलता तय है। आप सफल होंगे क्योंकि मन का नियम आपके साथ है।

हम पहले ही बता चुके हैं कि सारे मानसिक नज़रिये कल्पना से अनुकूलित होते हैं। हमने कहा था कि आप इसका इस्तेमाल दो तरीक़ों से कर सकते हैं। ज़ाहिर है, आप कर सकते हैं। आप अपने विचार का इस्तेमाल भी दो तरीक़ों से कर सकते हैं। आप प्रकृति की किसी भी शक्ति का इस्तेमाल दो तरीक़ों से कर सकते हैं। आप नाइट्रिक एसिड का इस्तेमाल किसी शरीर को

जलाने के लिए कर सकते हैं या फिर खिड़की के काँच पर मैडोना पेंट करने के लिए भी कर सकते हैं। आप पानी का इस्तेमाल किसी बच्चे को डुबाने या उसकी प्यास बुझाने के लिए कर सकते हैं। पानी के साथ कुछ ग़लत नहीं है। जो हवा जहाज़ को चट्टानों पर टकरा देती है, वह इसे सुरक्षित बंदरगाह तक ले आएगी, बशर्ते आप संचालन के नियम जानते हों। रसायन शास्त्र के नियमों के साथ कुछ ग़लत नहीं है। वे विश्वसनीय हैं। आप इन रसायनों को एक अद्भुत तरीक़े से मिलाकर मानवता को वरदान दे सकते हैं और विभिन्न बीमारियों से लोगों का उपचार कर सकते हैं। या फिर आप प्रयोगशाला में आकर्षण, विकर्षण या परमाणु भार के नियमों के ज्ञान के बिना जा सकते हैं और पूरी जगह को उड़ा सकते हैं।

आप कल्पना कर सकते हैं कि आज का दिन बुरा रहेगा। व्यवसाय बहुत बुरा होने वाला है। बारिश हो रही है; आपके स्टोर में एक भी ग्राहक नहीं आएगा। उनके पास पैसे नहीं हैं। लेकिन ध्यान रखें, आप अपने नकारात्मक कल्पना-चित्रों के परिणामों का अनुभव करेंगे।

एक महिला ने मुझे फ़ोन लगाया। वह एक मकान बेचने की कोशिश कर रही थी, जिसे उसके पिता ने अपनी वसीयत में उसके नाम छोड़ा था। इस मकान का मूल्य पचास लाख डॉलर था। “मैं विधवा हूँ। मैं बिलकुल अकेली हूँ, इसलिए मैं इस जगह को बेचना चाहती हूँ। लेकिन आज लोगों के पास इतना पैसा नहीं रहता है। वे इसे देखते हैं और लौटकर नहीं आते हैं।”

मैंने कहा, “देखिए। आपको यह करना है। अपनी बकवास छोड़ दें। अपने इस महल में घूमें। कल्पना करें कि आप इसे एक काल्पनिक ख़रीदार को दिखा रही हैं। हाँ, काल्पनिक ख़रीदार। आप उसे पूरी जगह दिखा रही हैं — गैरेज और हर चीज़ — और वह कह रहा है, ‘मुझे यह पसंद है। मैं इसे ख़रीद रहा हूँ,’ और वह आपको इसके लिए एक चेक दे रहा है। यह सब आपकी कल्पना में हो रहा है। आप इस बारे में ख़ुश हैं और आप चेक को बैंक में जमा कर रही हैं। बैंकर कह रहा है, ‘बधाई, आपने घर बेच दिया।’ यह सब आपके मन में है। आप उसे पूरा मकान दिखा रही हैं और वह ख़ुशी-ख़ुशी कह रहा है, ‘मैं इसे ख़रीद रहा हूँ।’ आप अपने मन में इसे नाटकीय बना रही हैं, आप इसे मुक्त कर रही हैं, क्योंकि आप इसे अपने मन में बेच रही हैं। अगर आप इसे अपने मन में नहीं बेचती हैं, तो आप इसे बाहर के संसार कभी नहीं बेच पाएँगी, क्योंकि सारे सौदे मन में होते हैं। आप मन के सिवा किसी तरह लाभ या हानि नहीं पा सकते।” ज़ाहिर है, आप नहीं कर सकते। सारे सौदे मन में होते हैं। यह एबीसी जितना सरल है।

कई बार लोगों की सोच को समझना मेरे लिए लगभग असंभव होता है। ये चीज़ें बहुत आसान हैं! बेहद आसान! सात साल का बच्चा भी इन्हें समझ सकता है। देखिए, अगर आप इसे सात साल के बच्चे को नहीं सिखा सकते, तो आप इसे नहीं जानते हैं, क्योंकि अगर आप इसे जानते हैं, तो आप यह ज्ञान उस बच्चे तक पहुँचा सकते हैं।

मैंने कहा, “आप उस घर को तब तक बेचने से वंचित नहीं रहना चाहतीं, जब तक कि कोई इसे ख़रीदना न चाहे और उसके पास इसे ख़रीदने के लिए पैसे न हों। लेकिन अगर मैं ख़ुद से यह कहना शुरू कर दूँ, ‘आजकल पचास लाख डॉलर किसके पास होते हैं? पैसे की तंगी है। हाउस लोन के ब्याज की दरें ऊँची हैं आदि,’ तो आप शुरू करने से पहले ही हार चुके हैं। लेकिन ऐसे लोग हैं, जिनके पास करोड़ों डॉलर हैं। बहुत सारे मिलियनेअर हैं।”

“आप वह घर तब तक नहीं बेच सकतीं, जब तक कि कोई इसे ख़रीदना न चाहे। सरल है।

असीमित प्रज्ञा जानती है कि वह व्यक्ति कहाँ है। यह नंबर दो है। फिर आप सरल चीज़ करती हैं: 'असीमित प्रज्ञा मेरी ओर उस ख़रीदार को आकर्षित करती है, जो इस घर को चाहता है, जो इसकी क़द्र करता है, इसमें समृद्ध होता है और जिसके पास इतने पैसे हैं।' फिर आप उन सभी लोगों से छुटकारा पा जाती हैं, जो ख़रीदना नहीं चाहते हैं, सिर्फ़ आपके घर की सैर करना चाहते हैं। आप सैर कराने के व्यवसाय में नहीं हैं। इसलिए केवल उन्हीं का आदेश दें, जिनके पास पैसा है, वही घर देखने आ सकते हैं। फिर आप इसे अपनी कल्पना में दिखा रही हैं। आप इसे ख़रीदार को दिखा रही हैं। वह संतुष्ट है। आप उसे हर वह चीज़ दिखा रही हैं, जो आपको उसे दिखाना चाहिए। यह बिक चुका है। फिर यह हो जाएगा। यह इसे बेचने का संसार का सबसे तीव्र तरीक़ा है।"

एक बार जज ट्रोवर्ड लंदन की सड़कों पर चल रहे थे। उन्हें कल्पना में सड़क पर एक साँप दिखा। डर से वे आधे पंगु हो गए। जो उन्होंने देखा, वह साँप जैसा दिख रहा था। आप जानते हैं, लंदन में कोई साँप नहीं रहता। लेकिन ट्रोवर्ड की मानसिक और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ वैसी ही थीं, मानो वह साँप हो।

आप क्या कल्पना करने जा रहे हैं? देखिए, बाइबल आपसे उन चीज़ों की कल्पना करने को कहती है, जो भी चीज़ें सच्ची हैं, जो भी चीज़ें न्यायपूर्ण हैं, जो भी चीज़ें प्यारी हैं, जो भी चीज़ें शुद्ध हैं, जो भी चीज़ें ईमानदार हैं और अच्छी छवि की हैं। इन्हीं चीज़ों के बारे में सोचें और इन्हीं चीज़ों की कल्पना करें। "आप जीवन के बारे में क्या कल्पना करते हैं? क्या यह आपके लिए एक सुखद जीवन होने वाला है? या यह कुंठाओं से भरा एक लंबा जीवन होने वाला है?"

आप जिन मानसिक चित्रों को आदतन देखते रहते हैं, उन्हीं के अनुसार आप अनुभव के अपने बाहरी जगत को आकार देते और ढालते हैं। जीवन में ऐसी स्थितियों और परिस्थितियों की कल्पना करें, जो गरिमामय हों, ऊपर उठाती हों, ख़ुश करती हों और संतुष्ट करती हों। कल्पना करें कि आपका पति आपसे वह कह रहा है, जो आप सुनने की हसरत रखती हैं। हाँ, शांति से बैठ जाएँ, अपनी आँखें बंद करें और जाग जाएँ। रिप वैन विंकल सिर्फ़ बीस साल सोया था। शांति से बैठ जाएँ, अपने ध्यान को स्थिर करें और तनावमुक्त हो जाएँ। अगर आप तनावमुक्त नहीं होती हैं, तो आपको अपनी प्रार्थना से कोई परिणाम नहीं मिलेगा। जब आप तनावमुक्त होती हैं और विश्वास करती हैं, तो आपकी प्रार्थना हमेशा काम करती है। अगर आप तनावमुक्त नहीं होती हैं, तो आप विश्वास नहीं करती हैं। यह इतना ही सरल है। इसलिए ख़ुद को धोखा देना छोड़ दें। तनावमुक्त हो जाएँ, बंधनमुक्त हो जाएँ और आपका पति आपसे वही बोल रहा है, जो आप सुनने की हसरत रखती हैं। वह बोल रहा है, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ, प्रिये। मैं सोचता हूँ कि तुम कमाल की हो।" वह आपको वह बता रहा है, जो सुनने की आप हसरत रखती हैं। वह आपको बता रहा है कि उसे तरक्की मिल गई है, कि वह अपना प्रिय काम कर रहा है। वह आपको वह बता रहा है जो आप सुनने की हसरत रखती हैं। वह आपसे कितना प्रेम करता है, उसे आपकी कितनी परवाह है, उसे कैसे प्रमोशन मिला और उसका जीवन कितना शानदार है और वह अपने नए काम में कितना ख़ुश है। वह आपको वह सब बता रहा है, जो आप सुनने की हसरत रखती हैं। इसे सुनें! अब जो आप कहती हैं, उसे न नकारें। फिर वह आपको वास्तविकता में वह सब बता देगा, जो आपने अपनी कल्पना में उसे बोलते सुना था, क्योंकि आप उसके मुँह से वह सुन

रही हैं, जो उसे आपको स्वर्णिम नियम — प्रेम के नियम — के अनुसार बताना चाहिए। हमेशा उसके मुँह से वह सुनें, जो उसे प्रेम और स्वर्णिम नियम के अनुसार बोलना चाहिए। फिर आप ग़लत नहीं हो सकतीं, है ना?

मुझे कई राज्यों के स्त्री-पुरुषों के पत्र मिलते हैं। यह लगभग अविश्वसनीय है। वे कहते हैं, "मैं चाहता हूँ कि वह महिला मुझसे शादी कर ले, मगर वह मुझ पर कोई ध्यान ही नहीं देती है। क्या आप मुझे बताएँगे कि उसे पाने के लिए कैसे प्रार्थना करूँ?" और इसी तरह की बातें। यह प्रार्थना नहीं है। मैं लिखकर उनसे कहता हूँ कि मैं कल्पना नहीं कर सकता कि सही दिमाग़ वाला संसार का कोई भी पुरुष किसी ऐसी महिला को चाहेगा, जो उसे न चाहती हो। अगर आप महिला हैं, तो मैं कल्पना नहीं कर सकता कि आप किसी ऐसे व्यक्ति को चाहेंगी, जो आपको न चाहता हो। मेरे लिए यह पागलपन से कम नहीं है।

प्रेम एक पारस्परिक चीज़ है। अगर आप प्रेम में हैं, तो यह पारस्परिक संबंध का प्राकृतिक नियम है। कोई दुविधा नहीं है। यह उस महिला की तरह है, जो कहती है, "मैं जॉन जोन्स से बुरी तरह से प्यार करती हूँ।" मैंने कहा, "अच्छा, तो जॉन जोन्स आपसे कैसे व्यवहार करता है? उसने क्या कहा? क्या उसने आपके सामने प्रेम-प्रस्ताव रखा? क्या उसने आपको अँगूठी दी? क्या उसने आपको बताया कि दस नवंबर या ऐसी ही किसी तारीख़ को वह आपसे शादी करने वाला है?"

"ओह नहीं। लेकिन वह मुझे देखकर मुस्कराया था और वह मेरे साथ अच्छी तरह पेश आता है।" हे भगवान!

इसीलिए मैं बार-बार कहता हूँ कि रिप वैन विंकल सिर्फ़ बीस साल सोया था। अगर आप किसी से प्रेम करते हैं, तो उसे भी आपसे प्रेम करना चाहिए। यह पारस्परिक संबंध का नियम है। प्रेम एक होने की अवस्था है। हमें हर एक से प्रेम करना है, यानी हमें उनके प्रति प्रेम, शांति और सद्भाव संचारित करना है, सौहार्द, दयालुता रखना है और उनके लिए जीवन की सारी नियामतों की कामना करना है। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप मुश्किल में हैं। वाक़ई गहरी मुश्किल में हैं। तो इस अर्थ में हमें हर एक से प्रेम करना है। हमें हर एक के लिए वही चाहना है, जो हम ख़ुद के लिए चाहते हैं। लेकिन आपको सामने वाले को विवश नहीं करना चाहिए। सामने वाले को आपसे प्रेम करने या शादी करने के लिए मजबूर करना। यह काला जादू है; यह आप पर पलटवार करता है। यह पागलपन है! सरासर पागलपन!

अब अपनी कल्पना करें... अगर आप अपनी कल्पना या जीवन की कल्पना भावहीन, निष्ठुर, कठोर, कटु के रूप में करते हैं, तो फिर संघर्ष और दर्द अवश्यंभावी हैं। आप जीवन को अपने लिए दुखमय बना रहे हैं, क्योंकि आप ऐसी ही कल्पना कर रहे हैं। इसके बजाय गोल्फ़ कोर्स पर अपनी कल्पना करें। आप स्वतंत्र हैं, तनावरहित हैं, उत्साह और ऊर्जा से भरपूर हैं। आपकी ख़ुशी गोल्फ कोर्स की सारी मुश्किलों से उबरने में है। रोमांच सारी बाधाओं से उबरने में है।

अब आइए इस दृश्य को लेते हैं। कल्पना करें कि आप एक अंत्येष्टि में जा रहे हैं। ग़ौर करें कि इस ख़ास स्थिति में जब आप अपना चित्र देखते हैं, तो कितनी अलग-अलग भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। अगर आप मन के नियम जानते हैं, अगर आप अंधकार युग में नहीं जी

रहे हैं, अगर आप सम्मोहित नहीं हैं, तो अंत्येष्टि प्रार्थना में आप उस इंसान के नए जन्मदिन पर आनंदित हो सकते हैं। आप यह कल्पना कर सकते हैं कि आपका प्रियजन जीवन के अगले आयाम में अनिर्वचनीय सौंदर्य के बीच अपने मित्रों से घिरा हुआ है। आप कल्पना कर सकते हैं कि ईश्वर की शांति की नदी सभी उपस्थिति लोगों के दिलोदिमाग़ में प्रवाहित हो रही है। आप दरअसल अपने ख़ुद के दिमाग़ के स्वर्ग में पहुँच सकते हैं, चाहे आप जहाँ भी हों। यह कल्पना की शक्ति है। आप उन सभी को ऊपर उठा सकते हैं, क्योंकि यह ईश्वर में एक नया जन्मदिन है।

कुछ आधुनिक अंत्येष्टियों में कोई शव नहीं होता है। पुत्र या पुत्री कहती है, "क्या आप मेरे पिता के लिए एक स्मरण प्रार्थना करेंगे, जहाँ हम सभी एक साथ एकत्रित हों और हम ईश्वर में उनके नए जन्मदिन पर आनंदित होकर ध्यान करें?" यह सहज बुद्धि है। आज लोगों को इन सत्यों के प्रति जागते देखना बहुत अच्छा लगता है। आप जानते हैं, कोई भी कहीं पर दफ़न नहीं है। अगर आप सोचते हैं कि कोई कहीं दफ़न है, तो आप समाप्ति, अंतिमता और सीमा के साथ तादात्म्य कर रहे हैं। आप अपने मन में एक क़ब्रिस्तान बना रहे हैं। आप इसके डरावने, नकारात्मक परिणाम जानते हैं, है ना?

एक शिक्षक मेरा रिश्तेदार है और वह आयरलैंड की गोल मीनारों की जाँच कर रहा था। मैं उसके साथ था। वह एक घंटे तक कुछ नहीं बोला। वह निष्क्रिय और ग्रहणशील बना रहा और चिंतन की मनोदशा में दिख रहा था। मैंने उससे पूछा कि वह किस ध्यान में था।

उसने बताया कि सिर्फ़ संसार के महान, अद्भुत विचारों पर मनन करके ही हम विकास और विस्तार करते हैं। उसने मीनार में पाषाण युग पर मनन किया। फिर उसकी कल्पना उसे उन खानों में ले गई, जहाँ पत्थरों को आकार दिया गया था। उसकी कल्पना ने पत्थरों के आवरण को हटा दिया। उसने अंदर की आँख से पत्थर की बनावट, भूगर्भीय संरचना और बनावट को देखा और इसे निराकार अवस्था तक पहुँचा दिया। अंत में उसने पत्थरों की सारे पत्थरों और सारे जीवन और सारे संसार से एकत्व की कल्पना की। आप जानते हैं, केवल एक ही तत्व है। उसने अपने दैवी कल्पनाचित्र में यह अहसास किया कि गोल मीनार को देखकर आइरिश प्रजाति के इतिहास को दोबारा लिखना संभव था। यह पूरी तरह सच है। यह किया जा सकता है। केवल एक ही तत्व है, एक ही नियम है, एक ही जीवन है, एक ही सत्य है। गोल मीनारों के पत्थरों में प्रजाति की स्मृति है। क्यों? यह व्यक्तिपरक है। यह कठोर और ठोस नहीं है। यह जीवित है। आप जानते हैं, पत्थर जीवित है। इस सृष्टि में कोई भी चीज़ मुर्दा नहीं है। जिस पत्थर को आप निर्जीव पदार्थ कहते हैं — यह बकवास है! वह पत्थर जीवित है! कल्पना शक्ति के ज़रिये यह शिक्षक गोल मीनारों में रहने वाली अदृश्य आत्माओं को देख सकता था, उनकी आवाज़ें सुन सकता था। कल्पना में पूरी जगह उसके लिए सजीव हो गई। इस शक्ति के सहारे वह उस समय में पहुँच गया, जब वहाँ कोई गोल मीनार नहीं थी। वह अपने मन में उस जगह का नाटक बुनने लगा, जब पत्थरों का जन्म हुआ, उन्हें कौन लाया, संरचना का उद्देश्य और इससे जुड़ा इतिहास।

जैसा उसने मुझसे कहा, "मैं एक तरह से उन क़दमों की आहट सुन सकता था और उस स्पर्श को महसूस कर सकता था, जो हज़ारों साल पहले ग़ायब हो गया था?" यह उपन्यास कहाँ से आता है? यह कविता कहाँ से आती है? मानव जाति की यह कहानी कहाँ से आती है? व्यक्तिपरक मन सारी चीज़ों में व्याप्त है। यह सारी वस्तुओं में है और यही वह तत्व है, जिससे वे

बनती हैं। अमरता का ख़ज़ाना किसी इमारत को बनाने वाले पत्थरों में है। कोई भी चीज़ निर्जीव नहीं है। सब कुछ जीवन है, जो अलग-अलग तरीक़े से प्रकट हो रहा है।

वास्तव में, अपनी कल्पनाशक्ति के ज़रिये आप कल्पना कर सकते हैं कि प्रकृति के अदृश्य रहस्य आपके सामने उजागर किए जा रहे हैं। आप पाएँगे कि आप चेतना की गहराइयों की थाह ले सकते हैं, चीज़ों को उस तरह सोचकर जो वैसी नहीं हैं, जैसी वे थीं और अदृश्य दिखने लग जाता है।

दरअसल कल्पनाशील मानव मन से ही सारे धर्मों का जन्म हुआ है। कल्पना के क्षेत्र से ही टेलीविज़न, रेडियो, राडार, सुपर जेट और सारे आधुनिक आविष्कार आए हैं। आपकी कल्पना अमरता का ख़ज़ाना है, जो आपके लिए सारे बेशक़ीमती रत्न और संगीत, कला, कविता और आविष्कार मुक्त करता है। आप किसी प्राचीन खंडहर या पुराने मंदिर या पिरामिड को देख सकते हैं और मृत अतीत का लेखा-जोखा दोबारा बना सकते हैं। पुराने क़ब्रिस्तान के अवशेषों में आप एक आधुनिक शहर को भी देख सकते हैं, जो अपनी पूरी सुंदरता और भव्यता में पुनर्जीवित हो रहा है।

हो सकता है कि आप अभाव या विपत्ति की जेल में हों या पत्थर की सलाखों के पीछे हों, लेकिन अपनी कल्पना में आप असीम स्वतंत्रता पा सकते हैं, जिसे आपने सपने में भी नहीं सोचा था। मैं अब देख सकता हूँ कि शेक्सपियर पुरानी कहानियाँ और उस युग के मिथक सुन रहे हैं। मैं कल्पना कर सकता हूँ कि वे बैठे हैं, अपने मन में नाटक के सारे पात्रों की सूची बना रहे हैं, फिर एक-एक करके उन्हें बालों, त्वचा, मांसपेशियों, अस्थियों की पोशाक पहनाकर सजीव बना रहे हैं और उन्हें इतना जीवंत बना रहे हैं कि हम सोचते हैं जैसे हम अपने ही बारे में पढ़ रहे हैं। तो शेक्सपियर की कहानियाँ आपके बारे में हैं। सारे पात्र आपके भीतर हैं और शेक्सपियर के सारे पात्र आपके भीतर हैं।

अपनी कल्पना का इस्तेमाल अपने पिता के काम में लगाएँ। आपके पिता का काम यह है कि आपकी बुद्धिमत्ता और योग्यता, ज्ञान और क़ाबिलियत उजागर हो और आपके साथ-साथ दूसरों को भी धन्य करे। आप अपने पिता के काम पर हैं, अगर आप एक छोटी दुकान चला रहे हैं, लेकिन अपनी कल्पना में आप महसूस करते हैं कि आप एक ज़्यादा बड़ी दुकान चला रहे हैं और अपने साथी इंसानों की ज़्यादा सेवा कर रहे हैं। अगर आप लघु कहानियाँ लिखते हैं, तो आप अपने पिता का काम कर सकते हैं। अपने मन में एक कहानी गढ़ें, जो स्वर्णिम नियम और प्रेम के नियम के बारे में कुछ सिखाती हो, क्योंकि आस्था प्रेम के ज़रिये काम करती है। और आपके पास पर्वतों को हिलाने वाली आस्था आ सकती है; लेकिन जब तक आपके पास प्रेम नहीं है, आप बहुत दूर नहीं जा सकते। प्रेम सद्भाव है; यह सौहार्द, सज्जनता है; यह सभी लोगों के प्रति सद्भाव है, उनके लिए जीवन की तमाम नियामतों की कामना करना है।

अपनी कहानी और इसके पात्रों को अपनी आध्यात्मिक और बेहद कलात्मक मानसिकता से गुज़ारें। आपका लेख जनता को आकर्षक लगेगा और बेहद रोचक होगा। हाँ, कल्पना की अद्भुत शक्तियाँ आपके भीतर हैं। अगर हम समय-समय पर अपने विचारों को दोबारा ढालें, अपने विश्वासों और रायों की जाँच करें, तो हमारे लिए बहुत अच्छा रहेगा। ख़ुद से पूछें: मैं इस पर यक़ीन क्यों करता हूँ? यह राय कहाँ से आई? शायद आपके कई विचार, सिद्धांत, विश्वास

और रायें ग़लत हैं, क्योंकि आपने उनकी सत्यता या सटीकता की किसी तरह की जाँच किए बिना ही उन्हें सच मान लिया था।

तो प्राचीन मिस्त्र की क़ब्रों का अध्ययन कर रहे पुरातत्ववेत्ता, जीवाश्म विशेषज्ञ काल्पनिक अनुभूति के ज़रिये प्राचीन खंडहरों का दोबारा निर्माण करते हैं। मृत अतीत एक बार फिर सजीव और सस्वर बन जाता है। प्राचीन खंडहरों और चित्रलिपि को देखकर वैज्ञानिक उस युग को बयां कर देते हैं, जब कोई भाषा नहीं थी। संवाद हुंकारों, कराहों और संकेतों से किया जाता था, क्योंकि एक समय ऐसा भी था, जब मनुष्य बोल नहीं पाता था। वैज्ञानिकों की कल्पना प्राचीन मंदिर को छतों से ढँकने और उन्हें बागों, तालाबों तथा फव्वारों से घेरने में सक्षम बनाती है। जीवाश्म अवशेषों को आँखों, मांसपेशियों, स्नायुओं की पोशाक पहनाई जाती है और वे एक बार फिर चलते व बात करते हैं। अतीत जीवित वर्तमान बन जाता है। हम पाते हैं कि कल्पना में कोई समय या दूरी नहीं होती है।

आपकी कल्पनाशक्ति के ज़रिये आप सभी युगों के सबसे प्रेरित लोगों के साथी बन सकते हैं। ईश्वर आपकी आँख के सारे आँसू पोंछ देगा। आप अपने सारे प्रयासों में सफल हो सकते हैं। आप विपत्ति, ग़रीबी और असफलता से उबर सकते हैं। आप सफल और दौलतमंद बनने में असफल नहीं हो सकते।

सार

अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो सबसे पहले तो आपको सफल व्यक्ति के रूप में अपनी कल्पना करनी चाहिए। अगर आप दौलतमंद बनना चाहते हैं, तो सबसे पहले आपको दौलतमंद व्यक्ति के रूप में अपनी कल्पना करनी चाहिए।

जब संसार कहता है, “यह असंभव है, यह नहीं किया जा सकता,” तो कल्पनाशील व्यक्ति कहता है, “यह किया जा चुका है।” कल्पना वास्तविकता की गहराइयों को भेदकर प्रकृति के रहस्य उजागर कर सकती है।

अंतिम परिणाम की कल्पना की शक्ति के ज़रिये आप किसी भी परिस्थिति या स्थिति पर नियंत्रण रख सकते हैं। यदि आप किसी कामना, इच्छा, विचार या योजना को साकार करने की आकांक्षा रखते हैं, तो अपने मन में इसकी पूर्णता की मानसिक तसवीर बना लें। अपनी इच्छा की वास्तविकता की लगातार कल्पना करें। इस तरह आप दरअसल इसे अस्तित्व में आने के लिए बाध्य कर देंगे।

आपकी कल्पना किसी भी विचार या इच्छा को पोशाक पहनाकर वस्तु के रूप में ला सकती है। जहाँ अभाव है, वहाँ आप समृद्धि की कल्पना कर सकते हैं, जहाँ विवाद है वहाँ आप शांति की कल्पना कर सकते हैं और जहाँ बीमारी है वहाँ आप स्वास्थ्य की कल्पना कर सकते हैं।

आप जिसे भी सोच सकते हैं, उसे आप साकार कर सकते हैं। इसका तरीक़ा यह है कि विचार या लक्ष्य के चित्र से अपने अवचेतन मन को सराबोर किया जाए। आत्मा आपके मन में अदृश्य चीज़ें देख सकती है। वह सफलता कहाँ है, जिसकी आपको गहरी इच्छा है? क्या यह

आपके मन में नहीं है? यह वास्तविक है। मन के दूसरे आयाम में इसका आकार, रूप और सार है? यक़ीन करें कि यह अभी आपके पास है और यह आपको मिल जाएगी।

अपनी कल्पना की शक्ति से आप सबसे प्रेरित लेखकों — सभी युगों के लोगों — के साथी बन सकते हैं। ईश्वर आपकी आँख के सारे आँसू पोंछ देगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल हो सकते हैं। आप विपत्ति और ग़रीबी और असफलता से उबर सकते हैं। आप सफल और दौलतमंद बनने में असफल नहीं हो सकते।

6

कोई मुफ़्त लंच नहीं है

एक चीज़ है जो आपको नहीं मिल सकती: यह है, बिना कुछ दिए कुछ पाना। पुरानी कहावत सच है: "मुफ़्त लंच जैसी कोई चीज़ नहीं है।" कुछ साल पहले मैं एक स्टोर में था, जिसमें उन्होंने यह पेशकश रखी थी कि अगर आप शेविंग क्रीम के दो ट्यूब ख़रीदेंगे, तो आपको ब्लेड का एक पैकेट मुफ़्त मिलेगा। देखिए, वे ब्लेड मुफ़्त में नहीं दे सकते, जैसा आप जानते होंगे। इसकी लागत पूरी क़ीमत में शामिल है। कम से कम, यह कारोबार चलाने की सकल लागत में शामिल है या ग्राहक के शुल्क में है। कोई भी चीज़ मुफ़्त में नहीं मिलती है। अगर आप दौलतमंद बनना चाहते हैं, तो आपको दौलत की क़ीमत चुकानी होगी; अगर आप सफलता चाहते हैं, तो उसकी भी एक क़ीमत है।

आप जिस भी चीज़ की इच्छा करते हैं, उसके प्रति आपको ध्यान, समर्पण और निष्ठा देनी होगी। ज़ाहिर है, फिर आपको प्रतिक्रिया मिलेगी। क़ीमत है पहचान; क़ीमत है विश्वास। हमेशा कोई न कोई क़ीमत चुकानी होती है। कोई भी चीज़ मुफ़्त में नहीं मिलती है।

लोग कहते हैं, मोक्ष मुफ़्त है। नहीं, यह नहीं है। ईश्वर की कृपा से आप अपने विश्वास द्वारा बचाए जाते हैं। कृपा का अर्थ है कि असीमित का प्रेम, प्रकाश और महिमा हर उस व्यक्ति पर प्रतिक्रिया करती है, जो भी इसका आह्वान करता है। "मुझे पुकारो, मैं तुम्हें जवाब दूँगा; मैं मुश्किल में तुम्हारे साथ रहूँगा; मैं तुम्हें ऊपर बिठाऊँगा क्योंकि तुम मेरा नाम जानते हो।" कृपा का अर्थ है आपकी चेतन सोच और कार्य पर परम प्रज्ञा की प्रतिक्रिया। यह हर एक के लिए उपलब्ध है। यह धार्मिक संबद्धता, पंथ या धर्मसिद्धांत के कारण कुछ ख़ास लोगों के लिए सुरक्षित नहीं है।

असीमित प्रज्ञा की प्रकृति प्रतिक्रियाशीलता है।

यह सभी लोगों पर प्रतिक्रिया करती है। जब आपने चलना सीखा या जब आपने तैरना या नाचना सीखा, तो आपने एक ही काम को बार-बार दोहराया; अब आप कह सकते हैं कि यह आपकी आदत या दूसरी प्रकृति है। दूसरी प्रकृति का मतलब है आपकी चेतन सोच और क्रिया पर आपके अवचेतन मन की प्रतिक्रिया। कार चलाने की तरह। आप कार को गहनता से नहीं छूते हैं या स्टियरिंग व्हील को कसकर नहीं पकड़ते हैं — बिलकुल नहीं, आप इसे हल्के से छूते हैं। दरअसल, यह आपका अवचेतन मन है, जो कार चला रहा है। दूसरे शब्दों में, यह प्रयासरहित प्रयास है। यह बगैर किसी तनाव या दबाव का प्रयास है।

आपने ध्यान, निष्ठा और किसी सिद्धांत के प्रति वफ़ादारी देकर क़ीमत चुकाई थी, है ना, और लगन, संकल्प से भी? अब आप कार चला सकते हैं, साइकल चला सकते हैं, तैर सकते हैं या आँखें बंद करके संगीत बजा सकते हैं। आपने अपनी अँगुलियों से एक विचार प्रक्रिया को बार-बार दोहराया था। अब आप स्वचालित ढंग से बजाते हैं। यह आपका अवचेतन बजा रहा है।

देखिए, हम हर चीज़ की क़ीमत चुकाते हैं: पहचान, स्वीकृति और विश्वास। किसी भी विषय के प्रति अपना ध्यान, अपनी निष्ठा और अपनी वफ़ादारी दें और यह आपके सामने अपने रहस्य उजागर कर देगा। अगर आप किसी ख़ास विषय पर ध्यान नहीं देते हैं, चाहे यह रसायन शास्त्र हो, भौतिकी हो या गणित हो, आपकी नौकरी हो या आपका कारोबार हो, तो ज़ाहिर है, आप उस ख़ास विषय के बारे में अंधकार में रहेंगे।

मिसेज़ मेनियर न्यू यॉर्क सिटी की बेहतरीन टीचर थीं। वे लूसर्न होटल में रहती थीं, जहाँ मैं एक वक़्त न्यू यॉर्क में रहा था और मेरी कभी-कभार उनसे बातचीत हो जाती थी। उनकी एक सहेली उनसे मिलने आती थी, पुस्तकें उधार लेती थी और मिसेज़ मेनियर के दिए पुराने कपड़े स्वीकार कर लेती थी। मैंने उनसे एक बार कहा, "यह महिला आपकी बात — आपकी नसीहत क्यों नहीं सुनती है? उसे आपके पुराने कपड़े पहनने की ज़रूरत नहीं है।" वे बोलीं, "देखिए, वह क़ीमत नहीं चुकाना चाहती। वह ध्यान नहीं देना चाहती। वह इन सत्यों पर अमल करना नहीं चाहती। वह बुद्धिमानी के बजाय पुराने कपड़ों को ज़्यादा पसंद करती है।"

मैं सोचता हूँ कि मिसेज़ मेनियर की बात सही थी। वह मानसिक और आध्यात्मिक नियमों पर अमल करने के बजाय पुराने कपड़ों, पुराने छातों और ऐसी ही चीज़ों को ज़्यादा पसंद करती थी। उसे तो बस इन महान सत्यों की ओर ध्यान, निष्ठा और दिलचस्पी देनी थी। उसने क़ीमत नहीं चुकाई; वह क़ीमत चुकाना ही नहीं चाहती थी। यह कई लोगों के बारे में सही है। मिसेज़ मेनियर बहुत सहानुभूतिपूर्ण थीं और ये पुराने कपड़े शायद उसे सहानुभूति के कारण ही देती रहीं, जिससे ज़ाहिर है उस महिला का कोई भला नहीं हुआ।

कुछ साल पहले डेनवर में मैंने गर्मी में 'आपके अवचेतन मन की शक्तियाँ' पर एक सेमिनार किया था। एक महिला ने मुझसे कहा, "मैं जो चाहूँ पा सकती हूँ, बशर्ते मुझे अपने मन में विश्वास हो जाए कि यह मेरे पास है।" मैंने उसे समझाया कि आप जीवन में बस एक ही चीज़ नहीं पा सकते: कुछ नहीं के बदले कुछ पाना। आप ऐसा नहीं कर सकते। आपको क़ीमत चुकानी होती है। वह दस साल से त्वचा रोग के उपचार के लिए प्रार्थना कर रही थी, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ था। उसने कई कड़वे लोशन और दूसरी क्रीमें लगाई थीं, लेकिन कोई उल्लेखनीय राहत नहीं मिली थी। इस महिला ने कभी क़ीमत नहीं चुकाई। उपचार की क़ीमत असीमित उपचारक

उपस्थिति में आस्था है। क्योंकि आपकी आस्था या विश्वास के अनुसार ही आपके साथ किया जाता है।

देखिए, आस्था का मतलब पंथ, धर्मसिद्धांत, चर्च या कोई व्यक्ति या इसी प्रकृति की कोई चीज़ नहीं है। मिसाल के तौर पर, अगर आपकी रसायन शास्त्र में आस्था है, तो क्या आप रसायन शास्त्र के नियमों का अध्ययन नहीं करते हैं: आकर्षण, विकर्षण आदि? ज़ाहिर है, आप करते हैं। आप अद्भुत यौगिक उत्पन्न करते हैं, जो असंख्य तरीक़ों से मानव जाति का भला करते हैं। आपकी आस्था का विकास होता है, जब आप रसायन शास्त्र के महान सिद्धांतों पर ध्यान देते हैं, जो कल, आज और हमेशा एक जैसे होते हैं।

तो, आस्था सृजनात्मक शक्ति के प्रति ध्यान, समर्पण और निष्ठा है। आपके पास आस्था है, जब आप जानते हैं कि विचार ही वस्तुएँ हैं कि आप जो महसूस करते हैं उसे आकर्षित करते हैं और आप जो कल्पना करते हैं, वह बन जाते हैं। आपके पास आस्था है, जब आप जानते हैं कि कोई विचार, जिसे भावनामय या सच के रूप में महसूस किया गया है, अवचेतन मन में जमा कर पहुँच जाता है, तो यह आकार, कार्य, अनुभव और घटना के रूप में बाहर प्रकट हो जाता है। तब आपकी अपने मन के सृजनात्मक नियमों में आस्था होगी; आपको यह आस्था होगी कि एक असीम प्रज्ञा आपके विचार पर प्रतिक्रिया करती है। जब आप इसे पुकारते हैं, तो यह आपको जवाब देती है। आपको उसमें निश्चित आस्था व विश्वास होता है।

मिसाल के तौर पर, कुछ लोग जंगल में खो गए थे और उन्हें विश्वास था कि उन्हें दिशा दिखाई जाएगी और उस जगह से बाहर निकलने का मार्गदर्शन दिया जाएगा। उनके पास कोई कम्पास नहीं था, वे तारों के बारे में कुछ नहीं जानते थे — जैसे यह कि ध्रुव तारा कहाँ था। लेकिन कुछ लोग बैठकर बोले, “मालिक मेरा चरवाहा है। मुझे कमी नहीं होगी। वह मेरा मार्गदर्शन करके मुझे मेरी पलटन तक पहुँचाएगा। वह सुरक्षा की ओर मेरा नेतृत्व करेगा। वह इसी समय मेरा मार्गदर्शन कर रहा है।” उन्होंने उस प्रेरणा (भावना) का अनुसरण किया, जो आती है जब आप परम प्रज्ञा को पुकारते हैं। उन्हें उस पानी की ओर ले जाया गया, जहाँ नदी बह रही थी। वे नदी के रास्ते गए और उन्हें बचा लिया गया।

यह मार्गदर्शन सिद्धांत है। उन्होंने क़ीमत चुकाई, है ना? पहचानना, इस पर ध्यान देना, इसे पुकारना, यह वह क़ीमत है जो उन्होंने चुकाई। अगर आप इसे नहीं पुकारते हैं या नहीं पहचानते हैं, तो यह तो वैसा ही है, जैसे यह वहाँ हो ही नहीं। क्योंकि यह असीमित प्रज्ञा किसी दूसरे तरीक़े से नहीं, बल्कि आपके ज़रिये ही आपके लिए कुछ करेगी। इस महिला को जो क़ीमत चुकानी थी, वह यह थी कि वह असीमित की शक्ति को पहचाने, उस उपचारक उपस्थिति को स्वीकार करे और यह विश्वास रखे कि उपचार इसी समय हो रहा है। वह ये बातें कहकर बाहरी चीज़ों को शक्ति दे रही थी, “मेरी त्वचा धूप के प्रति संवेदनशील है। मुझे ठंडे मौसम से एलर्जी है। मुझे विश्वास है कि मेरे पूरे हाथ पर एग्ज़ीमा अनुवांशिकता के कारण है। मेरी माँ के साथ भी ऐसा ही था। यह तो मेरे जीन्स और क्रोमोसोम्स की ग़लती है।” उसका मन विभाजित था। उसकी मानसिकता दोहरी थी। उसने कभी क़ीमत नहीं चुकाई थी, जो असीमित उपचारक उपस्थिति और अपने ख़ुद के अवचेतन के नियम पर ध्यान देना था, उस नियम पर भरोसा करना था और उपचारक उपस्थिति में विश्वास करना था और यह यक़ीन करना था कि यह प्रतिक्रिया करेगा

और उसे पूर्ण स्वस्थ कर देगा।

वह इस तरह प्रार्थना करने लगी:

> जिस असीम उपचारक उपस्थिति ने मेरा शरीर और इसके सारे अंग बनाए हैं, वह मेरे शरीर की सारी प्रक्रियाएँ और कार्य जानती है। मैं दावा करती हूँ, महसूस करती हूँ और निश्चित रूप से तथा पूरी तरह जानती हूँ कि असीम का असीमित वैभव और भव्यता मेरे मन व शरीर में प्रकट होती हैं। असीमित की पूर्णता, स्फूर्ति और जीवन इसी समय मेरे भीतर प्रवाहित होता है और मेरे शरीर का कण-कण असीमित उपचारक उपस्थिति से रूपांतरित होता है। मैं पूरी तरह और खुलकर हर एक को क्षमा करती हूँ। मैं अपने सभी रिश्तेदारों और ससुराल वालों पर जीवन, प्रेम, सत्य और सौंदर्य उँड़ेलती हूँ। मैं जानती हूँ कि मैंने हर एक को क्षमा कर दिया है, क्योंकि मैं अपने मन में उस व्यक्ति को याद करती हूँ और कोई बुरी भावना नहीं आती है या डंक नहीं चुभता है। मैं उस उपचार के लिए धन्यवाद देती हूँ, जो इस समय हो रहा है और मैं जानती हूँ कि जब मैं पुकारती हूँ, तो जवाब मिलता है।

उसने यह प्रार्थना धीरे-धीरे, शांति से और आदर से दिन में कई बार दोहराई।

मेरे डेनवर से लौटने से पहले उसने बताया कि उसके पूरे अस्तित्व में — मानसिक और शारीरिक रूप से — एक उल्लेखनीय और बेहतर परिवर्तन हुआ था और उसकी आँखों के सामने पूर्ण उपचार होने लगा था। उपचार के तोहफ़े को पाने के लिए उसे अपने मन का अध्ययन करने और इसे तैयार करने की क़ीमत चुकानी पड़ी थी। अब तक उसके मन की निष्ठा विभाजित थी। वह आहार, मौसम, अनुवांशिकता और दूसरे घटकों को शक्ति दे रही थी।

वह यह समझने लगी कि वैज्ञानिक विचारक भौतिक जगत या किसी बाहरी चीज़ को कारण नहीं मानता है। सबका कारण भीतर की आत्मा है — ईश्वरीय उपस्थिति। ईश्वर पहला कारण है और सर्वशक्तिमान व चरम सत्ता है। इसका विरोध करने वाला कोई नहीं है, इसे चुनौती देने वाला कोई नहीं है, इसे विफल या दूषित करने वाला कोई नहीं है। जिस पल आप किसी दूसरी शक्ति को मान लेते हैं, आप अपने मन में विभाजित हो जाते हैं। आपका अवचेतन विभाजित और दुविधाग्रस्त मन पर प्रतिक्रिया नहीं करता है। अगर आप किसी लिफ़्ट में ऊपर और नीचे वाले बटन लगातार दबाते रहें, तो आप न ऊपर जाएँगे न ही नीचे, बल्कि जहाँ हैं वहीं बने रहेंगे।

आस्था अपने मन के नियमों को समझने और सभी मामलों में मेहनत से उन पर अमल करने से आती है। आप अपनी आस्था को उसी तरह बढ़ा सकते हैं, जिस तरह मैंने पहले बताया था कि कोई केमिस्ट रसायनशास्त्र या भौतिक शास्त्र या गणित के अपने ज्ञान को बढ़ाता है, जिससे शोधकर्ता मानव दुख को कम करने के लिए, साथ ही जीवन के कठोर श्रम को हटाने के लिए अद्भुत यौगिक बनाता है। प्रकृति के नियमों में सतत शोध से वैज्ञानिकों की आस्था क्रमशः बढ़ती जा रही है और वे बड़ी चीज़ें हासिल कर रहे हैं। किसान को फ़सल पाने के लिए ज़मीन में बीज बोने पड़ते हैं। उसे यह तय करना होता है कि उसे गेहूँ, ओट या जौ किसकी फ़सल पाना है। उसे निर्णय लेना होता है और मिट्टी में बीज बोना होता है। उसे पाने से पहले कुछ देना होता है। उसे मिट्टी को बीज देना होता है।

पाने से पहले आपको अपने मन को देना होगा। आप दौलत पा सकें, इससे पहले आपको अपने अवचेतन मन पर दौलत के विचार की छाप छोड़नी होगी। अवचेतन पर जो भी छाप छोड़ी जाती है, वह संसार के पर्दे पर व्यक्त होती है। आप जानते हैं, केवल चेतना के अधिकार द्वारा ही आपके पास चीज़ें होती हैं। आपको अपनी मानसिकता में अपनी मनचाही चीज़ का मानसिक

समतुल्य बनाना होगा। आप स्वास्थ्य, दौलत, शांति, सद्भाव या जीवन में जो भी चाहते हों, उस पर अपना ध्यान और समर्पण देकर ऐसा करते हैं। क्योंकि असीमित आपके भीतर है। उपहार दिया गया है। ईश्वर दाता और उपहार है। आप प्राप्त करने वाले हैं। आप ईश्वर को क्या दे सकते हैं? आप ईश्वर को कुछ नहीं दे सकते। ईश्वर वह असीम उपस्थिति और शक्ति है, जो सबमें है, सबके ऊपर है, सबके अंदर है, सब कुछ है, जीवन सिद्धांत है, जनक है, सबका पिता है। आप असीमित को संसार में भला क्या दे सकते हैं? सभी चीज़ें मानव जाति की हैं। यह हर चीज़ है। यह घास का तिनका है, यह सेब फल है, यह हवा है, यह बीज है। यह हर चीज़ है। जब आप पैदा हुए थे, तो पूरा संसार यहाँ था।

आप ईश्वर या अपने भीतर की जीवंत आत्मा को केवल एक ही चीज़ दे सकते हैं, यह है पहचान, सम्मान, वफ़ादारी और निष्ठा। यह एकमात्र चीज़ है, जिसका ईश्वर हमसे वादा करता है: "मुझे पुकारो, मैं तुम्हें जवाब दूँगा; मैं तुम्हारे साथ मुश्किल में रहूँगा और तुम्हें ऊपर बिठाऊँगा, क्योंकि तुम मेरा नाम जानते हो।" नाम इसकी प्रकृति है। प्रकृति आप पर प्रतिक्रिया करने के लिए है। आपको बताया गया है: इससे पहले कि तुम पुकारोगे, मैं जवाब दूँगा; जब तुम बोल रहे होओगे, तब भी मैं सुन लूँगा। तो जवाब पहले से ही आपके भीतर है — पृथ्वी की किसी भी समस्या का जवाब। अंतर्दृष्टि आपके भीतर है। आपको भीतर से बताया जा सकता है। टेलीपैथी या दूरानुभूति आपके भीतर है, अतीन्द्रिय दृष्टि; ये सारी शक्तियाँ आपके भीतर हैं।

आप बदल सकते हैं। अपने मन को बदलें और आप अपने शरीर तथा हर चीज़ को बदल लेते हैं। अपने विचारों को बदलें और उन्हें बदला हुआ ही रखें। इंसान जो भी चीज़ चाह सकता है, वह पहले से ही आपके भीतर की दैवी उपस्थिति में मौजूद है, जिसमें आप रहते हैं, चलते हैं और जिसमें आपका अस्तित्व है। ईश्वर आपमें रहता है, चलता है और आपमें उसका अस्तित्व है। ईश्वर जीवन सिद्धांत है, जनक है और आपके भीतर की जीवंत आत्मा सर्वशक्तिमान है। ईश्वर आत्मा है। जो उसकी पूजा करते हैं, वे आत्मा और सत्य में उसकी पूजा करते हैं। यह तथ्य कि आप किसी चीज़ की इच्छा करते हैं, उस चीज़ के अस्तित्व का प्रमाण है। आपकी इच्छा पर आपके भीतर की परम प्रज्ञा एक प्रतिक्रिया करती है। ईश्वर आपके माँगने से पहले ही जानता है कि आपको किन चीज़ों की ज़रूरत है। ज़रूरत पहले ही संतुष्ट की जा चुकी है; उपहार दे दिया गया है, क्योंकि ईश्वर दाता और उपहार है, और आप प्राप्तकर्ता हैं। सारी चीज़ें तैयार हैं, बशर्ते मन उन्हें ग्रहण करने को तैयार हो।

दौलत और समृद्धि इसी समय हैं; स्वास्थ्य इसी समय है; शांति इसी समय है, उपचारक उपस्थिति आपके भीतर है। प्रेम इसी समय है, आनंद इसी समय है और शक्ति इसी समय है। क्या आप इस बात का इंतज़ार करने जा रहे हैं कि सर्वशक्तिमान की शक्ति आपके भीतर प्रवाहित हो? यह इसी समय आपके भीतर है। कहें, "सर्वशक्तिमान की शक्ति इसी समय मेरे भीतर प्रवाहित हो रही है।" क्या आप शांति का इंतज़ार करने जा रहे हैं? कि किसी दिन आपको मानसिक शांति मिलेगी? ईश्वर की शांति आपके भीतर है और शांति की यह नदी इसी समय आपके भीतर प्रवाहित हो रही है। यानी उपहार पहले से ही वहाँ पर है। ईश्वर दाता और उपहार है। ईश्वर आपके भीतर वास करता है। तो सारी चीज़ें तैयार हैं, बशर्ते मन उन्हें ग्रहण करने के लिए तैयार हो। शांति और संतुलन को इसी समय स्वीकार करें। प्रेरणा को इसी समय स्वीकार

करें, मार्गदर्शन को इसी समय स्वीकार करें और सफलता को इसी समय स्वीकार करें।

आपको अपनी आँखें खोलनी होंगी। आपको अपने दिल को खोलना होगा और पाना होगा। अगर आपके दोनों हाथों में कोई चीज़ है, तो आपको किसी चीज़ को उठाने से पहले किसी चीज़ को छोड़ना होगा, है ना? आपको अपने मन के झूठे विश्वासों को छोड़ना होगा और सत्य को स्वीकार करना होगा, जो यह है — सारी चीज़ें तैयार हैं, बशर्ते मन उनके प्रति खुला है। उपहार को स्वीकार करने के लिए अपने मन को तैयार करें। ईश्वर की उपचारक उपस्थिति आपके भीतर है। यह आपकी अँगुली के घाव का उपचार करती है। यह ठीक वहाँ पर है। जब कोई सर्जन किसी ट्यूमर को हटाता है, तो वह कहता है, "प्रकृति आपका उपचार करेगी।" वह अवरोध को हटा देता है।

तो आपको हमेशा प्रतिक्रिया मिलेगी। शायद आपको इसका अनुभव हो चुका है — जब आपने किसी ख़ास समस्या को सुलझाने की कोशिश की थी। आपने अपने मस्तिष्क को झकझोर दिया। आपने दूसरों से मदद माँगी। आपने सारी पुस्तकों को देखा। आपने कोई समाधान खोजने की कोशिश की जो वैज्ञानिक, केमिस्ट या औषधि-विक्रेता, या शोध औषधि-विज्ञानी या डॉक्टर या सर्जन या बिज़नेस मैनेजर कई बार करता है। आप समस्या के साथ जूझते हैं। आप जवाब पाने की कोशिश करते हैं और फिर आप थक जाते हैं। आप एक तरह से छोड़ देते हैं और आप इसे ज़्यादा गहरे मन की ओर धकेल देते हैं। आप शायद सोने चले जाते हैं। कई बार जवाब आपको सपने में मिलता है, रात के सपने में। कई बार यह तब आपके पास आता है, जब आप सुबह जागते हैं। यह आपके दिमाग़ में उसी तरह से फुदक आता है, जिस तरह कोई टोस्ट टोस्टर में से फुदकता है।

यह बार-बार और बारंबार होता है। आपने क़ीमत चुकाई थी: ध्यान, निष्ठा, वफ़ादारी और परम प्रज्ञा की पहचान, जो जवाब जानती है। जब आप समर्पण करते हैं, जब आप हार मान लेते हैं, जब आप इसकी ओर धकेलते हैं और कहते हैं, "मेरे भीतर वह है, जो जानता है," तो फिर जवाब मिल जाता है। आपने परम प्रज्ञा और उपचारक उपस्थिति व शक्ति को संलग्न किया, जिसने आप पर प्रतिक्रिया की। तो, आपने इस पर ध्यान दिया और आपको जवाब मिल गया।

आइंस्टाइन गणित से प्रेम करते थे और इसने अपने रहस्य उनके सामने उजागर कर दिए। वे सृष्टि और इसके नियमों में खोए हुए थे और मंत्रमुग्ध थे। युनिफ़ाइड फ़ील्ड थ्योरी उनके चेतन, तार्किक मन में बिजली की कौंध की तरह अचानक आई। उन्होंने समय, स्पेस और चौथे आयाम के विषय के प्रति अपना ध्यान, समर्पण और मेहनत दी और उनके अवचेतन ने प्रतिक्रिया करते हुए इन विषयों के रहस्य उनके सामने उजागर कर दिए।

एडिसन ने विद्युत के सिद्धांत पर प्रयोग किया, मनन किया और समझाया। उनमें संसार को रोशन करने और मानव जाति की सेवा करने की गहन इच्छा थी, और विद्युत ने उनके सामने अपने रहस्य उजागर कर दिए। उन्होंने लगन और विश्वास द्वारा क़ीमत चुकाई, यह जानते हुए कि जवाब मिलेगा। हाँ, उन्होंने इस पर ध्यान दिया और समर्पण भी दिया। वे विद्युत के सिद्धांत से प्रेम करते थे और ज़ाहिर है, उन्होंने असंख्य आविष्कार किए, क्योंकि उन्होंने अपने प्रोजेक्ट में ध्यान, लगन और पूर्ण समर्पण की क़ीमत चुकाई थी, अपने दिल और आत्मा में यह जानते हुए कि एक व्यक्तिपरक प्रज्ञा है, जो प्रतिक्रिया करेगी। वे लगातार जुटे रहे और उनके ज़्यादा गहरे

मन ने उन्हें कभी निराश नहीं किया।

यहाँ एक और उदाहरण है कि एक विचार में विश्वास ने कैसे एक व्यक्ति के लिए करोड़ों कमाए और दौलत बढ़ाने में असंख्य दूसरे लोगों की भी मदद की। सर जॉन टेंपलटन एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्हें दमदार और लाभकारी निवेश करने की अपनी योग्यता में भारी आस्था है। अब उनकी उम्र नब्बे साल से ज़्यादा है और वे अपने बचे हुए वर्ष व करोड़ों डॉलर विज्ञान और आस्था की सिनर्जी में लगा रहे हैं।

सर जॉन 1963 से ब्रिटिश नागरिक हैं, जब उन्होंने ब्रिटिश आधिपत्य वाले बहामाज़ में रहने का फ़ैसला किया। उनके अंतरराष्ट्रीय वित्तीय और परोपकारी उपलब्धियों के लिए महारानी ने उन्हें नाइट की उपाधि से विभूषित किया।

जब उनसे उनकी सफलता के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा: "मैं बस सामान्य बोध का इस्तेमाल करता हूँ, चाहे यह दूसरे लोगों का पैसा निवेश करने का मामला हो या सृष्टि के आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझने का मामला हो।"

टेंपलटन को विश्वास है कि ईश्वर ने संसार को बुनियादी नैतिक नियमों पर चलने के लिए बनाया था, जिनका अनुसरण करने पर आध्यात्मिक अखंडता और भौतिक सफलता भी मिलेगी। वे आध्यात्मिकता को एक व्यावहारिक विज्ञान मानते हैं, जिसका अध्ययन यांत्रिकी या इंजीनियरिंग की तरह ही करना चाहिए।

उन्हें यक़ीन है कि जीवन के बुनियादी आध्यात्मिक नियमों का अब तक अनखोजा प्रमाण प्रार्थना का उपचार पर पड़ने वाला प्रभाव है। उन्होंने हारवर्ड युनिवर्सिटी में इस क्षेत्र में हो रहे शोध को दान दिया है।

वे वैज्ञानिकों और कई धार्मिक लीडरों की आलोचना करते हैं, जो सत्य खोजने के लिए केवल पारंपरिक विचारों और धर्मग्रंथों की ओर ही देखते हैं और विज्ञान तथा भविष्य की ओर नहीं देखते हैं। उनका दृढ़ विश्वास है कि धर्मसिद्धांत को भी उसी तरह प्रगति करनी चाहिए, जिस तरह विज्ञान करता है। "मेरा सभी धर्मों के प्रति सम्मान है, लेकिन कोई भी इंसान अब तक ईश्वर की पूर्णता का एक प्रतिशत भी नहीं जानता है।"

आध्यात्मिक जवाबों की उनकी तलाश कोई नया शौक नहीं है। युवावस्था में उन्होंने मिशनरी बनने के बारे में सोचा था। लेकिन कॉलेज तक उन्हें अहसास हो गया कि उनमें एक ख़ास गुण था। उन्हें जल्दी ही यह पता चल गया कि वे पैसे के निवेश में ज़्यादातर लोगों से बेहतर थे। उन्होंने कहा, "मुझे यह लगा कि लोग सहज बोध के बजाय भावना और अज्ञान के आधार पर निवेश कर रहे थे।"

1940 के दशक में उन्होंने दूसरे लोगों के पैसे का प्रबंधन करने के लिए कई मीच्युअल फ़ंड शुरू किए। उस जमाने में मीच्युअल फ़ंड तुलनात्मक रूप से नया विचार था। टेंपलटन ने उस विचार को आज मौजूद सबसे महत्त्वपूर्ण निवेश विचारों में से एक के रूप में तराशा।

वे याद करते हैं कि टेंपलटन ग्रोथ फ़ंड की पहली सालाना बैठक में केवल तीन लोग आए थे: वे ख़ुद, एक अंशकालीन कर्मचारी और एक शेयरहोल्डर। "पैसे बचाने के लिए हमने वह मीटिंग जनरल फ़ूड्स के एक सेवानिवृत्त एक्ज़ीक्यूटिव के डाइनिंग रूम में आयोजित की थी।"

टेंपलटन फ़ंड्स के आज पूरे संसार में 600 से ज़्यादा कर्मचारी हैं और इसमें 36 अरब डॉलर से अधिक की संपत्ति निवेशित है। उन्होंने टिप्पणी की कि अमेरिकियों ने मीच्युअल फ़ंडों में जो धनराशि निवेश की है, वह टेंपलटन के शुरुआती वर्ष की राशि से हज़ार गुना है। 40 साल पहले टेंपलटन ग्रोथ फ़ंड में 10,000 डॉलर का निवेश आज कई करोड़ डॉलर का होता।

जब वे 1992 में रिटायर हुए और उन्होंने टेंपल ग्रुप फ़ंड में हिस्सेदारी बेची (अनुमानित मूल्य 400 मिलियन डॉलर), तब तक वे पैसे कमाने में दस लाख लोगों की मदद कर चुके थे।

जिन बरसों में वे अपना व्यवसाय बनाने में संलग्न थे, उनमें भी उन्होंने अपनी आध्यात्मिक रुचियों को नज़रअंदाज़ नहीं किया। उन्होंने विज्ञान और धर्म के आपसी संबंधों के अध्ययन के लिए वैज्ञानिकों और धर्मशास्त्रियों की खोज की। उन्होंने 1972 में वार्षिक टेंपलटन प्राइज़ फ़ॉर प्रोग्रेस इन रिलीजन उस व्यक्ति को सम्मानित करने के लिए स्थापित किया, जो धर्म को "एक सक्रिय नैतिक शक्ति" बनाता हो।

विजेता को 10 लाख डॉलर से ज़्यादा मिलते हैं। टेंपलटन यह सुनिश्चित करते हैं कि इसमें नोबेल पुरस्कार से ज़्यादा रक़म मिले, ताकि यह संदेश जाए कि धर्म कलाओं और विज्ञानों से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है। पुरस्कार की घोषणा करते वक़्त टेंपलटन ने कहा था, "सृष्टि की सबसे महान वास्तविकताएँ आध्यात्मिक हैं, लेकिन लोग अक्सर त्वरित, भौतिक परिवेश में इतने डूब जाते हैं कि उन्हें बहुत ज़्यादा बड़े, ज़्यादा शक्तिशाली आयाम का अहसास ही नहीं होता।"

पुरस्कार का लक्ष्य ईश्वर के हमारे ज्ञान, जीवन के अर्थ व उद्देश्य की हमारी समझ में नवीन अनुसंधान की प्रगति पर ध्यान केंद्रित करना था।

टेंपलटन ने कहा, "हमारे युग की कुछ सबसे ज़्यादा सृजनात्मक और उत्तेजक खोजें आध्यात्मिक क्षेत्र में हुई हैं। यह अतार्किक है कि आत्मा की खोजों को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए और भौतिक विज्ञानों की खोजों को ज़्यादा महत्त्व दिया जाए।"

मदर टेरेसा और बिली ग्राहम टेंपलटन प्राइज़ के कुछ विजेता थे।

अपनी पुस्तक "द हम्बल एप्रोच" में उन्होंने लिखा था: "धर्म या विज्ञान में प्रगति की कुंजी विनम्रता है। विनम्रता ज्ञान का द्वार है। ज़्यादा सीखने के लिए हमें पहले यह अहसास होना चाहिए कि हम कितना कम जानते हैं... हम जितना ज़्यादा जानते हैं, हम उतना ही ज़्यादा जानते हैं कि हम नहीं जानते हैं। यही है जो जीवन को मसालेदार बनाता है..."

पॉज़िटिव लिविंग पत्रिका के प्रीमियर अंक के लिए लिखे लेख में टेंपलटन ने अपनी सफलता में प्रार्थना के महत्त्व को बताया। उन्होंने लिखा था:

"तीस साल से टेंपलटन ग्रोथ फ़ंड के सारे संचालकों की बैठकें प्रार्थना से शुरू हुई हैं और तीस साल से किसी दूसरे सार्वजनिक मीच्युअल फ़ंड के निवेश परिणाम इससे बेहतर नहीं रहे हैं।"

टेंपलटन उन लोगों से असहमत हैं, जो तर्क देते हैं कि अगर वे प्रार्थना को नज़रअंदाज़ करते, तब भी वे इतने ही सफल होते। वे कहते हैं, "मेरे प्रार्थना जीवन ने मुझे मानसिक स्पष्टता और गहरी अंतर्दृष्टि दी है, जो मेरी सफलता में निर्णायक घटक रहे हैं।"

"मेरे कारोबारी सहयोगी और मैं यह प्रार्थना नहीं करते हैं कि हमारे ख़रीदे ख़ास शेयर का

भाव बढ़ जाए, क्योंकि यह काम नहीं करेगा," टेंपलटन कहते हैं। "हम तो बस यह प्रार्थना करते हैं कि हमारे निर्णय समझदारी भरे हों।"

टेंपलटन आगे कहते हैं, "अगर आप प्रार्थना के ज़रिये ईश्वर के सामंजस्य में रहने की कोशिश करते हैं, तो आप जीवन में जो भी करते हैं, संभवतः वह हर चीज़ सर्वश्रेष्ठ के लिए होगी, जिसमें आपके शेयरों का चयन शामिल है। मेरे निवेश निर्णय के लिए ईश्वर के साथ सामंजस्य में आने की मेरी व्यक्तिगत तकनीक सरल प्रार्थना करना है, 'आपकी इच्छा पूरी हो।' इससे मैं अपने मन की सारी पूर्व-धारणाएँ बाहर निकाल सकता हूँ और ख़ुद को पूरी तरह से ईश्वर के मार्गदर्शन के लिए खोल सकता हूँ।"

"यदि आप पूरे दिल से दूसरे लोगों की मदद करना चाह रहे हों, तो आप मित्रता, प्रेम, सम्मान के संदर्भ में पुरस्कारों को अपने पास आने से नहीं रोक सकते। ख़ुशी उन्हीं लोगों को मिलती है, जो दूसरों को ख़ुशी देने की कोशिश करते हैं। आप ख़ुशी चाहकर ख़ुशी नहीं पा सकते, बल्कि सिर्फ़ इसे देने की कोशिश करके पा सकते हैं।"

आत्म-निंदा और आत्म-आलोचना दो सबसे विनाशकारी भाव हैं, जिनसे आपके तंत्र में आत्मिक विष भर जाता है और आपकी स्फूर्ति, शक्ति और संतुलन छिन जाता है, जिससे पूरे शरीर में सामान्य कमज़ोरी उत्पन्न होती है। प्रेम स्वास्थ्य, सौहार्द, शांति और प्रचुरता के नियम की परिपूर्णता है। प्रेम का मतलब है कि आप अपने लिए जो चाहते हैं, आपको दूसरे लोगों के लिए भी वही चाहना चाहिए। जब आप दूसरों से प्रेम करते हैं, तो आप उनके प्रति शांति और सद्भाव संचारित करते हैं और उनकी सफलता तथा प्रसन्नता में आनंदित होते हैं।

मैंने एक संगीतकार को सुझाव दिया था कि अपने क्षेत्र में असाधारण बनने के लिए उसे इस तरह प्रार्थना करनी चाहिए:

"ईश्वर महान संगीतकार है। मैं दैवी शक्ति का वाद्ययंत्र और माध्यम हूँ। ईश्वरीय उपस्थिति सौहार्द, सौंदर्य, प्रसन्नता और शांति के रूप में मुझमें प्रवाहित होती है। असीमित उपस्थिति और शक्ति मेरे माध्यम से प्रेम की अमर धुन बजाती है और जब मैं वाद्ययंत्र बजाता हूँ, तो मैं उसकी धुन बजाता हूँ, जो हमेशा है। मैं ऊपर से प्रेरित हूँ और भव्य लय ईश्वर के शाश्वत सामंजस्य को उजागर करते हुए प्रकट होती है।"

कुछ साल के भीतर ही उसे असाधारण सफलता मिली। उसने जो क़ीमत चुकाई, वह थी उस शाश्वत अस्तित्व के प्रति ध्यान, सम्मान और समर्पण, जिससे सारी नियामतें प्रवाहित होती हैं।

जो व्यक्ति गुज़ारा नहीं कर सकता, उसे क़ीमत चुकानी होगी। क़ीमत कठोर श्रम और आधी रात तक की मेहनत नहीं है; यह तो अपनी चेतना में दौलत के विचार का निर्माण करना है। आप चेतना के अधिकार द्वारा ही सारी चीज़ों के मालिक होते हैं। हो सकता है कि आप दिन में चौदह-पंद्रह घंटे काम करते हों, लेकिन अगर आपका मन उत्पादक नहीं है, तो आपका श्रम बेकार जाएगा। क्या आपका मन उत्पादक है? बुद्धिमत्ता आप में ईश्वर की उपस्थिति और शक्ति की जागरूकता है। समझ अपनी दैनिक समस्याओं को सुलझाने के लिए उस प्रज्ञा और उस बुद्धिमानी पर अमल करना है। ईश्वर का साम्राज्य आपके भीतर है। बुद्धि, बुद्धिमत्ता, शक्ति और सौंदर्य का साम्राज्य आपके भीतर है, क्योंकि दैवी उपस्थिति आपके भीतर है और ईश्वर वहीं है,

जहाँ आप हैं।

हो सकता है कि आप दिन में चौदह-पंद्रह घंटे मेहनत करते हों, लेकिन अगर आपका मन शांति में नहीं है, अगर आप सज्जनता और सौहार्द और सद्भाव से भरे हुए नहीं हैं, तो आपका श्रम बेकार जाएगा, क्योंकि विश्वास प्रेम के माध्यम से काम करता है। हो सकता है कि आपको इंजीनियरिंग, विज्ञान, कला, उद्योग या विश्वास के अपने ख़ास क्षेत्र में ज़बर्दस्त आस्था हो, लेकिन अगर आपमें सौहार्द, सज्जनता और सद्भाव और अच्छी भावना का अभाव हो, तो आप लड़खड़ाते हैं और गिर जाते हैं, है ना?

असीम बुद्धिमत्ता और असीम की सारी शक्ति आपके ज़्यादा गहरे मन में दबी हुई है। ईश्वर के असीम विचार आपके लिए उपलब्ध हैं। अगर आप केवल संपर्क कर सकें और आनंदित हो जाएँ, तो असीम आत्मा आपके सामने वह सब उजागर कर रही है, जो आपको जानने की ज़रूरत है। क्योंकि ईश्वर आत्मा है — जो उसकी पूजा करते हैं, वे आत्मा और सत्य में उसकी पूजा करते हैं। पूजा करने का मतलब है आपके भीतर की उस एक उपस्थिति और शक्ति को चरम ध्यान, निष्ठा और वफ़ादारी देना।

जब आपको अहसास होता है कि केवल एक ही शक्ति है, जो एकता के रूप में सक्रिय है, सामंजस्य के रूप में सक्रिय है, तो फिर बुराई का कोई कारण नहीं रह जाता है — क्योंकि आपने उस एक उपस्थिति और एक शक्ति को अपने मन के सिंहासन पर बैठा दिया है। ईश्वर का साम्राज्य वहाँ है। इसका मतलब असीमित प्रज्ञा है।

मेरे समुदाय के एक सदस्य रिचर्ड डी. को भारी वित्तीय घाटे झेलने पड़े। उन्होंने मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की और सृजनात्मक प्रज्ञा से यह उजागर करने को कहा कि अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए उन्हें कौन से क़दम उठाने चाहिए। उनके मन में यह प्रबल भाव आया कि वे रेगिस्तान में जाएँ। वहाँ सोच-विचार करते वक़्त उनके मन में एक विचार आया। उन्होंने यह विचार अपने एक पुराने परिचित को बताया, जो लॉस एंजेलिस में एक सफल रियल एस्टेट फ़र्म चलाता था। रिचर्ड डी. ने उसे उन ज़बर्दस्त संभावनाओं के बारे में बताया, जो उन्हें उस रेगिस्तानी जगह में दिख रही थीं। उन्होंने यह चित्र देखा कि लोग लॉस एंजेलिस छोड़कर जा रहे हैं और पूर्व से बाहर निकलकर उस जगह पर जाकर रह रहे हैं, जो उस वक़्त सिर्फ़ एक रेगिस्तानी इलाक़ा था। अपने मन की आँख में उन्होंने देखा कि वे रेगिस्तानी इलाक़े में घर, अस्पताल, स्कूल और सारी चीज़ें बना रहे हैं। उनके मित्र ने उस रेगिस्तानी ज़मीन के विकास का प्रचार करने के लिए उन्हें सेल्समैन के रूप में नियुक्त कर लिया। उनकी सफलता के बाद वे फ़र्म में पार्टनर बन गए और आज वे रियल इस्टेट में करोड़पति बन चुके हैं।

अंतर्ज्ञान की शक्ति आपके भीतर है। रिचर्ड को भीतर से सिखाया गया कि क्या करना है। उन्होंने क़ीमत चुकाई। उन्होंने मिलने वाली प्रेरणा को पहचाना और उस पर अमल किया। आप किसी जवाब की इच्छा करते हैं, इसका मतलब है कि जवाब आपके मानसिक और आध्यात्मिक जगत में पहले से मौजूद है, जिसमें आप जीते हैं, चलते हैं और जिसमें आपका अस्तित्व है। हाँ, यह विचार के रूप में वहाँ पर है। एक सिद्धांत है, एक आदर्श है, एक साँचा है। क्योंकि हर चीज़ अदृश्य से आती है। आप ख़ुद अदृश्य से बाहर आए हैं; पूरा संसार ही अदृश्य से बाहर आया है। एक बार फिर अहसास करें कि उसमें आप जीते हैं, चलते हैं और आपका अस्तित्व है। ईश्वर

आपमें जीता है, चलता है और आपमें उसका अस्तित्व है।

ईश्वर दाता और उपहार है। आपको अच्छा प्राप्तकर्ता बनना चाहिए। उपहार को ग्रहण करें। कई लोग ख़राब प्राप्तकर्ता होते हैं। वे कहते हैं, "अच्छी चीज़ें मेरे लिए नहीं हैं। वे तो बग़ल वाली मिसेज़ जोन्स के लिए हैं।" देखिए, हर चीज़ आपको दी गई है। ईश्वर स्वयं आपके भीतर वास करता है। पूरा संसार आपका है। सूरज न्यायपूर्ण और अन्यायपूर्ण सभी पर चमकता है; बारिश अच्छे और बुरे दोनों तरह के लोगों पर होती है। गणितज्ञ हमें बताते हैं कि उष्ण कटिबंध में इतने सारे फल गिरते हैं कि सारी मानव जाति का पेट भर सकते हैं। वे ज़मीन पर गिरकर सड़ जाते हैं। आप रेगिस्तान में जाएँ और पानी डालें — यह किसी चीज़ को उगा देगा। आपके पास भारी दौलत वाला एक विचार हो सकता है, एक सृजनात्मक विचार। हाँ! यह आपके पास भी आएगा। लेकिन आपको क़ीमत चुकानी होगी: आपको इसे पहचानना होगा।

हो सकता है कि आप स्टेनोग्राफ़र हों, सेल्समैन हों, बिज़नेस मैनेजर हों, केमिस्ट हों या डॉक्टर हों। आप कह सकते हैं, "मेरे भीतर की असीम प्रज्ञा मेरे सामने सेवा करने के बेहतर तरीक़े उजागर करती है। ईश्वर के सृजनात्मक विचार मेरे भीतर प्रकट होते हैं। वे महान चीज़ें हासिल करने और मानवता की सेवा करने के नए और बेहतर तरीक़े मेरे सामने उजागर करते हैं।" नए विचार आपके पास आएँगे। हाँ, मौलिक विचार। जब आप इस तरह से प्रार्थना करेंगे, तो चमत्कार होने लगेंगे। याद रखें, आपको पहचानना होगा कि यह वहाँ पर है। आपको इसे पुकारना होगा। आपको इस पर विश्वास करना होगा।

कुछ साल पहले मैं अल्बर्टा, कनाडा में जैस्पर पार्क लॉज की सैर पर गया। यह बड़ी सुंदर जगह है। वेटर और वहाँ का सारा स्टाफ़ कनाडा के कॉलेजों से आया था। एक वेट्रेस के पास एक बहुत उलझन भरी समस्या थी। मैंने उसे सुझाव दिया कि रात को सोने से पहले वह अपना आग्रह अपने ज़्यादा गहरे मन तक पहुँचा दे। मैंने कहा, "आपको पहचानना होगा कि सिर्फ़ वही जवाब जानता है। विश्वास और समझ के साथ उसकी ओर जाएँ। जब आप ऐसा करती हैं, तो वह प्रतिक्रिया करेगा। मगर आपको वह क़ीमत चुकानी होगी।" क़ीमत है विश्वास और स्वीकृति, यह पहचानना कि यह वहाँ पर है। जब आप नल चालू करते हैं, तो आप पानी के आने की उम्मीद करते हैं, है ना? आप क़ीमत चुकाते हैं। आप विश्वास करते हैं कि पानी आएगा। फिर आप नल चालू करने के लिए अपनी अँगुलियों का इस्तेमाल करते हैं। उसने अपने ज़्यादा गहरे मन से इस तरह बात की: "मेरे सामने जवाब उजागर करें। मैं जानती हूँ कि सिर्फ़ आप ही जवाब जानते हैं।" इस प्रार्थना को लोरी की तरह दोहराते हुए वह नींद में चली गई।

अगले दिन उसे ओन्टेरियो से एक तार मिला, जिससे उसकी समस्या सुलझ गई। उसे जवाब के बारे में सोचकर क़ीमत चुकानी पड़ी थी, यह जानते हुए कि एक जवाब था। उसने अपने ज़्यादा गहरे मन पर ध्यान दिया और उसे अगली सुबह जवाब मिल गया।

कोई चीज़ है, जो आपको पहले करनी चाहिए और फिर जवाब मिल जाएगा। हाँ, ईश्वरीय उपस्थिति हमेशा सृष्टि को नियंत्रित कर रही है। यह ग्रहों की दिशा को मार्गदर्शन देती है। यह सूरज को चमकाती है। यह आपके शरीर में काम कर रही है। यह गहरी नींद में भी आपकी परवाह करती है। आपको कुछ करना होगा। आपको इसका इस्तेमाल शुरू करना होगा। इसे पुकारें और यह आप पर प्रतिक्रिया करेगी। अगर आप इसे नहीं पुकारते हैं, अगर आप इसे नहीं

पहचानते हैं, अगर आप इसमें विश्वास नहीं करते हैं, तो यह तो वैसा ही होगा जैसे यह वहाँ नहीं हो। क्योंकि ईश्वरीय उपस्थिति आपके लिए किसी दूसरे तरीक़े से नहीं, बल्कि आपके ज़रिये ही काम करेगी — आपके ख़ुद के विचार के ज़रिये, आपके ख़ुद के चित्रों के ज़रिये, आपके ख़ुद के विश्वासों के ज़रिये।

आपको बताया गया है, बुद्धिमत्ता पाएँ। सब कुछ के साथ समझ पाएँ। मिसाल के तौर पर, एक डॉक्टर के पास बुद्धिमत्ता होती है। बैरी पी. एक युवा इंटर्न था, जो सर्जन बनना चाहता था। लेकिन उसके सामने एक गंभीर समस्या थी। वह बहुत घबराता था — इस घबराहट से उसके हाथ काँपने लगते थे। उसने इससे उबरने का संकल्प लिया। अपने हाथों को स्थिर रखने के लिए वह पानी से भरा एक बर्तन हर दिन आधा घंटे तक सीढ़ियों के ऊपर-नीचे लाता, ले जाता था। जब कई सप्ताह गुज़र गए, तो हर दिन पहले से कम पानी छलकने लगा। हाथ को पूरी तरह स्थिर करने में छह महीने का समय लग गया। उसने क़ीमत चुकाई। बैरी एक उत्कृष्ट सर्जन बन गया, लेकिन इससे पहले उसे क़ीमत चुकानी पड़ी थी: ध्यान, लगन और निष्ठा। उस घबराहट से छुटकारा पाएँ। पूरी तरह से भरा पानी का एक गिलास लें, जिससे एक बूँद भी न छलकने पाए।

क्या आप कुछ समय बाद हार मान लेंगे? क्या आप बोर हो जाएँगे और कहेंगे, "ओह, मैं यह झंझट नहीं उठा सकता?" देखिए, आप जानते हैं, बैरी एक अच्छा सर्जन बनना चाहता था और उसे क़ीमत चुकानी थी। आप नहीं चाहते कि ऑपरेशन करते वक़्त आपका हाथ काँपे? आप एक ऐसा सर्जन चाहते हैं, जो संतुलित, शांत हो; और जो योग्य हो और जिसके पास बुद्धिमानी हो? बैरी एक योग्य नेत्र विशेषज्ञ बन गया। लेज़र बीम से वह एक-दो मिनट में रेटिना का उपचार कर देता है या फिर वह मोतियाबिंद को बाहर निकाल देता है। देखिए, वह सुयोग्य है। उसने ध्यान की क़ीमत चुकाई थी। वह संलग्न, मंत्रमुग्ध है, अध्ययन और अमल में डूबा हुआ है। अब वह एक महान सर्जन बन चुका है। उसे सऊदी अरब, इंग्लैंड, आयरलैंड और कई दूसरी जगहों पर बुलाया जाता है। आप इस बात से आश्वस्त रह सकते हैं कि उसे दौलत या पैसे के लिए प्रार्थना नहीं करनी पड़ती है। यह बस उसकी ओर अपने आप प्रवाहित होता है। अब उसके पास कौशल है, उसके पास बुद्धिमत्ता है और उसके पास हस्त-कौशल भी है।

आपके सामने कोई मशीनी समस्या आ सकती है, जिसे आप नहीं सुलझा सकते। तब आप किसी योग्य मैकेनिक को बुलाते हैं, जिसके पास उस ख़ास मशीन से संबंधित बुद्धिमत्ता है। वह समस्या को देखता है, इसे तुरंत पकड़ लेता है और समस्या को सुलझा देता है। उसने यंत्रविज्ञान का अध्ययन किया है, शायद वह कारों से और उनके पुर्जों से प्रेम करता है, उसने ध्यान दिया है, अध्ययन किया है, ख़ुद को झोंका है, शायद कार के पुर्जे अलग-अलग किए हैं और सारी तकनीकों के बारे में पढ़ा है और अब वह बहुत योग्य बन चुका है।

सर्वव्यापी जीवन सिद्धांत इस समय आपके भीतर इच्छा के रूप में बोल रहा है, क्योंकि ईश्वर इंसानों से इच्छा के ज़रिये बोलता है। आप इस समय जो हैं, उससे ज़्यादा महान बनने की इच्छा करते हैं। आप स्वास्थ्य, प्रेम, शांति, सौहार्द, प्रचुरता और सुरक्षा की इच्छा करते हैं। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप असामान्य हैं। आपकी चरम इच्छा ईश्वर के साथ एक होने का अहसास पाना है, जिसे प्रेम का योग कहा जाता है। यह जीवन सिद्धांत आपके सपने साकार करने का रास्ता आपके सामने उजागर कर देगा। यह जानता है कि इसे कैसे साकार करना है,

लेकिन आपको अपने दिलोदिमाग़ को पूरा खोलना होगा और पूरे दिल से उस एक का उपहार पाना होगा, जो सदा मौजूद है।

अपने मन से सारे पूर्वाग्रहों, झूठे विश्वासों और अंधविश्वासों को निकाल दें। यह अहसास करें कि आपके पुकारने से पहले ईश्वर जवाब देगा; आपकी बात ख़त्म होने से पहले ही वह सुन लेगा। इसका मतलब यह है कि आपको अपने मन और विचार को व्यवस्थित करना होगा और उस युगों पुराने सत्य की पुष्टि करनी होगी कि जो भी आप चाह रहे हैं, वह असीमित मन में पहले से मौजूद है। यह पहले से वहाँ पर है। आपको तो बस मानसिक और भावनात्मक रूप से अपनी इच्छा, विचार, योजना या उद्देश्य के साथ तादात्म्य करना है, यह अहसास रखना है कि यह आपके हाथ या हृदय जितना वास्तविक है।

मिसाल के तौर पर, हो सकता है कि आपके मन में एक नया आविष्कार हो। आपने इसे काग़ज़ पर नहीं उतारा है, आपने कोई चित्र नहीं खींचा है। एक अच्छा संवेदनशील, अतीन्द्रिय संवेदी या माध्यम या अतीन्द्रिय दृष्टा उस आविष्कार का वर्णन कर सकता है। क्यों? क्योंकि जब आप संवेदनशील या अतीन्द्रिय व्यक्ति के साथ तालमेल में हैं, तो यह पहले से ही आपके मन में है — वे इसका वर्णन कर सकते हैं। क्यों? क्योंकि यह पहले से वहाँ पर है। यह इसकी वास्तविकता है। जब आप पृथ्वी पर इस मान्यता में चलते हैं कि आपकी प्रार्थना का जवाब मिलेगा, तो आपको प्रकट संसार में इसकी वास्तविकता का अनुभव करने की ख़ुशी मिलनी चाहिए।

आविष्कारक के हिस्से के रूप में आविष्कार उतना ही वास्तविक है, जितना कि इसका वस्तुपरक हिस्सा। इसीलिए कल्पना में मौजूद आपकी इच्छा या नया प्रोजेक्ट भी वास्तविक है। वह नई पुस्तक, वह नया नाटक — यह कहाँ है? यह आपके मन में है। यह वास्तविक है। इसका मन के दूसरे आयाम में रूप, आकार और सार है।

मैंने एक लड़की को जैस्पर पार्क लॉज में नाचते देखा। साफ़ नज़र आ रहा था कि आत्मा की बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, व्यवस्था और लय उसमें प्रवाहित हो रही थीं। उसने कहा कि वह ईश्वर के लिए नृत्य कर रही है और यही उसके शब्द थे। उसे अच्छे प्रदर्शन के लिए ज़बर्दस्त तालियाँ मिलीं। यह बुद्धिमानी है, है ना? आप सौंदर्य, व्यवस्था, सुडौलपन, अनुपात, लालित्य, आकर्षण देखते हैं। यह सब बुद्धिमत्ता है। वह प्रशंसा की हक़दार थी। उसने शालीनता के साथ, भव्यता के साथ और लय के साथ नृत्य किया था। उसने मुझे बताया कि उसकी टीचर ने उससे कहा था कि वह हमेशा प्रार्थना करे कि ईश्वर उसके ज़रिये नाच रहा है और ईश्वर का सौंदर्य, अनुपात व बुद्धिमत्ता हमेशा उसके माध्यम से कार्य करेगी।

संघर्ष या मेहनत जवाब नहीं है। असीमित के प्रति सम्मान, असीमित शक्ति से संपर्क — यह जवाब है।

ब्रिटिश पत्रिका साइंस ऑफ़ थॉट रिव्यू के संपादक हेनरी हैनलॉन की आर्थिक स्थिति ख़राब थी। एक दिन बर्फ़ गिरते वक़्त घर लौटते समय वे अचानक जागरूक हुए कि दौलत, प्रेम और ईश्वर की उदारता पूरे लंदन में गिरने वाले अरबों बर्फ़ के कणों जैसी थी। उन्होंने कहा, “मैंने उसी समय ईश्वर की असीमित अमीरी के प्रति अपने मन और दिल को खोल दिया। मैं जान गया कि ईश्वर की दौलत, प्रेम और प्रेरणा मेरे दिलोदिमाग़ में बर्फ़ के उन कणों की तरह गिर रही थी, जो

पूरे लंदन में गिर रहे थे।”

उस पल के बाद दौलत उनकी तरफ़ खुलकर, आनंद से और अंतहीन रूप से प्रवाहित होने लगी। बाद में उन्हें दौलत की कभी कमी नहीं रही। उन्होंने अपना मन बदल लिया — उनके मन में हुआ परिवर्तन उनकी वास्तविकता बन गया। लंदन, लंदन का कोहरा, बर्फ़ और उनके परिवेश की कोई चीज़ नहीं बदली थी। ऑफ़िस वही था, हर चीज़ वही थी। यह तो वे थे, जो बदल गए थे। वे अंदर से बदल गए थे और जीवन की अमीरी का एक औज़ार बन गए थे — आध्यात्मिक रूप से, मानसिक रूप से और हर तरीक़े से।

कुछ नहीं के बदले कुछ हासिल करने जैसी कोई चीज़ नहीं है। आपको हमेशा क़ीमत चुकानी होती है। ज़ाहिर है, क़ीमत ध्यान होती है। संगीत या विद्युत या अपने कारोबार या अपनी नौकरी या किसी भी चीज़ पर ध्यान दें और इससे प्रेम करें। यह आपके सामने अपने रहस्य उजागर कर देगी। “सत्य से प्रेम करें।” अगर आपको भूख और प्यास है, तो सारे आंतरिक अर्थ आपको दे दिए जाएँगे, चाहे वे आपको भीतर से दिए जाएँ या किसी शिक्षक के ज़रिये। इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है? क्योंकि सारी बुद्धिमत्ता आपके भीतर है। वह बुद्धिमत्ता आप तक पहुँचा दी जाएगी, जब आप यह अहसास करते हैं कि असीमित आपके भीतर है।

बुद्धिमत्ता मुख्य चीज़ है। बुद्धिमत्ता आप में काम कर रहे ईश्वर की उपस्थिति और शक्ति है। हर चीज़ पाने में आपको समझ पाने को कहा जाता है। अपने सारे तरीक़ों में ईश्वर को पहचानें और वह आपके रास्ते स्पष्ट कर देगा। उसमें विश्वास करें, उस पर विश्वास करें और वह इसे साकार कर देगा।

समाचारपत्र में मॉड टोल के बारे में एक रोचक लेख था, जो 103 साल की उम्र में भी सक्रिय जीवन जी रही थीं। इसमें लिखा गया था: “वे अपने कोक की बोतल के चश्मे से झाँकती हैं, छोटे, धीमे क़ दमों से अपने गर्व और आनंद की ओर चलती हैं।” उनकी उम्र के ज़्यादातर लोगों के लिए गर्व और आनंद का मतलब परनाती या परपोते होगा या शायद इससे भी आगे की पीढ़ी। लेकिन इस 103 साल की महिला के लिए उनके जीवन की सबसे शानदार चीज़ उनकी कार है, बिजली की कार। वे रिटायरमेंट की उम्र के बाद 38 साल जी चुकी हैं, इस तथ्य के बावजूद उन्होंने लगातार ग्यारहवें साल अपने कैलिफ़ोर्निया ड्राइवर लाइसेंस का टेस्ट पास कर लिया है। मॉड टोल अब राज्य की दस सबसे उम्रदराज़ ड्राइवरों में से एक हैं — लेकिन यह उनकी कहानी का बस एक छोटा-सा हिस्सा है।

वे 103 साल की उम्र में उतनी ही प्रसन्न रहती हैं, जितना कि ज़्यादातर लोग 65 की उम्र में होते हैं। वे सप्ताह में सातों दिन एक होम मॉर्टगेज कंपनी के भुगतानों को सँभालती हैं। क्या यह अद्भुत नहीं है? वे कहती हैं, “मैं कभी रिटायर नहीं होऊँगी। क्योंकि रिटायर होने पर मैं भूखों मर जाऊँगी। वे सामाजिक सुरक्षा में इतना पर्याप्त पैसा नहीं देते हैं कि मुझ जैसा बूढ़ा व्यक्ति भी इन दिनों पर्याप्त खा सके। मैं जैसा चाहती हूँ, वैसा जी सकती हूँ और मैं जो चीज़ें करना चाहती हूँ, वह करती हूँ, बिना हमेशा यह बताए कि क्या करना है।” मिसेज़ टोल इंगलवुड अपार्टमेंट हाउस में रहती हैं। उनकी सबसे अच्छी सहेली और लगातार साथी इडा ग्लीसन पास के अपार्टमेंट में रहती हैं। मिसेज़ ग्लीसन भी एक और “वरिष्ठ” हैं। उनकी उम्र केवल 93 साल है। वे हर दिन इंगलवुड की भीड़ भरी सड़कों पर कार में जाती हैं, कभी बाज़ार के लिए, बैंक के लिए या

स्थानीय पार्क की ओर, जहाँ वे किसी छायादार पेड़ के नीचे ताश खेलकर समय बिताना पसंद करती हैं।

मिसेज़ टोल ने 1965 में अपने पति की मृत्यु के बाद कार चलाना शुरू किया। तब से वे और इडा ग्लीसन अपने दम पर हैं। मिसेज़ टोल ने कहा कि उनकी स्थिति आदर्श है। उन्होंने कहा, "मैं कोई अहसान नहीं लेती। मैं जो पाती हूँ, हर चीज़ कमाती हूँ। मैं हमेशा अपने ख़ुद के रास्ते पर चली हूँ और मैं हमेशा चलूँगी।"

लेकिन मिसेज़ टोल अपनी कार से सबसे ज़्यादा प्रेम करती हैं — चमकदार, भूरी-सफ़ेद, बिजली से चलने वाली दो सीटों की कार। यह एक घंटे में सिर्फ़ बीस मील की गति से चलती है, लेकिन यह इससे ज़्यादा तेज़ लगती है। वे सावधानी से उस कवर को हटाती हैं, जिसने चार साल से पेंट को नया रखा है। इस काम में लगभग दस मिनट लग जाते हैं। फिर वे दरवाज़े का ताला खोलने के लिए तैयार हो जाती हैं। एक बार फिर, इस बात की पूरी सावधानी रखी जाती है कि पेंट पर खरोंच न आए। अंततः वे अंदर बैठती हैं और मिसेज़ ग्लीसन उनके पास बैठ जाती हैं। फिर एक हल्की आवाज़ के साथ मिसेज़ टोल और मिसेज़ ग्लीसन एक और व्यस्त दिन के लिए रवाना हो जाती हैं।

यह रोचक है, है ना? वे जीवन से प्रेम करती हैं। उन्होंने क़ीमत चुका दी है। वे जीवन से प्रेम करती हैं; उनकी जीवन में दिलचस्पी है। वे दान या ऐसी किसी चीज़ में दिलचस्पी नहीं रखती हैं। वे मानव जाति के प्रति योगदान देने में रुचि रखती हैं। उन्हें जीवन से बहुत प्रेम है। यह रोचक है। शांति, हास्यबोध और हँसी — यही आपको युवा रखता है।

आप जानते हैं, धैर्य कभी बूढ़ा नहीं होता है, प्रेम कभी बूढ़ा नहीं होता है, प्रसन्नता कभी बूढ़ी नहीं होती है, सौहार्द कभी बूढ़ा नहीं होता है, हँसी कभी बूढ़ी नहीं होती है, सद्भाव कभी बूढ़ा नहीं होता है, नम्रता और दयालुता कभी बूढ़े नहीं होते हैं, न ही करुणा और समझ होते हैं। ये अमर हैं, है ना? इसी तरह जीवन सिद्धांत भी कभी बूढ़ा नहीं होता है। यह कभी पैदा नहीं हुआ था, यह कभी नहीं मरेगा, पानी इसे गीला नहीं करता है और आग इसे नहीं जलाती है और हवा इसे नहीं हिलाती है।

तो आपके भीतर का जीवन सिद्धांत अमर है। हम बूढ़े तब होते हैं, जब हम कटु होते हैं, जब हम द्वेषपूर्ण, नफ़रत से भरे होते हैं, जब हम आत्म-निंदा और दुर्भावना से भरे होते हैं। ये भावनाएँ और विचार हमारी आत्मा का क्षय करते हैं और फिर हम बूढ़े हो जाते हैं, चाहे हमारी उम्र कितनी भी हो।

यहाँ एक इंसान है, जिसने क़ीमत चुकाई थी। हाँ, भूख और प्यास — और भारी रुचि भी। एक झलक ने भाप इंजन के आविष्कारक जेम्स वाट को एक ऐसा विचार दे दिया, जिसने संसार को बदल दिया। "इंजन मुझे बाहर से दिया गया था," जेम्स वाट ने कहा। "मैंने इसे नहीं बनाया था। मैंने तो बस इसे स्वीकार किया था।" वाट का जन्म 1736 में स्कॉटलैंड में हुआ था और उनके पास बहुत कम औपचारिक शिक्षा थी। उन्होंने ग्लासगो में मरम्मत करके अपनी आजीविका कमाई। वाट ने एक बार कहा था, "मैं लगभग हर तरह की मशीनी चीज़ की मरम्मत कर सकता था। 1764 में एक दिन एक ग्राहक मेरी दुकान में एक ख़राब इंजन लेकर आया। इस एक घटना ने मेरी ज़िंदगी पूरी तरह बदल दी। यह एक न्यूकॉमन इंजन था, जो बहुत ही अनगढ़

भाप का इंजन था। कभी-कभार खदानों में पानी बाहर उलीचने के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन यह कभी बहुत कार्यकुशल नहीं था, क्योंकि यह बहुत ऊर्जा खाता था और बहुत कम काम करता था।" जब वाट इंजन को दुरुस्त कर रहे थे, तो उनके मन में एक बिलकुल नई तरह के भाप इंजन का विचार आया, जो न्यूकॉमन इंजन के सारे दोषों से मुक्त हो। उस वक़्त, उनके पास अपने विचार को वास्तविकता में बदलने का ज्ञान नहीं था। फिर मई 1766 में एक रविवार की दोपहर जब वे इंजन के बारे में सोचते हुए ग्लासगो पार्क में जा रहे थे, तो उनके मन में एक झलक आई।

"झलक में मैंने भाप के इंजन को पूरे विस्तार से देखा। ज़्यादा आगे बढ़ने से पहले ही पूरी चीज़ मेरे दिमाग़ में व्यवस्थित हो चुकी थी।" अगली सुबह वे काम में जुट गए। बारह घंटों से भी कम समय में उन्होंने एक नया इंजन बना लिया, जो कुशलता से भाप की शक्ति का दोहन कर सकता था। उन्होंने 1781 में विचार का पेटेंट ले लिया और 1782 में सुधार के अतिरिक्त पेटेंट हासिल किए। 1782 के बाद से इसमें बहुत कम परिवर्तन हुए हैं।

वाट के आविष्कार को जल्दी ही फ़ैक्ट्रियों में पशुओं और इंसानों की जगह काम पर लगा दिया गया और इसने औद्योगिक क्रांति की शुरुआत को सक्रिय कर दिया। इसीलिए मैंने आपसे कहा था कि आपके पास भारी दौलत वाला विचार हो सकता है। आपके पास ऐसा विचार हो सकता है, जो हज़ारों लोगों को काम पर लगा दे। जेम्स वाट ने क़ीमत चुकाई थी। उन्होंने जो क़ीमत चुकाई थी, वह थी ध्यान, रुचि और निष्ठा। इससे एक ऐसा इंजन बनाने के उनके विचार को वास्तविक बनाने में मदद मिली, जो मानव जाति की सेवा करे।

ऐसे बहुत से गुण हैं, जो जीवन में व्यक्तिगत सफलता हासिल करने में योगदान देते हैं। इनमें अच्छे माता-पिता के घर पैदा होना या किसी लाभकारी देश या सामाजिक वर्ग में पैदा होना या कुदरती शारीरिक और मानसिक लाभों के साथ पैदा होना शामिल है — लेकिन ये पूरी तरह से हमारे नियंत्रण के बाहर हैं। लेकिन जो गुण सचमुच मायने रखते हैं, वही हैं जिनके बारे में हम सचमुच कुछ कर सकते हैं। इनमें से कोई भी गुण लगन जितना महत्त्वपूर्ण नहीं है। आप लाइब्रेरी के शेल्फ़ से किसी भी पुरुष या महिला की जीवनी उठा लें, जिसने मानव जाति के प्रति स्थायी योगदान दिया है। कुछ बेहद प्रतिभाशाली थे; बाक़ी असाधारण रूप से लगनशील थे। आइए अल्बर्ट आइंस्टाइन को ही देख लें। ग्रेड स्कूल में वे इतने असफल विद्यार्थी थे कि जब उनके पिता ने हेडमास्टर से पूछा कि अल्बर्ट को कौन सा पेशा चुनना चाहिए, तो हेडमास्टर ने जवाब दिया था, "इससे दरअसल कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है, क्योंकि वह कभी किसी चीज़ में सफल नहीं हो पाएगा।" आइंस्टाइन 20 वीं सदी के अव्वल ज्ञानियों में से एक बने और शायद सारे समय के महानतम भौतिकशास्त्री भी। यह किसी प्रतिभा के बजाय संकल्पवान लगन की बदौलत हुआ।

ऐसे ही कई प्रकरणों का उदाहरण दिया जा सकता है। स्कूल में विन्स्टन चर्चिल बहुत मंदबुद्धि विद्यार्थी थे। सरकारी कर्मचारी के रूप में उनके करियर को थोड़ा बोझिल माना जाता था। द्वितीय विश्व युद्ध के संकट तक वे अपने ज़्यादातर स्वप्नों और लक्ष्यों को हासिल करने में नाकाम रहे थे। लेकिन सतर्क और सजीव रहकर वे 66 साल की उम्र में नेतृत्व के दुर्लभ अवसर के लिए तैयार थे। जिस समय ज़्यादातर लोग रिटायर होते हैं, उस समय वे 1941 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री बन गए। वे न सिर्फ़ अपने ख़ुद के देशवासियों को, बल्कि पूरे पाश्चात्य जगत को भी

एकजुट करने में सक्षम थे। उनकी अटल लगन की बदौलत ही उन्हें बीसवीं सदी के महानतम राजनेता के रूप में जाना जाता है।

उन्होंने क़ीमत चुकाई थी, है ना? ध्यान, निष्ठा, वफ़ादारी, लगन, चिपके रहना, नहीं सुनने के लिए तैयार न होना, हमेशा यह अहसास करना कि एक शक्ति है, जो प्रतिक्रिया करती है।

अमेरिका के महानतम राजनेता की कहानी भी आसान सफलता के बजाय प्रबल लगन की कहानी है। वे इक्कीस साल की उम्र में कारोबार में असफल हुए। 1833 में राज्य विधानसभा का चुनाव हारे। 1834 में उन्हें राज्य विधानसभा में चुन लिया गया। 1835 में उनकी प्रेयसी की मृत्यु हो गई। 1836 में उन्हें नर्वस ब्रेकडाउन हुआ। 1838 में वे स्पीकर पद का चुनाव हार गए। 1840 में उन्हें निर्वाचक मंडल के लिए पराजित होना पड़ा। 1843 में वे संसद का चुनाव हारे। आख़िरकार 1846 में उन्हें संसद में चुन लिया गया, लेकिन 1848 में वे फिर से हार गए। वे 1855 में सीनेट का चुनाव हारे, 1856 में उपराष्ट्रपति का चुनाव हारे और 1858 में एक बार फिर सीनेट का चुनाव हारे। आख़िरकार, 1860 में उन्हें अमेरिका का राष्ट्रपति चुन लिया गया। ये अब्राहम लिंकन के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण मोड़ थे।

फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट, जिन्होंने किसी भी अन्य राष्ट्रपति के मुक़ाबले अमेरिका पर सबसे ज़्यादा लंबे समय तक शासन किया, पोलियो से गंभीर रूप से अपाहिज थे। उन्होंने एक लंबी मंदी और भीषण युद्ध के दौरान एक व्हील चेयर से काम किया। उनकी महान शक्ति सार्वजनिक संभाषण का शक्तिशाली इस्तेमाल था, ख़ास तौर पर एक ऐसे समय में जब रेडियो ने सभी अमेरिकी जनसंख्या तक सीधी पहुँच दे दी थी। ये मशहूर अलाव के पास की बातचीतें अनौपचारिक और सहज लगती थीं, लेकिन हाइड पार्क, न्यू यॉर्क में एक काँच का केस रूज़वेल्ट के एक मशहूर भाषण के नौ ड्राफ़्ट दिखाता है। पहला कच्चा था, दूसरा बेहतर था, तीसरा और भी ज़्यादा बेहतर था। आठवें ड्राफ़्ट में केवल एक ही शब्द बदला गया था, जिसके बाद नवाँ और अंतिम ड्राफ़्ट तैयार हुआ था। माइकलएंजेलो ने कहा था, "पूर्णता छोटी-छोटी चीज़ों से आती है। लेकिन पूर्णता अपने आप में छोटी चीज़ नहीं है।"

शायद आप सोच रहे होंगे कि इन अलाव के पास की बातचीतों में वे बिना तैयारी के बोल रहे थे। नहीं! उन घंटों, शायद दिनों के बारे में सोचें, उन विशेषज्ञों के बारे में सोचें, जिन्होंने उन्हें देने के लिए सारा डाटा और जानकारी एकत्रित की, जिसके बाद भाषण तैयार हुआ। निश्चित रूप से वे इसे बार-बार, बारंबार देखते थे। यह पूर्णता है, है ना? पूर्णता कोई छोटी चीज़ नहीं है। निश्चित रूप से उनके भाषणों का ज़बर्दस्त असर होता था।

चर्चिल भी मनमोहक थे, जो पूरी तरह से बिना तैयारी के बोलते नज़र आते थे। लेकिन जैसा उनके एक जीवनीकार ने सही कहा है, सर विन्स्टन चर्चिल ने अपना ज़्यादातर जीवन अपने स्वतःस्फूर्त भाषणों पर मेहनत करने में बिताया था। एक बार मैंने उनका भाषण सुना था। आप सोचेंगे कि वे बिना तैयारी के बोल रहे थे — मन में अनायास आने वाले विचार। नहीं! उसके पीछे कई दिनों और शायद हफ़्तों की तैयारी थी। हमें बताया गया है कि वे फ़र्श पर चहलक़दमी करते थे और ख़ुद से बातें करते थे, घंटों तक इसे आदर्श बनाते रहते थे।

जुटे रहें। हाँ! संसार में कोई भी चीज़ लगन की जगह नहीं ले सकती। प्रतिभा नहीं। उन प्रतिभाशाली लोगों से ज़्यादा आम कुछ नहीं है, जो असफल हैं। योग्यता नहीं। अपुरस्कृत

योग्यता इतनी आम है कि लगभग कहावत बन चुकी है। अकेली शिक्षा नहीं। संसार शिक्षित आवाराओं से भरा हुआ है। लगन और संकल्प ही सर्वशक्तिमान हैं।

लेकिन यह याद दिलाना महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने क़ीमत चुकाई थी। उन्हें क़ीमत चुकानी ही थी: लगन, जुटे रहना, संकल्प और ध्यान। क्योंकि ध्यान जीवन की कुंजी है। यह सफलता की कुंजी है, है ना? यह आध्यात्मिक जागरूकता है। जब आप इस ईश्वरीय उपस्थिति को अपने जीवन में सबसे पहले रखते हैं, तो आपको इसका अहसास होगा — सर्वोच्च और सर्वशक्तिमान, यह एकमात्र शक्ति, कारण और तत्व है। अपनी सारी वफ़ादारी और निष्ठा इसे दें। पहचानें कि यह आपका मार्गदर्शक है, सलाहकार है, आपकी मुश्किलें दूर करने वाला है, आपका समायोजक है, आपको वेतन देने वाला है और सारी नियामतों का स्रोत है। दूसरी कोई शक्ति नहीं है। उन चमत्कारों के बारे में सोचें, जो आपके जीवन में होंगे, जब आप उस महान सत्य के प्रति अपना ध्यान, अपनी निष्ठा और अपनी वफ़ादारी देते हैं। आप लाठियों, पत्थरों और निर्मित चीज़ों को, स्त्री-पुरुषों और मौसम और बालू और इन सारी दूसरी चीज़ों को शक्ति नहीं देते हैं — देखें कि आपके कितने सारे देवी-देवता हैं। एक परिस्थिति दूसरी परिस्थिति का निर्माण नहीं करती है। एक स्थिति दूसरी स्थिति का निर्माण नहीं करती है। इसका मतलब यह है कि आप क़ीमत नहीं चुकाना चाहते हैं, और क़ीमत है एक शक्ति, एक उपस्थिति, एक कारण और एक तत्व — और दूसरा कोई नहीं है। यह महान व्याख्या है। यह अंतिम शब्द है। जब आप इसके प्रति जाग्रत हो जाते हैं, तो आप सत्य के वास्तविक विद्यार्थी हैं। तभी और केवल तभी आप सत्य के विद्यार्थी हैं।

अब अपने साथ ईमानदार हो जाएँ। ख़ुद से यह सवाल पूछें:

“क्या मैं सचमुच अपने हृदय में यक़ीन करता हूँ कि केवल एक ही उपस्थिति है — मेरे भीतर की जीवंत आत्मा? क्या मैं यक़ीन करता हूँ कि यह सर्वशक्तिमान है, सर्वव्यापी है, सर्वज्ञ है — कि यही है, दूसरा कोई नहीं है? क्या मैं भौतिक संसार या किसी निर्मित चीज़ को शक्ति देता हूँ? क्या मैं तारों, सूरज और चंद्रमा, मौसम, स्त्री-पुरुषों, लाठियों और पत्थरों, कर्म, पिछले जीवन या इसी तरह की दूसरी चीज़ों या काले जादू या बुरी आत्माओं या शैतानों को शक्ति देता हूँ?”

ऐसी कोई चीज़ें नहीं हैं। किसी शैतान के लिए कोई जगह नहीं है। सब में, सब पर, सबके अंदर, पूरी जगह मैं हूँ और दूसरा कोई नहीं है। सूरज के उगने से लेकर उसके डूबने तक दूसरा कोई नहीं है।

क्या आप यह क़ीमत चुकाने को तैयार हैं? आपको यह क़ीमत चुकानी होगी। सिर्फ़ तभी आप प्रबुद्ध बन सकते हैं। तब आप स्वतंत्र हैं। केवल एक ही उपस्थिति और एक ही शक्ति है, एक ही कारण है और एक ही तत्व है।

इस एक निष्कर्ष पर पहुँचना अद्भुत होगा। जब जज ट्रोवर्ड से पूछा गया: “अगर सभी काला जादू करने वाले जादूगर आपके ख़िलाफ़ प्रार्थना कर रहे हों, आपके मौत के लिए टोना-टोटका कर रहे हों, शाप दे रहे हों और आपत्तिजनक शब्द बोल रहे हों, तो आप क्या करेंगे?” ट्रोवर्ड ने प्रतिक्रिया की, “मैं कहूँगा भाड़ में जाओ।”

क्यों? क्योंकि वे जानते थे कि शक्ति कहाँ थी। उनके पास कोई शक्ति नहीं थी। अगर आप

इसे स्वीकार करते हैं, तो सुझाव में कुछ शक्ति तो होती है, लेकिन यह शक्ति नहीं है। शक्ति वह एक ही शक्ति है, जो एकता के रूप में चल रही है। इसमें कोई विभाजन या युद्ध नहीं है। आत्मा ख़ुद से कैसे लड़ सकती है। संसार के किसी हिस्से में आत्मा का एक हिस्सा आत्मा के दूसरे हिस्से से कैसे लड़ सकता है? मित्रों, यह सबसे महान सच्चाई है।

"मैं, मालिक, एक ईर्ष्यालु ईश्वर हूँ।" इस अर्थ में ईर्ष्यालु का मतलब है कि आपको दूसरे देवी-देवताओं को मान्यता नहीं देनी चाहिए। मानवीय दृष्टिकोण से ईर्ष्यालु नहीं। क्योंकि जिस पल आप किसी दूसरी निर्मित चीज़ को शक्ति देते हैं, उसी पल आपका मन विभाजित हो जाता है। आपकी मानसिकता दोहरी हो जाती है — आप अपने सारे तौर-तरीक़ों में अस्थिर हो जाते हैं। दोहरी मानसिकता वाले लोग इससे कुछ नहीं माँग सकते। उस महिला की तरह जिसका ज़िक्र इस अध्याय में पहले किया गया था, जो अपनी बीमारी का दोष डेनवर के मौसम, जीन्स और क्रोमोसोम, आनुवंशिकता, सूरज को और हर चीज़ को दे रही थी। लेकिन कारण सारे समय उसके भीतर था। उसने क़ीमत चुकाना सीखा और उसका उपचार हो गया।

मैंने एक डॉक्टर के बारे में एक लेख पढ़ा था, जिसका एक अपाहिज करने वाले रोग से उपचार हो गया। लेख में लिखा था: "डॉक्टर फ़िल माइल्स पहले तो अलौकिक उपचार के बारे में संदेह करते थे, लेकिन अब नहीं करते, क्योंकि जब एक विचित्र रोग ने उनके शरीर पर आक्रमण किया और उनके अंगों को अपाहिज कर दिया, तो आधुनिक चिकित्सा ने नहीं, बल्कि आस्था ने उनका उपचार किया।" अल पासो, टैक्सस के चिकित्सक ने घोषणा की, "यह एक चमत्कार था।" अपनी आँखों में चमक के साथ उन्होंने कहा, "इसने मुझे नया जीवन दिया है। मैं इस बात का चलता-फिरता, जीता-जागता और हँसता हुआ प्रमाण हूँ कि एक उपचारक शक्ति है, जो इस धरती के किसी भी इंसान से कहीं ज़्यादा शक्तिशाली है।" सात साल तक डॉ. माइल्स इस अजीब रोग के शिकार रहे, जिससे उनके हाथ-पैर अकड़ जाते थे और मुड़कर कठोर हो जाते थे। डॉ. माइल्स पहले प्रतिष्ठित वाल्टर रीड मेडिकल सेंटर के स्टाफ़ में थे। उन्होंने अमेरिका के कुछ सबसे अच्छे न्यूरोलॉजिस्ट्स को दिखाया, लेकिन वे भी उनकी बीमारी को नहीं पकड़ पाए। आख़िरकार वे बिस्तर पर पड़ गए और हर घंटे उनकी हालत बदतर होती गई। तब निराश युवा डॉक्टर हताशा में एकमात्र बची आशा की ओर मुड़े — आस्था, ईश्वर में आस्था। उन्होंने एक पड़ोसी से आकर उपचार की प्रार्थना में मदद करने को कहा। डॉक्टर उस अविश्वसनीय दिन को कभी नहीं भूल पाएँगे — हर पल, हर घटना उनकी स्मृति में अंकित है।

वे कहते हैं, "उस प्रार्थना के शब्द बोलते वक़्त मैं बुरी तरह सुबक रहा था। जैसे ही आख़िरी शब्द मेरे होंठों से निकले, तो मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि मेरे हाथ, जो दो दिनों से भिंचे हुए थे, अचानक खुलने लगे। एक पल बाद मेरे पैर की कठोर मांसपेशियाँ ढीली होने लगीं। मुझे अहसास हुआ कि मैं पराभौतिक की शक्तियों का साक्षी हूँ।" उन्होंने कहा कि दो ही दिनों में वे अपने पैरों पर खड़े हो गए और आज दो साल से ज़्यादा समय बीतने के बाद भी वे स्वस्थ हैं और अल पासो, टैक्सस में विलियम ब्यूमॉन्ट आर्मी मेडिकल सेंटर में स्त्री रोग विशेषज्ञ के काम पर दोबारा लौट आए। छत्तीस वर्षीय डॉ. माइल्स ने कहा कि अज्ञात रोग ने 1965 में बिना किसी चेतावनी के उन पर आक्रमण कर दिया था। "देश के सर्वश्रेष्ठ न्यूरोलॉजिस्ट्स ने मेरी जाँच की, लेकिन वे मेरे रोग को नहीं पकड़ पाए। अपने दिल में मैं जानता था कि मैं बहुल-कठोरता के

किसी रोग का शिकार हो गया था।"

देखिए, वे एक ऐसे इंसान थे, जिन्होंने क़ीमत चुकाई। उन्होंने हर चीज़ आज़माई थी। फिर उन्होंने उस ईश्वरीय उपस्थिति के सामने समर्पण कर दिया, जिसने उन्हें बनाया था, जिसने उन्हें गढ़ा था, जो सारी चीज़ें जानती है। उन्होंने एक उत्कट, प्रभावी प्रार्थना की। उन्होंने अपने पड़ोसी को बुलाया। उन्होंने मिलकर प्रार्थना की। यह कोई सामान्य प्रार्थना भर नहीं थी, बल्कि एक पूर्ण समर्पण था, अपने दिल में उस महान सत्य को पहचानना था। प्रार्थना करते वक़्त वे सुबक रहे थे। इसमें कुछ ग़लत नहीं है। इसका मतलब विनम्रता है। इसका मतलब पूर्ण समर्पण है। कहें, "मैं यह पूरी चीज़ उस पर छोड़ रहा हूँ, जो है, जो सब कुछ जानता है और सब कुछ देखता है।"

क्या आप यह कहने जा रहे हैं: यह मेरे लिए मुश्किल है? क्या ईश्वर का हाथ इतना छोटा हो गया है कि वह नहीं बचा सकता? यह अहसास करें कि क़ीमत हर एक को चुकानी होती है और वह क़ीमत है ध्यान, पहचानना, स्वीकार करना और विश्वास। आप भी क़ीमत चुका सकते हैं। आपको तो बस उसे पुकारना है; वह जवाब देता है। यह अव्यक्तिगत है, इसमें कोई पक्षपात या भेदभाव नहीं है।

आइए, इन महान सत्यों पर विचार करते हैं। लेकिन मेरा ईश्वर अपनी अमीरी और भव्यता के अनुरूप आपकी सारी ज़रूरतों को पूरा करेगा। शांति और विश्वास में आपकी शक्ति होगी। जो ईश्वर हमारे आनंद के लिए सारी चीज़ें प्रचुरता में देता है। लेकिन ईश्वर के साथ सारी चीज़ें संभव हैं।

"उनके पुकारने से पहले मैं जवाब दूँगा; जब वे बोल रहे होंगे, तभी मैं सुन लूँगा। तुम्हारी आस्था के अनुरूप तुम्हारे साथ किया जाता है। अगर तुम विश्वास कर सको, तो सारी चीज़ें उस व्यक्ति के लिए संभव हैं, जो विश्वास करता है। वह मुझे बुलाएगा; मैं उसे जवाब दूँगा। मैं मुश्किल में उसके साथ रहूँगा; मैं उसे स्वतंत्र करूँगा और सम्मानित करूँगा। मालिक मेरा जीवन और मेरी मुक्ति है; मुझे किसका डर होगा? मालिक मेरे जीवन की शक्ति है; मुझे किससे डर लगेगा? आपके बीच में ईश्वर इस समय आपको मार्गदर्शन दे रहा है।"

सार

कोई भी चीज़ मुफ़्त में नहीं मिलती है। यदि आप दौलतमंद बनना चाहते हैं, तो आपको इसकी क़ीमत चुकानी होगी। अगर आप सफल होना चाहते हैं, तो उसकी भी एक क़ीमत है। आप जिसकी भी इच्छा करते हैं, उसके प्रति आपको ध्यान, समर्पण, और वफ़ादारी देनी होगी। फिर आपको एक प्रतिक्रिया मिलेगी। क़ीमत है पहचानना, क़ीमत है विश्वास। हमेशा एक क़ीमत चुकानी होती है। कोई भी चीज़ मुफ़्त में नहीं मिलती है।

किसी भी विषय के प्रति ध्यान दें, अपना समर्पण दें और अपनी निष्ठा दें और यह आपके सामने अपने रहस्य खोल देगा। अगर आप किसी ख़ास विषय पर ध्यान नहीं देते हैं, चाहे यह रसायन शास्त्र हो, भौतिकी या गणित हो, आपकी नौकरी हो, आपका कारोबार हो, तो आप उस ख़ास विषय के बारे में अंधकार में बने रहेंगे।

पाने से पहले आपको अपने मन को देना होगा। आप दौलत पा सकें, इससे पहले आपको अपने अवचेतन मन पर दौलत के विचार की छाप छोड़नी होगी। जो भी छाप आप अवचेतन पर छोड़ते हैं, वह संसार के पर्दे पर व्यक्त हो जाती है। आप जानते हैं, केवल चेतना के अधिकार द्वारा ही आपके पास चीज़ें होती हैं। आपको अपनी मानसिकता में अपनी मनचाही चीज़ का समतुल्य बनाना होगा।

अपने मन से सारे पूर्वाग्रहों, झूठे विश्वासों और अंधविश्वासों को बाहर निकाल दें और यह अहसास करें कि आपके पुकारने से पहले ही ईश्वर जवाब दे देगा; आपकी बात पूरी होने से पहले ही वह सुन लेगा। इसका मतलब है कि आपको अपने मन और विचार को यह आदेश देना होगा कि यह युगों पुराने सत्य की पुष्टि करे कि आप जिसे खोज रहे हैं, वह असीमित मन में पहले से मौजूद है। यह पहले से वहाँ पर है। आपको तो बस अपनी इच्छा, विचार, योजना या उद्देश्य के साथ मानसिक और भावनात्मक दृष्टि से तादात्म्य भर करना है और यह अहसास करना है कि यह आपके हाथ या हृदय जितना वास्तविक है।

बुद्धिमत्ता आपके भीतर कार्यरत ईश्वर की उपस्थिति और शक्ति है। अपने सभी मायनों में ईश्वर को पहचानें और वह आपके रास्ते स्पष्ट कर देगा। ईश्वर में विश्वास करें, ईश्वर पर विश्वास करें और यह घटित हो जाएगा।

7

“यह मेरे साथ क्यों हुआ?”

स्त्री-पुरुषों को परामर्श देना एक बड़ा अधिकार है, जिसके साथ निजता और विश्वास का सम्मान जुड़ा होता है। यह एक ऐसा अधिकार है, जिसका कभी दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। यह परामर्श लेने वाले के लिए प्रबुद्धता का अनुभव होना चाहिए और परामर्शदाता के लिए हमेशा होता है, क्योंकि यह एक सिलसिला प्रकट करता है: शाश्वत, सामान्य, आम मुश्किलें जो हर एक के जीवन में आती हैं।

देर-सबेर किसी औपचारिक बातचीत के दौरान, जिसे किसी तरह की निंदा या दोषारोपण के बिना किया जाता है, विश्वास की अवधारणा पर विचार करना होता है, क्योंकि यह परिपूर्ण जीवन की कुंजी है।

अक्सर, तथाकथित “नव विचार” आंदोलन के पुराने लोग निराश होते हैं, जब वे इस सरल सत्य को सुनते हैं (इतनी बार सुनने के बाद वे इससे उकता जाते हैं; यह दर्ज ही नहीं होता है)। हमेशा प्रतिक्रिया होती है, “ओह हाँ, यह सच है। मैं इसे बरसों से जानता हूँ। यह अद्भुत है! लेकिन मेरी समस्या बहुत जटिल है, इतनी आसान नहीं है कि इसे इतनी सरल सच्चाई से सुलझाया जा सके।”

फिर तमाम तरह की जटिलताएँ सामने पेश की जाती हैं। टूटे दिल की मुश्किल, नौकरी छूटना, परेशानी, अकेलेपन का अहसास — उनके सर्वश्रेष्ठ इरादों के बावजूद, ईश्वर के प्रेम, सम्मान के गहरे अहसास, आगे के जवाब की उनकी हसरत के बावजूद। अगर ज़बर्दस्त सत्य, साम्राज्य की कुंजी, अनिवार्य बुनियाद “विश्वास के अनुरूप यह किया जाता है” बहुत आसान है, तो यह सुझाव देना उतना ही अनिवार्य हो जाता है कि शायद प्रश्न भी इतना ही सरल है। यह सतही बन जाता है।

आप पर समस्या आ सकती है — इसे सुलझा दें — और फिर सोचने लगें: "कल का क्या — आने वाले सारे कलों का क्या?" जवाबों के लिए भयावह छटपटाहट, अतीत का हमेशा मौजूद डर और भविष्य के लिए दहशत; वर्तमान उल्लास से हताशा तक की मनोदशाओं से भरा हुआ। कभी यह नहीं समझ पाना कि वर्तमान समस्याएँ क्यों आ रही हैं, बार-बार क्यों आ रही हैं।

तो जब कोई पूछता है, "यह मेरे साथ क्यों हुआ?" तो उनका प्रश्न थोड़ा शामिल और जटिल होता है: "मेरा जीवन दुर्भाग्य, अंतहीन दुर्भाग्य से इतना जटिल क्यों बना हुआ है?"

"क्यों?" इसके पूर्ण अर्थ में सबसे पुराना, सबसे सर्वव्यापी विलाप है, किसी दीर्घकालीन जवाब का आग्रह है और मन की स्थायी शांति, आत्मा की शांति खोजने की छटपटाहट है। क्योंकि जब हम मानसिक और दिली शांति हासिल कर लेते हैं, तो हमारे व्यक्तिगत जीवन की बाक़ी हर चीज़ सही हो जाती है।

"क्यों?" सत्य के उपचारक मरहम की बहुत गहरी, अंदरूनी इच्छा है। अंततः यह एकत्व को खोजने और उसका अनुभव करने की हसरत है — आश्वस्ति और सुरक्षा और ईश्वर के साथ हमारे एक होने का अहसास। अहसास करना, "वास्तविक बनाना," और अनुभव करना, एक प्रेमपूर्ण, जीवंत पिता के पुत्र-पुत्री के रूप में अपनी अंदरूनी, सच्ची प्रकृति की चेतन जागरूकता में जीना। सबका पिता। यह लग सकता है कि हमें बहुत सी मुश्किलें और कष्ट सता रहे हैं — (और मैं उन्हें किसी तरह से कम नहीं आँक रहा हूँ) — लेकिन यहाँ एक बुनियादी विकृति है। यह सभी के सर्वव्यापी, मौलिक स्रोत से अलगाव का अहसास है — जनक — "पिता" — जिसे हमने ईश्वर का नाम दिया है। एक बार जब हम मौलिक, उद्गम के स्रोत से अलगाव के विचार, अहसास को स्वीकार कर लेते हैं, तो हर दूसरा क्षेत्र सँभलने लगता है और डर उसी तरह ओझल होने लगता है, जिस तरह भोर से पहले अंधकार छँट जाता है।

एक एशियाई देश में एक किसान की कहानी है, जो अपने गाँव के एक समझदार आदमी के पास और उसे अपने जीवन के बारे में बताया और यह भी कि परिस्थितियाँ कितनी मुश्किल थीं। वह नहीं जानता था कि आगे कैसे चलेगा और वह हार मानने वाला था। वह लड़ते-लड़ते, संघर्ष करते-करते थक चुका था। ऐसा लगता था कि जब एक समस्या सुलझती थी, तो एक नई समस्या आ खड़ी होती थी। समझदार आदमी ने उसे झील तक भेजा और एक बाल्टी पानी लाने को कहा। फिर उसने पानी तीन बर्तनों में डाल दिया और हर बर्तन को अँगीठी के ऊपर एक हुक पर लटका दिया। जल्दी ही बर्तनों का पानी उबलने लगा। पहले वाले बर्तन में उसने गाजर डाली, दूसरे में कुछ अंडे और आख़िरी बर्तन में उसने चाय की पत्ती डाल दी।

आधा घंटे तक पानी उबलने के बाद उसने बर्तन अँगीठी से हटा दिए। उसने गाजर बाहर निकालकर एक प्लेट पर रख दीं। उसने अंडे बाहर निकालकर दूसरी प्लेट में रख दिए। आख़िर में उसने चाय को तीसरे बर्तन में डाल दिया। किसान की ओर मुड़कर उसने पूछा, "मुझे बताओ कि तुम क्या देखते हो?"

"गाजर, अंडे और चाय," किसान ने जवाब दिया।

फिर समझदार आदमी ने कहा, "गाजर को उठाओ और मुझे बताओ कि तुम क्या महसूस करते हो।" किसान ने ऐसा किया और बोला, "गाजर नर्म हैं।" फिर उसने किसान से एक अंडा लेने और इसे तोड़ने को कहा। खोल को हटाने के बाद किसान ने देखा कि अंडा सख़्त हो गया

था... आख़िरकार समझदार आदमी ने किसान से चाय की चुस्की लेने को कहा। किसान मुस्कराया और उसने इसकी बेहतरीन गंध का स्वाद लिया। फिर किसान ने पूछा, "इसका क्या मतलब है?" समझदार आदमी ने समझाया कि इनमें से हर चीज़ के सामने एक ही विपत्ति थी... उबलता पानी। हर एक की प्रतिक्रिया अलग थी। गाजर जब पानी के अंदर गई थी, तो कठोर थी। लेकिन जब उबलते पानी से इसका सामना हुआ, तो यह नर्म और कमज़ोर बन गई। अंडा जब अंदर गया था, तो यह नाज़ुक था। इसका पतला बाहरी छिलका इसके नर्म अंदरूनी हिस्से की रक्षा कर रहा था, लेकिन उबलते पानी ने इसके अंदरूनी हिस्से को कठोर बना दिया। लेकिन चाय की पत्तियाँ अनूठी थीं। जब वे उबलते पानी के अंदर गईं, तो उन्होंने पानी को बदल दिया।

उसने किसान से पूछा, "तुम इनमें से क्या हो? जब विपत्ति तुम्हारे द्वार पर दस्तक देती है, तो तुम किस तरह प्रतिक्रिया करते हो? तुम गाजर हो, अंडा हो या चाय की पत्ती हो?" जब आप अपने जीवन में समस्याओं से सामना करने की ओर देखते हैं, तो ख़ुद से पूछें: "मैं क्या हूँ? क्या मैं गाजर हूँ, जो दिखती तो कठोर है, लेकिन दर्द और विपत्ति से सामना होने के बाद क्या मैं नर्म हो जाता हूँ और अपनी शक्ति खो देता हूँ? या फिर मैं वह अंडा हूँ, जो नाज़ुक हृदय और तरल आत्मा से शुरू करता है, लेकिन नौकरी छूटने, संबंध टूटने या किसी वित्तीय मुश्किल या दूसरी परेशानी के कारण मैं कठोर बन गया हूँ? या फिर मैं चाय की पत्ती जैसा हूँ? पत्ती दरअसल गर्म पानी को बदल देती है — वह परिस्थिति जो दर्द लाती है। जब पानी गर्म होता है, तो यह सुगंध और स्वाद को मुक्त करती है। अगर आप चाय की पत्ती जैसे हैं, तो सबसे बुरी परिस्थितियों में भी आप बेहतर बनते हैं और अपने आस-पास की स्थिति को बदल देते हैं। जब समय सबसे स्याह होता है और मुश्किलें अपने चरम पर होती हैं, तो क्या आप ख़ुद को एक नए और ऊँचे स्तर तक उठाते हैं? क्या आप विपत्ति को सँभालते हैं? आप क्या हैं: गाजर, अंडा या चाय की पत्ती?"

यह ईश्वर की योजना है कि सभी लोगों को पर्याप्त ख़ुशी मिले, ताकि वे मधुर बनें; पर्याप्त मुश्किलें मिलें, ताकि वे मज़बूत बनें; पर्याप्त दुख मिलें, ताकि वे मानवीय बने रहें और पर्याप्त आशा मिले, ताकि वे प्रसन्नचित्त रहें। ज़रूरी नहीं है कि सबसे प्रसन्नचित्त लोगों को हर चीज़ सर्वश्रेष्ठ मिली हो; वे तो बस अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ का अधिकतम उपयोग करते हैं। सबसे उजला भविष्य हमेशा भूले हुए अतीत पर आधारित होगा; आप जीवन में तब तक आगे नहीं जा सकते, जब तक कि आप अपने अतीत की असफलताओं और निराशाओं को पीछे न छोड़ दें।

जब आप पैदा हुए थे, तब आप रो रहे थे और आपके आस-पास का हर व्यक्ति मुस्करा रहा था। अपना जीवन ऐसे जिएँ, ताकि अंत में आप मुस्करा रहे हों और आपके आस-पास का हर व्यक्ति रो रहा हो। आप यह संदेश उन लोगों को भेजना चाह सकते हैं, जो आपके लिए महत्त्वपूर्ण हों, उन लोगों को जिन्होंने आपके जीवन को किसी तरीक़े से स्पर्श किया है, उन लोगों को जो ज़रूरत होने पर आपके चेहरे पर मुस्कान ले आते हैं, उन लोगों को जो आपके निराश होने पर आपको परिस्थितियों का उजला पहलू दिखाते हैं, उन लोगों को जिनकी मित्रता की आप क़द्र करते हैं, उन लोगों को जो आपके जीवन में बहुत अर्थपूर्ण हैं।

अपने विश्वासों के ज़रिये आप अपने ख़ुद के भविष्य, अपनी ख़ुद की तक़दीर को ढालते और बनाते हैं। हमारे अस्तित्व के बुनियादी सत्य वाले ये कथन कायाकल्प करने वाली, अत्यंत

महत्त्वपूर्ण ऊर्जाओं और मानसिक शक्तियों को उजागर करते हैं। यह आपका व्यक्तिगत कायाकल्प है। अगर कोई दावा करता है कि प्रक्रिया "बहुत आसान है," तो मुझे सुझाव देना होगा कि शायद उन्होंने "सरल" को "आसान" मान लिया है।

सैद्धांतिक दृष्टि से यह आसान है, जैसे कि किसी भी अध्ययन या विषय के सिद्धांत होते हैं। व्यावहारिक सिद्धांत के लिए काफ़ी ध्यान, अभ्यास और संकल्प या धैर्य और ज़िम्मेदारी के अहसास, आत्म-संकल्प की ज़रूरत होती है। कितना समय लगेगा, यह व्यक्ति की रुचि की गहनता पर निर्भर करता है। आप कायाकल्प की प्रक्रिया को, मन के नवीनीकरण को कड़ी मेहनत का काम बना सकते हैं, या फिर आप सबसे रोमांचक, अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवधि में दाख़िल हो सकते हैं और हर संदर्भ में अपने जीवन का आनंद ले सकते हैं।

अक्सर, उत्साह के पहले आवेग के बाद रुचि और धैर्य में कमी आने लगती है — जो बिलकुल सही है। कुछ लोग ज़िम्मेदारी के बारे में नहीं सुनना चाहते। आसान सत्यों की याद दिलाना पसंद हो या न हो, लेकिन यह पहली कुंजी है, जो आपके भीतर के साम्राज्य के द्वार खोलती है।

बुद्धिमत्ता के प्राचीन और सम्माननीय महारथी — कभी न बदलने वाले जीवन के सत्यों और शाश्वत सत्यों के गुरुओं — ने कहा है, "स्वर्ग के देवदूत आनंदित होते हैं, जब कोई व्यक्ति अपने पूरे दिल से और अपनी पूरी आत्मा से और अपने पूरे मन से चीख़ता है। "क्यों?" हर सोचने वाले, बुद्धिमान स्त्री-पुरुष और बच्चे को देर-सबेर पूछना होता है, अगर उसे इस दुविधापूर्ण, उथल-पुथल भरे संसार को समझना हो। मेरा मानना है कि यह संभवतः सबसे स्वस्थ प्रश्न है।

कई लोग बचपन के कोमल वर्षों में ही सोचने लगते हैं। दूसरे आम तौर पर बाद में सोचना शुरू करते हैं, जब उनका मोहभंग हो जाता है, जब वे पराजित होते-होते उकता जाते हैं या जब बेहतर संसार के उनके सारे उदात्त आदर्श और महत्त्वाकांक्षाएँ धुँधली होने लगती हैं — हम कब पूछते हैं यह इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है, महत्त्वपूर्ण तो यह है कि हम पूछते हैं और यह हमारी सबसे गहरी इच्छा और हमारे अस्तित्व की हसरत बन जाता है। निश्चित रूप से देवदूत आनंदित होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कोई अपने जीवन की सबसे आकर्षक यात्रा शुरू कर रहा है। उनके देवत्व की जागरूकता की जाग्रति एक अहसास है कि उनका जीवन, उनका अस्तित्व हमेशा ईश्वर के शक्तिशाली और प्रेमपूर्ण हृदय में रहा है और रहेगा — और पृथ्वी की सारी ऊर्जाएँ और शक्तियाँ उसकी सहायता करने के लिए आनंदपूर्वक आ जाती हैं।

"स्वर्ग में आनंदित होने वाले ये देवदूत" कौन हैं? एंजेल शब्द ग्रीक एंजेलोज से लिया गया है। ईश्वर के सत्य के "संदेशवाहक," "अच्छाई।" एंजेल के लिए हिब्रू शब्द है मलाक, जिसका अनुवाद "दूत" के रूप में भी किया जाता है। बाइबल में कहा गया है: "देखो, मैं तुम्हारे पास अपना दूत भेजूँगा और वह मेरे सामने का रास्ता तैयार करेगा और मालिक, जिसे तुम चाहते हो, वह उसके मंदिर में आएगा, दूत भी... जिसमें तुम आनंदित होते हो... और धार्मिकता का सूर्य उगेगा, जिसके पंखों में उपचार होगा।"

जब किसी व्यक्ति का पर्याप्त विकास हो जाता है — तैयार मन और इच्छुक हृदय के साथ तैयार हो जाता है — पुराने, परिचित सत्यों को नए और अपरिचित तरीक़ों से सुनने के लिए — तो अवश्यंभावी रूप से देवदूत आनंदित होता है: संदेशवाहक प्रकट होता है और हृदय से बोलता

है। जैसी पुरानी कहावत है: “जब शिष्य तैयार होता है, तब शिक्षक प्रकट हो जाता है।” दूत कई रूपों में आता है: शिक्षक, पुस्तक, व्याख्यान, चिकित्सक — किसी “अनायास टिप्पणी” के रूप में भी।

देवदूत चाहे जो भी रूप धारण करे: दूत का स्वागत करें और संदेश को सुनें। आप सत्य सुनने की हसरत रखते हैं, आपने इसे कई सालों तक खोजा और तलाशा है — न तो दूत के स्वरूप को नकारें, न ही संदेश को। संदेश ख़ुद, चाहे यह जो भी हो, क्रांतिकारी है, नाटकीय है, हर उस चीज़ की तुलना में अलग है जो आपने पहले सुनी है और जिस पर आपने पहले यक़ीन किया है।

दूत बचाने वाला है, सत्य का पुंज है: “और तुम सत्य को जान जाओगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा!” ज़ाहिर है, देवदूत स्वर्ग में आनंदित होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि कोई मुक्ति के भाव के लिए तैयार है!

ईश्वर कभी नहीं बदलता है। यह हमेशा, शाश्वत रूप से, असीमित रूप से सच है। पढ़ें: “प्रेम ईश्वर है। आप ईश्वर की छोटी संतानें हैं। हम ईश्वर से इसलिए प्रेम करते हैं, क्योंकि पहले उसने हमें प्रेम किया है।” ईश्वर — असीमित, पूर्ण केवल प्रेम कर सकता है। ईश्वर के प्रेम की प्रकृति क्या है: “प्रेम स्वतंत्र करता है; यह देता है; यह ईश्वर का भाव है!” ईश्वर सब कुछ जानता है — चाहे आपके धार्मिक या दार्शनिक विश्वास जो भी हों, ईश्वर आपके भीतर है। “ईश्वर कभी नहीं बदलता है। वह असफल नहीं होता है।”

बाइबल में शुरुआत में यह बताया गया है कि ईश्वर ने सृष्टि को पूरा किया और इसे अच्छा और बहुत अच्छा घोषित किया। आप ईश्वर के सृजन के हिस्से हैं, एक महत्त्वपूर्ण हिस्से हैं। ईश्वर का कोई ख़ास कृपापात्र नहीं है, यह किसी एक को दूसरे से ज़्यादा तरजीह नहीं देता है। ईश्वर सिर्फ़ और हमेशा प्रेम कर सकता है — हर एक से समान रूप से, उसी अंदाज़ में। ईश्वर हमारे भीतर है, अच्छाई करने का इच्छुक है।

ईश्वर की पूर्ण या पवित्र प्रवृत्ति देने की है, उपचार करने की है, हर मायने में समृद्ध करने की है, जो भी सोचने में हम सक्षम हैं। सृष्टि की कोई चीज़ इसका विरोध नहीं कर सकती या बाधित नहीं कर सकती या रोक नहीं सकती। यह ईश्वर का संसार है। अच्छाई प्रकट रूप में। कोई भी चीज़ इसे कुंठित नहीं कर सकती या बाधा नहीं डाल सकती या विरोध नहीं कर सकती। केवल एक ही उपस्थिति है, एक ही शक्ति है, एक ही अस्तित्व है, “जिसमें हम जीते हैं और चलते हैं और हमारा अस्तित्व है।”

जीवन का केवल एक सिद्धांत है: केवल एक — और यह है कि ईश्वर एक है। “एक।” विचारों की जाँच करें, अगर सत्य पर नहीं, तो एक पर लौटें। हो सकता है कि दो विरोधी विचार हों: मैं कर सकता हूँ, मैं नहीं कर सकता, या मैं असफल हो जाऊँगा या मैं सफल हो जाऊँगा। चूँकि ईश्वर एक है, इसलिए केवल एक ही जवाब है: “मैं सारी चीज़ें कर सकता हूँ।” अगर डर लगता हो, तो यक़ीन करें, “ईश्वर का सत्य अब प्रभार में है। ईश्वर मार्गदर्शन कर रहा है, नेतृत्व कर रहा है और रास्ता दिखा रहा है।”

सर्मन ऑन द माउंट में ईसा मसीह ने इस सर्वव्यापी सच्चाई को व्यक्त किया है: “माँगो और यह तुम्हें दे दिया जाएगा; खोजो और तुम पा लोगे; द्वार खटखटाओ और यह तुम्हारे लिए खोल

दिया जाएगा।" आप सत्य को पा लेंगे; यह हर कोण से आपकी ओर आएगा — हर तरह के देवदूत अच्छी ख़बर देंगे।

देवदूत एक नया कोण है, जिससे जीवन में प्रवेश करना है: "दोबारा जन्म लेना: ईश्वर में नया पुरुष या स्त्री बनना।" एक युगों पुरानी किंवदंती है। यह कई धर्मों का सार है और इसके कई संस्करण और प्रकारांतर हैं।

एक बुद्धिमान व्यक्ति जीवन के रहस्यों का प्रेमी और रहस्यवादी था। उसने पृथ्वी के सारे लोगों से एक विशाल गोला बनाने को कहा। गोले के केंद्र में उन्हें अपनी सारी समस्याएँ, शिकायतें, ग़लतफ़ हमियाँ, निराशाएँ, रोग, कमियाँ और सीमाएँ और सभी तरह की समस्याएँ डालनी थीं।

उन्हें अनुमति दी गई और दरअसल उन्हें आदेश दिया या कि वे सारे दुखद ढेर की जाँच करें (मुश्किलों के इस ढेर की) और अपने लिए उनमें से कोई एक चुन लें। समूह में ख़ामोशी छा गई। वे बहुत स्थिर और शांत हो गए।

बहुत सोच-विचार और चिंतन-मनन के बाद हर पुरुष, हर महिला गोले के बीच में गए और हर एक ने अपनी ख़ुद की समस्याएँ वापस उठा लीं और अपने-अपने घर लौट गए। किसी ने भी, एक ने भी, "अपने कंधे पर उठाने के लिए" किसी दूसरे के बोझ, कष्ट, मुश्किलें और विपत्तियों का चुनाव नहीं किया।

आध्यात्मिक परिपक्वता की निशानी यह स्वीकार करना और मानना है कि परिस्थितियाँ — इस पल, अनूठे रूप से, स्पष्ट रूप से — हमारी ख़ुद की बनाई हुई हैं। इमर्सन ने कहा था कि ये "किसी दर्जी की तरह — हमारे शरीर के सटीक नाप की हैं!" समस्याएँ जो आपकी हैं, जो आपके पास आती हैं, वे ज़रूरी नहीं हैं कि मेरे पास आएँगी; न ही मेरी ख़ास मुश्किलें कभी आपकी चौखट पर आएँगी, और यह वैसा ही है जैसा होना चाहिए।

दूसरों की समस्याओं को सुलझाने की कोशिश करना बहुत ललचाने वाला होता है। यह एक भ्रम है और हमारी ऊर्जाओं की सरासर बर्बादी तथा अपव्यय है। संसार की सारी सद्भावना और अच्छे इरादों के बावजूद, चाहे हम कितना भी क्यों न चाहें, हम किसी दूसरे की परिस्थितियों को सुलझाने में सक्षम नहीं होते हैं। हम एक दूसरे के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और संभवतः दूत का काम कर सकते हैं।

लेकिन सिर्फ़ हम ही हैं, जो अपने ख़ुद के जीवन से निबटने में चरम रूप से सुसज्जित होते हैं — क्योंकि उन्हें हमने बनाया है। हम उन्हें बदल सकते हैं और बेहतर बना सकते हैं, अपने विश्वासों को बदलकर, यह याद करें कि हम सचमुच कौन हैं। हमें ख़ुद को लगातार याद दिलाना चाहिए कि हम अपनी विरासत को, जो अच्छी, सच्ची और सुंदर है उस सभी को, स्वीकार करें। तब हम पूर्ण शांति में प्रवेश कर सकते हैं, क्योंकि तब हम ईश्वर के साथ एक होंगे।

सार

विश्वास की अवधारणा परिपूर्ण जीवन की कुंजी है। आपके विश्वासों से आप अपने भविष्य,

अपनी तक़दीर को ढालते और बनाते हैं।

ऐसा लग सकता है कि हमें बहुतेरी मुश्किलों और कष्टों से पीड़ा हो रही है, लेकिन केवल एक बुनियादी, मूलभूत विकार है। यह सभी चीज़ों के सर्वव्यापी, मौलिक स्रोत से अलगाव का अहसास है — जनक से, पिता से, जिसे हमने "ईश्वर" नाम दिया है। एक बार जब हम मौलिक, उद्गम वाले स्रोत से अलगाव के विचार, अहसास को स्वीकार कर लेते हैं, तो हर दूसरा क्षेत्र सँभलने लगता है और डर उसी तरह ओझल होने लगता है, जिस तरह भोर से पहले अंधकार छँट जाता है।

जब कोई व्यक्ति पर्याप्त विकास कर लेता है — तैयार मन और इच्छुक हृदय के साथ पुरानी, परिचित सच्चाइयों को नए और अपरिचित तरीक़ों से सुनने के लिए तैयार होता है — तो दूत प्रकट होता है और हृदय से बोलता है। जैसी पुरानी कहावत है: "जब शिष्य तैयार होता है, तो शिक्षक प्रकट हो जाता है।" दूत कई रूपों में आता है: शिक्षक, पुस्तक, व्याख्यान, चिकित्सक — "अनायास टिप्पणी" के रूप में भी।

आप ईश्वर के सृजन का हिस्सा हैं, एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा हैं। ईश्वर का कोई विशेष कृपापात्र नहीं है, यह एक को दूसरे के ऊपर तरजीह नहीं देता है। ईश्वर सिर्फ़ और हमेशा प्रेम कर सकता है, हर एक से बराबर, उसी अंदाज़ में। ईश्वर हमारे भीतर है, अच्छाई करने का इच्छुक है।

यह कई धर्मों का सार है और इसके कई संस्करण और प्रकारांतर हैं: "माँगो और यह तुम्हें दे दिया जाएगा; खोजो और तुम पा लोगे; द्वार खटखटाओ और यह तुम्हारे लिए खोल दिया जाएगा। तुम सत्य को पा लोगे; यह तुम्हारे पास आएगा।"

8

प्रशंसा: समृद्धि का मार्ग

समृद्धि के मार्ग के रूप में प्रशंसा यह पहचानना है कि ईश्वर की उपचारक उपस्थिति और शक्ति हममें से प्रत्येक के भीतर है। उस अच्छाई का स्रोत और बुनियाद, जिसे हम चाहते हैं। प्रशंसा ईश्वर को — जीवन-सिद्धांत को — महिमामंडित करती है। प्रेज़ शब्द एक हिब्रू शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका मतलब है, हमारी सारी गतिविधियों में जीवन की हमारी सर्वोच्च अवधारणा को ऊपर उठाना। प्रशंसा में हमेशा चमक, प्रकाश निहित है। प्रशंसा भव्यता का मनोरथ है: चमकदार भव्य किरणें। "अपना प्रकाश चमकने दें" हमेशा भीतर — "सत्य का प्रकाश।"

पैगंबर इसाइया ने घोषणा की थी कि सत्य "क़ैदियों को स्वतंत्रता" दिलाएगा और "उन लोगों के लिए कारागार खोल देगा, जो बंधन में हैं।"

ईसा ने कहा था, "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा।" बाइबल के लेखकों की आलंकारिक भाषा में "क़ैदी" वे लोग हैं, जो झूठे विश्वासों, ग़लत अवधारणाओं, अंधविश्वासों, ग़लत धार्मिक विचार, पंथ, धर्मसिद्धांत या परंपरा की बेड़ियों में सचमुच जकड़े हुए हैं।

एक बार जब वह पल आ जाता है, जब हम अपने पूरे दिमाग़, दिल, आत्मा से ख़ुद को समझने की इच्छा करते हैं, यह जानने की कि हमारे जीवन में व्यवस्था और संयोजन लाने का कोई न कोई तरीक़ा या विधि होनी चाहिए — तो हमें जाग्रत करने के लिए सत्य का पैगंबर प्रकट हो जाता है (एक विचार, किसी पुस्तक का एक वाक्य): हम सत्य को देख लेते हैं। हमें अहसास होता है कि जिस पर हम मनन करते हैं, हम वही बन जाते हैं: हमारे विचार और भावनाएँ काफ़ी हद तक हमारी तक़दीर को नियंत्रित करती हैं। तब हम मुक्त हो जाते हैं, स्वतंत्र हो जाते हैं और

अतीत के क़ैदी नहीं रह जाते हैं। समृद्धि शुरू हो जाती है।

उस अद्भुत, महत्त्वपूर्ण दिन तक हम भाग्य के भारी उतार-चढ़ाव अनुभव करते हैं, जश्न से लेकर भुखमरी तक, उल्लास से हताशा तक, समृद्धि से ग़रीबी और कमियों तक।

"यह वह पल है, जब हम इस बात के प्रति जाग्रत हो जाते हैं कि हम सचमुच कौन हैं।"

हम अपने ख़ुद के मनन, कल्पना के बेहद शक्तिशाली सृजनात्मक पहलू को पहचानने में सक्षम हैं: हमारी चेतना की पूर्णता। ऐसे समय तक प्रवृत्ति यह होती है कि अपने दुर्भाग्यों के लिए हम परिस्थितियों, घटनाओं, लोगों, संसार, कुल मिलाकर जीवन को ज़िम्मेदार ठहराते हैं — हमारी ख़ुद की बनाई हुई आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक जेल के क़ैदी। जिस सिद्धांत से हमने वह जेल बनाई थी, उसी से हम ख़ुद को बाँधने वाली बेड़ियों को तोड़ सकते हैं, इसके द्वार खोल सकते हैं और स्वतंत्रता तथा मुक्ति का अनुभव कर सकते हैं।

केवल चेतना और नज़रियों में परिवर्तन से ही हम जागरूकता के नए मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्तर में परिवर्तन करेंगे और उसे स्थापित करेंगे, बशर्ते हमें लोगों, स्थितियों और परिस्थितियों का बहाना बनाने के बजाय अपने ख़ुद के विचारों और भावनाओं को शासित करने की अपनी आंतरिक दैवी शक्ति का अहसास हो जाए।

बाहरी परिवर्तन अपने आप अनुसरण करता है — अच्छी और दैवी योजना में। यह स्वतंत्रता की एक मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक, भावनात्मक अवस्था तक पहुँचना है।

बाइबल और अन्य धार्मिक लेखन "मोक्ष" पर ध्यान केंद्रित करता है। "मोक्ष" से हमारा मतलब है हमारी बुनियादी, मूलभूत समस्या का समाधान: स्रोत से, "ईश्वर" से अलगाव का अहसास।

"मोक्ष" का अर्थ है कि हमें "बचा" लिया गया है। इसका मतलब है कि लोग वह बन रहे हैं — पहचान रहे हैं — जो हम सचमुच हैं: ईश्वर की जीवंत, प्रेमपूर्ण उपस्थिति के पुत्र-पुत्रियाँ। अभिभावक के गुणों, विशेषताओं और योग्यताओं के वारिस।

हम इस धरती पर यही याद करने के लिए आए हैं। अपने आंतरिक, दैवी प्रकृति को दोबारा पहचानने के लिए आए, जो अद्भुत रूप से और शक्तिशाली रूप से सृजनात्मक है। हम इस धरती पर यह समझने के लिए आए हैं कि "जैसा हम अपने दिल में — या आधुनिक शब्दावली में अपने अवचेतन में — सोचते (बौद्धिक रूप से तर्क करते) हैं — व्यक्तिपरक, भावनात्मक भावनाएँ और विश्वास, वैसे ही हम हैं: वही हम बनते हैं, करते हैं, हासिल करते हैं, व्यक्त करते हैं।"

हम असफलता की अपेक्षा की मनोदशा में अपनी प्रोग्रामिंग करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र हैं। हम यह सोचने के लिए अपने मन की प्रोग्रामिंग करते हैं कि ईश्वर हमें असफलता से नहीं बचा सकता या हमारी समस्याओं को नहीं सुलझा सकता। हमारी मनोदशाएँ और नज़रिये हमारी जीवनशैली का निर्माण करते हैं। हम उन्हें उतनी ही आसानी से बदलने का चयन कर सकते हैं, जिस तरह हम अपनी कपड़ों की अलमारी से हर दिन पहनने वाले कपड़ों का चुनाव करते हैं। हमारे पास योग्यता है, ईश्वर का दिया हुआ अधिकार है, शक्ति है कि हम आत्मविश्वास, शांति, अपेक्षा, हमारी इच्छा के साकार होने की पोशाक की उम्मीद करें या "उसे पहनें।"

हमें कायाकल्प लाने की अपनी अंदरूनी योग्यता को पहचानना चाहिए। निश्चित रूप से हमें अपने अस्तित्व की गहराइयों को जानने की ज़रूरत है, ताकि हमें ख़ुद को परिस्थिति के शिकार के रूप में मानने या अनुभूत करने की ज़रूरत न रहे — या असहाय प्राणी, जो कामों, समस्याओं, अतार्किक लोगों, नाजायज़ माँगों से घिरे हुए हैं। हम या तो शिकार या फिर विजयी बनने का चयन कर सकते हैं। हमारी शक्ति यह जानने में है कि हम समझ और जागरूकता के ज़्यादा ऊँचे, ज़्यादा सृजनात्मक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर पहुँचने में हमेशा सक्षम हैं।

एक बार जब हम सृजनात्मक शक्ति के सिद्धांत को स्वीकार कर लेते हैं, अपनी चेतना की "शक्ति" को पहचान लेते हैं, एक बार जब हम अपनी अंदरूनी आध्यात्मिक शक्तियों के प्रति "जाग जाते" हैं, तो हमने "सुंदर वस्त्र पहन लिए हैं।"

बाइबल में सौंदर्य का अर्थ है मन की संतुलित अवस्था: आध्यात्मिक परिपक्वता, जब हम जीवन, ईश्वर, आनुवंशिकता, परिस्थितियों, अतीत के दुर्भाग्यों या "आत्मिक घावों" को दोष देना छोड़ने के लिए तैयार और इच्छुक होते हैं। सुंदरता हमारी ज़िम्मेदारी स्वीकार करना है: शांति से यह मानना है कि किसी मायने में, कुछ हद तक, हम इस समय वही काट रहे हैं, जो हमने अपने दिमाग़ और हृदय के उपजाऊ, सृजनात्मक बगीचे या खेत में बोया है।

ऐसे समय होते हैं, जब हम अतीत के विचारों और वर्तमान घटनाओं के बीच कोई संभव संबंध नहीं देख पाते हैं। द प्रोफ़ेट के लेखक ख़लील ज़िब्रान ने कहा था, "अगर यह मेरा फ़सल काटने का दिन है, तो मैंने किन खेतों में बीज बोया है और किन भुला दिए गए मौसमों में बोया है?"

सौंदर्य के लिए साहस की आवश्यकता होती है। सौंदर्य हमसे यह माँग करता है कि हम अपने साथ पूरी तरह ईमानदार रहें — कि हम अपने सबसे अंदरूनी विचारों और भावनाओं की जाँच करें, उनका सामना करें और जहाँ आवश्यक हो वहाँ उपचार करें। जब हम ऐसा करते हैं, तो हम बार-बार दोहराने वाले सिलसिले को खोज लेंगे — ज़्यादातर सृजनात्मक होते हैं या फिर वे समस्याएँ भी हो सकती हैं। कई अलग-अलग व्यक्ति शामिल हो सकते हैं, लेकिन समस्या बुनियादी तौर पर वही रहती है: परिवार वालों, सहयोगियों, मित्रों के साथ अप्रिय संबंध — सफलता के दौर के बाद असफलता के दौर — उसी सिलसिले का बार-बार दोहराया जाना।

घबराहट, यहाँ तक कि हताशा भी, प्रबल हो जाती है। वैसे एक टूटा हुआ दिल एक छिपा हुआ वरदान हो सकता है, क्योंकि तब हम सचमुच सवाल करते हैं और जवाब चाहते हैं। सत्य का पैगंबर "टूटे दिल को जोड़ने" के लिए प्रकट होता है — इस अर्थ में कि चिकित्सक घाव की सफ़ाई और मरहम-पट्टी करता है। "टूटा हुआ दिल" अपने ही ख़िलाफ़ विभाजित मन है।

हमारी आंतरिक इच्छाएँ हमारे अनुभव के संघर्ष में हैं। हमारी इच्छा, हर एक की इच्छा आदर्श स्वास्थ्य, दौलत, सभी क्षेत्रों, अनुभवों और प्रदर्शनों प्रेम के बहुतेरे प्रकारों, हमारी व्यक्तिगत क्षमता और गुणों की अभिव्यक्ति की होती है। यह हमें हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती रहती है।

सभी का कोई लक्ष्य, योजना या उद्देश्य होता है: इच्छा जो अनुभव के ख़िलाफ़ संघर्ष में होती है: ख़ास तौर पर मृत अतीत के साथ, जिसे सुलझाया जा सकता है या दोबारा सुलझाया

जा सकता है। सौंदर्य हमसे यह माँग करता है कि हम क्षमा करें।

किसी दूसरे को क्षमा करना ख़ुद को जीवन की एक नई अनुभूति और भविष्यदृष्टि देना है। पुरानी पोशाक की जगह हम पहनने के लिए एक "नई पोशाक" चुनते हैं। ऐसा कोई दिन शायद ही जाता हो, जब कोई परामर्शदाता, चाहे वह किसी भी क्षेत्र या हैसियत का हो — यह नहीं सुनता, "लेकिन आप नहीं जानते कि मेरे साथ कितना ख़राब सलूक किया गया है, मुझे कितनी चोट पहुँचाई गई है, मुझे कितने कटु अनुभव झेलने पड़े हैं। आप मुझसे क्षमा करने को कैसे कह सकते हैं?"

अपनी पुस्तक सीक्रेट्स ऑफ़ आई चिंग में मैंने टिप्पणी की थी: "द्वेष और किसी को सज़ा मिलते देखने की इच्छा आत्मा को क्षीण करती है और आपकी मुश्किलों को कीलों की तरह आपसे बाँध देती है।" ज़ाहिर है, हम दुखी रहते हैं। सौंदर्य हमसे कहता है कि हम सभी दुखी लोगों को राहत दें, दुख के लिए ख़ुशी का तेल प्रदान करें। सौंदर्य यह समझने की बुद्धिमत्ता है कि दूसरे लोग अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण, जीवन की अनुभूति के हिसाब से काम और प्रतिक्रिया कर रहे हैं, अक्सर अपनी ख़ुद की चोटों और घावों पर प्रहार कर रहे हैं।

क्या हम उनसे द्वेष करते हैं? या फिर हम जान-बूझकर हर एक को मुक्त करने का चुनाव करते हैं — प्रतिशोध के दिन को ईश्वर की स्वतंत्रता घोषित करते हैं? हो सकता है कि हम किसी दूसरे के कामों को पसंद न करें या उनसे सहमत न हों, लेकिन हमें उसमें ईश्वर की उपस्थिति को पहचानना चाहिए। वही ईश्वर या मन का नियम इस संसार के हर पुरुष, महिला, लड़के और लड़की में काम करता है।

हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि दूसरों को क्षमा करके हम उदारता का काम कर रहे हैं, क्योंकि दरअसल क्षमा करना स्वार्थपूर्ण काम है — इसके सबसे ज़्यादा लाभ और पुरस्कार हमें ही मिलते हैं। सौंदर्य हमसे इससे भी ज़्यादा की माँग करता है: कि हम ख़ुद को क्षमा कर दें, क्योंकि हमने अपने मन में नकारात्मक, विनाशकारी भावनाओं को रखा और अब हम संकल्प लेते हैं कि उन्हें अपने मन में जगह नहीं देंगे। ऐसा करना ख़ुद को दोबारा क़ैद करने की सज़ा देना है... हम सचमुच अपने आदर्शों और आकांक्षाओं, वास्तविक समृद्धि को रोक देते हैं या उस पर बाँध बना देते हैं। मानव जाति ने क्षमाशील मन और हृदय से जितनी बड़ी स्वतंत्रताएँ हासिल की हैं, उतनी क्षमारहित तरीक़े से नहीं की हैं।

क्षमा मानव जाति के मन, दिल और आत्मा को हल्का करती है और तीव्र करती है। यह उस बहुत भारी बोझ को हटा देती है, जो हम ख़ुद पर रखते हैं। धर्मग्रंथों में जिस "सौंदर्य" का ज़िक्र किया गया है, उसका शारीरिक हुलिए से — वर्तमान फ़ैशन से — संबंध नहीं है, बल्कि मस्तिष्क और हृदय की सहमति से है — जो संतुलन में "एक साथ जुड़े हुए" हैं, "विवाहित" हैं।

ख़लील ज़िब्रान ने इसे इस तरह व्यक्त किया था:

"आप सौंदर्य कहाँ खोजेंगे और आप उसे कैसे पाएँगे, जब तक कि वह स्वयं आपका रास्ता और आपका मार्गदर्शक न हो?

"और आप उसके बारे में कैसे बोलेंगे, जब तक कि वह ख़ुद आपकी भाषा की बुनकर न हो?"

वे कहते हैं, “मित्रों, सौंदर्य जीवन है, जब जीवन अपने पवित्र चेहरे पर से पर्दा हटाता है, लेकिन आप जीवन हैं और आप ही पर्दा हैं। सौंदर्य ख़ुद को शाश्वत रूप से आईने में निहारना है, लेकिन आप शाश्वत हैं और आप ही आईना हैं।” मन और हृदय का सौंदर्य अंदर के दैवी स्वरूप की बुद्धिमत्ता है, एक सुंदर वस्त्र है, जिसे समझ और धैर्य से बुना गया है।

“सच्चा अभयारण्य हमेशा आत्मा या चेतना का मामला रहा है। ईश्वर के साथ एक होना शांति, बुद्धिमानी, शक्ति और प्रेम का सबसे पूर्ण संभव पैमाना है। अभयारण्य मन के शाश्वत नियमों और अंदर की असीमित आत्मा के तरीक़ों की हमारी समझ है।” यह जान लें कि जवाब हमेशा भीतर है — कि ईश्वर की असीम प्रज्ञा और सृजनात्मक शक्ति जागरूकता के वर्तमान स्तर पर हममें प्रवाहित हो रही है।

समृद्धि शब्द का अपकर्ष हुआ है और अब यह बुनियादी तौर पर आर्थिक दौलत तक सिमटकर रह गया है। हालाँकि यह महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह इसके मूल उद्देश्य का केवल एक हिस्सा है। इसका मूल अर्थ था किसी मज़बूत और स्वस्थ वृक्ष की तरह “विकास करना और फलना-फूलना” — नैतिकता का वृक्ष, जीवन का वृक्ष।

“प्रशंसा करना” ईश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करना है, हम जिस अच्छाई को चाहते हैं उसे उन्नत करना और प्रशंसा करना है, चाहे इसका जो भी रूप हममें से प्रत्येक चाहता हो: चाहे हमारा जो भी लक्ष्य, योजना और उद्देश्य हो। भविष्यवाणी करना पहले से दावा करना है: अपनी चेतना में मानसिक समतुल्य को स्थापित करना और फिर यह हमारे अनुभव में घटित हो जाएगा। प्रशंसा का अर्थ है अतीत या इंद्रियों के प्रमाण के बजाय अपने लक्ष्य पर पूरा ध्यान और पूरे मन से समर्पण। ईश्वर की प्रशंसा का अर्थ है अच्छाई की प्रशंसा। ईश्वर की प्रशंसा सक्रिय विश्वास है। मनोवैज्ञानिक दशा और नज़रिये में जीना कि हमारी मुक्ति — समाधान — पर से “पर्दा हट” रहा है।

धर्म का उद्देश्य यह है कि यह हममें से प्रत्येक को अपने सच्चे स्वरूप तक पहुँचाने में मदद करे, जीवन के सार के साथ एक करे।

समृद्धि पूर्णता है, जिसे वास्तविक बना दिया गया है और अनुभव में ला दिया गया है, जब हम उस सत्य का सर्वोच्च अंश में अभ्यास करते हैं और जीते हैं, जिसे हम जानते हैं। एक बार फिर। जैसा बाइबल में कहा गया है: “मज़बूत बनें और अच्छे साहस वाले बनें, डरें नहीं, न ही निराश हों: क्योंकि मालिक तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ है, चाहे तुम कहीं भी जाओ, क्योंकि तुम अपने रास्ते को समृद्ध बनाओगे और तुम्हें अच्छी सफलता मिलेगी।”

सार

समृद्धि के रूप में प्रशंसा का तरीक़ा यह है कि हम हर इंसान के भीतर ईश्वर की उपचारक उपस्थिति और शक्ति को पहचानें। जिस अच्छाई को हम चाहते हैं, उसका एक ही स्रोत और बुनियाद है।

एक बार जब वह पल आ जाता है, जब हम अपने पूरे दिलोदिमाग़ और आत्मा से ख़ुद को

समझने या जानने की इच्छा करते हैं कि हमारे जीवन में व्यवस्था और सामंजस्य लाने का कोई तरीक़ा, कोई विधि होनी चाहिए — तो सत्य का पैगंबर प्रकट हो जाता है (कोई विचार, पुस्तक का वाक्य) और तब हम सत्य को देख लेते हैं। हमें अहसास होता है कि हम जिस पर मनन करते हैं, हम वही बन जाते हैं: हमारे विचार और भावनाएँ काफ़ी हद तक हमारे भाग्य को नियंत्रित करती हैं। फिर हम मुक्त हो जाते हैं, स्वतंत्र हो जाते हैं, और अतीत के क़ैदी नहीं रह जाते। समृद्धि शुरू हो जाती है।

केवल चेतना और नज़रिये में परिवर्तन से ही जागरूकता के नए मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक स्थापित होंगे और बदलेंगे, बशर्ते हमें लोगों, स्थितियों और परिस्थितियों के बजाय अपने ख़ुद के विचारों और भावनाओं को शासित करने की अपनी आंतरिक दैवी शक्ति का अहसास हो जाए।

हमारी मनोदशाएँ और नज़रिये यह तय करते हैं कि हम कैसे जीते हैं। हम उन्हें उतनी ही आसानी से बदलने का चुनाव कर सकते हैं, जितनी आसानी से हम अपनी कपड़ों की अलमारी से हर दिन पहनने वाले कपड़े चुनते हैं। हममें आत्मविश्वास, शांति, अपेक्षा, हमारी इच्छा के साकार होने की पोशाक को “पहनने” की योग्यता है।

हमें यह पहचानना होगा कि हमें ख़ुद को परिस्थिति का शिकार समझने या अनुभूत करने की कोई ज़रूरत नहीं है — या असहाय प्राणी मानने की, जो कामों, समस्याओं, अतार्किक लोगों, नाजायज़ माँगों से घिरे हुए हैं। हम शिकार या विजयी कुछ भी बनने का चुनाव कर सकते हैं।

समृद्धि शब्द का अपकर्ष हुआ है और अब इसका मतलब मुख्यतः आर्थिक दौलत माना जाता है। हालाँकि यह महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह इसके मूल अर्थ का केवल एक हिस्सा है। इसका मूल अर्थ था किसी मज़बूत और स्वस्थ वृक्ष की तरह “विकास करना और फलना-फूलना” — नैतिकता का वृक्ष, जीवन का वृक्ष।

“प्रशंसा करने” का अर्थ है ईश्वर की उपस्थिति का अभ्यास करना, हम जिस अच्छाई को चाहते हैं, उसे उन्नत करना और उसकी प्रशंसा करना, चाहे इसके किसी भी रूप को हममें से प्रत्येक चाहता हो: चाहे हमारा जो भी लक्ष्य, योजना और उद्देश्य हो। प्रशंसा का मतलब है अतीत या इंद्रियों के प्रमाण के बजाय अपने लक्ष्य के प्रति पूरी आत्मा से निष्ठा और पूरा ध्यान। ईश्वर की प्रशंसा का अर्थ है अच्छाई की प्रशंसा। ईश्वर की प्रशंसा सक्रिय विश्वास है।

9

आपके विश्वास आपको अमीर या ग़रीब क्यों बनाते हैं

"जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और उसके पास अधिक समृद्धि होगी: लेकिन जिसके पास नहीं है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जो उसके पास है।"

क्या बाइबल का यह कथन कठोर है? क्या यह कुछ लोगों की तक़दीर में लिखा है या उन्हें चुना गया है कि वे इस संसार की दौलत का अनुभव करें और आनंद लें — जबकि बाक़ी लोगों की क़िस्मत में कष्ट और वंचना के दुख भोगना लिखा है?

सच तो यह है — बिलकुल नहीं। यह हमारे भीतर की सृजनात्मक शक्ति और उपस्थिति का स्पष्ट कथन है: जो पल दर पल, हम पर प्रतिक्रिया करते हुए हमारे दैनिक जीवन की स्थितियाँ और परिस्थितियाँ उत्पन्न करती है — जो हमारे ज़्यादा गहरे, अवचेतन मन और "मन के विचारों, मनन" पर प्रतिक्रिया करते हुए हमारे जीवन को उसी अनुरूप बनाती है।

यह कथन सार रूप में हमें स्वतंत्रता देता है: यह "तक़दीर के भारी उतार-चढ़ाव" से बाहर निकलने का रास्ता बताता है। "जश्न या भुखमरी"। समृद्धि और अभाव या सीमा (ग़रीबी) हमारी समझ के अनुसार हमारी हैं — सबके एक स्रोत — ईश्वर की हमारी अवधारणा के प्रति हमारे व्यक्तिगत संबंध के अनुसार। रहस्यवादियों ने इसे दैवी मन कहा: भीतर की पवित्र उपस्थिति। केवल एक ही नियम, हमारे जीवन का मालिक है।

जो लोग सच्ची प्रचुरता (सतत आपूर्ति) और जीवन की समृद्धि का आनंद लेते हैं, वे वही हैं, जो मन और विचार की सृजनात्मक शक्तियों के बारे में जागरूक होते हैं। सच्ची समृद्धि "ईमानदार लाभ" है। वे इसका मूल्य और प्रभाव जानते हैं। जब वे अपने मन पर लगातार

आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक समृद्धि के विचारों की छाप छोड़ते हैं, तो उनका ज़्यादा गहरा मन स्वचालित तरीक़े से समृद्धि को उनके अनुभव में वस्तुपरक रूप से प्रकट कर देता है। यह जीवन का एक महान और शाश्वत नियम है — जो हर एक में प्रभावी और सक्रिय है। यह हमेशा सच रहा है — और हमेशा रहेगा। हमारे गहराई में बैठे, दिली विश्वास, राय, जागरूकता और समझ आगे चलकर अनुभवों, घटनाओं और परिस्थितियों के रूप में प्रकट हो जाते हैं। वे हमारे विचारों की प्रकृति के अनुरूप भौतिक संसार में सामने आते हैं।

अगर इस बात की जागरूकता और विश्वास हो कि हम एक उदार, बुद्धिमान, असीमित रूप से उत्पादक सृष्टि में रहते हैं — जो हमें एक उदार, प्रेमपूर्ण ईश्वर या परम सत्ता ने दी है और जो इस पर शासन करता है — तो हमारा विश्वास हमारी परिस्थितियों और गतिविधियों में झलकेगा।

इसी तरह, अगर मेरा प्रबल विश्वास यह है कि मैं असीमित सर्वव्यापी दौलत के लायक़ नहीं हूँ, कि मैं इसके बिना रहने के लिए अभिशप्त हूँ या यह मेरी तक़दीर में बदा है — दौलत दूसरों के लिए है, तो यह मुझे नहीं दी जाएगी, तो मैं ऐसा ही रहूँगा, तो यही प्रकट और प्रदर्शित होगा। यह विश्वास प्रबल बन जाता है। ये दो विरोधी अवधारणाएँ या विश्वास ही बुनियादी तौर पर यह तय करते हैं कि हम भौतिक दृष्टि से समृद्ध हैं या निर्धन।

बाइबल के कथन को अलग शब्दों में कहें, तो इसीलिए “अमीर लोग ज़्यादा अमीर बनते हैं और ग़रीब लोग ज़्यादा ग़रीब बनते हैं।” मन वृद्धि करता है। समृद्धि के विचार अपनी ही तरह के फल देते हैं। यही सिद्धांत दोनों मामलों में सक्रिय होता है। एक बार जब स्वीकार कर लिया जाए, तो हम अपने जीवन, अपनी गतिविधियों और अपनी परिस्थितियों का नियंत्रण हासिल कर लेते हैं।

एक बार जब इस सत्य को स्वीकार कर लिया जाता है कि मन हमारी सृजनात्मक शक्ति है और यह जिस पर भी, जहाँ पर भी केंद्रित या एकाग्र होता है, इसकी शक्तियाँ प्रदर्शित होंगी — तो हम अपने उपचार, अपनी प्रचुरता और समृद्धि, अपने स्वास्थ्य की राह पर अच्छी तरह हैं और हम इस जीवन में अपनी सच्ची (आदर्श) जगह और अभिव्यक्ति पा लेंगे।

मैं जानता हूँ कि आवश्यकता और ग़रीबी की परिस्थिति में रहते समय प्रचुरता और दौलत के बारे में सोचने में काफ़ी प्रयास की आवश्यकता होती है। लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि ईमानदारी और अखंडता से यह किया जा सकता है। ये निश्चित रूप से समृद्धि के रूप हैं। अपनी पुस्तक युअर इनफ़ाइनाइट पॉवर टु बी रिच में मैंने बताया था कि इसमें सतत और केंद्रित प्रयास की आवश्यकता होती है। यह प्रयास करने लायक़ है, क्योंकि जो लोग इस अनुशासित सोच का अभ्यास करते हैं, वे अवश्यंभावी रूप से अमीर बनते हैं और वे जो चाहें वह पा सकते हैं। जो लोग मन — जो सारे अनुभवों का स्रोत है — की असीमित अमीरी पर ध्यान देते हैं, वे इस संसार की ज़्यादा अच्छी चीज़ें हासिल करेंगे।

“समान समान को उत्पन्न करता है — अपने जैसे फल देता है।” इस अद्भुत नियम या सिद्धांत के दायरे या संरचना के भीतर सब कुछ है। अनुशासित सोच सबसे महत्त्वपूर्ण सत्य की कुंजी है। अनुशासन एक ऐसा शब्द है, जिसके बारे में कई लोग संकोच करते हैं। उनके लिए इसका अर्थ होता है कठोर दंड, दर्द। यह इसके सच्चे अर्थ को ग़लत समझना है।

मेरा मानना है कि अनुशासन समझ से शुरू होता है। हमें यह समझना चाहिए कि हम

किसमें विश्वास करते हैं और हम उसमें क्यों विश्वास करते हैं। दूसरों की बात सुनने में, उनसे बात करने में यह स्पष्ट हो जाता है कि कई लोग इस ग़लतफ़ हमी के कारण अभावों से कष्ट उठाते हैं। इस ग़रीबी का मुख्य कारण केवल आधी बाइबल को ही सिखाया जाना है: उस आधी को जो ग़लत सोच, अनैतिकता और पाप के प्रभावों पर ज़ोर देती है। हम अपने मन को अनुशासित कर सकते हैं, इसे अपना शिष्य बना सकते हैं। अनुशासन और शिष्य शब्दों का मूल एक ही है — लेटिन भाषा का डिसाइपलस शब्द, जिसका अर्थ है शिष्य। समझ अनिवार्य है। हमारा मन हमारा शिष्य है। मन हमारा सबसे महत्त्वपूर्ण सेवक है — या आत्मा का सेवक है: हमारी पूरी चेतना, हमारी सृजनात्मक शक्ति या प्रतिनिधि।

"मन का परिवर्तन — कायाकल्प — जीवन को बदल देता है!" इसके प्रति स्वस्थ, "पवित्र" सम्मान रखें। ये परिवर्तन या कायाकल्प हमारी ग़रीबी की अवस्था को समृद्धि की अवस्था में बदल सकते हैं। ईश्वर की इच्छा अच्छे के लिए है। ईश्वर की इच्छा प्रगति करने और विस्तार करने की जीवन की प्रवृत्ति है। आप ऐसे कितने लोगों को जानते हैं, जो यह मानते हैं और इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ईश्वर की इच्छा अच्छे के लिए है? आप ऐसे कितने लोगों को जानते हैं, जो ईश्वर की इच्छा का ज़िक्र केवल दुख के मौक़ों पर करते हैं?

मन का अनुशासन तब शुरू होता है, जब हम सत्य के लिए उत्सुक, इच्छुक और व्याकुल होते हैं। इसके लिए इससे कम या इससे ज़्यादा की ज़रूरत नहीं होती कि हम अपने दिली विश्वासों तथा रायों की जाँच करें और उन्हें समझें। अपने मन का नवीनीकरण करना — एक नए तरीक़े से सोचना — ये सभी संभावना के क्षेत्र के भीतर हैं। जहाँ कोई प्रेम नहीं है, वहाँ कोई अनुशासन नहीं है।

यह पहचानने से हमें सदमा लग सकता है कि समृद्ध जीवन के बारे में काफ़ी दुविधा धर्मग्रंथों से आ सकती है — कम से कम पाश्चात्य जगत में। कई लोगों को बचपन से बताया गया है, "मालिक ग़रीबों से प्रेम करता है।"

हम भजन में पढ़ते हैं, "धन्य है वह जो ग़रीबों का विचार करता है: मालिक उसे मुश्किल के समय में मुक्त करेगा..." और न्यू टेस्टामेंट में, "ग़रीब धन्य हैं आत्मा में: क्योंकि स्वर्ग का साम्राज्य उनका है।"

इन्हें करोड़ों बार हज़ारों चर्चों से पूर्ण सत्य के रूप में कहा गया है — शब्दशः सच के रूप में कहा गया है। यही नहीं, यह बिना सोचे-समझे या दो हज़ार साल पहले प्रयुक्त शब्दों के अर्थ और महत्त्व को बताए बिना किया गया है — भजनों में तो और भी ज्यादा। भाषाएँ बदलती हैं, विकसित होती हैं और उनका विस्तार होता है।

इन वाक्यों — और इसी तरह के अन्य वाक्यों — की स्वीकृति ने एक मँडराती (अक्सर बिना शक की) भावना में योगदान दिया है कि पर्याप्त — या ज़्यादा — धन होना ग़लत है या "अपवित्र" है — कि दौलतमंद बनना किसी तरह की धृष्टता है।

जब बाइबल कहती है कि ईश्वर चाहता है कि हमारे पास प्रचुरता रहे, तो इसका मंतव्य हर एक के लिए है — किसी को भी बाहर नहीं रखा गया है।

प्रचुरता — जिसमें भौतिक दौलत शामिल है — अक्सर वस्तुपरक संसार में तब नज़र आती है, जब हमारी शुरुआती परवरिश की दिखने वाली विसंगतियाँ सुलझा ली जाती हैं।

जिस बाइबल को हममें से ज़्यादातर लोग पढ़ते हैं, वह अँग्रेज़ी में लिखी गई है और यह प्राचीन, आलंकारिक अभिव्यक्तियों से भरी है — जब इसका अनुवाद मूल हिब्रू और अरेमैक से किया गया था, तब से अब तक इसके बहुत सारे शब्दों का अर्थ बदल गया है,।

हालाँकि सैकड़ों वाक्यों को शब्दशः पढ़ा जा सकता है, लेकिन ज़्यादातर को नहीं। यह विरोधाभासों, नीतिकथाओं और अलंकारों का समूह नज़र आती है, जिसकी आज के संसार में कोई प्रासंगिकता नहीं है।

लेकिन बाइबल को मेटाफ़िज़िक्स या रहस्यवाद की पाठ्यपुस्तक की तरह देखें और आप सही पटरी पर पहुँच जाएँगे। बाइबल की भाषा समृद्ध है — व्यावहारिक सत्यों और दिशानिर्देशों से भरी है, जो हमारे अनुभव को समृद्ध करते हैं: लेकिन तभी, जब उन्हें सही तरह समझ लिया जाता है।

बाइबल तथ्यों की पुस्तक नहीं है — जब इसे इस तरह पढ़ा जाता है, तो इसका वास्तविक इरादा छिपा रह जाता है। यह एक व्यक्तिपरक अनुभव है — बाइबल और पाठक के बीच एक संवाद है। "मेरे लिए इसका क्या मतलब है, अभी, इस समय?"

बाइबल की पंक्तियों का ग़रीब कौन है?

ग़रीब वे हैं, जिन्हें उठाने की ज़रूरत है।

रहस्यवादी पाठ्यपुस्तक के रूप में बाइबल मानसिक अवस्था के उपचार का तरीक़ा उजागर करती है, जिससे ग़रीबी और दूसरी अप्रिय स्थितियों का उपचार होता है। मस्तिष्क को उठाएँ। चेतना और समझ में ऊपर उठें; ज़्यादा ऊँची अवधारणा लाएँ, ज़्यादा ऊँचा दृष्टिकोण लाएँ — ज़्यादा ऊँची भविष्यदृष्टि, ज़्यादा ऊँची अनुभूति।

प्रोवर्ब्स में कहा गया है: "जहाँ कोई भविष्यदृष्टि नहीं होती, वहाँ लोग नष्ट हो जाते हैं।"

ये सारे शब्द, शब्दावलियाँ, वाक्य और पंक्तियाँ एक बुनियादी सत्य को उजागर करती हैं: अपने मस्तिष्क का नवीनीकरण करके हम बदल जाते हैं: उच्चतर अनुभूति।

धर्मग्रंथ की दृष्टि से ग़रीब होने का मतलब है मानसिक अवस्था में ग़रीब होना।

बहुत से लोगों को बताया गया है कि जो लोग अभी कष्ट उठाते हैं, उन्हें भविष्य में बाद में किसी समय पुरस्कार दिया जाएगा या कोई मसीहा आकर उन्हें उनके वर्तमान कष्टों से बचा लेगा, मुक्त कर देगा।

"मसीहा" शब्द का मूल अर्थ था "शिक्षक।"

अब एक बार फिर ईसा मसीह का सबसे लोकप्रिय संदेश पढ़ें:

"अभी स्वीकृत समय है,"

"यह समय है अभी।"

"आज के दिन तुम मेरे साथ स्वर्ग में हो।"

ग़ौर करें कि यह वर्तमान काल में कहा गया है। सौभाग्य से, इसे अनुवाद में भी सुरक्षित रखा गया है। कितनी बार हमने अपने शुरुआती शिक्षण में यह सुना है? इससे ज़्यादा बार हमने यह सुना है: "मालिक ग़रीबों से प्रेम करता है।"

आत्मा में ग़रीब होने का मतलब उदास रहना, निराश होना या हताशा और दुख से भरा होना नहीं है। इसके विपरीत, इसका मतलब यह है कि आपका मन खुला है और ईश्वर के सत्यों के प्रति ग्रहणशील है; आपमें भीतर के देवत्व को ज़्यादा जानने और ज़्यादा अपनाने की भूख-प्यास है। इसका मतलब है कि आपने अपने मन को झूठे विश्वासों, डरों, पूर्वाग्रहों और बाक़ी हर चीज़ से साफ़ और ख़ाली कर दिया है, जो दैवी उपस्थिति हासिल करने से आपको रोक सकते हैं। समृद्ध का अर्थ है पाँच इंद्रियों के प्रमाण में विश्वास और बौद्धिक गर्व — पहले से मान्यता प्राप्त विचार, राय, पंथ के विश्वास और ईश्वर व जीवन की पारंपरिक अवधारणाएँ।

ग़रीबी मन की है। सरकार और अन्य संस्थाएँ कभी ग़रीबी दूर नहीं कर पाएँगी, जब तक कि वे इसे मानव मन से दूर न कर दें। हम उन लोगों की मदद कर सकते हैं और हमें करनी चाहिए, जिन्हें आवश्यकता और ज़रूरत है — और इसे समझदारी से और विवेकशील तरीक़े से करने का एक रास्ता है। हम पैसे से, भौतिक वस्तुओं से उन लोगों की मदद कर सकते हैं, जो इसकी इच्छा रखते हैं और इसके साथ ही उनकी गरिमा को भी बरक़ रार रख सकते हैं। हम यह समझने में उन लोगों की मदद कर सकते हैं कि मानसिक और धर्मग्रंथों के सिद्धांत हैं, जो उन्हें ग़रीबी के अहसास से छुटकारा दिलाने की आंतरिक योग्यता को सीखने और लागू करने में सक्षम बनाएँगे। हम यह सीखने में उनकी मदद कर सकते हैं कि एक ही स्रोत, असीमित प्रज्ञा और आपूर्ति है — सभी चीज़ों का एकमात्र स्रोत उनके अपने मन और हृदय में है। मन की ग़रीब अवस्थाओं से ग़रीबी निर्मित होती है। मन का उपचार कर देंगे, तो सभी तरह की ग़रीबी ख़त्म होने लगेगी।

ग़रीबी में कोई सद्गुण नहीं है; न ही दौलतमंद होना कोई अपराध है, यदि ऐसा ईमानदारी से किया जाए। लूटना, धोखा देना, गबन करना और किसी दूसरे से छल करना ख़ुद को लूटना है। अंततः देर-सबेर, कभी न कभी, किसी न किसी तरीक़े से इसी अनुरूप हमारे साथ किया जाएगा। जो व्यक्ति मन के नियम जानता है — बाइबल के अंदर की बात जानता है — वह जानता है कि प्रचुरता का स्रोत ईश्वर का साम्राज्य है। सारी अच्छाई भीतर है। हम दौलत और समृद्धि की अपनी खोज में हमेशा सफल नहीं होते हैं। ऐसे समय होते हैं, जब सफलता के बजाय हमें असफलता मिलती है, समृद्धि के बजाय हम ग़रीबी की फ़सल काटते हैं, सौहार्द के बजाय हम अराजकता का सामना करते हैं। यह जीवन का तरीक़ा है और हमें इससे निबटने के लिए तैयार रहना चाहिए।

जीवन में विपरीत बातों को समझना इस बात की मूल्यवान कुंजी है कि हमारे विश्वास किस तरह हमारे कार्यों को प्रेरित करते हैं। यह समझ लें कि हम एक ऐसी सृष्टि, एक ऐसे संसार में रहते हैं, जो द्वैत से बना है। ईश्वर ने हमें जो सबसे बड़ा उपहार और सबसे बड़ी चुनौती दी है, वह है चयन की स्वतंत्रता — अच्छाई और बुराई के बीच, स्वास्थ्य और रोग के बीच, ग़रीबी और समृद्धि के बीच। चुनाव हमारा है और हमें इसे समझदारी से करना चाहिए।

असंख्य युगों से स्त्री-पुरुषों ने विपरीत युग्मों के इस चयन को सफलता की अलग-अलग मात्रा के साथ किया है। ज़्यादातर का निष्कर्ष यह रहा है कि सभी विपरीत चीज़ें, मिसाल के तौर पर अच्छाई और बुराई, अपने आप में शक्तियाँ हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार किसी एक या दूसरे का अनुभव करना भाग्य या संयोग का मामला है।

सतह पर यह सच नज़र आता है। लेकिन क्या दो असीमित का होना संभव है? गणितीय

दृष्टि से यह सच नहीं हो सकता, क्योंकि एक दूसरे को रद्द कर देगा। सटीकता की सृष्टि के बजाय यहाँ पूर्ण तटस्थता या अराजकता होगी। यह मानव जाति की समझ से परे है।

विपरीत-युग्म किसी छड़ी के दो सिरों जितने विपरीत होते हैं। वे एक दूसरे से चाहे जितनी भी दूरी पर हों, लेकिन यह कभी न भूलें कि छड़ी एक ही है।

अनकही पीढ़ियों की बुद्धिमत्ता सलाह देती है: मूल्यांकन न करें, अपने निर्णय लें; चीज़ों के दिखावे के अनुसार अपने निष्कर्षों पर न पहुँचें। चीज़ों के दिखावे के अनुसार निर्णय न लें। केवल इस पल की परिस्थितियों के हिसाब से निर्णय न लें।

क्योंकि सभी चीज़ों के ऊपर, नीचे और अंदर — जो भी पाँचों इंद्रियाँ खोज सकती हैं — ईश्वर है, एक जीवंत, प्रगतिशील, सर्वज्ञाता उपस्थिति। प्राचीन लोगों ने इसे दैवी मन का नाम दिया था।

हम हमेशा विपरीत छोरों के बीच चल रहे हैं — सभी इंसान। हम जो अनुभव करते हैं, उसे आम तौर पर "जीवन के उतार-चढ़ाव" की संज्ञा दी जाती है। मनोदशा उल्लास से हताशा तक, ख़ुशी से दर्द तक, ख़ुशी से दुख तक झूल सकती है — और हम एक को दूसरे के बिना नहीं जान सकते। लेकिन जब हम यह पहचान और समझ हैं कि ये अतिरेक प्रगतिशील और सतत सृजन के एक ही सिद्धांत से प्रकट होते हैं, तो हम उन विपरीत छोरों से नहीं डरेंगे, जिन्हें हम अपने चारों ओर देखते हैं और जिन्हें हममें से प्रत्येक कम या अधिक सीमा तक अनुभव करता है। भारी उतार-चढ़ाव कम हो जाते हैं।

ये उसी सिद्धांत की द्वैत अभिव्यक्तियाँ हैं। हम यहाँ इन विपरीत अतिरेक में सामंजस्य स्थापित करने और अपने संसार में सौहार्द, स्वास्थ्य और शांति निर्मित करने आए हैं।

अपनी पुस्तक सीक्रेट्स ऑफ़ आई चिंग में मैंने कहा था कि शायद व्यावहारिक बुद्धिमत्ता का, निर्देश का कोई तंत्र विपरीतों के सिद्धांत को इतनी स्पष्टता और सीधे तरीक़े से नहीं बताता है, जितना कि 5,000 साल पहले प्राचीन चीनवासियों ने किया था।

उन्होंने विपरीतों के सिद्धांत को पहचाना था, समझा था और स्वीकार किया था और इसे "बदलता है" या "गुज़रता है" नाम दिया था। "सारी चीज़ें अदृश्य से आती हैं, कुछ समय तक रहती हैं और फिर अदृश्य की ओर लौट जाती हैं," जिसे उन्होंने दाओ (ईश्वर) नाम दिया था।

प्राचीन ऋषि इस नतीजे पर पहुँचे थे कि ब्रह्मांड — संसार, समाज, इंसान — हमेशा निरंतर परिवर्तन की सतत अवस्था में रहता है — एक अवस्था से विपरीत अवस्था तक की तरल गतिविधि।

गर्मी सर्दी बन जाती है; दिन रात में बदल जाता है; चंद्रमा घटता और बढ़ता है; ज्वार-भाटा आता है; पुराने संसार और जातियाँ मर जाती हैं, ताकि नई पैदा हो सकें। इन प्राचीन दार्शनिकों ने कहा था, "अगर आप हमारे मौसम को पसंद नहीं करते हैं, तो कुछ समय यहीं ठहरें; यह बदल जाएगा।"

उन्होंने स्वीकार किया कि ऐसी शक्तियाँ थीं, जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं था: ग्रहों की गतिविधियाँ, मौसम और प्राकृतिक शक्तियाँ। बाढ़ आती थी, कुछ समय तक रहती थी और फिर चली जाती थी। अकाल पड़ता था, कुछ समय तक रहता था और फिर गुज़र जाता था। अच्छा

मौसम जल्दी ही लौट आएगा। यह एक वृहद, ब्रह्मांडीय स्तर पर नवीनीकरण और दोबारा भरने का प्राकृतिक तरीक़ा है।

द बुक ऑफ़ चेंजेस उजागर करती है कि सभी रूप, आकार, कार्य और गतिविधि अदृश्य दाओ से बाहर निकले हैं। यहूदी-ईसाई धर्मग्रंथों में भी हमें यही सच्चाई मिलती है: "यह भी गुज़र जाएगा।" लगभग 1,000 उदाहरण हैं, जहाँ बाइबल का कोई अंश इस वाक्य से शुरू होता है, "और यह घटित हुआ।"

आई चिंग और यहूदी-ईसाई धर्मग्रंथ एक ही सत्य को उजागर करते हैं: प्रकृति की सारी ऊर्जाएँ एक ही स्रोत से आती हैं: दाओ (ईश्वर)। तीन हज़ार साल बाद पॉल ने लिखा था, "ईश्वर के सिवा कोई शक्ति नहीं है: जो भी शक्तियाँ हैं, ईश्वर द्वारा निश्चित की गई हैं।"

आई चिंग और बाइबल सहमत हैं कि ईश्वर एक सर्वव्यापी धरातल पर, एक अव्यक्तिगत अंदाज़ में, प्राकृतिक नियमों या सिद्धांतों के अनुसार कार्य करता है। वे सहमत हैं कि द्वैत का सिद्धांत जिस तरह ब्रह्मांड में सक्रिय है, उसी तरह यह मानव जाति में भी सक्रिय है।

हम लगातार एक अवस्था और इसकी विपरीत अवस्था के बीच प्रगतिशील अंदाज़ में चल रहे हैं। जैसा पहले बताया गया है, हम सभी भावनात्मक उतार-चढ़ाव का अनुभव करते हैं; हम दुख और ख़ुशी, आनंद और दर्द, शांति और विवाद, विश्वास और डर के बीच आगे-पीछे झूलते रहते हैं।

विचार भी जोड़ों में आते हैं: अमीरी और ग़रीबी, मीठा और खट्टा, अच्छा और बुरा, गर्म और ठंडा। हम काफ़ी हद तक प्राकृतिक तत्वों को नियंत्रित करने में सक्षम नहीं होते हैं, लेकिन हमारे पास अपनी चेतना को नियंत्रित और निर्देशित करने की क्षमता होती है। हमें अंदरूनी प्रज्ञा और चयन की क्षमता का वरदान मिला है, जिससे हम अपने विचारों और अवधारणाओं के साथ-साथ अपनी मनोदशाओं और नज़रियों को भी चुन सकते हैं और उन पर निर्णय ले सकते हैं — जो आप बनने, करने, पाने और बाँटने की हसरत रखते हैं।

ये इच्छाएँ ईश्वर की देवदूत हैं, दैवी शक्ति की संदेशवाहक हैं और उनमें से प्रत्येक हमसे कह रही है, "ज़्यादा ऊपर आओ।" अपनी इच्छा को अपना ध्यान जकड़ने दें और थामने दें। आप उस विचार की दिशा में बढ़ते हैं, जो आपके मन पर हावी रहता है।

आपकी इच्छा के साकार होने से जितने ज़्यादा लाभ की अपेक्षा होती है, इच्छा उतनी ही ज़्यादा प्रबल होती है। हमारे मन पर — हमारे जीवन पर क्या हावी है? हमें सचमुच सत्ता दी गई है — अपने ख़ुद के जीवन पर भारी शक्ति दी गई है — लेकिन एक ज़्यादा ऊँची सत्ता है, जिससे हम आग्रह कर सकते हैं: ईश्वर, जो सारी नेकी का लेखक है।

इस बात को पहचान लें कि हम ख़ुद कुछ नहीं कर सकते, लेकिन सारी व्याप्त प्रज्ञा और जीवन-ऊर्जा (हमारे भीतर का दाओ-ईश्वर) हमें प्रदान करने, सुरक्षित रखने, ज्ञान देने और सौहार्द में वापस लाने के लिए उत्सुक और इच्छुक है। यह विपरीत बातों को सामंजस्य में ला देगा और मन की शांति देगा। जब हमारे पास सबसे महान उपहार होता है, तो हमारे संसार में हर चीज़ सही हो जाती है और हम अभी और यहीं, इसी धरती पर स्वर्ग पा लेते हैं।

बाइबल में ईसा मसीह ने जीवन के द्वैतों को एक नीतिकथा के माध्यम से समझाया था: जब

गेहूँ बोया जाता है, तो खरपतवार भी प्रकट हो जाती है। खेत की देखभाल करने वालों ने पूछा: "हमें उनके साथ क्या करना चाहिए? क्या हमें उन्हें भी इकट्ठा करना चाहिए?" खेत के मालिक ने कहा, "नहीं, उन्हें फ़सल होने तक साथ-साथ उगने दो... फिर पहले खरपतवार को इकट्ठा करो और उनके पूले बनाओ और उन्हें जला दो, लेकिन गेहूँ मेरे खलिहान में इकट्ठा करो।"

खरपतवार नकारात्मक या विनाशकारी छोर हैं। वे हमें किसी तरह से लाभ नहीं पहुँचाएँगे। वे डर, शंका, दुर्भावना, द्वेष और क्रोध का प्रतिनिधित्व करते हैं — हिसाब बराबर करने या दूसरों पर शक्ति नियंत्रण हासिल करने की इच्छा।

गेहूँ पोषक और जीवनदायक पदार्थ का प्रतिनिधित्व करता है: जो भी चीज़ हमारी इच्छाओं, हमारे उपचार को आगे ले जाती है और विवश करती है। जब ये "खरपतवार" प्रकट हों, तो दहशत में न आएँ। वे सामूहिक मन से आते हैं, सामूहिक चेतना जो हमेशा हमारे साथ होती है — लेकिन इस तथ्य को पहचानें: उन्हें नष्ट कर दें — उन्हें दैवी प्रेम की अग्नि में जला दें। केवल गेहूँ को ही चुनें — केवल शाश्वत सत्यों को ही चुनें, जो दैवी प्रेम, जीवन, स्वास्थ्य, दौलत की प्रचुरता (आध्यात्मिक, बौद्धिक, सामाजिक और भौतिक) हैं और सबसे बढ़कर, सच्ची शांति का मार्गदर्शन।

आई चिंग सलाह देती है: दुर्भाग्य को न चुनें — सौभाग्य को चुनें। इसे अपने जीवन में सत्ता, अपना मालिक, अपना मार्गदर्शक बनने दें। इसे अपना सबसे अच्छा मित्र बनने दें, जिससे सारा प्रेम और साहचर्य निकले — आपका दैवी सहचर, जो आपके लिए केवल सर्वश्रेष्ठ की इच्छा रखता है — केवल सौभाग्य की इच्छा रखता है। व्यक्तिगत रूप से दाओ-ईश्वर बहुत व्यक्तिगत अंतरंग बन जाता है, लगभग वैसे ही जैसे यह व्यक्ति हो — यह आपका सबसे अच्छा मित्र बन जाता है।

क्या आपसे हाल में पूछा गया है — "ईश्वर ग़रीबी की अनुमति क्यों देता है? बीमारी की? युद्धों की? मृत्यु की?" शायद ही कोई दिन गुज़रता है, जब ये प्रश्न एक या दूसरे तरीक़े से न पूछे जाते हों। ये वैध प्रश्न हैं, जो हम सभी ने अपने जीवन में किसी न किसी समय पूछे हैं, बशर्ते हम ज़रा भी सोचते हों।

ईश्वर ने हमें स्वतंत्र इच्छा दी है — चयन की शक्ति दी है — और जब तक हम इसका इस्तेमाल ग़लत तरीक़े से — या बुरे तरीक़े से — करते हैं, ये परिस्थितियाँ बारंबार घटेंगी। जब तक हम जीवन के सिद्धांत को नहीं सीख लेते, अपने चयनों और निर्णयों की ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं कर लेते — व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से — तब तक बुराई प्रकट होगी और युद्ध होंगे — जब तक कि तानाशाह हमारे बीच रहेंगे।

व्यक्तिगत रूप से मैं इसे एक अपराध मानता हूँ कि मानव जाति अब भी शक्ति का और युद्ध की तबाही मचाने वाली दहशतों का इस्तेमाल करके प्रचुरता हासिल करना चाहती है। इस पृथ्वी पर इतनी प्रचुरता है कि यह सबको उनकी मनचाही चीज़ प्रदान कर सकती है, बशर्ते यह सभी जान लें कि महान दाता द्वारा उन पर कैसे दावा करना है, समझदारी से और विवेक से कैसे आवंटित और वितरित करना है।

"हमारे पिता के मकान में कई महल हैं," यानी असीमित जीवन के कई आयाम हैं। हमें उनके बारे में सोचते समय उतना ही सजीव मानना चाहिए, जितने कि हम अभी हैं — जीवन का

अधिक प्रचुरता से आनंद लेते हुए।

अपने अस्तित्व के भीतर की विशाल बौद्धिक और भावनात्मक शक्तियों को समझ लें, एक ख़ज़ाना, एक साम्राज्य — आपका ख़ुद का वैचारिक क्षेत्र, जिस पर आपको पूर्ण अधिकार और सत्ता दी गई है। उस संसार की द्वैत प्रकृति को समझ लें, जिसमें आप जीते हैं, जिसमें विपरीतों का चरम भी शामिल है: जीवन और दिखने वाली मृत्यु। जैसा इमर्सन ने कहा था, "हमें प्रकृति के हर हिस्से में विपरीतता मिलती है।"

हमारे पूरे जीवन में हमें दुविधापूर्ण और चकराने वाला द्वैतवाद मिलता है। यह एक ऐसी चुनौती है, जिसका हमें सामना करना और जीतना चाहिए। अपनी बुद्धिमत्ता, अपनी आस्था का इस्तेमाल करने, अच्छा करने के अपने समर्पण, सही चयन करने की शक्ति आपके पास है और ऐसा करने में आपको वरदान, सौहार्द और प्रचुरता के जीवन का पुरस्कार मिलेगा।

हम यह समझकर इस उपहार को कुरेदते हैं कि यह "छिपा हुआ" है — जब तक कि हम यह नहीं पहचान जाते हैं कि ईश्वर प्रेम है और देना प्रेम की प्रकृति है। ईश्वर कभी भी हमारी अच्छाई को नहीं रोकता है — न ही यह हम पर थोपी जाती है या केवल चुनिंदा लोगों को ही दी जाती है।

हम ही हैं, जो चुनाव करते हैं: "आज के दिन तुम चुनो।" चुनें कि आप अधिक ग्रहणशील बनेंगे, अपनी समझ को नया करेंगे, प्रेम, जीवन, ईश्वर से अलगाव के अहसास का उपचार करेंगे — अपने पूरे मन, दिल, आत्मा से।

सार

समृद्धि और ग़रीबी या सीमा हमारी समझ के अनुसार आती है — सभी चीज़ों के एक स्रोत: ईश्वर के बारे में हमारी अवधारणा और उससे हमारे व्यक्तिगत संबंध के अनुसार आती है।

जो लोग सच्ची प्रचुरता (सतत आपूर्ति) और जीवन की समृद्धि का आनंद लेते हैं, वे वही हैं, जो मन और विचार की सृजनात्मक शक्तियों के बारे में जागरूक होते हैं। सच्ची समृद्धि "ईमानदार लाभ" है। वे इसका मूल्य और प्रभाव जानते हैं। जब वे लगातार अपने अवचेतन मन पर आध्यात्मिक, मानसिक और भौतिक समृद्धि के विचारों की छाप छोड़ते हैं, तो उनका ज़्यादा गहरा मन अपने आप समृद्धि को उनके अनुभव में सचमुच प्रकट कर देता है।

एक बार जब इसे सत्य के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है कि मन ही हमारा सृजनात्मक प्रतिनिधि है, और यह जहाँ भी, जिस पर भी केंद्रित या एकाग्र होता है, वहाँ इसकी शक्तियाँ प्रदर्शित होंगी, तो हम अपने उपचार, अपनी प्रचुरता और समृद्धि, अपने स्वास्थ्य के रास्ते पर अच्छी तरह हैं और हम इस जीवन में अपनी सच्ची (आदर्श) जगह और अभिव्यक्ति पा लेंगे।

जब बाइबल कहती है कि ईश्वर चाहता है कि हमारे पास समृद्धि रहे, तो इसका इरादा हर एक के प्रति है — किसी को भी बाहर नहीं रखा गया है।

समृद्धि — जिसमें भौतिक दौलत शामिल है — अक्सर तब वस्तुपरक बनती है, जब हमारी शुरुआती परवरिश के दिखने वाले विरोधाभासों को सुलझा लिया जाता है।

मन की ग़रीब अवस्था ग़रीबी उत्पन्न करती है। मन का उपचार कर लेंगे, तो सभी तरह की ग़रीबी ख़त्म होने लगेगी।

ग़रीबी में कोई सद्गुण नहीं है; न ही दौलतमंद होना अपराध है, बशर्ते ऐसा ईमानदारी से किया गया हो। किसी दूसरे को लूटना, धोखा देना, गबन करना या छल करना ख़ुद को लूटना है।

हम एक ऐसी सृष्टि, एक ऐसे संसार में रहते हैं, जो द्वैतवाद से बना है। ईश्वर द्वारा हमें दिया गया सबसे बड़ा उपहार और चुनौती है चयन करने की स्वतंत्रता — अच्छाई और बुराई के बीच, स्वास्थ्य और रोग के बीच, ग़रीबी और अमीरी के बीच। चुनाव हमारा है। हमें इसे समझदारी से करना चाहिए।

हमारी मनोदशा उल्लास से हताशा तक, सुख से दर्द तक, आनंद से दुख तक झूल सकती है — और हम हम एक को दूसरे के बिना नहीं जान सकते। लेकिन जब हम इसे पहचान लेते हैं और यह भी समझ लेते हैं कि ये अतियाँ एक ही सिद्धांत की अभिव्यक्ति हैं — प्रगतिशील और सतत सृजन की — तो हम उन विपरीतों से आगे नहीं डरेंगे, जो हमें अपने चारों ओर दिखते हैं।

ईश्वर ने हमें स्वतंत्र इच्छा — चयन की शक्ति — दी है। जब तक हम इसका इस्तेमाल ग़लत तरीक़े से — या बुरे तरीक़े से — करते हैं, तब तक ये परिस्थितियाँ बारंबार आती रहेंगी। जब तक हम जीवन के सिद्धांत को नहीं समझ लेते हैं, अपने चयनों और निर्णयों के लिए ज़िम्मेदारी स्वीकार नहीं करते हैं — व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से — तब तक बुराई प्रकट होती रहेगी।

प्रशंसा करना ईश्वर की उपस्थिति का जश्न मनाना है — उस अच्छाई की प्रशंसा करना, जिसकी हम इच्छा रखते हैं। प्रशंसा अपने लक्ष्य के प्रति हमारा समर्पण और एकाग्रता है। ईश्वर की प्रशंसा हमारे विश्वास का वास्तविकीकरण है।

10

स्वर्णिम नियम

"दूसरों के साथ वही करो, जो तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें।" स्वर्णिम नियम किसी न किसी रूप में संसार के सभी महान धर्मों में प्रकट होता है। इसे प्रायः धर्म का सार कहा जाता है। ईसा मसीह से एक सदी पहले आने वाले महान यहूदी विद्वान हिलेल से जब पूछा गया कि वे एक सबसे अहम वाक्य में धर्मग्रंथों का सार बताएँ, तो उन्होंने कहा था: "सबसे महत्त्वपूर्ण विचार यह है कि आप अपने साथी इंसान के साथ वह न करें, जो आप नहीं चाहते कि वह आपके साथ करे।" आधुनिक मनोवैज्ञानिक इस नियम को ठोस पारस्परिक संबंधों के विकास में मुख्य घटक के रूप में दोहराते हैं।

स्वर्णिम नियम के अनुसरण का दौलतमंद और समृद्ध बनने से क्या लेना-देना है? हिलेल इस सवाल का जवाब भी देते हैं। उन्होंने कहा था: "अगर मैं अपने लिए नहीं हूँ, तो मेरे लिए कौन होगा? लेकिन अगर मैं सिर्फ़ अपने लिए हूँ, तो मैं क्या हूँ?" हाँ, ईश्वर हमें दौलत और समृद्धि पाने की शक्ति देता है। यह हमारा दायित्व है कि हम अपने गुणों और अवसरों का अधिकतम लाभ लें। लेकिन इस कृपा और वरदान के साथ यह दायित्व भी आता है कि हम सिर्फ़ अपने लिए ही न तलाशें, बल्कि दूसरे लोगों के लिए भी तलाशें।

"स्वर्णिम नियम" का सिद्धांत आपको किसी सोने के धागे की तरह सभी मुख्य दर्शनों और आराधना तंत्रों में मिलेगा। हो सकता है कि शब्दों का अंतर हो, लेकिन विचार का इरादा समान रहता है: कि हमें दूसरों के साथ वही करना चाहिए, दूसरों के लिए विश्वास, आराधना, उपलब्धि और संग्रह की उन्हीं स्वतंत्रताओं की इच्छा करनी चाहिए, जो हम ख़ुद के लिए करते हैं।

जब हम इस नज़रिये को अपनी नैतिक संहिता के रूप में — हमारे मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में — अपना लेते हैं, तो यह हमारे दैनिक जीवन में एक प्रगतिशील प्रभाव और ऊर्जा बन

जाता है। यह हमारे अस्तित्व की गहराइयों के भीतर बुद्धिमानी का ख़ज़ाना है — एक मार्गदर्शक है, हर इंसान के दिल और आत्मा का अंदरूनी निर्देश है।

जब हमारे विचार बुद्धिमत्तापूर्ण होते हैं, तो हमें दूसरों के साथ अपने संबंधों में, निवेशों में, नौकरी में, कारोबार या पेशे में, हमारे हर काम में मार्गदर्शन दिया जाता है।

स्वर्णिम नियम वह कुंजी है, जो सबसे सच्चे वरदानों का ताला खोलती है, साथ ही उन्हें हमारे जीवन में साकार करती है। स्वर्णिम नियम केवल एक धर्म या संस्कृति तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सर्वव्यापी है, इस बात से हम इसके महत्त्व की बेहतर क़द्र कर सकते हैं।

विश्वास सबसे महत्त्वपूर्ण होते हैं। जीवन का पहला नियम विश्वास का नियम है। हमें अपने विश्वासों को चुनने की शक्ति और साधन दिए गए हैं। यह हमारे पास मौजूद सबसे बड़ी शक्ति है। हमारे विश्वास, मान्यताएँ, विचार, राय और नज़रिये ही हमारे जीवन के अनुभवों और परिस्थितियों का निर्माण करते हैं। जहाँ आवश्यक हो, इन्हें बदल दें और हम अपने जीवन को बदल लेते हैं, उसे बेहतर बना लेते हैं और उसका कायाकल्प कर लेते हैं।

इस नियम को "स्वर्णिम" क्यों कहा जाता है? "स्वर्णिम नियम" वाक्यांश किसी धर्मग्रंथ में नहीं मिलता है। द इंटरप्रेटर्स बाइबल डिक्शनरी के अनुसार यह शब्दावली सबसे पहले पाँचवीं सदी ई.पू. के क़रीब यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस के यूनानी साहित्य में (जिन्हें "इतिहास का जनक" कहा जाता है) प्रकट हुई। सोना एक क़ीमती धातु है, जो बुद्धिमत्ता का सर्वव्यापी प्रतीक है। यह धर्मग्रंथ का प्रतीक है, यह जानने के लिए कि हम कौन और क्या हैं। यह धर्मग्रंथों की पेशकश का सार है: संसार की दुविधा और उथलपुथल से पेश आने में हमारी मदद करना — अराजकता के बीच में व्यवस्था में योगदान देना — उस एक स्रोत से अलगाव के अहसास को दूर करना, जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

स्वर्णिम नियम के कुछ बुनियादी सिद्धांतों पर विचार करने में, जैसा कि विभिन्न धर्मों में व्यक्त किया गया है, हमारा इरादा आलोचना करना, मूल्यांकन करना या निंदा करना नहीं है, बल्कि विश्वास की सर्वव्यापकता को ज़्यादा अच्छी तरह समझने की कोशिश करना है।

हम धर्म पर महात्मा गाँधी के इस बेहद मुक्तिदायक विचार को अपने पूरे दिल से अंगीकार करते हैं: "जिस तरह पेड़ का तना एक होता है, लेकिन शाखाएँ और पत्तियाँ कई होती हैं, उसी तरह केवल एक ही सच्चा और आदर्श धर्म है, जो सारी भाषा से परे है। लेकिन यह कई बन जाता है, जब यह 'भाषा के माध्यम से गुज़रता है,' जब अपूर्ण इंसान इसकी व्याख्या करते हैं और दोबारा व्याख्या करते हैं।"

मानव जाति के धर्मों में कमाल की समानता है — विचार, भावना और पद्धति में एक निहित एकता है।

जब गाँधीजी से उनका धर्म पूछा गया, तो उनका जवाब था: "मैं एक ईसाई हूँ, मैं एक यहूदी हूँ, मैं एक हिंदू हूँ, मैं एक मुसलमान हूँ: मैं ये सब हूँ, क्योंकि सारे धर्म एक हैं।"

केवल एक उपस्थिति, एक शक्ति, जिसे कई नामों से जाना जाता है: एक स्रोत: मन के रहस्यवादी इसे दैवी शक्ति कहते हैं।

कुछ प्रबुद्ध ज्ञानियों और दार्शनिकों द्वारा प्रदत्त बुद्धिमत्ता की जाँच करना किसी भी तरह से

बाइबल में पेश की गई अवधारणाओं और ज्ञान की मात्रा या गुणवत्ता को कम नहीं करता है। इसके विपरीत, यह उन्हें सशक्त बनाता है।

शिक्षा के किसी भी महान तंत्र में — चाहे यह धर्म में हो, दर्शन में, कलाओं में या विज्ञान में — जो भी बुद्धिमत्तापूर्ण और तार्किक नज़र आता है, उसकी जाँच करना और अपनाना सहायक होता है। जहाँ भी हम खोजते हैं, सत्य की प्रचुरता पाई जा सकती है। उस सत्य पर दावा करना या यह कहना कि उस महान बुद्धिमत्ता के मोती केवल एक या दूसरी पुस्तक या शास्त्र में है, यह ख़ुद को पंथ, रूढ़ि और धर्मसिद्धांत की संकीर्ण सीमा तक सीमित करना है — मानव जाति द्वारा आदेशित और निश्चित।

स्वर्णिम नियम को सीखना शिक्षाप्रद है, जो पूर्वी नसीहत में, यहूदी और ईसाई धर्म में प्रकट होता है। अब यह माना जाता है कि स्वर्णिम नियम चीनी दार्शनिक कुंग चिऊ (यानी महान गुरु) का पुनर्कथन है, जिन्होंने इसे ईसा मसीह से लगभग 600 साल पहले कहा था।

17 वीं सदी में कुछ रोमन कैथोलिक पुजारी चीन गए, जहाँ उन्होंने उनके लिखे ग्रंथों का अध्ययन किया। जैसा उस समय परंपरा थी, उन्होंने उनके नाम का लेटिन में अनुवाद कर दिया। पाश्चात्य जगत में उन्हें कन्फ़्यूशियस नाम से ज़्यादा अच्छी तरह जाना जाता है। उनकी नसीहत चीन में धर्म के बजाय जू दर्शन या बौद्धिक दर्शन के नाम से जानी जाती है।

उन्होंने किसी देवी-देवता का नाम बहुत कम बार लिया है। इसके बजाय वे इसे “प्रकृति” या “आत्मा” कहना ज़्यादा पसंद करते थे। कभी-कभार वे सर्वोच्च ईश्वर को “स्वर्ग” की संज्ञा देते थे, एक जनक-सर्जक, जिसने सारी सृष्टि को बनाया है: सूर्य, चंद्रमा, ग्रह, प्रकृति की शक्तियाँ।

उनके तर्क के अनुसार हर चीज़ स्वर्ग से आई है और प्रदान की गई है और पृथ्वी पर इंसानों का मुख्य कर्तव्य यह है कि वे प्रकृति से सीखें और स्वर्ग के सामंजस्य में जिएँ, ख़ुद के और दूसरों के साथ सामंजस्य में जिएँ। उनकी नसीहतें उन विचारों और अवधारणाओं पर आधारित थीं, जो ज्ञानी सम्राटों ने उनसे लगभग 1,500 साल पहले प्रतिपादित की थीं।

अपने जीवन के अंत के क़रीब उन्होंने अपने हासिल ज्ञान और वृहद जानकारी का संग्रह शुरू किया, उन्हें बाँस की तख़्ती या पत्तियों पर उकेरा और चमड़े की पट्टी से बाँध दिया। इन्हें पहली चीनी पुस्तकें माना जाता है। उन्होंने इन्हें “प्राचीन लोगों की नसीहत” नाम दिया।

कन्फ़्यूशियस में तार्किकता और स्पष्टता से सोचने व तर्क करने की उल्लेखनीय योग्यताएँ थीं। स्पष्ट, तार्किक सोच को उनके दर्शन में मानव जाति की सर्वोच्च उपलब्धियों में से एक माना जाता है।

अपने आस-पास के कष्टों और ग़रीबी और सरकारी अधिकारियों की बेईमानी व बर्बादी से दुखी होकर वे इस नतीजे पर पहुँचे कि इन सारी समस्याओं के समाधान के लिए ज़्यादा ऊँची नैतिकता की ज़रूरत है। उन्हें महसूस हुआ कि उनकी नैतिक संहिता एक मार्ग प्रदान करती है, लेकिन यह व्यक्ति से शुरू होना चाहिए। उनका तर्क था कि जब कोई व्यक्ति बेहतर बनता है, तो परिवार, समुदाय, सरकार, देश बेहतर बनेगा और नैतिक रूप से पवित्र व मज़बूत बनेगा।

उनका नीतिशास्त्र एक सूची में पेश किया गया है, जिसमें मुख्यतः न करने वाली चीज़ों की सूची है: “झूठ न बोलें, धोखा न दें, चोरी न करें, ज़्यादा न खाएँ, निर्लज्ज न बनें,” और कई अन्य

चीज़ें भी बताई गई हैं, जिन्हें नहीं करना है।

उनका व्यक्ति के रूप में सार, कन्फ्यूशिसवाद का स्वर्णिम नियम भी नकारात्मक है। "दूसरों के साथ वह न करें, जो आप चाहते हैं कि वे आपके साथ न करें।" ग़ौर करें कि हिलेल ने लगभग यही बात, लगभग इन्हीं शब्दों में, कई सदी बाद कही थी।

नकारात्मक कथनों के इस्तेमाल में केवल "की गई चीज़ों की ग़लतियाँ या पाप" शामिल होते हैं, और इनमें छोड़ दी गई चीज़ों की भूलों या पापों का कोई ज़िक्र नहीं है — जिन्हें उपेक्षित कर दिया गया या नहीं किया गया।

अगर हम कन्फ़्यूशियस और हिलेल के नियम को ज़्यादा सृजनात्मक रूप में रखें, "आप चाहते हैं कि जो भी चीज़ें दूसरे आपके साथ करें, वही आप भी उनके साथ करें," तो हम अपने आप करुणा और शिष्टाचार, प्रशंसा और दूसरों में मूल्य की मान्यता की अभिव्यक्तियों को शामिल पाते हैं।

ज़ाहिर है, यह सही और नैतिक दृष्टि से उचित है कि हम चोरी न करें, झूठ न बोलें, हत्या न करें, लेकिन हम "जिस अच्छी चीज़ को करना छोड़ देते हैं, उस पर भी विचार किया जाना चाहिए।" प्रोवर्ब्स में सोलोमन कहते हैं: प्रशंसा करने में जल्दी करें, जब यह वाजिब हो। इसमें क़द्र, शिष्टाचार और सभ्यता शामिल है। कई लोगों और परिवारों में इन शिष्टाचारों का अभाव हम हर दिन देखते हैं। कन्फ़्यूशियस की यह बात सही थी, "नैतिकता का अभ्यास घर में व्यक्ति से शुरू होता है।" यह सुनना असामान्य नहीं है, "चाहे मैं जितना भी करूँ, वह काफ़ी नहीं होता। वह इसकी कभी क़द्र नहीं करता और धन्यवाद तक नहीं कहता।"

स्पष्ट प्रश्न यह है: "आप कितनी बार यह कहते हैं कि धन्यवाद — मैं आपकी क़द्र करता हूँ। मैं सोचता हूँ कि आप संसार में सबसे अद्भुत व्यक्ति हैं?" अगर आप इन ऊर्जादायक शब्दों को सुनना चाहते हैं, तो इन्हें दूसरों से कहने में भी समझदारी है — हर दिन जब तक कि आप आरामदेह न हो जाएँ और आपका उद्देश्य सचमुच यही होना चाहिए। स्वर्णिम नियम सक्रिय प्रेम है।

क्या यह सतही है? आज़माकर देख लें। आपको सुखद आश्चर्य हो सकता है। अच्छे संबंध या विवाह बस "यूँ ही" नहीं हो जाते हैं। उन्हें जोतना होता है, खरपतवार को साफ़ करना होता है, पोषण देना होता है और तब कहीं जाकर यह फलता-फूलता है, शानदार रंग, ख़ुशबू और सौंदर्य उत्पन्न करता है। स्वर्णिम नियम इन्हीं सब चीज़ों के बारे में है।

आप देते हैं, आप पाएँगे — मुश्किल समय में भी और अच्छे समय में भी। हमें ख़ुद से बार-बार पूछना चाहिए: "क्या मैं उसके साथ जीना चाहता हूँ, जो मैं सामने वाले के बारे में सोच रहा हूँ?"

अगर जवाब "हाँ" है, तो यह अद्भुत है। अगर "नहीं" है, तो आप किसका सृजन कर रहे हैं? अगर आप किसी कारोबारी सौदे में किसी का नाजायज़ फ़ायदा उठाते हैं, तो तैयार रहें कि आगे चलकर कहीं कोई दूसरा आपका नाजायज़ फ़ायदा उठाएगा।

यह सरल है, लेकिन हमें इतने नादान या विश्वासी या आसानी से उल्लू बनने वाला नहीं होना चाहिए कि हम यह मान लें कि सभी लोग अपने जीवन में हर समय इस नीति संहिता का

अभ्यास करते हैं। वे नहीं करते हैं। वे इस संसार में रहते हैं; इसलिए हमें संसार के तौर-तरीक़ों के बारे में समझदार बनना चाहिए।

यह कहा गया है कि जो लोग इसे समझते हैं, उन्हें शायद ही कभी हैरानी होती है। उन्हें पहले से चेतावनी मिल जाती है, मार्गदर्शन मिल जाता है और सुरक्षा मिल जाती है। सर्वोच्च विराट उपस्थिति उनकी हिफ़ाज़त करती है — वह सर्वज्ञाता प्रज्ञा, जिसे कन्फ़्यूशियस ने "स्वर्ग" या "आत्मा" कहा था और जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

यह सहायक है कि हम विभिन्न स्वर्णिम नियमों के प्रकटीकरण को एक तरह की समयबद्धता प्रदान करें — एक संदर्भ बिंदु। जब हम उस महत्त्व को समझ लेते हैं, जो इसे इतिहास के सबसे प्रबुद्ध विचारकों, ऋषियों और रहस्यवादियों ने दिया है, तो हमें अहसास होता है कि वे बेहद समझदारी भरे हैं। एक ही उपस्थिति के तौर-तरीक़ों में समझदारी भरे — हालाँकि उन्होंने बहुत सारे नाम लिए हैं। वे संसार के तौर-तरीक़ों के बारे में जागरूक और चौकस थे।

छठी सदी ई.पू. के दौरान पूर्वी जगत में भारी आध्यात्मिक जागरण और सुगबुगाहट थी। लाओ त्सू, जिनके ग्रंथ बाद में ताओवाद का आधार बने, और कन्फ़्यूशियस चीन में अपने दर्शन का प्रचार-प्रसार कर रहे थे। उधर जरथुष्ट्र फ़ारस में जरथुष्ट्रवाद को पुनर्जीवित कर रहे थे।

जेरेमिया, एज़्कील और इसाइया जैसे प्रबुद्ध मनीषी या पैगंबर यहूदियों को उपदेश दे रहे थे कि वे राष्ट्र के रूप में अपने लक्ष्यों की दिशा में कोशिश करते रहें। भारत में उपनिषद लिखे गए थे और ब्राह्मण पंडित वेदों की नई व्याख्याएँ कर रहे थे।

इस प्रगतिशील दौर में महावीर जैन (विजयी) 600 ई.पू. में प्रकट हुए। उन्होंने ज़बर्दस्त करुणा और समझ को उजागर किया, जब उन्होंने सिखाया कि "ख़ुशी में और दुख में, आनंद में और कष्ट में, हमें दूसरे सभी लोगों को उसी तरह देखना चाहिए, जिस तरह हम ख़ुद को देखते हैं।"

उनके अतिवादी वैराग्य के कारण आज जैन धर्म के अनुयायी भारत में दूसरे धर्मों की तुलना में कम हैं (लगभग 23 लाख)। लेकिन महावीर स्वामी असाधारण जागरूकता वाले इंसान थे। उन्होंने सिखाया कि हमें धर्मगुरुओं या दूसरों पर या लोकप्रिय देवताओं पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। उनकी नसीहत यह थी कि हमें उस एक पर निर्भर रहना चाहिए, जो हमारे ध्यान पर प्रतिक्रिया करता है और यह भी कि हम ख़ुद अपने तारणहार हैं; हम अपनी समस्याओं को ख़ुद सुलझा सकते हैं। ऐसा करने के लिए हमारे सारे प्रयास इन तीन "रत्नों" को हासिल करने की दिशा में लगने चाहिए:

इसका ज्ञान आस्था की ओर ले जाता है।

इसके प्रति आस्था सही व्यवहार की ओर ले जाता है।

इसके प्रति सही व्यवहार ही बुद्धिमत्ता है।

इन तीनों रत्नों में सबसे अहम है सही व्यवहार, क्योंकि यह कर्म से जुड़ा है। दूसरों के साथ वही करें...

महावीर यह देखकर दुखी थे कि जब सब कुछ अच्छा और समृद्ध रहता था, तो मित्रों और साथियों के शिष्टाचार और मित्रता के ढेर सारे प्रमाण मिलते थे। लेकिन जब किसी व्यक्ति का

भाग्य पलटा खाता था या वह दुखी हो जाता था, तो तथाकथित मित्र अक्सर ग़ायब हो जाते थे, जबकि उस वक़्त सांत्वना, राहत, उत्साहवर्धन या आशा की सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती थी।

"एक दूसरे का त्याग न करें," उन्होंने कहा, "यह सही व्यवहार नहीं है; यह समझदारी भरा नहीं है। क्योंकि तुम्हारा भी त्याग किया जाएगा। हमें उन्हें अपने ख़ुद के स्वरूप जैसा मानना चाहिए — ख़ुशी और कष्ट में, सुख में और दुख में, अच्छे समय में और बुरे समय में।"

हर एक द्वारा व्यक्त मुश्किलें और दुख कई मौजूद लोगों के मन में दुख और कष्ट, यहाँ तक कि शर्मिंदगी भी उत्पन्न करते हैं। लेकिन क्या हमें कम से कम कोशिश नहीं करनी चाहिए — और बदले में किसी पुरस्कार की उम्मीद नहीं रखनी चाहिए — क्योंकि अच्छा और नैतिक काम है?

ईसा मसीह से छह सदी पहले प्रकट होने वाली स्वर्णिम नियम की यह अभिव्यक्ति शायद सबसे करुण और प्रेमपूर्ण है। ताओवाद, जिसे लाओ त्सू ने कन्फ्यूशिसवाद से कुछ समय पहले स्थापित किया, भी इसी तरह का भाव व्यक्त करता है। "अपने पड़ोसी के लाभ को अपना लाभ मानो; अपने पड़ोसी के नुक़सान को अपना नुक़सान मानो।" यह बाइबल की हिदायत के समान है, "तुम्हें अपने पड़ोसी से अपनी तरह प्रेम करना चाहिए।" इस नियम पर अमल करने से करुणा की शक्ति जाग्रत होती है — दूसरों के प्रति करुणा, भावना की ज़्यादा बड़ी उदारता के साथ उन्हें देखना, उनके विचारों और दृष्टिकोणों के प्रति ज़्यादा सहनशीलता।

हम ख़ुद से सवाल करने लगते हैं: "अगर हमारी स्थितियाँ उलट जाएँ, तो मैं अपने पड़ोसियों (एक मायने में हर व्यक्ति, जिसके हम संपर्क में आते हैं) से अपने प्रति किस तरह का व्यवहार चाहूँगा? मैं क्या चाहूँगा कि वे मेरे लाभ को किस तरह देखें: ईर्ष्या के साथ, लालच के साथ, जलन के साथ?" "मैं क्या चाहूँगा कि वे मेरे नुक़सान को किस तरह देखें? रुचि के पूरे अभाव के साथ? यहाँ तक कि छिपी हुई दुर्भावना के साथ?" हालाँकि हो सकता है कि हम किसी मुद्दे पर सहमत न हों, लेकिन क्या मैं चाहता हूँ कि मेरे पड़ोसी मुझे राय व्यक्त करने का अधिकार दें?"

हम भीतर निश्चित शांति या नम्रता को सक्रिय होता पाएँगे। हम यह भी ग़ौर करेंगे कि कई लोग ज़्यादा तार्किक और शांत अंदाज़ में हमारी ओर आते हैं। यह एक निश्चित संकेत है कि करुण नज़रिया, नम्रता और धैर्य हमारे भीतर शासक दिशानिर्देश बन रहे हैं, आत्मा के निर्देश।

मेरे कई परिचित बरसों से शांत मानसिक अवस्था और धैर्य के लिए प्रार्थना कर रहे हैं — यह अहसास किए बिना कि इन वरदानों को हासिल करने का एक तरीक़ा करुणा का अभ्यास है। यह प्रेम का एक पहलू है। पैगंबरों का नियम "अपने पड़ोसी से अपनी तरह प्रेम करें" जीवन बदलने वाला है।

लाओ त्सू ने हमें शांति से बातचीत करने को कहा था। अपने और अपने पड़ोसी के दाओ (ईश्वर) के साथ मिलन पर मनन करें; वह आपकी सुनेगा और आप दोनों को स्थिरता से सम्मानित करें। लेकिन प्रेम, करुणा, शांति और नम्रता कुछ लोगों को कमज़ोरी जैसी लग सकती हैं। हमें नम्रता और कमज़ोरी को एक मानने की ग़लती कभी नहीं करनी चाहिए। नम्र व्यक्ति बहुत शक्तिशाली और उद्देश्यपूर्ण होता है। नम्र इंसान बनने के लिए काफ़ी शक्ति और लगन की ज़रूरत होती है। इसमें चरित्र की असाधारण शक्ति शामिल होती है।

"स्थिर रहो और ईश्वर को जानो।" हर अवतार और धर्म के हर संस्थापक को उसकी नम्रता

के लिए जाना जाता था। वे इतने शक्तिशाली थे कि बेहतर और ज़्यादा ऊँची नैतिकता के लिए उन्होंने अरबों लोगों का मन बदल दिया।

"यह प्रकृति तभी अच्छी है, जब यह दूसरे के लिए वही करे, जो इसके ख़ुद के लिए अच्छा है।" कुछ पूर्वी धर्मों में ऐसे घटक हैं, जो वर्तमान में संघर्ष, युद्ध, आतंकवाद के वीभत्स कार्यों में उलझे हुए हैं, लेकिन उनके शुरुआती उद्गम में उन्होंने करुणा, सहनशीलता और दूसरे के प्रति अपने कामों की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी के लाभों की जागरूकता का प्रमाण दिया था।

यह सिक्ख धर्म के स्वर्णिम नियम में निहित है: "जैसा आप ख़ुद को मानते हैं, वैसा ही दूसरों को मानें; तब आप स्वर्ग में साझेदार बन जाएँगे।" माना जाता है कि सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरु नानक ने यह कहा था, जो इससे पहले हिंदू थे। उनकी सर्वोच्च इच्छा यह थी कि वे हिंदू धर्म और इस्लाम के सबसे प्रेरित और सृजनात्मक तत्वों को मिला दें। वे सोलहवीं सदी में बहुत सफल हुए।

इस्लाम एक अल्लाह की उपासना करता है और हिंदुओं ने — अपनी पारंपरिक सहिष्णुता के साथ — इस दृष्टिकोण का स्वागत किया। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि मुसलमान उस ईश्वर को "अल्लाह" कहते थे। बदले में मुसलमानों ने हिंदुओं की भक्ति के गहरे अहसास की क़द्र की और उसका सम्मान किया। गुरु नानक ने दोनों के सर्वश्रेष्ठ का अद्भुत संगम कर दिया, जिसमें से प्रमुख यह है कि केवल एक ही उपस्थिति, एक ही शक्ति, एक ही प्रज्ञा है, जिससे सारी चीज़ें आती हैं और जिसकी ओर सारी चीज़ें लौटती हैं। इसे कई नामों से जाना जाता है, लेकिन यह हमेशा एक है और इसका नाम चाहे जो हो, वही है जो है।

दो धर्म सिक्ख धर्म में मिलकर एक हो गए, जिसने व्यक्तिगत सहिष्णुता और व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी को प्रोत्साहित किया। "जैसा आप ख़ुद को मानते हो, वैसा ही दूसरों को मानो; फिर आप स्वर्ग में साझेदार बन जाओगे।" स्वर्णिम नियम शांति से इस बात पर ज़ोर देता है कि हम अपने साथ-साथ दूसरों के बारे में भी ऊँची राय रखें, जो सभी लोगों के प्रति सम्मान और सद्भाव है और उनकी राय तथा विश्वास के बारे में अधिक दयालु और सहिष्णु बनना है, चाहे वे हमारे समान हों या हमसे पृथक हों।

जिस तरह हम विचार और बौद्धिक चयन की सबसे ज़्यादा स्वतंत्रता की अपने लिए इच्छा करते हैं, उसी तरह हमें इसे बाक़ी सभी लोगों के लिए भी मूल्यवान मानना चाहिए। स्वर्ग में साझेदार बनने के लिए हमें दूसरों के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को समझना चाहिए।

साझेदार वह है, जो न सिर्फ़ किसी संगम या विलय के लाभ पाता है और उनका आनंद लेता है, चाहे यह वैवाहिक हो, राजनीतिक हो या आर्थिक हो, बल्कि जो इसकी सफलता के उत्तरदायित्व को स्वीकार भी करता है और सफलता सुनिश्चित करने की दिशा में प्रयास व नज़रिये का न्यायपूर्ण योगदान देने का इच्छुक होता है।

जब हम दूसरे लोगों को सोचने, बोलने, आराधना करने और वोट देने की आदर्श स्वतंत्रता देते हैं — अपने पूरे दिलोदिमाग़ से — तो हम उन्हें वैसा ही मान रहे हैं, जैसा हम ख़ुद को मानते हैं। यह एक ऐसी साझेदारी है, जिसमें हम कम से कम उतना दे रहे हैं, जितना हम पाने की उम्मीद करते हैं।

जब आपका मन स्वतंत्रता के इस नज़रिये पर ज़्यादा केंद्रित और आरामदेह बन जाता है, तो

आप ग़ौर करेंगे कि आप ओछी असहमतियों में कम से कम शामिल होते हैं।

सहिष्णुता और ज़िम्मेदारी सिक्ख धर्म के दो महानतम उपहार हैं। यह इस बात का एक और उदाहरण है कि किस तरह अलग-अलग कालखंडों में और संसार के अलग-अलग हिस्सों में विभिन्न धर्म तहेदिल से इस बुनियादी अवधारणा से सहमत थे।

यह सिद्धांत इतना शक्तिशाली है — जिसे कई भाषाओं और संस्कृतियों में "स्वर्णिम" कहा जाता है — कि अगर हर जगह इस पर अमल किया जाए और सभी निर्णयों व आकलनों में इस पर अमल किया जाए, तो हम एक अलग संसार में रह रहे होंगे। हम धरती पर स्वर्ग बना लेंगे।

अगर सारी मानव जाति इसके अनुसार चले, सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से, तो कोई युद्ध, अपराध और क्रूरता नहीं होगी — न ही अमानवीयता, ग़रीबी, कष्ट होगा। हम "पृथ्वी पर शांति और सारी मानव जाति के प्रति सद्भाव" अनुभव करेंगे। आदर्श संसार।

क्या यह काल्पनिक है? अव्यावहारिक? शायद — सामूहिक रूप से; और जब तक सारे लोग एक ईश्वर की जागरूकता में न रहें, तब तक यह उचित है कि हम परिवारों, समुदायों, राष्ट्रों के रूप में शक्तिशाली तथा तैयार रहें।

स्वर्णिम नियम पर अमल करके हममें से हर एक व्यक्ति के रूप में अपने जीवन को समृद्ध कर सकता है। हम एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी बना सकते हैं, जिसे हम पहले नहीं जान सकते थे — काल्पनिक और अव्यावहारिक से बहुत परे। वास्तव में, यह हमारे जीवन की बुनियाद बन जाएगी।

इसे असंख्य नामों से जाना गया है, असंख्य तरीक़ों से इसकी पूजा की गई है, प्राचीन काल से ऋषि-मुनियों ने मानव जाति के हृदय और आत्मा के भीतर की एक उपस्थिति को सम्मानित किया है, जो सभी स्त्री-पुरुषों में वास करती है।

जब हम प्रेम और सद्भाव से दूसरों के बारे में उदारता से सोचते हैं, सम्मान करते हैं और काम करते हैं, तो हमें भारी समृद्धि के ख़ज़ाने मिलेंगे और हम अपने दिलोदिमाग़ के स्वर्ग में शांति में, सौहार्द में और समृद्धि में जिएँगे, और विराट उपस्थिति हमारी रक्षा करेगी: एक ईश्वर, सर्वोच्च पिता और सबका प्रेमी।

सार

आप "स्वर्णिम नियम" के सिद्धांत को एक स्वर्णिम धागे की तरह दर्शन और आराधना के सभी मुख्य तंत्रों में बुना हुआ पाएँगे। हो सकता है कि शब्द भिन्न हों, लेकिन विचार का इरादा समान है: कि हमें दूसरों के साथ वही करना चाहिए, दूसरों के प्रति विश्वास, आराधना, उपलब्धि और संग्रह की उन्हीं स्वतंत्रताओं की कामना करनी चाहिए, जो हम अपने लिए करते हैं। जब हम इस नज़रिये को अपनी नैतिक संहिता — अपने मार्गदर्शक सिद्धांत — के रूप में अपना लेते हैं, तो यह हमारे दैनिक जीवन में एक प्रगतिशील प्रभाव और ऊर्जा बन जाता है। यह हमारे अस्तित्व की गहराइयों में बुद्धिमत्ता का ख़ज़ाना है, एक मार्गदर्शक, हर स्त्री-पुरुष के दिल और आत्मा का एक अंदरूनी निर्देश।

मानव जाति के धर्मों में एक आश्चर्यजनक समानता है — विचार, भावना और तरीक़े में एक अंतर्निहित एकता है।

स्वर्णिम नियम पर अमल सक्रिय प्रेम है। क्या यह सतही है? अच्छे संबंध या विवाह "यूँ ही" नहीं हो जाते हैं। उन्हें विकसित करना होता है, खरपतवार साफ़ करनी होती है, पोषण देना होता है और तब कहीं जाकर यह फलता-फूलता है, शानदार रंग, गंध और सौंदर्य उत्पन्न करता है। स्वर्णिम नियम इसी के बारे में है।

ताओवाद भी ऐसा ही भाव व्यक्त करता है। "अपने पड़ोसी के लाभ को अपना ख़ुद का लाभ मानें; अपने पड़ोसी के नुक़सान को अपना ख़ुद का नुक़सान मानें।" यह बाइबल की इस बात के समान है "तुम अपने पड़ोसी से अपनी तरह प्रेम करोगे।" इस नियम पर अमल करने से करुणा की शक्ति जाग्रत होती है — दूसरों के प्रति परानुभूति, आत्मा की ज़्यादा उदारता से उनकी ओर देखने की योग्यता, उनके विचारों और दृष्टिकोणों के प्रति ज़्यादा सहिष्णुता।

सिक्ख धर्म भी व्यक्तिगत सहिष्णुता और व्यक्तिगत उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करता है। "जैसा आप ख़ुद को मानते हैं, वैसा ही दूसरों को मानें; फिर आप स्वर्ग में साझेदार बन जाएँगे।" यह स्वर्णिम नियम ज़ोर देता है कि आप अपने साथ-साथ दूसरों के बारे में भी ऊँची राय रखें, जो सभी स्त्री-पुरुषों के प्रति सम्मान और सद्भाव है, और उनकी राय तथा विश्वासों के बारे में ज़्यादा दयालु और सहिष्णु बनें, चाहे वे आपके जैसी हों या न हों।

जब हम स्वर्णिम नियम का अनुसरण करते हैं, तो हममें से हर एक व्यक्ति के रूप में अपने जीवन को समृद्ध बना सकता है। हम एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी बना सकते हैं, जो हो सकता है हम पहले से न जानते हों — काल्पनिक और अव्यावहारिक से बिलकुल अलग। सचमुच यह हमारे जीवन की बुनियाद बन जाएगा।

11

आपका भविष्य: आगे देखने की कला

आगे देखना हमारी आंतरिक, असीमित बुद्धिमत्ता के ज़रिये अपनी आंतरिक योजनाओं व उद्देश्यों को साकार करने और प्रदर्शित करने की कला है। यह हममें से प्रत्येक के भीतर सृजनात्मक तथा उपचारक उपस्थिति को प्रेरित करता है।

आगे देखना जीवन के महान सिद्धांतों के साथ सहयोग करने और उनके सामंजस्य में जीने की कला है — कि सारी चीज़ें शाश्वत, असीमित मन से आती हैं, जिसे प्राचीन लोगों ने "दैवी शक्ति" कहा था, प्रेमपूर्ण ईश्वर की जीवंत उपस्थिति।

आगे देखना कला का एक रूप है, जिसे वेब्स्टर ने इस तरह कहा है, "एक व्यक्तिगत सृजनात्मक शक्ति, जिसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता — योग्यता और सृजनात्मक कल्पना का चेतन इस्तेमाल।"

कल्पना उस महानतम शक्ति की बदौलत सृजनात्मक है, जो कभी रही थी, है और होगी — असीमित, सृजनात्मक उपस्थिति जिसे हम ईश्वर कहते हैं — जो हमेशा हमारे आंतरिक चित्रों और विचारों की प्रकृति के अनुरूप हम पर प्रतिक्रिया करती है।

ख़ुद से पूछकर उजागर करें: "भविष्य के बारे में मैं क्या कल्पना करता हूँ और महसूस करता हूँ और विश्वास करता हूँ?" ये युगों पुराने, शाश्वत प्रश्न हैं। हम कई बार चकराकर पूछते हैं: "भविष्य के गर्त में मेरे लिए, मेरे प्रियजनों, मेरे कारोबार या पेशे के लिए क्या है? मेरा क्या होगा?" ये अपने आप कई और प्रश्नों को जन्म देते हैं: "क्या भाग्य या पहले से तय प्रारब्ध जैसी चीज़ें हैं? क्या ईश्वर मेरे भविष्य के लिए ज़िम्मेदार है? या क्या हम इस बारे में कुछ कर सकते हैं कि हमारे साथ कल क्या होगा? क्या हम ज़िम्मेदार हैं?"

हर सोचने वाला और परवाह करने वाला व्यक्ति ये प्रश्न पूछता है — जो पूरी तरह वैध हैं — और जवाब सत्य में उपलब्ध हैं। वे इस समय हमें पुकार रहे हैं, अपने ख़ुद के मन और हृदय के भीतर से — और हम सुनने तथा सृजनात्मक तरीक़ों से प्रतिक्रिया करने में सक्षम हैं।

बाइबल में हम मूसा की कहानी पढ़ते हैं, जो मिस्र से निर्वासन के बाद के वर्षों में अपने भेड़ों के रेवड़ सँभाल रहे थे, जब उन्होंने अपने सामने एक झाड़ी को जलता देखा और जाँच-पड़ताल करने गए। जब वे जलती हुई झाड़ी के सामने खड़े थे, तो उन्होंने आह्वान सुना। यह आह्वान अलंकारिक रूप से उस राह या ऊपर उठती चेतना के मार्ग पर पहला क़दम था।

जो झाड़ी आग और लपट में लिपटी हुई है, वह हममें से प्रत्येक के भीतर जल रही है। यह हमारे भीतर की दैवी लपटें या आग है: ज़्यादा ऊपर उठने की हमारी धधकती इच्छा — हम इस समय जो हैं, उससे ज़्यादा बनने, करने, देने, हासिल करने और व्यक्त करने की इच्छा। यह वह प्रकाश है, जो संसार में आने वाले हर व्यक्ति को प्रकाशित करता है।

सर्मन ऑन द माउंट में ईसा मसीह ने कहा था: "तुम संसार का प्रकाश हो। अपने प्रकाश को लोगों के सामने इस तरह चमकने दें ताकि वे तुम्हारे अच्छे काम देख सकें।" यह जीवन की दैवी अग्नि है — हमारे भीतर जलती ऊर्जा। यह हमें ख़त्म या नष्ट नहीं करेगी।

जब भी हम किसी असंभव अनुभव या घटना के बारे में पढ़ते हैं, तो इससे हमें ख़ुद को ज़्यादा ग़ौर से देखने की याद दिलाना चाहिए — इस तथ्य के बारे में चौकस करना चाहिए कि हम एक नीति कथा पढ़ रहे हैं: एक अद्भुत कहानी या मिथक — सत्य, जिसे धर्मग्रंथ में नीतिकथा, मिथक या प्रतीक के रूप में बताया गया है।

संसार की पवित्र पुस्तकों में एक दंतकथा है, कि हर व्यक्ति दैवी अग्नि की एक लपट है, संभावनाओं से चमक रहा है और हम यहाँ पर दैवी शक्ति, अंदर के देवत्व के बारे में जागरूक और सजीव होने के लिए आए हैं — जो असीमित रूप से ज्ञानी, बुद्धिमान है, समझदार है और हमारे कल्याण की परवाह करता है।

यह खोज और जागरूकता हमारे जीवन का प्राथमिक उद्देश्य है। एक बार जब इसे पहचान और अनुभूत कर लिया जाता है, तो बाक़ी हर चीज़ सही जगह पर, सामंजस्य में आ जाती है। हम आश्वस्ति और शांति से भविष्य का सामना कर सकते हैं। सत्य प्रेरक और व्यावहारिक है। यह परिणाम देता है, बाइबल, कुरान, पूर्वी धर्मों और सभी युगों के दार्शनिकों के "अच्छे काम" देता है। यह सृजनात्मक और लाभकारी परिणामों या प्रकटीकरण के अहसास में "अच्छाई" है।

बुनियादी तौर पर, केवल दो तरीक़े हैं, जिनसे हम आने वाले कल यानी भविष्य के बारे में विचार कर सकते हैं: डर से या असीमित और शाश्वत सिद्धांतों में विश्वास के साथ, जो कभी नहीं बदलते हैं। भविष्य के बारे में हमारे व्यक्तिगत दृष्टिकोण या अनुभूतियाँ डर (और यह भावना कि हम हक़दार नहीं हैं और पापी हैं) और विश्वास के बीच का फ़र्क़ हैं; अपनी अद्भुत योग्यताओं, अंदरूनी गुणों, उदात्त गुणों और उदात्त आदर्शों में विश्वास, जो हममें से प्रत्येक के भीतर होता है और बाक़ी सबके भीतर भी होता है।

एक्सोडस की पुस्तक में यह पहले बताया गया है कि मूसा ने अपने रेवड़ का नेतृत्व किया, जब तक कि वे ईश्वर के पर्वत तक नहीं पहुँच गए। फिर मालिक का देवदूत (संदेशवाहक) एक झाड़ी के बीच से अग्नि की लपट में उनके सामने प्रकट हुआ... और मूसा ने देखा, झाड़ी आग से

जल गई। लेकिन झाड़ी का बाल भी बाँका नहीं हुआ।"

मूसा ने कहा, "अब मैं अलग हटूँगा और इस महान दृश्य को देखूँगा — झाड़ी जलकर ख़ाक क्यों नहीं हुई?"

"जब मालिक ने देखा कि वह देखने के लिए अलग हट गया है, तो ईश्वर ने झाड़ी के बीच से उसे पुकारा और कहा, 'मूसा, मूसा।' मूसा ने कहा (प्रतिक्रिया की), 'मैं यहाँ हूँ।'" (खुला और ग्रहणशील, दोबारा सुनने की कोशिश करने का इच्छुक।)

"और मालिक ईश्वर ने कहा, '...अपने पैरों से जूते उतारो, क्योंकि जहाँ तुम खड़े हो वह पवित्र स्थान है।'"

चेतना की हमारी वर्तमान अवस्था "पवित्र स्थान" है — हमारा आरंभ और शुरुआत। बहुत सारे लोगों को यह सिखाया गया है कि वे ज़्यादा सीखें, ज़्यादा पुस्तकें पढ़ें, ज़्यादा क्लासों में जाएँ, ज़्यादा महँगे सेमिनारों में भागीदारी करें। ये अच्छे और बहुत मददगार हो सकते हैं। वैसे अंततः हमें दूसरों की कही बातों से "दूर हटना" होता है। हमें उनकी अनुभूतियों से दूर जाना होता है। हमें अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों, अवधारणाओं और रायों को तय करना होगा और एकाग्र होना होगा। हमें स्पष्टता से और ईमानदारी से देखने के लिए "पुकारा" जाता है कि कैसे रेगिस्तानी जगह — जिसका नाम होरेब था — का वर्णन "झुलसी, निर्जन, एकाकी" जगह के रूप में किया गया है। यह हममें से प्रत्येक का रूपक है, जब हमने अपना हर जतन कर लिया है — जब हम अपने संसाधनों को पूरी तरह से ख़त्म कर चुके हैं — जब हम बंजर होते हैं और आशा के किसी अहसास, उन सत्यों के किसी तरह के जवाब से महरूम महसूस करते हैं, जिन्हें हमने कष्टों से सीखा है और त्याग दिया है।

आलंकारिक रूप से रेगिस्तान का अर्थ समझ की अवस्था है, जब और जहाँ हमें अपने जीवन के स्रोत से निकटता का अहसास नहीं होता है। जब हम आध्यात्मिक प्रेरणा, अंतर्बोध, कल्पना के जल को महसूस नहीं कर सकते या उसकी कल्पना नहीं कर सकते। जब हम उत्साह और आशा से सजीव नहीं हो सकते। यह एक बार-बार होने वाली, समय-समय पर होने वाली, उठने वाली अवस्था है — और हमें इससे नहीं डरना चाहिए; न ही हमें आशा या सत्य की इच्छा पर भरोसा करना चाहिए। यह मूसा को कहे गए वाक्य में निहित है — "जहाँ तुम इस समय खड़े हो, वह पवित्र स्थान है।"

जहाँ भी आप इस समय हों, वहीं शुरू कर दें। बाइबल के रेगिस्तान को उसी रूप में देखें, जो यह है: एकाकी विश्राम की जगह, जहाँ हम दुविधापूर्ण और बारंबार हताशाजनक संसार की दुविधा, शोर-शराबे और जटिलताओं से दूर मुड़ते हैं। तब हम अपने विचारों के प्रवाह की जाँच कर सकते हैं और यह जानकर हैरान हो सकते हैं कि उनमें से कितने अतीत या फिर अनिश्चित भविष्य के बारे में अफ़सोस भरे हैं।

दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों और धर्मगुरुओं ने हमें बरसों से सलाह दी है कि हम वर्तमान में रहें, लेकिन हममें से बहुत कम लोग ऐसा कर पाते हैं। हम अपने अतीत की असफलताओं और भविष्य के डरों के बारे में सोचते रहते हैं, लेकिन हम दरअसल हमेशा वर्तमान पल में ही जी रहे हैं — हम इसके अलावा कुछ कर ही नहीं सकते। यह एक महान सत्य है: जब हम भविष्य के बारे में चिंता करते हैं या अतीत की ओर अफ़सोस से देखते हैं, तो हम यह काम वर्तमान पल में

कर रहे हैं। अतीत बस पुराने दृश्य और घटनाएँ हैं, जिन्हें वर्तमान चेतना में लाया गया है। भविष्य हमारी वर्तमान चिंता है, जिसे हम देख नहीं सकते, लेकिन जिसे प्रकट कर दिया गया है — लेकिन हमारी चिंता अभी है, वर्तमान पल में। यह वर्तमान है, जो तय करता है कि हम ख़ुश हैं या दुखी। इस दिन को देखें।

हमारी वर्तमान अवस्था या परिस्थिति चाहे जो हो, जब कल्पना और भावना का मिलाप हो जाता है, चेतना सृजनात्मक हो जाती है, तो हम अपने पूरे दिमाग़, दिल और आत्मा से सीखते हैं कि हम मानवीय रायों, डरों और पूर्वाग्रहों के अधीन या शिकार नहीं हैं, जिन्हें हमने संसार से ग्रहण किया है — सीखी हुई बातें, जो हमारे भीतर की ज़बर्दस्त सृजनात्मक शक्ति को रोकती हैं।

जब मूसा जलती हुई झाड़ी पर विस्मयपूर्वक मनन करने के लिए अलग हट गए, जो लपट और आग से जल रही थी — लेकिन उसका बाल भी बाँका नहीं हो रहा था — तो यह अहसास जन्मा कि पदार्थ, भौतिक संसार या घटनाएँ सबसे पहले, बुनियादी तौर पर मन से संबंधित हैं। यह प्रकाश और ऊर्जा है, जो हमारे ज़रिये एक नए जीवन को व्यक्त करने की इच्छा रखती है। जागरूकता मानव जाति के लंबे इतिहास में जन्मी थी और यह हमारी रोज़मर्रा की गतिविधियों तथा मामलों में हमारे भीतर जीती है और हमारे ज़रिये व्यक्त होती है।

हमें केवल "अपने जूते उतारने हैं" — यानी अलंकारिक रूप से अपनी समझ के पर्दे हटाने हैं — वे सलाहें और पहले से ढले हुए दृष्टिकोण व पूर्वाग्रह, जो हमारे तथा शुद्ध, स्पष्ट समझ की ज़मीन और बुनियाद के बीच आ जाते हैं। एक बार फिर, बाइबल सचमुच महान जीवन सिद्धांतों को पेश करने वाली पुस्तक है, जो अलंकारिक भाषा और चित्रों में शुद्ध सच्चाई बताती है। इसकी तकनीकों या सत्य को पेश करने के तरीक़ों को समझने से 99 प्रतिशत ग़लतफ़हमियाँ और दुविधा दूर हो जाती है, जो रहस्यवादी भाषा की शाब्दिक व्याख्या से उत्पन्न होती हैं।

"पैर" वह हैं, जिन पर हम खड़े हैं, शारीरिक रूप से और सचमुच — लेकिन इसके अलावा अलंकारिक रूप से वे सहारा हैं। चूँकि बाइबल के लेखन का एक आंतरिक अर्थ और एक बाहरी अर्थ है, इसलिए पैर हमारे जीवन के अंदरूनी सहारे का प्रतीक या प्रतिनिधि बन जाते हैं: हमारी समझ और हमारी अंतर्दृष्टि तथा नज़रिये।

"अलग हटने" में हम ख़ुद से पूछने का समय निकालते हैं: "मैं इस समय कहाँ खड़ा हूँ? मैं किस पर खड़ा हूँ? मैंने अपने, दूसरों, ईश्वर, संसार के बारे में अपने विश्वासों की ज़मीन या बुनियाद किसे बनाया है? इच्छा और इसके साकार होने के बीच क्या खड़ा हो सकता है?"

मूसा ने यह कहकर तैयारी की अपनी इच्छा व्यक्त की थी, "मैं यहाँ हूँ।" अपनी वर्तमान चेतना की जागरूकता में मैं अपने प्रारब्ध को पूरा करने के लिए अपनी ज़िम्मेदारी स्वीकार करने का इच्छुक हूँ। मूसा को उनकी तक़दीर बताई जाती है: इज़राइल के लोगों को वादे की भूमि तक पहुँचाना। जब हम यह समझ लेते हैं और स्वीकार कर लेते हैं कि हमारी तक़दीर, हमारे भाग्य, हमारे सौभाग्य, हमारे भविष्य का नियंत्रण हमारे भीतर ही है, तो मूसा की तरह ही हम भी पूर्णता और उपचार खोज लेंगे, तब हम प्रेमपूर्ण ईश्वर के अहसास और जीवंत उपस्थिति को समझ लेंगे। भविष्य में हमारे लिए यही है: उससे भी अधिक अद्भुत जीवन, जो हमने अब तक जिया है।

"भाग्य" का अर्थ बुरी, दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से संबंधित माना जाता है। हमारे बोले गए शब्द

हमारे अंदरूनी विचारों को प्रकट करते हैं। सिवाय हमारे मन के कहीं कोई क्रोधित देवता नहीं है, जो दुर्भाग्य का आदेश दे रहा है।

क्या तब ईश्वर ज़िम्मेदार है? क्या उसने हमें हर अच्छी चीज़ दी है? सारी अच्छी चीज़ें: सूर्य, चंद्रमा, तारे — सभी आवश्यक चीज़ें। अच्छा प्राप्तकर्ता बनना सीखना और पहचानना हमारी ज़िम्मेदारी है — हर दिन (पाने के लिए) अपनी चेतना से हर उस चीज़ को हटाना हमारी ज़िम्मेदारी है, जो हमारी इच्छा, लक्ष्यों और "वादे की ज़मीन" के ख़िलाफ़ है। जितनी अच्छी तरह हो सके, ऐसा करें।

प्रार्थना और ध्यान हमारी मदद करेंगे, ताकि द्वेष, क्रोध और प्रतिशोध की इच्छा हमारे भीतर घुसपैठ न करें। जब भी यह हो, तो स्थिर बनें, अलग हट जाएँ, शांत आश्वस्ति में विश्राम करें कि एक ज़्यादा अच्छा तरीक़ा है। ख़ुद को क्षमा करें: कमतर विचार, मनोदशा को छोड़कर बेहतर बनाएँ। बंधनमुक्त हो जाएँ! मानसिक सिद्धांत को अपना आदर्श काम करने दें, वरना हम ख़ुद को दोबारा संक्रमित कर लेंगे। जलती झाड़ी से आवाज़ सुनें: "मैं अपनी संतानों के दुख जानता हूँ और उनके कष्ट देखता हूँ... मैं उन्हें एक अच्छी ज़मीन तक पहुँचाने आया हूँ, जो दूध और शहद (पोषण) से भरी है।"

जैसा आप जानते हैं, मूसा को उनका नेतृत्व करने के लिए नियुक्त किया गया था। उन्होंने आवाज़ से अपना परिचय देने को कहा, ताकि वे लोगों को बता सकें कि वे ऐसा किसकी सत्ता और शक्ति से बोल रहे हैं। "ईश्वर ने मूसा से कहा, 'मैं मैं हूँ। इज़राइल की संतानों से कहो, मैं हूँ ने तुम्हें भेजा है... स्थिर रहो और जान लो कि मैं ईश्वर हूँ।'"

यह अंश इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथ्य पर ज़ोर देता है कि बाइबल व्यक्तित्वों के बजाय सिद्धांतों से सरोकार रखती है। मैं हूँ चेतन अस्तित्व की घोषणा है — जो सभी पुरुषों और स्त्रियों द्वारा कही जाती है। "मैं हूँ तरीक़ा, सत्य और जीवन।"

जब आप कहते हैं मैं हूँ, तो आप अपने भीतर के जीवंत ईश्वर की उपस्थिति में हैं। आप अपने होने की घोषणा कर रहे हैं। मैं हूँ जो मैं हूँ। "जो" शब्द उसे बताता है, जो भी आप चाहते हैं, इच्छा करते हैं और बनना चाहते हैं। दूसरे "मैं हूँ" का मतलब है सफल प्रार्थनाएँ, आपकी इच्छा की पूर्ति और प्रेरणा।

मैं हूँ;(I am) हिंदुओं का ओम् है। भावना, मनोदशा और नज़रिये में जीना — मैं हूँ इसी समय जो मैं बनने की हसरत करता हूँ। यह अहसास करते हुए कि अगर जिस ईश्वर की मैं पूजा करता हूँ, वह मैं हूँ, तो यह निष्कर्ष निकलता है कि मैं हूँ के माध्यम से ही मैं सचमुच आराधना कर सकता हूँ (योग्य गिना जा सकता हूँ)। जब आप कहते हैं "मैं हूँ," तो आप ख़ुद को क्या कहते हैं? "मैं हूँ" के बाद हम क्या घोषणा करते हैं?

क्या आप कहते हैं, "मैं हूँ डरा हुआ, भयभीत, ग़रीब और दुखी?" या आप स्थिर हो जाते हैं और प्रतिक्रिया करते हैं, "मैं हूँ — मैं हूँ जीवंत, प्रेमपूर्ण उपस्थिति की संतान। मैं हूँ पहले से भी ज़्यादा महान बनने के लिए नियत। मैं हूँ जीवन में मेरी आदर्श जगह तक दैवी मार्गदर्शन प्राप्त, जहाँ मैं ख़ुद को अपनी सर्वोच्च क्षमता पर व्यक्त करता हूँ और एक वरदान बन जाता हूँ — सारी मानव जाति के लिए लाभकारी। मैं हूँ: संसार की ऊँचाई। मैं हूँ हमारे साथ है और हमारे अंदर है: हमें किसका डर है। हम किससे डरते हैं?

अपनी बातचीत की शब्दावली से "मैं भयभीत हूँ, ग़रीब हूँ" आदि को निकालने का संकल्प लें। हम उसी आदर्श को नहीं नकार सकते, जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं। हालाँकि मैं हूँ का हमारा अहसास और सराहना केवल एक छोटी चिंगारी है, लेकिन विश्वास और आश्वस्ति की ताज़ी हवा से इसे बढ़ावा दें। अंदर ही अंदर मनन करें मैं हूँ और चिंगारी लपट बन जाएगी — हमारे भीतर एक धधकती हुई आग, जो हमारी हर गतिविधि और मामले को प्रकाशित करती है, हमेशा हमारी राह को प्रकाशित करती है। ईश्वर इसी समय शाश्वत है — अमर और कालातीत। आपके अंदर बैठा शाश्वत जीवन के कालातीत होने के बारे में जागरूक है। वह जानता है कि कल और कुछ नहीं, बल्कि आज की स्मृति है और आने वाला कल आज का स्वप्न है। आइए आज शांत स्मृति द्वारा अतीत को अंगीकार करें और हसरत भरे प्रेम से भविष्य को अंगीकार करें।

दिन में हज़ार बार ख़ुद को याद दिलाएँ, "मैं हूँ तुम्हारे साथ हमेशा, तुम मेरी प्रिय संतान हो, मेरे पास बस तुम हो।"

इस विश्वास के साथ आप ग़रीबी और ज़रूरत से उबर जाएँगे — आपमें सफल होने का विश्वास होगा। आप अपने दिमाग़ से ग़रीबी और आवश्यकता के सारे विचार हटा देंगे और अपने अवचेतन में समृद्ध तथा सुखद भविष्य की प्रोग्रामिंग करेंगे।

सार

विश्व के धर्मग्रंथों में एक किंवदंती है कि हर पुरुष, महिला, लड़का और लड़की दैवी अग्नि की लपट है — संभावनाओं और क्षमताओं से चमकता हुआ और प्रदीप्त, और हम यहाँ अपने भीतर के देवत्व के बारे में जागरूक और जीवंत बनने के लिए आए हैं — जो असीमित ज्ञाता, बुद्धिमान, समझदार और हमारे कल्याण की परवाह करने वाला है।

बुनियादी तौर पर केवल दो तरीक़े हैं, जिनसे हम आने वाले कल यानी भविष्य के बारे में विचार कर सकते हैं: डर से या असीमित और शाश्वत सिद्धांतों में विश्वास के साथ, जो कभी नहीं बदलते हैं। भविष्य के हमारे व्यक्तिगत दृष्टिकोण या अनुभूतियाँ डर (और यह भावना कि हम हक़दार नहीं हैं और पापी हैं) और विश्वास के बीच का फ़र्क़ हैं; अपनी अद्भुत योग्यताओं, अंदरूनी गुणों, उदात्त गुणों और उदात्त आदर्शों में विश्वास, जो हममें से प्रत्येक के भीतर होता है और बाक़ी सबके भीतर भी होता है।

जब हम यह समझ लेते हैं और स्वीकार कर लेते हैं कि हमारे भाग्य, हमारी तक़दीर, हमारे सौभाग्य और हमारे भविष्य का नियंत्रण हमारे भीतर है, तो फिर हम पूर्णता और उपचार पा लेंगे, प्रेमपूर्ण ईश्वर की जीवंत उपस्थिति का अहसास पा लेंगे। भविष्य के गर्त में हमारे लिए यही है: इस वक़्त से बहुत ज़्यादा अद्भुत जीवन।

अपनी शब्दावली और बातचीत से "मैं डरा हुआ हूँ, ग़रीब हूँ, आदि" को हटाने का संकल्प लें। क्योंकि इस तरह हम उसी आदर्श को नकार रहे हैं, जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं। विश्वास और आश्वस्ति की ताज़ी हवा से अग्नि को भड़काएँ। मन ही मन मनन करें, मैं हूँ और चिंगारी

लपट बन जाएगी — हमारे भीतर की धधकती ज्वाला जो हमारी हर गतिविधि और हर मामले को प्रकाशित करती है, हमेशा हमारी राह को प्रकाशित करती है। कल और कुछ नहीं, बल्कि आज की स्मृति है और आने वाला कल आज का स्वप्न है। आइए, आज शांत स्मृति के साथ अतीत को गले लगाएँ और हसरत भरे प्रेम के साथ भविष्य को गले लगाएँ।

लेखक के बारे में

डॉ. जोसेफ़ मर्फ़ी को मानव क्षमता विकास आंदोलन की एक प्रमुख हस्ती माना जाता है। अंतरराष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त लेखक, गुरु और वक्ता डॉ. मर्फ़ी ने पूर्वी धर्मों का अध्ययन किया और कई साल तक भारत में रहकर गहन शोध किया। विश्व के धर्मों का पूरा शोध करने पर उन्हें विश्वास हो गया कि हममें से प्रत्येक के भीतर विपुल अदोहित शक्ति है — अवचेतन मन की शक्ति — जो हमारे जीवन का कायाकल्प कर सकती है।

डॉ. मर्फ़ी ने 30 से ज़्यादा बेहतरीन सेल्फ़-हेल्प पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें टेलीसाइकिक्स, बिलीव इन युअरसेल्फ़, हाउ टु अट्रैक्ट मनी और साइकिक परसेप्शन शामिल हैं। उनकी पुस्तक द पॉवर ऑफ़ युअर सबकॉन्शस माइंड आज भी सार्वकालिक बेस्टसेलिंग पुस्तकों में गिनी जाती है।

अनुवादक के बारे में

डॉ. सुधीर दीक्षित टाइम मैनेजमेंट, सफलता के सूत्र, 101 मशहूर ब्रांड्स और अमीरों के पाँच नियम सहित सात लोकप्रिय पुस्तकों के लेखक हैं, जिनमें से कुछ के मराठी व गुजराती भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं। इसके अलावा उन्होंने हैरी पॉटर सीरीज़, चिकन सूप सीरीज़ तथा मिल्स ऐंड बून सीरीज़ सहित 150 से भी अधिक अंतर्राष्ट्रीय बेस्टसेलर्स का हिंदी अनुवाद किया है, जिनमें रॉन्डा बर्न, डेल कारनेगी, नॉर्मन विन्सेन्ट पील, स्टीफ़न कवी, रॉबर्ट कियोसाकी, जोसेफ़ मर्फ़ी, ब्रायन ट्रेसी आदि बेस्टसेलिंग लेखक शामिल हैं। उन्होंने मशहूर भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर की आत्मकथा का हिंदी अनुवाद भी किया है।

हिन्दी साहित्य और अँग्रेजी साहित्य में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने वाले डॉ. दीक्षित अँग्रेजी साहित्य में एम.ए. तथा पीएच.डी. भी हैं। उनकी साहित्यिक अभिरुचि की शुरुआत हिंदी जासूसी उपन्यासों से हुई, जिसके बाद उन्होंने अँग्रेजी के सभी उपलब्ध जासूसी उपन्यास पढ़े। कॉलेज के दिनों में डेल कारनेगी की पुस्तकों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद डॉ. दीक्षित ने दैनिक भास्कर, नई दुनिया, फ़्री प्रेस जर्नल, क्रॉनिकल, नैशनल मेल आदि समाचार पत्रों में कला, नाटक एवं फ़िल्म समीक्षक के रूप में शौकिया पत्रकारिता की। उन्हें म.प्र. फ़िल्म विकास निगम द्वारा फ़िल्म समीक्षा के लिए पुरस्कृत भी किया गया। चेतन भगत और डैन ब्राउन उनके प्रिय लेखक हैं। डॉ. दीक्षित को पाठक sdixit123@gmail.com पर फ़ीडबैक प्रदान कर सकते हैं।